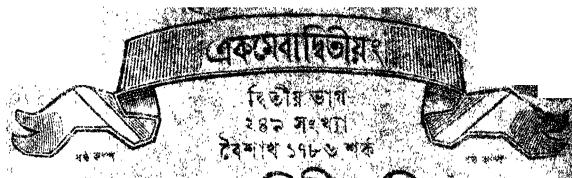
# তত্ত্বোধিনী পত্তিকার ষষ্ঠ করের দিতীয় ভাগের নির্ঘণ্ট পত্ত।

देवभाष २८०	मःथा।		পৃষ্ঠ	•	73
নববর্ষের স্থোত্ত			>	রাজ তর্জিণী	500
मत्मविद्यान (छेशकमिक			9	ভবানীপুর ব্রহাবিদ্যালয়ের উপদেশ	•"
सिमिनीश्वय व्यक्तिमा नाम				১ সংখ্যা	7"
मगोदन तक्छ।			•	অগ্রহারণ ২৫৬ সংখ্যা।	<b>t</b> 1
অন্ঠ'নের আবশাকভা (প্র			35	ঈধবের সহিত আগতের সধন্	550
भरदोष			50	পিলেডিডার পারকরের পাত্র	250
रेकाछ २०० व	र्शा ।			<b>७३७ गर</b>	55œ
्रक्षीय मगरत मात्रतः <u>अ</u>		াত্র	29	রা <i>ল</i> ভর <b>লি</b> গী	52.5
্রাপর্যা প্রচার		4	36	देश्याः	750
ानांविकान			2.55	ভवानीशृव तुक्षविगालस्य <b>त উপদেশ</b> 👚	
ান্ধ বিবাহ			ર્મ છું	र सर्थाः	5: a
রাক্ষ দেগের সাধাবণ সভা			٤ ٩	মনুদোৰ সংগ্ৰহণ সভাৱের ভাতদৰ	
্যুপ্তানের আব্শাক্তা (প্র	tes)		೨೦	<b>डे</b> द्रश्किएक	4, 41
तर्वाम -			105	(शोच २०३ मध्या।	
আবাঢ় ২৫১	मःथा।		1	সাক্ষম মহ	53,3
গ্রাহ্মপন্মের ল্যাখ্যান			৩৩	থিয়ে।ডে'র প্রিরের প্র	, 57
গ্রীম-ডিডা	•		<b>৩</b> ৫	क एन्तेषात खन्तिकार्यसा निषदक्ष	
াল-ভরশ্বিণী	, .		80.	ণ্ড সংখ্যা	いごう
भटना दिया।		. ,	६३	থায় বিষয়ে অৰুদ্ধের প্রতিখান ই বাজিতে	
भ <b>्य</b> ्ल .			8 %		
क्यां विश्व २,४२	मश्याम			साघ २४५ म° थे:1।	
अभिभाषात्र साथान		• •	N	াচার এব উপারম্প	282
जाब िछ।	4		a ÷	ালিকান প্রিমার প্রিমার	535
মনোবিভান	1 4	•	ሮ ነን	্থিয়েতে র পার্মনের পান	n 96
(भाषभात जा काममाद्यात न	্ভ!		٥ چ.	- স্থিতি মাজ	5 से प्र
कानुकीरनात आवसाकडी (श			·35.5	্ভবানীপর ক্রন্ধানদালেখের উপদেশ	S. Mar. S.
भर्ताम		• •	79.9	9 7/47)	५०%
ভারে ২৫৩	मश्या ।			্রা <b>জ্</b> পর্যা ও ব্রোজ্মন্যাতের পৌষ্ক্র। ইংরাল্লিকে ১১১১	٠,,,
কলিকাভা ব্রাহ্মসমাজের ব	ক্ত	• /	315	•	ં ૯ ન્ •
উপাসন।			હ ઇ		
यदनाविकान		• •		পঞ্জিংকা সায়ংগরিক ব্রাহ্মসমাস	5 & X
অনুষ্ঠানের আবশাকতা (গ	वाख)	• •	19	ইজিপ্টীয় মন	700
गरवाम		• •	92	ন্ত্রীলোদের রচিত প্রোথনা	د خلا
আশ্বিন ২৫৪	मश्या ।			্সূভান প্ৰাক্তা বি ১১	3 hr n
বিপদ্কালে ব্রহা স্থোত্র	4 1	• •	H \$	रेंच्य २४० मा भी।	
<b>छे</b> शामना			6.5	दश्मिनीश्रुरत दशाधांत्रात्र उत्तर स्रहादन	
কলিকাতা ব্রাহ্মদাজের বড়	্ভ।	• •	b4	द्रहरू(स्वर्धाः ।	<b>56</b> 0
মনোবিজ্ঞান	, .	• •	**	कानामा अकृष्ठ ना ११ ।	१८७
রাজ-ভরঙ্গিণী	• •			श्रिद्धादक त भानवंद्धव अव 🕠 🕠	24.5
অনুষ্ঠানের আবশাকতা (এ		• •	8 &	इंजिल्जीय मङ	222
নতন পুস্তক প্রাপ্তি		• •	⊅જ	श्रीवि ७ भन्ना	३ २ र
कार्डिक २००	সংখ্যা	l		ভবানীপুর ব্রহাদিনালনের উপদেশ	1.
কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজের বভ			28	৫ সংখ্যা	228
নিবাধই চতুর্দশ সাধৎসরিব	চ ব্ৰাহ্মসম	াজের		নেদিনীপুর ঊনতিংশ সাম্বসরিক	
বক্ত ভা	, •••	• • •	200	द्वास्त्रमास्	272

# ৺ অকারাদি বর্ণক্রমে ষষ্ঠ কলের দিতীয় ভাগের নির্মণ্ট পতা।

* \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	i i i	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
	मश्था। शृ	मश्था भूर
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত)		
অনুঠানের আবশাকত: (প্রাপ্ত)		
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত)		The state of the state of
অনুষ্ঠানের আরশাক্তা (প্রাপ্ত)		The second secon
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত)		the state of the s
व्याचादणंत्र छेनदम्भ		
আজ-চিন্তা		A STATE OF THE STA
আয় বায় বিষয়ণ		success to the second
च्यां स्वासं विवर्त्ते		and the state of t
व्याप्त वाग्र विवत्न		
	<b>289 :</b>	The state of the s
আয় ব্যয় বিবরণ	***	
के शिक्ष की एक कर		The second secon
<b>多</b> (数)		246
From Santa		ভवानी शुन्न उचाविमा। जारगत छे शारमण
· 表現公司 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		The second secon
THE PERSON NAMED OF THE PE	, ,	The state of the s
के भाग भाग । जिल्लाम भाग ।	,	2 2 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
কলিশভা <i>ব</i> .হেম্ম		2 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
		માનોતાઓના <b>કલ</b> ે <b>લેઝ</b> પ્રાથમિક
কলিকাড়া ব্রাহ্মসমাজের ব ল্ডা		
		্ সংকাৰিজিন ে, ২৫৪ ৯০ গন্সক্ষেধ ও শক্ষ্ত্রেমণ্ডৰ
		- 1975年 - 19
		・ マー・ライン *** 阿爾の神(大帝
		** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
क्षत्रेष्ट्रमञ्ज	** (\$\frac{1}{2} \)	ু প্রতিষ্ঠিত <b>ব্যস্ত</b> -
ديث		ा उदकालामना २ <b>५</b> ० ५৮৫
		১ ২০ ' ্র 'উনজিংশ সাম্বৎস্থিক
		्रिशामभाष्ट्र २७० ३৯৯
থিয়োডোর পার্করের পত	२७० . ५५%	र दलक्षिणी २०५ ४०
পর্মা বিষয়ের অবভারের প্রভিবাদ		4 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2
ইংরাজিতে		•
<b>ใ</b> ชย์:		
নববর্ষের স্থোত্র		
निमीध मगरा मागतगरक जारकात		11 H 2
কোৰ		
নিবৰাগ্ই চতুৰ্দ্দ সায়ৎস্বিক		* * * · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	₹€€ ; **	अरशम २०० १४
~		माक्रिमम् मङ २८१ ১२৯
মুতন গুন্তক প্রাপ্তি	200 Yes	क्षांस्थरक ब्रहिष्ठ व्यार्थना २६५ ১৮७
পঞ্জিংশ সায়ংসরিক ব্রোক্ষাসমাজ		§
श्री अ मनूषा		•
ব্রাদাধর্ম প্রচার	<b>ጓ</b> ๕፡፡	<b>এই छक्दर्शिमी शिक्का किकाण द्वायममान स्टेट</b>
ব্ৰাহ্ম বিবাহ	<b>₹</b> €0	প্রতি মানে প্রকাশিত হয়। ৯ টেরে, সক্ষমহার, সম্বৎ ১৯২১,
वाकापिरवद्गमाधात्रवं मञा	₹¢°	本国中部1年 25-42 J



# ज्याराशिमाथा विक

## न वया यंत्र (खान ।

क्षिति हेन्स्य हिनामा स्वाहित्य हेर्यमध्य विकास विकास विकास स्वाहित्य विकास विता विकास वि

स्वयं मन्त्रीत्व स्टम्महरूस स्मतः अस्ति। स्वयं मन्त्रीत्व स्टम्महरूस स्मतः अस्ति।

THE STATE OF THE S

कर क्या अवार्गाकेक ग्रंथ निवस् स्रोत करणाजन आक्रिया करिया एड्सिश रामध् क्रिक्र कार्य स्थान स्थाप क्रिक्र कार्या है। বিচ্চত সক্ষম কর ে ছিম-এপী ডিডা (১৯ডব) भन्। कुल्लामान्। स्मान्ने दक् इसंदेशन वाञ्चलकी रव इरस स्पर्नोक्कान करिएक, देव के ले के किसी क्षांचर्क कुष्ठवारक विश्विमन अको के १८K m das greens as the course of the बरमान्त काहिरान, इसनाय मधीरात्व वे साम् कतिराज , क्रीका जोबाजामा जुलप्यान कृति हुई। হলে তাহতে লেফিটা কলি কৰিলে, ভাইটি रक्षांकरक संभाग गोला गाम श्रेमा होताह कत्र करे, करा प्रदेश संस्थिते सामग्री कर है। व्यक्ति प्रवास नेता । जी भर । या सर्वास प्रवास । स्रिकेसी भारत राज्य काला करा প্রবৃদ্ধ করে জিল্ল স্করণ স্করণ 👺 📆 💆 रका मन्द्राचन कविनेक कर्मा द्वान नहें केली MUTTO ANTA CONTO A TAILED AND CONTO मर्भ भाजन कायम विष्यत महत्त्वा भाजन FARCE APOST OF CONTROL AT A SERVICE TOWN BOTH AND BOTH BOTH AND TOWN

হতি বিত্য আৰাজ উৎসাজ কৰে আনি কৰিছিল ক্ষিত্ৰ সংগ্ৰাহ কৰিছিল কৰিছিল আছিল কৰাছিল জাতাতে জোনাই কিছুলাকাৰ আছিল ন্যাছিল জাতাতে লোগণ কৰিছেছি ক্ষেত্ৰ প্ৰকাশ কলিতেছি যে, কৃষি নেই নকল আজিলাতে কাৰ্য্য অভিনত ক্ষিত্ৰ কল আজিলাতে কাৰ্য্য অভিনত ক্ষিত্ৰ কল আজিলাতে কাৰ্য্য অভিনত ক্ষিত্ৰ কল আজিলাতে কাৰ্য্য অভিনত ক্ষিত্ৰ কল

ভাত কৰি বাদাৰ নিবাস ভান পুলিবী
কানিবালনাবতের হৈছে নিপাতত হইলে,
নামুক্ত বাজীবাহর নভোনতার ভারতাহারে ও
বিশান ক্রমান্ত স্কুটে আলাক্ত হইলে, পান
প্রায়র লগতের স্কুটে আলাক্ত হইলে, পান
প্রায়র লগতের স্কুটে আলাক্ত হৈলে, পান
প্রায়র লগতের স্কুটিন ক্রমান্ত
কার্তা বিশান ক্রমান্ত
ক্রিয়া বিশান ক্রমান্ত
ক্রমান ক্রমান ক্রমান্ত
ক্রমান ক্রমান ক্রমান্ত
ক্রমান ক্রমান ক্রমান্ত
ক্রমান ক্রমান ক্রমান ক্রমান

নিক্তি কি প্রান্ত কি প্রান্ত কি কাল কাল কি কাল কি

এই বাপে হেনাণ অহোরাত্র পর্যা বিদিত হইবে, মাস তিথি অহাত হইবে, মাস তিথি অহাত হইবে, মড় খড় পাননাগমন করিবে, ক্ষীবন মুকুরে পাব-ধাল ক্রমান বিদ্যুক্ত হইবে, এবং দিবিধ বংশ হথ ছংখ কাশকে বিচিত্রিত করিবে। কিছু হেনাথ। ভোনার প্রতি আনাধিবোর প্রকা ভালে কথনই বেল বিচলিত না হর। মনস্ত বংবর এবং সমস্ত করিব। তোনার আজঃ
ক্ষার এবং সমস্ত করিয়া তোনার আজঃ
ক্ষার বিষ্কৃত্ব করিয়া তোনার আজঃ

তান লোকের আন্দোভ জন হটার

হল, কা নমল পালভার লাকল করা, এবং

ভাগতের অভিলাহিত লাকল সংলাহিত লা

দেখিলা সাপোভভার কুল কইছেলকর। কিছ

হলান কানাই বেল আন্দান হলানাকর।

হলানাকর গুলা, অবজা, অভ্যানার বিল্ল এবং আন্দান বিনিত আন নাই ক্রিকে ক্রিকে

হলানাকর বিনাল নাই ক্রিকে

হলানাকর বিনাল নাই ক্রিকে

হলানাকর বিনাল নাই ক্রিকে

হলানাকর ক্রিকে

হলানা

বিনী অক্লান্ত প্ৰকাশে, হে জুনাৰ্থ নাব।
চোলান্ত নিকটি এই নিবেদন কৰিতেছি, যে
স্থানান্ত বহৰ্ষ এই প্ৰতাগ্য সাতৃত্বনি বলাদে।
ক্ষেত্ৰ অতি কলাণা প্ৰদৰ্শনা ব্যৱও। ভোগার
প্ৰকাশে যেন ইছার রোগ শোক শান্তি হয়,
ইছার পাণে অপবিভ্রতা দূর হয়, এবং নীতি
ছইতে নীমান্তর গর্যান্ত যেন ইছাতে ন ভোর রাজ্য, ধর্শের রাল্যা, কুশলের রাল্যা
প্রতিষ্ঠিত হয়।

ওঁ শাহিঃ শাহিঃ শাহিঃ।

## गतना विकास।

ক্ৰম্ম কৰিক।

কগতে মাৰব জীবন এত প্ৰকার আ ক্ষা ও মনোখন পদার্গে পরিবৃত যে, যে-পর্যান্ত না আমাদিগের হৃদিভিত সহজ্ঞজান ৰিদেৰ ৰাশে সনালোচিত হয় সে প্ৰয়ান্ত আনুৱা পৃথিবীয় অভীত অনা কোন পদাৱে দৃষ্টিপতি বা ননঃসংযোগ ক্ষিতে অরুভ গ্রু मा। (यक्न मात्रीविक देनमधाव उप आहर रमहे अल मानमिक रेमभवावषा । नृष्टे इत्। नार्वेदिक रेन्नचाञ्चात्र स्पष्टम व्यक्तिम जीव-त्तर महत्वात नामान नाम जाता जीवत्तर नकत महर कार्याः अतिव वाकिता ज-नर्यक, अकिक्षिक्तक त्रामा विनेषात नास हर माम तिक रेताचर मामा है जाने कर जान क्काश्रविकीय कांक रशों भाग निर्देश करेंगा जा-TIT MANY TUNING MAINS GAVE Planes direction can are all all als

THE RESTRICT OF THE PROPERTY OF THE wis vice i Fer celtifi Stelles रेगम्याव संदर्भ असुमार महिन १६ अवटक्र भद्रम्भद्र महत्राटक है की स्टब्स् मार्किक (दान कटत । अश्माद हे की बरना जिल्ला है है कर त्रक मिना कतियान समाहे मामस्मानिक र्यो बरेबाट्ड देश कहानिटनक शृह निकास मधुटवाद खना मश्मात, मश्मादेश क्रमा भसूका मार्ड करे मक्छी अक्काइन विन्युक स्वर्क्त লোকে এমত নমরে পার্ধিক-প্রায়শক্তি-কেই সৰ্বাস্থ জ্ঞান তয়ে। ভাহারি ক্লা বিদ্যাৰ্জন, ভাষারি জনা ধন লাম, ভাষারি জন্য ধনতি প্রতিপত্তি; ভদ্বাভীত স্বার যাস্থা किंदू मके नरे खटातर, मृह ना कि मिटना क পেনা মাত। ধর্মানুঠান, ধর্মাহন্তা, কি ধর্মের জনা ভাগি ত্বীকার এই সক্ষ কেবল রহতাজনক বাতুলভার নাায় বেধি হয়: সভা-নুসকান, আমোহাতি, পরকাল, কি মনের গতি বিধি নিক্রপণ, কি ডাহার সম্বাদাজি 🎉 , লশংরক্তানুয়ায়িক ভাছার প্রাকৃত লখা বি-हिंद अ गक्तरे कर्य भूगा जामक्का विकाय মাত্র বোগহ্য। কিন্ত্র কাল সহকারে ছে জ্বপ भावीदिक रेमगवांतका छेडीनं श्रृष्टेश स्मितिक পর্যাবক্রনে বালা যৌবন ও প্রৌচাকভার সমাগত হয়, এবং ড:ফা্দিগের শরীর ক্র-নাগত পুট বৰ্ছিত ও বলীয়ান হৰতে থাকে: क्टांन पांटमाहनांत्र, परेना श्रक्तभातांत्र, ७ व বন্ধা পর্যায়ে সেই ক্ল ভাষ্টা পাথিব প্র দাৰ্গের শত্নত ভাব ও জীবনের বথার্থ লক্ষ্য वृतिक भारत, जयर उपहिन्न ज जिल्हा मदमा-टाटमार जाकाम व्याख स्त्री है अहै मगरत वाष्ट्र अभर उ असम श्राह्म विकास चार्ड्ड सा (१५८) । अर्थित

জানালোচনার **থেবন বোলাটা চিছ**ো নে বাজিনে সাহিমানে মঞ্জনাত্রক বিশ্বজ মনেগ্রিবেশ ও একাজভার দাহত ভিত্তা ক-বিতে কমর্থ সংগ্রন, তিনি ওদমুবায়িক সকল বিমরেরই মর্থ এহনে সমর্থ হয়েন, ভবসু-ঘারিক ভাঁহার জ্ঞান উন্নতি পার।

जीवटनत आहर अहे (यमम लिएक शा-र्थित वर्द्ध करेशा विज्ञ क्य, ख्वादमत शांत-ন্ত্রেও ভাহারা নেই ৰূপ প্রাকৃতিক পদার্থের उद्धासूमद्यारन राष्ट्रगीन इत्। এত विवस्त क-তকদূর উন্নত হইলে পর তত্ত্বান্তুদক্ষায়ী মন স্বভাবভই আপনার দিকে দৃষ্টিপাত করে। অপিচ বিবিধ বাছিক ঘটনা-কলাপে ভৌ-তিক ও সাংসারিক পদার্থের অনিতাতা জন্মশই **হৃদ**রে প্রতিভাত হইতে থাকে, এবং मसुया कीतरम्द अकुछ महर छेटमाना अस् कृष्ट ৰয়। মনুষা বিশেষে যে ৰূপ উলিপিড শারীব্লিক ও মান্ত্রিক উভয়বিধ শৈশবাবস্থ। লক্ষিত হইল, জাতি বিশেষে ও মাধারণত সমস্ত মানবপরিবার সম্বন্ধেই ভাষা সমান ৰূপে লক্ষিত হইবে। বিশেষ বিশেষ মন্ত্রার मकोटन कहे क्य वानकन हा कर्य किता हिस इत् मंगस सांचि मदस्य ७ जोइ। तिहे ৰূপে ভিৰোহিত হয়, মানৰ জাতি মাত্ৰ সমকেই ভাষা দেই ৰূপ। অভএব সর্ব अभारभाषे मनुसा वीश वखत था हि पृष्टि करत, অভ্যুপর ভক্তিভায় ও তলিচারে মনঃসংযোগ করে এবং পরিশেষে বাহ্য বস্তু অতীভ যে মন অথবা জান পদার্থ তাহার অনুধানে ও আলোচনায় পরুত্ত হয়।

হত দিন অন্যদেশীয়েরা কেবল বাহা জণাত লইয়া বাস্ত ছিলেন, সাংসারিক ক্ষতি অতিপত্তি, নাংসারিক আশা আনন্দ, সাং-পারিক বস্তু নিয়তই যত দিন তাঁছাদিগের কর্মবা ছিল, তত দিন জ্ঞান গোচর ইন্দ্রিয়া-তীত কন্ট সাধ্য মনো-বিজ্ঞান আলোচনার প্রতি তাহাদিগের যত্ন বা প্রাকৃতি মাত্র ছিল না। বিশুদ্ধ জান উল্লেকের স্ক্রে সক্ষে সংক্রি ক্ষ টাহারা ব্যাহিত মনোনার করিয়াতিলে, এবং দেই লাকেটিলা ছই তে পরিঅনের করিয়াতিলা ছই তে পরিঅনের কল অবল বিশিক্ত উপরার লাভিও করিয়াতিলেন। অধুনা কেমনই ক্যানের উমতি, তত্বামুসন্ধানের উৎকর্ম লাভ ছইতেছে। লোকের মন বাজ জগতের দেশীপার্মান অথচ কলভঙ্গুর অস্থায়ী পদার্থ ছইতে বিরত হইয়া "সভ্যান্ধ " লাভেই সমুহস্কুক হইয়াছে। আমানুসন্ধান্থী বীর প্রকৃতি বীত পাপ স্থীগণ মনুষ্য তত্ত্ব মনুষ্য মহন্ত দর্শক্তি বাকুল হইয়াছেন। মনো-বিজ্ঞান, অর্গাৎ মনের শক্তি প্রকৃতি প্রস্তি বাক্তি বিধি বিচার করিবার শাস্তে, এক্ষণে সাধ্যার বিধি বিচার করিবার শাস্তা, এক্ষণে সাধ্যার

কিপিণ্ড বিবেচনা করিলেই প্রতীত হ-हेटव एवं वांश्र कर्नां मन्त्रवाह मनुवा कीवत्मत क्षाम छत्ममा। षा,ना,क हे छ। বগত আছেন যে জ্থাতের মহিন। নহীয়ান कतारे आमानित्यत में विश्व के समा। কিন্ত প্রথমতঃ স্থীয় স্থীয় প্রকৃতিকে মহীযান না করিলে যে লক্ষা কোন ক্রমেই সম্ভাবিত হইতে পারে না। সৃষ্ট বস্তু দেখিয়াই জ-টার বিচার সম্ভবে। যে পরিমানে স্থাট পদার্থ মহৎ সেই পরিমানে তাহার স্রফী মহৎ; আর ষেপরিমাণে স্থার্টি অপক্রট দেই পরিমাণে জ্র-ষ্টান অপকৃষ্ট। হুর্ত্ত অসদাচারী পাপী लांदकत वावशत दमिश्रा यनि शहरमध्रतत्र সত্ব। ও স্বৰূপ নিৰ্ণয় করিতে হইত ভাহা रहेटन जिन जान थोजि प्रकृत जीव विव-জ্জিত দৈতোর নাায় **অভীয়মান হইতেন**। সাংসারিক লোক ভিন্ন শার্মিক লোক জ-नट्ड यान निवास मा कड़िक, डोक् लेक्स-निভाटक रचात्र नारमात्रिक बनिया द्वांव हरेका नाखितिक मसूनाचारे मनूटबाद निकृषे के-बरात कुछ जानर्ग। त्येरे कुछ जान

বিজ্ঞান করে বিশ্বিক করিছিল বিজ্ঞান করিছাত আবার আনেকে মুমুলা করের অনুধানি করিছাতে করং 'সভ্যের কর' পূথিবী মথ্যে ঘোষণা করিয়াছে। পুথরের জ্যোভিডে আবার ঈশরের মুখ জ্যোভিডির বোধ হয়। সাধুতে এবং ঈশবরেত এই কপ নিসূত সম্মা। অতএব ঈশবরেক ঘাঁহারা আপনাভিণ্যের জীবনের উদ্দেশ। মনে করেন, শ্বীয় শ্বীয় আন্বার উৎক্ষ সাধন করিয়া সেই সেই আত্মাতে পরম পিতার শ্বনপের পরিচয় দেওরাই তাঁ-হাদের কর্ত্রা।

কিন্তু সেই আত্মার তাবং প্রকৃতি এবং গতিনিপি আলোচনার অভাবে বে বাজির নিকট অপরিচিত রহিল, তলিহিত তাবং মহত্বই যাহার বৃদ্ধির লগনা বৃহিল, বিশুক্ বিচার অভাবে যাহার আত্মা আপনার "শ্রেষ্ঠ কোম মধ্যে" ঈশ্বরের প্রতিমূর্ত্তি না দেখিতে পাইল তবে সেই হান অনুনত পশ্বৎ মনুষা কি কপে জীবনের লক্ষ্য সাধন করিবে, কি কপে ঈশ্বরকে প্রাপ্ত হইবে ? অভএব বিশিষ্ট ধর্মোল্লির পক্ষে মনোবিজ্ঞান আলোচনা যে কত দুর আবিশাক ভাগা সহজ্ব দক্ষের নোধনামা হইবে।

महनात मसूरगात छेललका, मसूना मश्-मारतत लका। केचत मसूरगात लका, এবং मसूना केचरतत छेललका। केचत कित आह महल लगर्थ जरलकारे चाचा महछत। स्मेर तंजवारकचत कंक्क श्वातिक हरेगा अहे बका छ विभातारमा जाचा बाक्च कतिरहरू। छेललकारक नेका करम स्नारक केचरक विभाव हरेगा महनाती हत अहर ककारक छेललकारक केचा करमाती हत अहर ककारक

NAME AND ASSESSED ASSESSED ASSESSED. थाक स्टेटक स्ट्राम डीहान डेनानका स्कर्त मापात वैश्वविनीनांश्रत्कितारक कमान् डीरात निरंक लंदीम बारेरड करेरव, बंदर তাহাদিগের তত্ত্ব নিরপণ করিয়া ওমধ্যে তাহার অস্তার চিহ্ন দেখিতে হইটো मरमा-विकास देशेत कक मर्साएकचे উপায়। एक निम भःगादत आहि छई मिन **उ**ष्ट्रश्यात्री **अ**रमक कर्म रहेदव दिए किन्दु कीवंद्यत गाव कन्नेहे আলোমতি সাধন করা। ধাঁলার সাংস্রিক অভাৰ এত বে, ভিনি তাহার জন্য আপন্র क्नटराः भिःक पृष्ठि क्रिट्ड व्यवसङ्ग शीम ना, তিনি আতি জুড়াগা; আরি ঈশর-এমাদে মাধ্য সক্ষ অবস্থাতে হীন পার্গির অভার সকল বিশেব ৰূপে অনুভূত হল না,ছিনি গৌলানা মম্পন। কিন্তু মঞ্চলেরই স্মরণ কর। উ চিত যে, আত্মহি আত্মার এক্যা,সংমার নছে, मिश्रुत्रहे आधारिक कथा। में भारत सरहा 🖫 🖫 रथंत विषय अहे त्य. खोकारमा अ व्यक्तिम व्यवहोनं रुखा घयाय हेरात खमान्नकात क्तमण अपनीत कडेटरहा कृषे अधक्रुत **छेटम**ा मृत क्हेशा जन्दम कीवटनत यथार्थ कान घट-एकर घटन **बल्**तिक ≥हेरहरह. এবং উল্লিখিক-প্রকার জাতীয় দৈশ্বাহস্তা षाडिकां व वर्षेया भाषाहरू हुन अकुन मसूचा छात्र अक्षत्त हर्ग् इत्हा । ভাগু তদেহ मसद्ध सदम्हात स्थान भारत्युव मस्तित कहेटव ভাহার আশর্যা কি ৷ মত এব এই ছুর্ছ ৷ विषय भयारिलाहमा कहिवाह कमा यनि चा মরা অগ্রসর হইতে দাহণী হই, বোধ করি माधात द्वा व्यायशासूर्यान (ठकी इंदेरन मा। ফলত এত্ত্তিবৰে স্বাহণের সৃষ্ট্র আ মরা আপনাদিগের অনুস্যুক্তঃ দীকার ক্রিতেছি। আমরা বিলেম কলে অবগত भाषि ए। नगटक नगटक अक्टलंटकाव्याक था-

প্রান্তির অভাতাক রিত রুকে নিপ্রতিত্ব চুইবা বিজ্ঞ প্রশাস্ত্রারিক ন্যাশীল ফি ছান পাঠক রুগের নিকট আমাদিগের এই নিলেদ্ধ বে ভাঁছারা অনুপ্রাহ করিয়া আমানিগের অনভিজ্ঞভাসমূত দোদ মা-ভান ভাবেন, কারণ ধ্যানিও আমাদিগের আন ভাড়ল উন্নত না হানিক আমাদিগের উদ্দেশ্য বিশুক্ত।

ভদ্ধবোধনী পতিক বিয়ক্তিই ঈশ্ব-दब्ध भौतिष्ठादिकः, खोक्तापदर्यातः मञ्जातिनी। <sup>ee</sup> একংমবাভিতীয়ন <sup>ee</sup> ঈশ্বর তাহাব হাদংশের भगः ' अकरमया मिडीयः '' केमात् का कात्र राष्ट्र तकत्र भूक्षे । यथन (य व्यक्त व केस्र ह একটিত হুইয়াছে ইশ্ব অনুসন্ধানই পাহার पूर्वा केटचावा जनभवां कात्रहें कार्त्व जन क्षा विकास दिए तक क्षांन भाग वर्षेना ट्यांड व्यक्तियाहिक इंडेड्ड्ड्य साम विश्वन পাৰ আগ শক্ষা কথা চতে, কিন্তু অট্ডেড জাবে চিত্তকলে ভাত্ত্বংগ্রিকী সেই অইলত-ভদ্ধ প্রমেশ্বের মণিয়া ভীন্দন করিয়া-(इ.) अन्ति (अ) वे, विकास विष्यान, अनिक প্ৰস্থাৰ প্ৰালুৰে, সকলেৰ মধা স্থাতে জি अधिक शहर वा रामिशायांग व्यक्ताम लाई-নাচে 🔻 প্তত্ত সক্ষম মনোবিজ্ঞান বিষয়ে आपना को को का कतिइ अक्षेत्रन करेगाम, তার্মন ও নার্ম ম্রিমণ স্থেম্মণ। করিব, প্রাপা ন্ত মচার গাবে, ক্ষেণ কে প্রকার সভা रुप्तक संच्या का अन्ति व्यवस्थातिक सन्धा < মে'ল্ড: এ০০ ব্ৰেফাৰণ্ড আচাৰ: পাঠকৰণের डाइंद डाए भिरतनम् ८ए सुक्रम सुक्रम डेव्हा-বিত মতা জ্যোভিতে যেন ভাষারা মেই मक्त चलारभद्र नुभ क्लांकि मिवीकान करत्रन, जबर शासदार गटक मर**रगंग दर्शांध्या रचन** क्षेत्रका चार्ता नामत महिक अके हुनाम निय-বের প্রতিপ্রিমায় প্রস্তু হয় 👫 🕒

# নিনাৰু সাই সাৰ বাৰ থ স্বিফ ব্ৰাৰ্থনী ভেল্ল ব্ৰুড় ছেন।

大物学者 引擎 5%计像 神像 1 6 00 5 10

शृशिवीत भुताकृत आदनांग्रम केतिरन প্রতীত হটাবে যে, বগরই ধর্মা পিরুতাবত। ধাষণ করিয়াছিল তথমই তাহার পরিবর্তন क्रमा लाएकर व्यवस देखा क्रिशिक्षित उ एकता शहर बार्क्सन हेरिए बहेश. कांक ममाक निश्रवां के केशांकिता। धर्म निः कुकारका राजन करिएस भरमान कीवन केम्सर প্রীভি লোকের ক্ষদটো অবস্থিতি করে না, অনীক বিভা কলাপ্ৰপ ৰাখ্য অলুঠানে यांच छोडाटपत मन्त्रन मध्यादयाच । वृक्षे कर् जाकांको (कर्म (मही भक्त दक्कि) अस्त्राहर गरक है शुक्ति अक मोज है भार दलिया छ,त ফারে: ভাছাুদিলের স্মে সভার কেন্ডি-क्रमभः भूत क्रीया भारीतमः । ७० अवसारक লোকে দর্ম্ম হাজক্ষদিধের একাও বর্ণান্ত ध्य । ज्यानी भारत कटत (य. ८म) गरुण प्रता श्कर लेखत १ मण्टम्य मधाय-अस्प । ८ সংগ্রা এমত বিশ্বাস করে যে, সেই সক্ষ भक्त मांकर केयर एक गांव विवास विकि कार क भारतमा । सम्बं भाकरकदा ७ व्यादकत अष्ट क्षित्र अगरक अपूर्वारम्य स्था माध्यात स्थात করিতে কটি করে না। ভালার অগ্প ভাশি ন বাছ জিলা-কলাপের মংখ্যা বুজি করিতে যত্ন কৰে, সংখারা বিলক্ষণ জানে (या. घटने किया क्रांटिश्व मःशाः विशिष्ठ क् ইবে ভত্ত তাহাদিকেরই মুজাখারের পুরণ কাৰ্য্যের প্রতি মহকাবিতা করিবে : তাহারা দর্শান্ত জন্য লোককে পীড়ন করিতেও भटको करत मां । जोकादा निकामिटनक म-म्हान इप्रत्य मा प्रामार पाती इक्षेत्र एकवन

अन्यात्त्व अक्षी भए (स्थम नाहरू स्य रथन्हे प्रमा ग्राम् चिपित स्था, छन्नरे छ(स ানবারণের উপায় আপিনা প্রাপনির ঘটিয়া छट्छ। अन्य छ।ताभि छ विकाशन छ।त्रश के ানকে ডাঙার পারেশ্রন জন্য লোকেয় এন वदन एको इत्या १ हासन। व्यक्तः था। भाषां है जिल्हा हरेगा । हाक महास बिनामाश्र रहा । जेलद्धत व्यवस्थान असे অসাধানণ কালে হাহার উপযোগী বল্মে-१ भारत्यस्थि । अस्य स्थतः श्रद्धाः कर्षः প্ৰতি পুৰুষ কৰি পুৰুষ সকলল অৰ্ণী-মন্ত্র স্থান্ড ত হলেন ে উল্লেদিলের शास्त्र क्षेत्रां ७ व्यानः तमादकत् मदनस् क्षेत्रां ३ क्र**ेट्ड ऋड**ळा। भारतिस्त्रं पाटनोत्तर २ क न पहार भी किन अर्थ किन्। स्वाहार का াদিবেশার মধ্যেয় স্বাভাবি আয়ে এক প্রাণ ন बरेशा जीवाय । अकत अमर्ग ७ अकः, ध ্**টনার উপর সংবক্ত পুরুদের** একটা স্থাধারণ নিয়ন্ত্র আছে কেবল ইছা বিশান করিয়া তাঁহারা সম্ভট হরেন না। প্রত্যেক স্কুত ঘট না প্ৰান্ত তাহার ইন্ডা ৰশতঃ হইয়া থাকে, यामात व्यमीम भाष्टि मध्या किहूहे हुन्ध ं नदहः याद्यत्र गर्तस्य हण् महत्य कि हुने सूज नद्द अगड विश्वाम कहा डीशांकिटवर व अंतिमक् स्रेक्षा यात्रः। जिल्हात्त कांगा,

मेम्राहर बाकारहणाका, ने बहर र छेना जात क्या केलि मिट्नाय की बदनत क्यम लका। अना অমা ধর্মানন্দু দারীরা আধ্যাত্মিক উপা-मनात ज्ञादन एव मकल भागान विज्ञान কলাপ-ৰূপ বাংল অনুষ্ঠানের স্থাপন করে, म मकल आग असुकानतः कीवादा अखास कृष्ट् करवन : माथरकता मेच्द्ररक (समन বিভাচের নাায় একএক বাব দেখিটে পান, डीहाता दमस्य यक अकरोह (मर्यम मा डी बार्स मञ्चाम (यह क्यांतिक स्वार्धन हरू प्रदेशिकरण ८८८चेर ७ मध्युच्छ राष्ट्रत सन्ध्र केरिया भारत महत्या ह स्थाना कर्या । এম জন্ম প্রতিত নক্ষাবের আহে কাঁক্যু সৈপের ভাজিল। জ্বেশ ভাষার জনাদ बाहो है है। १० भागतमा अना (दोन एकू স্মান্ত কলেবা ক্রিয়ার ক্রায়াল লাক कतिका कें(कोदा स्वाधिकस्य एक्का अकतारा कुछ वटाम: मान राजात, धानीहरूस ्राप्ति । प्रान्ति अर्था व्यक्तिकारिक भर ্বন্ধ ভালতে ভিন্ত কাৰ্ণিলেন প্ৰক্ৰ (医 高河南河南 网络南南 新柳西南村鱼) यम्। ११ । अञ्चलिता विकास । १९३ । भरता स्था म जारक स्थादको राजिक । कल्लिकार 。"我都在期代的全国经验,我们是一种的现象。 化价分析分别材料 財政 带电路 机木黄皮料 网络西方电影 化西方电影 医二甲基基 医二烷基 नक व व्याप्तियात काकाल क्षेत्रक क्षानात केंद्रश्च दका गक्समा अधिहरू प्याप्त मा कें,कालिस्पर किएल्डन मधुमा रक आता भिल्लास निरक्षक्त भदर संस्तित्वस्य मुक्ति व्यानम्बर मुकुछ, काच्या क्षास्त्र । वार्यार বন্চ। অবৰ্ণ কুণ্টান্দিলের প্রান্ত ভাঁছে(চেন্ क्छ आप गाँधे। डीयाता भाषित धरम भनी मान्य, केंप्स्ता भारत भारत की। जाहारा धगमान-भूर्व भषाष्ट्रमञ्जूक वाका सिमारम পাই নংখন,শ্ৰল্ভালদ্ভ সভাই ভাঁহাদিলেয়

रक छात्रे भक्त गांव भनकात् । जीशीनद्रशेष কুলীনত্ব কোন মর্ভালোকের রাজা কর্তৃক। अभक्ष सदह, जाहा (महे हाकात अपना कर्ड्स श्रमञ्ज, योष्ट्रीत जिल्लाम क्रारमास्य अञ्चरना- श्रांकिक इहिस्पर्हा स्थान मिहे स्कक्त भूक्ष के शिक्तित्त जाशनात मगील-প্রতী কারবার বিভিন্ন সর্বাদা কাম কহিয়া-हम, उथम छीहात। कि अधान वासि नरहन ? कालि क्रिक्टी विनये हते. उथापि गयन কেছোল বিভানন থাকিবেন তথন ভাছাবা क संकल्पभाषिक वर्गाक महरूग के हिर्मान्दर्गत है। শ্रु मान्य दान। सम्बंद कर्न्क पुष्ट कर्रल्ड नहेंदा-मक्तम विहिठ ५०शाहिल । छेकिछि-्रवर्षे काना अच्छा भएन हो ५७, हेवल ८ वि-्यं इहेश्हिल, धर्माका महासूक्य तकल अस्य ध्रष्टन कविश्वाहित्वतः 📑 🖆 नित्यत्वे ংশ্বল জন বেশ এতের এচপিড়া সক্র ধর্মা अन्य अकृत बहुन। कांब्रश (अल्ट्रह न । किंद्रा-। भारताब्ध् मञ्जल कामा अया अवर्त्तर ५३। आगी वाका कर ५ विश्वक महा वाद्या विश्वादक्रम । ार्र (मा प्रवर्ष अवस्थापक) (महे रणा-धार्वक किटलंब व किञ्चाबिक एक्सवार। विविध्य ५ हेसा (अला १ क्रीन्स्वर्श्वर सक्कण क्रां) ड्रीक्राटक्व িকা-নিঃসারিত সোণিত ভ্রতাে পতিত र राष्ट्राक्रिका । व्याधका । शेर्राद्वा चारलवाभियोदक नवनके क्षेत्र है । करबन ना । किसीना ख-भीयांचा अवेषा भागांत बरका विवसन करतन । এখন এবস্পাকার ধার্মিক পুরুষেরা ঈশ্ববের वभागता क्षेत्रं करतत, ज्येन आस्तिराध प्रक्रांक (द्रांश-इसंव क्षाकृति क्रांकिव क्ष-भागांदर त्या । भक्त मुक्त क्षा हिंश्हा যদ্যপি লোলবশভঃ কেনি একটি কুত্র কু-कक करतम ७ के इहेरबाल के हिर्निपटनत वास्त्रिक योजनांत व्यास्त्रीम्। वाह्य सः, व्यन वसः वाक्राहः मध्य मगुक्तः कि व्यात्मानिक वस्य विक्रिक्तित्व सम क्यां ध्रमा क्रिक्त,

इहेब छोरो । कीहाबा अक्षेत्र विद्यान नाह পতिত बहेबी करे चार्डबान कटान (व "कि-स्क्रम सङ्ग कें शिह्य सूच स्थापन निक्रि हरेट व नुकांशिष्ठ ताथिशोट्डन । यथम डॉस्टान थन সাদ আমি হারাইয়াছি তথ্য আমার কি विस्ति ? र् हाजारम् कीयन गंतरग कीयरन ফি কাজ আমার 🗥 ভাঁচারা উপাসনার সময় মনের এপ্রকার উদ্বেলতা প্রকাশ ক-(त्र किन्छ गाःगांत्रिक कार्या गण्णांकन ममद्र ভাঁগর মত্পুদ্রপে ভির্বীধাকেন। আ कर्णात कियत अहे स, माश्मातिक कार्या मन्यानम मगर्य ज्याकात मस्ति छित्र है। দিবের ধর্মোলিয়াক ক্ইছেই উৎপন্ন হয়। भर्मक्ष इ.के. ज्यंदी भदकाशांत अदल क्केस অনঃ ভাব সকলকে এ।ম ক্রিয়া কেলে। कॅशिएमत राध (ध्य, क्षांत्र, फ्रांत्र, प्रकाश किकारमत् दरश्रादमारस्य अवीच । सृङ्गः स्त्रा क्षामत निकार असमाव सरक, आरामीम केहि रमत सिक्छे भएन।इस न्दर ! छ। । १८४। भागा काम्बन केल. ग ० ल्या क ब्याटक वर है কিছু ভাষা সাংস্কৃতিক বস্তুর জন্ম নাছ। भरमाध्याव छ।बारमव मधरक व्यक्तवस्य ५ कांत्र करत, कोशारमंत्र कामग्र हशरह कारम প্রতি এবং পক্ষপাত দুরীকৃত কলে এবং होहातमत विश्वतम विश्वम् ७ व्याचा चरमर পরাক্রমের অভীত করে। তাঁগার। পূথি दौरक (लोक्षराध्व नाम्ब धमन कर्डम। मञ्जूरकात महत्र कें।इहरमत मध्यम व्यादह वरहे, কিন্ত তাঁহারা মানবীয় ফাল ভাবের উপ্র স্থ ছুংব আান্ত ও কল সমস্বে তাঁছারা মতব্ । ভাঁহার) অত্র ছার। শক্তি হ্রেন ্ না, বিশ্ব বিপত্তি দারা আতহত হয়েন নাঞ ভাঁদারা ক্ষতিকে লাভ বােধ করেন, লাজা-क शोहर भरन कटहन, **क्षर मृ**ष्ट्राटक कड़ा জ্ঞান করেন, । তাহাদিলের চিত নান্রীয় क्लीनका विषय अञ्चलक करते। कि के नक

বিৰয়ে ভাষা অভান্ত কেনিল। মনুবোর शीर्भ बना जान कि भवाद वार्थिक रह ভাছা বৰ্ণনা করা যাইতে পারে মা। পাপী मसूट्यात श्रीतिवां। अना ठीहाता गर्यमाहे কাতর চিত্তে ঈশ্বরের মিকট প্রার্থনা করেন। কোন বাজি বৈনন ভাষার ভাষার ছ্রবস্থা **ভনা ক্রন্দন করে তেম্মি পতিত মনুধার** জন্য ভাঁহার। সর্ব্বদাই ক্রন্সন করেন। মনু-যোর পাপ জন্য বিগাপোক্তি তাঁলদিগের বক্তাতে মর্কাদাই উপলক্ষিত হয়। তাঁহার। कुमनदत्रहे कुटलाकभूनं मगाटकहे कम शहन करतम। लाक ममोरकत या मकन लोग उ জম সাধারণ লোক দারা অনুভূত হয় না, (म मकल (मांग '७ अम केशित। श्रीव अमे। ধারণ বীশক্তি দার। অনুভব করেন। ভাঁহা-एवं छोट्या क्वता अभवनि निमा अ नि-গ্রহই ঘটিরা থাকে। তুট লোকেরা তী-হাদিবের সম্পূর্ণ শক্ততা করে এবং মে পর্যান্ত তাঁহার৷ না নিহত হয়েন সে পর্যান্ত ठै।श्रांणियदक भाजीतिक अथवा माश्मातिक মন্ত্রণা দিতে সমান্ত হয় না। কিন্তু হত চই-वात मभटप्र । जाहाडा श्वीम निधक्षांक्रीम भटक मदनत माङ्ङ जामीर्साम कहिया जातः नान्दिशंत अनादित अमादित अनाया अ **কাশ করেন। এঞ্চকা**র বীরপুরুচেরা ভারি मसुरान्दिशत सञ्चल शमनाशमन कमा निष्क কতক স্বারা কভবিক্ষত শোণিতাকপান **হইরাও মহ। কম্ফে তুর্গমন্থানে লুভন স্থাম** পর্যাস্ত করিতে যত্ন করেন। এই প্র कांत्र मसूचा श्रांतारे कागर जारमानिए इस । এতজ্ঞপ মহাত্রা-বিগের ধর্মোপ্রেলর এত বুল বে ভাছা বর্ণনা করা দার নং। भीत्र अधिवात। छीहाटमत क्रिसा अति-नम् रुत्र, डीसंटन्त्र भूवेची विश्वट्ड्य नाति व्यक्ति वातम् कटतः, विकामनदानकं महिक डीकारमङ क्ष क्रेट जाका विकास का

বয়ং বার্থীতা আসিয়া ভারাদের ওতো-शति आविष् उ हमा अर्थ विषद्य यहा-रति नमन् केशिती काम अनुविध भक्त विख र्म मा । यंगानिक स्मिनि की श्रीपिट्यात कथात्र কম্পিত হয় তথাপি যে আমি তীহাদিনেয় मस्टक खनिएस्ट छाण धर्मीन मा क রিয়া কথনই কান্ত থাকিতে পারেন ন। ভাঁহার৷ দকল সাংসারিক কার্যা পরি: ভাগি করিয়া এর্ম প্রচার কার্টো এড়ভ करमन डैं। मोता यनि धना कार्ट्या धामुक इटलम को हो कहेटल एक स्थान की होटियल १२% माकिर्मन कतिहा है। वानिनादक खान्य कर्दरी नियुष्ट करत्। है। शहा साहे कारी मण्यानन জন্য বিশ্রাম আগারের আরাম ও প্রিয় ব জুদিগের মনোরম সংসগ পরিত্যাগ করেন। नके क्षत्रात करित कार्या है। लिय ७ मि**रका**त व्यक्ति मिथुन कटरा । रमध প্রবৃত্তি ভাঁচাদিনকে নিজা চইকে ব্যাহত करत ७ गातवाम विवस्य व्याचि चूना करत। তাঁহার। বুনি স্বভাবতং ভীরু ও কোমল शक्रिक करपम फथालि डिक्स्ना राग देवन वल काला जामाधातम माक्ष्मी ७ रूके-महिक्ष क्रोगं छेट्टेम। शृथिबीटक मापि स्थान-নের ক্ষতিপ্রায়ে উচ্চিরা এগ'নে আলমন कृत्यम किन्छ कृतिया (राष्ट्रि स्रोत स्टेट ना। ত্ৰীকার। চতুর্নিকে আনি প্রজানত করেন वात ।य वर्षास्य मा अपने असि अवन्ति अस्त कें। इंक्टिन्ट मन ध्यथम् अंट्या । मक्टल बरे मदक डीहाएमब (ववाम विमन्नान केल्क्डि इस । व्यापाककः को नाप त्याप इस 🕏 🕒 হারা খেন কেবল সংহার করিভেই সৃধি-वीटण अन अहन कतिशादसम किन्छ रेख्ने अ যেমন ভাঁহার। পুরাতন **অট্টালিকা** বিনাশ করেন ভেষনি মুখন অইালিকা ও নিশ্বাৰ করিয়া বান। যে পর্ব্যন্ত না নেই মুখন অ-अनिका निर्मित्र देश मि लेकि है। बीता

ভাষ্ট্ৰ হতেৰ কাৰ্য হান পুৱাতন জাউালি-कान रसान व्यक्त उडाम थाटक ଓ क्रीकाटक রক্ষা ভ্রিড়ে পারেন ভবে ভাঁহারা ভাষা त्रकः कतः त्नीजारभात विषयः स्वान कृतन, किछ ग्रमाणि कोन अश्मरे छेख्य ना पांटक करव (म भूबां इन अद्धानिकारक ममाक्करभ ভাক্কিয়া ফেলিতে তাহারা কিছু মাত স-ঞ্চে করেন ন।। স্তরাং সকল লোকই ভাষাদিনের শত্ত হয় এবং বিপদ্যাগর प्यामिश कें।शिन्त्राक व्यक्तेन करत, किस স্থার ভাঁছাদিগতে কথনই পরিত্যাগ কবেন া। ভিনি কগন উহিচাদগের আত্মাকে व्यवसङ्ख्रामञ्जान इक्ट्रेंड एवन मा। डीही াণ**ভার কারাগানে**র প্রচিটরে তিনি স্থলীয় স্থের ছবি চিত্রিত করেন। ভাঁহাদিগের अपने कृष्टित थएमेत क्याहिः मस्त्राहे पीलि भाष्त्र कथनदे निकाण रत ना। केंग्सिंग ने ध রের অন্তুচর জাঁহাদের ভবের কোন কারণ नाई।

विद्युष्टमः। कहिएन शकीं व व्हेर्स स्थ, পুরুষবর্ণিত ধর্মের বিক্লাবস্থার জন্মণ ন व्यक्तितित क्याकृषि ভाরভবटर्य कुक इहेट ३८६ ७ वर धर्मा পরিস্থান क्रमा লোকের একটা প্রবল ইজ্বাত ক্ষানাছে अनः এই जमानंतन कारास्यायी जनावा-इन बर्साप्ताकी, ६ वर्स मध्यात कार्या प्र-म्(शत्र करण ग्रुयान्, अकास क्रेश्वर शता-यन, कन्छे निहस्यू त्लाक नक्ल आधारितनंद्र बद्धा छिभिक इड्लाइइन । त्मरे मकल जाति-श्रीकादकांद्री नाङ्किमिरशंद मरशा व्यक्तिशंभ খাকি বিছান্ ওধনবান্ নহেন কিন্তু ভাঁচারা लरा विकास विकास ७ शहम थरन धनी, धन अक्षवा विमा अस्तिक या जिल्ला जैशिनगदक कारन मं, धमरान प्रत्या विषाम् मरना कार्शामरनव नारि अगंतिक नारे क्षि अवस्त्रीदाविशत्क उत्तर बद्धा व्यक्ति रचन मछनी मत्या जीहानित्यत स्वतानिः भोत्र विकासिक स्ट्रिक्ट के की स्नितिक নায় শান্ত সমাহিত ন্যু স্বভাৰ তিতিকু ब्लाटकरे देखातत थिश यहान । स्थान राक्ति वर्शका डीशब्रिश्वह बाहा के-শ্ব অধিক কার্য্য করিয়া লয়েন। যুধুন रयमन गांवु वाक्तित अस्ताक्षन इस देश তখনই তেমনি সাধু ব্যক্তি শ্বেরণ করেন। যথন এশকার ব্যক্তি সকল আমাদিণের সধ্যে উদিত হইয়াছেন তথন ধর্ম পরিবর্তনের অবাহ আমাদিগের দেশে প্রবাহিত হইতে আর বড় অংপক। নাই। যেমন বণার পুর্বের নদীর উপর ফেনা দুষ্ট হয় ও বলার শক্ষার উদ্রেক করে,তেমনি ধর্ম পরিবর্জনের ব্রানুর পূৰ্ব্য চিফ স্কুপ কোৰ কোন মহাত্মা বাজি দারা পৌভলিকতা পরিতাক্ত হইগ্রহ ও পরিবর্ত্তন প্রতিসক্ষণিখের শক্ষা উপস্থিত करें (७६५; ध्यमन दनशंत शंक्त म आदन कविस्म भूक्तिगोत रदश मकल भारे वन्तर कदन मिनितात क्या व्यक्ति इस्ट्यांस यश्स दाक-বর্ষোর অনুষ্ঠান এচনিত হইতে থাকিবে ৬ तमा भारतर्द्धन अभिक भारत्मानन भटा धारत ক্ল পাৰণ করিবে, তথ্ন পৌত্তলিকতা ৰূপ পান্ধল ভড়াগেবছ ব্যালগেশানুৱানী লো-क्ति। त्रहे श्रीतवद्यास योश पियोत कमा অস্থির হইবে। যেমন বণ্যার দ্বারা আপা-তভঃ নানা প্রকার হানী হয়, কিন্তু পরে ভূমি উঠবরা হইয়া যেখানে বণার कन ভরক্ষিত হয় মেখানে শক্তা পূর্ণ উদ্যান হাজ করিতে থাকে ও শাস্তি ও সচ্চন্তা বিরাশ করে, ভেমনি ধর্ম পরিবর্ত্তনের দার। স্থাপঞ্চ ততঃ অনেক লোকে: ক্ষ্ট ছইবে কিছু ভ বিষ্যত্বশীয়েরা সক্ষমতা লাভ ক্রিবেন অনেকে এই ৰূপ বলেন বে ্লেক্ডাৰ কেবুৰা धर्म मिका (मंड ; अधिकाश्म क्लांटिक मेश्रेस निर्याम मर्ग लोग गांच कतिद्द अवश् क्रिके कार हरे विमुक्त शहरत, कथन वन कति। ব্রান্ধর্কের অনুষ্ঠান প্রবর্ত্তিত করিলৈ তাহা महत्व अविनिष्ठ हहेर्द आंत्र कांन करों পাইতে হইবে না। ঘাঁহার। এৰপ বলেন छै। होता वित्रहमा कदतम मा त्य, त्य महल চিত্ত সহাদয় ব্যক্তি নির্মাণ জ্ঞান লাভ করি-য়াছেন ভিনি দেই জ্ঞানামুগারে কার্যা না করিয়া কতক্ষণ ক্ষান্ত থাকিতে পারেন ? তিনি সেই দর্শনু পুরুষের দৃষ্টিতে কত-ऋन कथाँ इदेशा थाकिए। भारतम ? जिनि পুরুলিকা উপাদনা ছারা আপনার প্রিরত্য <del>ইয়রকে</del> কভক্ষণ অন্মাননা কবিতে পা त्तम ? हेश यथार्थ तर्हे स्य लिकि गमाक চুতে মা হইলে ভাষ্ত্র খেলনক উপকার করা यात्र, विश्व अटमन ए जेनाइ कड़े कुत्यत बासू-ঝেরের মণো কাহার অফুরে'গ রাখা ক र्केश ? क्रेमासात अनुस्ताध तका करा घरमा कर्षना, किस क्रेम्यावत अयान नित्रमार्ग छै। कांत्र अनुदर्शय उक्त। कतिरूक रंगरसके स्मरमत सेथकात पाश्री पाश्री हुईता हैते। সীয় দুটান্ত ছারা দেশীয় লোকদিগের হ পরে কপটভার প্রতি বিষেধ উৎপারন করা অপেকা দেশের হিডকর जात कि चार्छ? यमन भरताभका कना मिथा। कहा फेठिए नटह एउमनि एनटमात के शकांत करा धर्म विषया कशरेल्लान अवस्था क्यां कर्डता स्व मा। विश्वक छेटलना हो-ধন জন্য অবিশুদ্ধ উপায় অবলয়ন করা কথ-बहै উচিত হয় না। ধর্মা বিষয়ে অকপটি श्रेष्ठा विविध अकादत कि म्हानत उपकात कता सहिटक शीटत ना ? मन कतिया धटमाँव অনুষ্ঠান আরম্ভ কবার বিষয়ে পুরার্জ গাঞ্চ थाना करत्र ना। मका चार्वार वक वक्षन করিয়া মৃতন ধর্মা ও তাহার অনুষ্ঠান সব-नष्टमञ्ज मुक्कील धारणीम कत्रिशाहिल, छोटारमञ मरेशा भटत एन स्टेशिहिन। यङ विगरम

वानुकीन वाहता रहेक मा त्यम वाहर वाहर-अक्कार्याच्या अ**श्रीराज्ये** इहेटव । প্রতীত হইতেছে যে ধর্ম পরিবর্তনের স্থ-थरमना छेलाय नारे। धर्म शतिवर्छन माधन করিবার জন্য ঈশ্বর সহজ সূগ্র রাজমার্গ বিধান করেন নাই। সমাজের শান্তি ভক মা করিয়া কোন এহৎ কার্সা সম্পাদিত হই-वाके नियव वाजीक त्वान वान জ্যের দোঘাবহ শাসনপ্রণালী পরিবর্জিও ইই-যাছে ৰু আপাড়তঃ অনেক গুলি লোকের কফ বাত্তি কোন সামাজিক কুরীতি **উম**্ निक इरेगाएए । यमन श्रु चोजन वालीय त्रांतकः स्वन्यांनवादवानमय स्वांगतीदकः म् কিও হৃত্তে প্রান্ত যেনন সূত্র যাত্রা সাতীত সন্তুম। পৰিলোঁকিক স্থাপন অবস্থান छेलीर् इट्टेंड शास्त्रमी (उम्मीम कर्षे छ বেন্দ্র বিপত্তি বাতীত ধর্ম প্রিবর্ডন কার্ণোর मायम कर्ट्स भारत रहा। जिल्हांस स्टॉन, ध थरम भन्त मोशासन (कोरकत मरन) थानंतिङ इड्ट्स भव का एटिश क्ष्म नेटन भव्य हर्रे बस्मा अरे क्षेत्र कडहे लावित्य गाँउक, অধিশ চইটের ইশ্বর এবলী আন্যামণ পুরুষ cease करतम, विभि छात्रीकृतक बन्दीकि व्यव वित्रक किंद्राक अनुस्थान वार्यादान क्रिया अन् बर्गाहरू मुक्कालाच सर्वक । भवतः विद्यान्त्री अहे बाल पन्न भा पुर्वन काहा भाषाविक क जेसरेट्ड । अधि इत्या किङ्गे रेसमा शिक्क विष्यः १४२ विक्कि के बारक । खनाना रनटन धर्म मा काद कार्या त्य कत्था कल्या किए व्हेराहरू भोजकर एवं ३ को है। तारे का भेरे गण्या निक रुदेश(८५ ७ स्हेरन।

## भक्ष क्षेत्रक बादगांकका ।

( ( ( )

अनुकीत्यत श्रीब्रष्ठादिष अत्नदक अत्नक अ-শার তব উপাছিত করিয়া ইখার অনাবদাকতা अक्षान अविटल सब्बुक इंद्रेशांट्स । अनुकान काली आक्षतन खरिक ଓ छात्त्रमनी वनियो नाथा-রণ সমক্ষে পরিচিত হইতেতেন। বদিও জীহার। ংগশপ্রচলিভ যাবভীয় কুন্রাথা ও কুসংস্কার সকলের অৱশ্বর্কী হইগা চলিতেছেন, বদিও ভাঁছারা পৌডুলিক ধর্মারূপ বিষম জ্বলাল ইইডে আপেন্দিশকে সম্পূর্ণ রূপে উন্মুক্ত করিয়া এক মাত্র সভ্য পর্যের প্র অনুসর্গ কবিগ্রাড়েন, তথা-পিও আনেকে তাঁগাদিককে যোৱ কুনংকারাজন রূপে পরিচয় দিকে কিঞ্চিন্নাত্রও সঙ্গাচন্ত নহেন। এমন কি উহোৱা বেমন পৌতলিক ও জনাান। ধৰ্মাৱলৰীদিগকে অ ক জনগন্ধ ল নভ ও বিশাস এবং ছুবিভ আচার ব্যবহার সকল পরিভাগি কর্থানস্কর ব্রাক্ষ্মিবের সূতৃকীত অনুকরণ করিতে অকুতে;ভয়ে আহ্বান করিডেছেন, ডেমনি সপর क्यमे ाजाकक कृष्टे इम् गाँकातः। चालामत नाचातन मक्कारकष्ट्र व्यक्तिम्बाही जोकाल प्रदेशक प्रवृति শ্বৰন্থিতি ক্ষাৰতে প্ৰকাশনা উপদেশ কিন্তেছেন : এই রূপে অনুষ্ঠানে প্রভান করিয়াকেচন বলিয়া সর্প भ्युजेष्क्षभन्तमः आक्रियनस्यात्मः गामात्रस्यः भूगाः भाक्षतं कविवीतं ८६छि। स्१८मः स्वीटमः सक्तिकं स्वी-**ंकराज़ । त्या विश्व त्यां ब्यांगांग के। व्यां घरण व्याप व्** ভ্রিটি বলিয়াও সংখ্যাপন করা অইয়াছে: আপচ क्ष्म क माथ्रसूत्र ब्लास्कर् आनुष्ठीम अहसा व्या नरमान खेलाँडिङ कविप्राट्टम ध्यम नरह, किन्द्र Cकाम (कोब अ। काछ जेकान मन्मूर्व दिखाधी समेवा উচিয়াজেন ৷ বাঁহারা একা নকেন ভাঁহারা খীয় খীয় সন:জ নগো প্রভুত ক্ষমতাশালী ও বিজ্ঞ ক্রিয়া ক্রাসিন্ত হর্তনেও উলিচ্চের অনুষ্ঠান বিষয়ক मण्ड मराह कथा है और इन्ट्रेंट शास्त्र मा, किन्द ক্রাক্ষেরাও যে ভাঁছাদের বাকে; মুখ্য হইগা অনু-ঠানের নামে জ্বিয়া (বিচেন ইছা জ্বপেক। আকে-পের বিষয় ফি আড়ে গু বোক-তর অংবা কোন খাৰ্থের ক্ষীভূত হইয়া বে ভাঁহারা অনুঠানের क्षालिकृत्व मश्रीप्रमान श्रेत्रोटक्रम, जामि बक्दन ल विष्ठा कि कू तिविद्य ठावि ना। देश विद्रान्तिक है। ব্রাক্ষদিশের মধ্যে এই অনুষ্ঠান জনিত অনেকে অ-ट्नक भए लेक्षाविक कवियोद्या अ**मुक्तीम विवास वथन** मरल्य बलाहम विजिला सिथा यहिरलेक, जसन ভাগা যে একবার সাবশেষ আন্দোলন করা সাধনকৈ ভাইতে ভাই সংশই নাই। অসুঠান अही जामध्य श्लीविनिक श्रद्धी क्रेनाक्षमि निर्श

Partie in wieder critellengen aufer Striff esaciamiaco alfatma dela elan fa pro-প্রয়ের সহস্তর প্রার্থন স্বার্থন করের সভরত্ব বি-वान ज्ञान करा कांच कर्तका रहेशहरे। बदमहा-धिक छाडीक हरेल कार्यामध्यक्ष अञ्चन तत्यान-कावन कविकाण जोक्तनभारका जाहानी महा-শয় ভবানীপুরের ব্রাহ্মগদায়-দন্দিরে "ব্রাহ্ম সমাজ ও সামাজিক সংস্থারের<sup>?</sup> বিষয়ে যে ৰক্তৃতা করিয়াছিলেন, ভাছাতে অষ্ঠান লইয়া অকৃত ক্রপে ন্যালোচনা করেন। ভিনি ভাষাতে বিল-কণ ব্যাইয়াদেন যে, ধর্মোর সাহাধ্য গ্রহণ না করিলে সামাজিক সংস্থার কোন প্রকারেই সম্পা: দিত হইবার মহে; এবং নাত্তিকদিনের ত ক্ষাই माहे, यांहाद्रा गर्यमा विखाल्डरे हाल, यांहात। নেধলমার সুন্দর্দিনান্ত ভাষাবলিপরিপূর্ণ সং মাজ সংখার বিশয়ক গ্রন্থাদি নিখিয়া এবং অংহ শয় বাক্ণাইভার সহিজ বজ্জা করিয়া শবে किश कारत शल्दक मजु हिन्छ करिया ब्राटणम्, ही । তারা যেমন আগনাদের সক্ষপে শিদ্ধ করিয়া উ प्रिटन भातितम् मा, त्क्यांन बोझाद्रा दिनावितेल হাড়া গণে অভিশয় উৎসাহিত হইয়া সংগঞ্জিক সকল প্রকার আচার ক'বভার কুসংস্থার এক কংগে विन्ते कतिरस उँमान दन, यीक्षिक व श्रीकल्याः कुछ विश्वील क्रफ महत्व महत्व वरमक कोन नामिश्या ৰুল ৰজ ক্ট্যাড়ে, ভাহা এক দিবলে উৎপাটিত করিছে অগ্নির হন, পরে ধনাফতে কি নিগলে শৃষ্মালাকে কৰিবেন্— ছাহাকে পৌতলিকভায় ক্র হউতে কেন্দ্র উদ্ধার করিলেন ভেমনি ছাংগ্র নিমিত্ত কি আশ্রয়ন্তান গুলুও করিবেন, ৬ ৮-कल व्यक्षणाहर तक बादल भागा भागा व्यक्ति -लन का कालन, जीशास्त्र मानन त्मदे खान अम ম্পূর্ণ থাকিলে ৷ ভিমি ইছা ও সকলের **অভী**তি क विशामिशा छिटलम या. जाकानमाङ अहे छूटे मध्मत মধ্য পথ অৱলম্বন কয়িবাচেন, অৰ্থাৎ এক দাত্ৰ বাকেরে ওপর নির্ভর না করিয়া হস্তকে কিনি পরিচালনা ভারতেছেন, এবং যেমন পৌতলিক আচার ব্যবহার সকল আপনার সীমা ছইডে দুর করিয়া দিতে। চন্তেশনি আবার ভৎপরিবর্তে दिवक 19 अमान्द्रवाहिक विश्वक व्याधिक वार्वहेस्रि সকল আপদার পুত্রাণা নাধ্য, প্রবর্তিত করিছত-एकत्। काञ्चव द्वामाश्रम् निकारे क्रूनः कन्ध्र इटेटवन् । किन्न जीवात्र बन्ध्र छ। कविद्याचा व्हरजल जाश विदर्भव कंत्रांशधीती हैं। माई। देशांक कांत्रण मराकड् त्यांचगाक बहरक साहार मध्म छाष्ट्र। रकरण कला मध्याक माक्रिके जर्म कुरत करने कतिग्राहित, श्रथं जारा प्रश्रा कार्य कार्याण कार्यका मार्थाक्रणक स्वीच्छ क्छा क्ष

নাই, ভাৰন বৈ ভানারা বিশেষ উপাকার সংআছিত দ্বা নাই আক্রা কি ? ভাবে তাহা
ইতিয়ান শিক্তরে পত্তে প্রকাশিত হুইয়াছিল।
নাঁগোদের অনুষ্ঠানের কাউবাতা বিবার সন্দেহ
উপাতিত হয় উচ্চাদের সকলকেই ক্রপাঠে আনি
বিলেষ করিয়া অনুষ্ঠান করিভেডি, অনুগ্রহ পুর্বক
ভাহারা দেন ভাহা পাঠ করিছে উদাদা না কবেন। একবে আমার ইচাও অভিনাহ যে প্রামা
সমাজ গেই বন্ধ ভা শুক্তকাকারে যুদ্রিত করিয়া
সমাজ গেই বন্ধ ভা শুক্তকাকারে যুদ্রিত করিয়া
সমাজ গেই বন্ধ ভা শুক্তকাকারে যুদ্রিত করিয়া

(क्रमण्डलायांचा)

#### सहवान गांत।

शक्त ६ देवसीय जुरस्वयम् मध्याव्यंकः स्वीमाकः प्रमानिकः प्रमानिकः कर्मानिकः कर्मानिकः प्रमानिकः व्यम्भिकः कर्मानिकः व्यम्भिकः व्यम्भिकः व्यम्भिकः व्यम्भिकः व्यम्भिकः व्यम्भिकः व्यक्षः व्यक्षः व्यकः व्यकः

বিদ্ধা থকাবেলন্দ্রার বিনায় বিনা থকা পরেলি আমেনেট শীপাই পুনারিটারিক হইবে। ইছিনে স্থান ব্যার জন্য ইংলকে ভার্ম স্থিতি ইইছেছে। আনন্দ ভারতোকে, এবং ভারতিয়ানক সাজী প্রথান পরেন ব্যা শাল করিলেছেন। আজনান সংগ্রেই ব্যাপ্তান হইবে ইংল্ডের ব্যাকেন্য কভান্য ক্লিকে বিন্তোস পক্ষ, এবং ভারার খাটীয়াল খর্মেন্ কাল ভান্ত

শ্রীযুক্ত কেশবচন্দ্র সেন প্রকাষক সল্পান কর্মান করিছে। করা অপর একটা ব্রাহ্ম ভাতা ব্যবেশ সাই ও মালাক সেনে প্রাহ্ম একটা ব্রাহ্ম করিছে। আকাশ করাবাইভেছে। ভংগাঠে ব্রোশ করি করিলে। মালাক করিলেন। মালাকায় কই কেকাথারি।

মনুদ্রের অভিনুধে **গমন বারিভে** আরম্ভ কবিল। 🦠 कीत उ महत्रभटमञ्ज निकित्र विशोध करेनाम करनाम कार्य है। शटमत निक्षे इरेटच मुद्रनाती स्टेटच माजिलाय, वा-ষং আমাদিলের সেহা**ক্ষপূর্বলোচন পরি**লেখে পার किश्हितियाक एम्बिटक लोग्नि सा। एक मानुक्ति शक्षरम्भ ! व्यामाणियद्यः विभाव माख, प्रकः लेकियः। वर्भ । आभाविभातक काशीर्वाप करा, एवं आकि भेग । दः अभिन्तान । क्षांगारभव मक्षार नमकातः। क्षांवरम ३ गर्काञ्चर्यम् कित्सम्। भाषम् कतिमान क्या चमा-**टक्षां भिरमत् दश्रम्मत मक्त्रां ५३% क**्षिक कर्षे लाम कवर निरम्भक्षामी अन्नाम । त्य भाविक न्यायः भण्याः सर्विद्यात् भागामः भृतासम् वास्तिकः ५ ४०५ कारमृद्रम् प्राप्त कविरहाङ । ऋषा अववा ४३क, अक दमने जाकराक्ष्म नंदिलाक लाक्षा लावानसंस काचा 化甲基甲甲醇 医二二二甲基二甲酚酯 印蜡树 安然中心 ব্ৰহাৰ ১৭ট প্ৰয়েষ্ণ ক

म्यामपुष्टिकर ५८ था ४७३ स्टब्स्ट म्यान विकास १ । १०० किर्दिया जात. आध्यक्ष द्वादि स्कृत कार काल्याव भृष्ठीत राहित्र प्रदेश प्रदेश है । वहा अवकार प्रवर्धि र्राक भिष्य करिएस्ट फोनस्टर्फ । अनुप्रान्यक्षीस्य खामर्पष्टश्व मर् अलीव में अल् न्ट्राफ र क, कल জীহারে স্বল্পী কর্মি জন্ম ক ১,১লব্দ চলা হয় विकास प्राथमिक स्थार मा अपनी देवन परान राष्ट्र विस्तिको भगा ५० लाहको ५८,१५८ । अस ক্ষানিকেন্দ্রর 🕆 ১**বাস** হল। স্পান্তর সংখ্যান 🐒 🕏 সং 阿佛萨 电轮换 别陆州 经货币书籍人工经历 化化 ব্যাপান্ত ভিড ভালা আলি কাল কাল কাল ख्याक कानका विकेत । तिवास करान काक को नारकान चित्रं में जिल्हा आरेश का भाविम ११९ ार देश गा. १ १८४४ में हिस्स महास्त्र के अपन 聽聞 可能的 网络外有一个一个老者 "你了上,你有什么时。 प्राप्तस्य है,ब्राह्म प्राप्तिक का राज्यकार रहा । अपूर्वे प আন্মানিব্যব **সংস্থ** --- কে শিক্ত একজন স্থানের ৩০ कर्ने हे हिंदेन बार कर के विश्वास क्यों के ब्राह्म 開發 台 机洗槽 化分别图图 上原结体 黄芩柳 c断对um s中東一上的(內閣) 对filessim 的现在分词 實際 यसीकी भारत्य दिस्त वर्ष प्रमुख्य काला कि है जि कोरी गुकाश्रीताः व्यक्तरक कुलावत लागः। विश्ववना कः िहां दे एक्टी एम ले। । यसम २ वन किकटल कहिन काफोर क्वाला भाग है वावहात करिया धारक আহারণ জিলান দ্বনা ক্রিয়া প্রেক্স, জন জিনে ও ভাষার কিন্তার শামন করে, জন চারিলাচ গ্রাহার আহম্যে জিপার উচিয়া খলে, এবং নার্ম দল व्यवादानिकारक भावने भिरुक निरुक्त करेता हास ह कलक ठीराव वनिवकात त्या नारे। अना।ना ल्लाकान्त्राद्योमित्या मत्मक **व्या**पता विविध गिरुट्य करपालकथन कतिया पाकि। जानता गांकानी हरे-

मां द्वानम्दर्भं क्रांतिकाहि देहाट क्रीहाडा नक्दाहे धर्म व्यक्तान कर्त्रिया न्यक्ता। आमानिदर्भत नदस् व्यास नक्षत्रक उ०ति नामक वाशिका आद्धाः क्रिहा पा मोक्टिक्ट ६ व्यव मान्टिक्ट ६ क्रिहा क्रीहा कर्तिसा द्या व्यव तथादम् अदिनात भाषा विष्ठ्यन कथिए ।

## **एक्स्राह**े हैं क्स्क्रियाहि ।

ননীয়, সাম্মীল, গভীর সমুদ্র চতুর্দ্ধিকে এবং
পান্তবা ভাষার মধ্যকর্দী আমরা যে রভের
মধ্যনিক প্রভাৱত আকাশ ও ময়নেত্র সহলোগে ভাষার প্রিনিক স্থাপিক হইগ্রাছে। সমুদ্র
মূলনে মন্তবার প্রানিক স্থাপিক হইগ্রাছে। সমুদ্র
মূলনে মন্তবার প্রানিক স্থাপিক অলান্ত পরিপুরিক
ক্যাপ্রকার মহছাতে, উন্নত আলাত্র পরিপুরিক
ক্যাপ্রকার কার্তিক সমুদ্রের অপকৃষ্ট চিকাও
উদ্ধান্তবার কার্তিক সমুদ্রের মন্তবার বাবের সে এক
ক্রিক্টি আই। সমুদ্রে আমিলে লোকের সে এক
ক্রিক্টি আই। সমুদ্রে আমিলে লোকের সে এক
ক্রিক্টি আই। সমুদ্রে আমিলে লোকের সে এক
ক্রিক্টি আরা গ্রিক্টিল সমুদ্রের ক্রপান ক্যাপ্রকার ক্রিকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্যাপ্রকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্রিকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্যাপ্রকার ক্রপান ক্যাপ্রকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্যাপ্রকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্যাপ্রকার ক্রপান ক্যাপ্রকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্যাপ্রকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্রপান ক্যাপ্রকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্যাপ্রকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্যাপ্রকার ক্রিকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্যাপ্রকার ক্রিকার আন্তর্ভার ক্রপান ক্রপান ক্রিকার ক্রপান ক্রপান ক্র্যাপ্রকার ক্রপান ক্র

#### **ब**्तकात : ३ है क्रिक्रमाहि ।

আন্ত্রা আন্ত্রা সংখ্যা সংখ্যা আন্ত্রাস্থ্র ন 电新闻图像 化铬 化铁铁铁 帝明人 网络李老哥所小 中羅問 人 राज्डिका,चुक्रास्त स्व कृषिका शक्षे छ। तुष्राकारः इत्य हर्ग भन्न विशिक्षक । किली ब्रायन कार्यन । रक्षत्र, भोगमीमग्रातः विभागिताः । अ अनलमान्यमिरधाः र्जिन्। 🖎 क्रांच । वस महान प्रका साक करा नीरा প্রায়া হাইবেলের অস্ত্রণক্তাসভোর মাত প্রকৃষ্টি। আন मानिद्दशत्र खोकां च व्यानाकराराया (मार्योखनिक')। পরিত্যান করিয়া এক ঈশবের উপাদনা করিছেছে हेका स्थानिका किन अन्य कास्कापिक क्रेटिनन ! विश्वीत भएक अप्रातासकताहि भएकी ६ क्रिके स्वर्धातक । मोहलाहका एक मक्टम खर यक भीष दमभाश আ্রার সংখোধন ও সভা প্রচার করিছে পারে अर जाइ रक्टरे शाद्ध ना । जिति आपामिशस्य -१mil'> गम्म - क्रिट्ल विटमनक्री अनुद्राध क-्र । महिल्लमः दिल्लाम् स्य अदमनीय स्वर कर - . পেণ্ডিড চালে উল্লেছিয়া ইংলাও মদেশীয় ्जाकिएरमान अञ्चलार्थ भागमा अरम्भ छोटा एकटेरम क्षीश्रहा सका शत कि कहे हे स्थापन शीच हिटल श्रीरतन " क्षेत्र, अस्तरमञ्जे एक्सिम्बर्क मुक्काम कविष्ये ।

#### STREET TO CHARMES ! THE SOUTH

আদা প্রিনার। আতি স্থানিক্র ক্রিক্রিক ব্রে: খুকীলাননিক্রের উপাসনা স্থানা থাকে বিধান ন্যান এই কর্মো সমাধা করিয়ার ক্রিয় ক্রেক্রিক্রা

उभाजक ना बादकन, जाका क्यान होता बादकन PICES RISE NOTED BEST MESSINGS. कारता नारकत सकताक क्रमात क्राविक विकासना করিলেন। এই সান হইতে মাঞ্চার ১৯ ফোন माक मास्तारकत याजीमिरगत सवापि तकत क्व योत्र उत्कानिक वरेटल्टाक, व्यवः मनदेवरे व्यक्त वारक व्यञ्चक वरेरकर्ष्ट्रः काथरम पुत्र वरेरक नमूज তীরস্থ একটা পর্যত ও কড়কগুলী রুক্ষ দেখা বেল, পরে "কেটামেরাণ" নামক কডকভার মাজাজী ডিজিনৌকা সমুডের উপর দিয়া জাহাজের ছাজি-गूर्थ जामित्क नांशिन, अवश् करम करम छीत्र प्रदर ব্ৰহৎ অভালিকা ভাকানিকোর প্ৰাকাণ্ড কায়া আমা-দিগের চকুর সম্মধ্যে প্রেকাশিকে শরিল। জাহাতের উপ্রিভাগে রাজ্ভাগ্ন আচল হইল,সমস্ত কর্মাচারীপণ लिंदमार्ट्स प्रतिपूर्व इटेंडा, अवर मकरलाई मद्दांनग्रहन জীরাভিথুখে এক দুটো দেখিতে লাগিল। মুহুর্ট্রে-क्षित्र मध्यर स्किटिलीय भारक वर्षेण सम्भव निश्व छिछ ক্ষেত্র আবং *আন্ত কান্ড ব্যুগ*িনার **প্রান্তর** द्योकार मान्ना व्यागता गातिहरूल अहेलाम । "५ थन ए माल्या क्यां भिरा दलोड्डियान, दलाथाय यदिन 💒 क्षेत्र कर्णा स्थानित्स्त्र । अस्य भागा विकास का পানি ক্ষুত্র এত আমাদিকের কক্ষে দিল, জাছাকে भिश्वक भाष्ट्र व पंक्षित्रक पायु क्रमीयावतस्य श्वीत-পন্ন আন্য আপিৰামী তেনী মহাশ্য এই ক্ষুদ্ৰ ए हमी अभि भारे विष्ट ६५०। । भागांपियां स्वा भाषणी ट्राकाट लोटेडिया मिलाम, एवं माव-परित एड्लांब कफ निया प्रक्रिकाल, संक्रितिहरू मगञ्ज अक्ट्रे ज्यमावश्रान्छ। एका यभि इसीकाइ दिलात क्ति मा भाषा यात्र, लोहा उडेरल तक कारण मीरा ভর্মিত সমুদ্র মধ্যে পভিত হইয়া একৰু ক্সাপ্ত उद्देश इर, छै। कि छर्तानक छत्रका कि लक्षानक আংশোনন। দাঁড়ী গুলা নিজান্ত অসভা, ভাঙা-দিপের পরিধান একটু ক্ষুদ্র কৌপীন, ভাষারা विस्का क्रे पुरे ७ वस्तान, मिथिए नामा क्रे মভ, ভুফানে ও ভয়ে আমাদিনের গ্রাণান্ত, কিন্তু ভাহারা সক্ষদে দাঁড় বাহিয়া চলিয়াছে আমাদের निटक क्रिटकर्मा करब्र गा। आमामिनटक कीत्रक कताहे काशांपिरभव जिल्लामा हेशाल आयंत्रा औ-ষিভই থাকি আর মৃতই হট: প্রাথার মৌকার विक्रांक क्षेत्र के के स्वाप्त हो के स्वाप्त রিয়া কুলে পে ভিনাম।। নিয়াপনে তাইভার্থী বিদার জনা তথা ৷ ভিরোপরি *অভার* ভারাত खग्न निर्मिष्ट क्रियाहिन अपि निर्मे क्रिके निर्मिष्ठ (शालान नागिहाटक्। लाको व्यवस्थन कतिया नगरम छेडिएल क्या । करण क्रांस महाह STATE OF SHALL SEE STATE OF SHALL SEE STATE OF SHALL SEE STATE OF SHALL SHALL

THE PARTY OF THE P

## ्रमुक्त अस् वास्थि।

পাল ক্রিয়ার স্থাত নহেশ্বন বন্দোপা ধার ক্রিড কলিকাতা 'নিউপ্রেন্' বল্লে মুক্তিজ। এই পুস্তকধানি কএকটি মুন্দর নীতি-গর্জ প্রেরন্ধ ভারা পরিপূর্ণ। প্রস্তাবহুলি উৎকৃষ্ট উৎ-কৃট ইংরাজি এই হইতে অনুবালিত হইরাছে। আলার্থক মুবক্তিগের এতং পুস্তক পাঠে নিশেষ উপকার হইবার সম্ভাবনা।

" বীরুরাক্যাবলি " শ্রীযুক্ত হরিশ্চন্দ্র যিক প্র বীক্ত, ঢাকা মাগলটোল স্থলত গত্তে মুজিত।

ণ পারনা দর্পন " এই থাসিক পত্তিকার ছুই সংখ্যা প্রাপ্ত ইইয়াছি:

" বিসন্ধা-ন্তার " প্রাদারিকানাথ ওও পরি-নীড়িভ, কলিকাডা ওপ্তমন্তে মুটিভে

এই পুস্তক থানিজে প্রাভঃ নধ্যাক্ষ এবং শা সংকালের ভিনটী স্থোত্র আছে। ইঙা অনিলামার চন্দ বিরচিত, এবং স্থানে স্থানে উৎকৃষ্ট চারে প্রিপুর্ন। উল্লিখিড় ভিনটী স্থোত্ত গুটার বিল লিশিত অংশ উজ্জ হইল। সোপ কবি পাইকব-

## লাভঃকোর।

विदयं कांत्रभा हिन् बायरकत स्सामः उन और जिन्सूपी, गारा, करुके नेशव, ाच दक्ष भाषा कोश वर्षिनादत लोदत र উষার শৌকায় ভাতে জোমার সৌম্পা ভক্ত অকণ কৰে। এফ্টা কুপুষে: सदर ष्यानत्मन डालि युष्ट गन्ह स्तर्भ निकार कोमान, भारते नागरत, बाखरत जाल, जारहे, मधीकृतन, मानदन, केनादन पूर्मीखन मधीरन, कांद्र ना युक्ता आभ, स्थान व्यक्तिम्बन, भाग भाग लाशीमल मिलि लक्षार मञ्जूष्ट -रदम्भदक मा खाँदम धामदन्यव व्यादक १ टकाबार भें देवचा यात्र जन क्षेत्रकाचि ' কে পারে বণিডে ভব অন্ত মহিন<sup>ি</sup> भाइटलाइ भागीकुम असदम व्यामात्र ारिमां निकुष्यः । एव ध्वीजि-सूधांनस्य विष्ट अन्य बाद्य बाद्य, मानारेश भ्रकुमात कृत कुर्स्टमात्। नियाह विद्वारम एख राष्ट्रक मेलिन, भारताहित्स अस्तिन लेखिल निवास : 5 दकात रहेटल क्रथी—स्मित दूर्म---अखादन करम करम दूरेन मनिन्! वर्षास मगरम, नाथ, रक शास्त्र योखिएल ष्ट्रविशे एक यात्र का निक्त का नेदन

করির বসজি, কেবা জুলিবে ভোষ রে? ভূমি শান্তি-নিকেজন। ক্রম্থের পন, অধুনা-রজন, চির-প্রীতি-অজ্বন। ভূমি চিত-বিনোদন, মানস-রঞ্জন। মাধ্যাক্ত-স্থোত্ত।

হ্বন্য-কমল-রবি। যে দিকে নির্থিননগর, কানন, জলে, বলে, অন্তরীকে,
সাগরে, পর্যকে, পথে, ছাটে, গাঠেন-দেলি
ভোগারি অচলা-প্রীক্তি; উথার জুষায়,
সন্ধার শোভায়, নিশাকালের গান্ধীরে।
রয়েছ প্রকাশ ভূমি — রক্তেছ প্রকাশ
সেই কপে ও খলাক্ত কালের শোভায়,
রঞ্জিয়া ভারুক-ক্ষম ক্রন্য- আক্তাশ.
ত টাইটা, গায়, প্রীক্ষিত্রনাক-কুন্য

त्व निर्मालक महि निर्माण सुदेन एड्रेम्स्ट वर्ष मध्य महिलारियक उद्धार मध्य एक मध्य रहेस्ट अहि भ्रम अन्य प्राप्त कर्म अस्ति कर्म क्ष्मित अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति स्थाप त्या स्था द्राप्ति वर्षा क्षित्र अस्ति अस्ति स्थाप राज्ञ स्था द्राप्ति अस्ति अस्

्राव वाहन सम्बाद्ध रूप । वह छहा।
भूदत्व के सुरा स्थार एक नही । रहा चन्द्र प्राप्तकात समीण अवहारमा दर्ग महोद्देश प्राप्तकात समीण अवहारमा दर्ग महोद्ध मन् । स्थापन स्थान सम्बाद्ध , प्राप्त के कि प्राप्त । स्वाधिन सिंग सम्बाद , प्राप्त के कि प्राप्त । स्वाधिन सिंग होता । स्वाधिन प्राप्त । स्वाधिक क्रिया के कि स्वाधिक प्राप्त ।

## मार्भाष्ट्रभाष्ट्र

পুণাৎশুর বাশ-দালে কন্য-খাদাখখালি! চইয়াছে যবি কেন্ট ব্যাঞ্জিল
এবে দিকচয়। আনা, খেই ভাগান্ত্রন্ত হনম-আকাশে নেকে গোহন-মুর্জি তা প্রকাশ, খনা, ভাষার জীবন! কি মুক্তর রূপ তব—অনুপ্রানীয়,—
মুদ্যাক্তাপিত প্রাণ, ক্রেক নেনিলে टक्रण समिति इटक शोहेशाटक खामा सम्मादत सम्माहत सम्म बन ट्यानि कुरूम, शोमह, तिति, सम, त्यपभावा , शासाहत कुल लाउँसारक द्वस्ति हि । सा जानि कुनि दह साथ, कुन्दे द्वस्ति ।

विश्वप्र- एक्सी करत सुनीक- व्याहां से तिल्लाहरू, किया गरित, क्सी गरिनाहरू । कर्णा तिल्लाहरू, मृति, क्सी गरिनाहरू । क्लिकाहरू देन कर्णा क्रमण व्याहा । व्याह्म हिल्लाहरू , आण (मृश्विष्ट) द्वासात । व्याह्म व्याह्म । व्याह्म व्याह्म व्याह्म । व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याह्म व्याहम व्याह

# বিজ্ঞাপন

## मक्य गर्। भृतकात।

मुत्रकादितं करा हर्ति श्राचा निर्मितं करा स्ट्रेमादेश। श्राचा निर्मितं वाका प्रवाद स्ट्रेमादेश। श्राचा निर्मितं निर्मितं स्ट्रिया श्राचा स्ट्रिया श्राचा स्ट्रिया स्

# প্রকার ৫০০ টাক। I

Salah Sa

প্রশ্ন । ঈশ্বন বিবাহে তা দাব থার মত কি ও বেদান্ত দলনের মতের দাহত ভারার প্রভেক কি, কত্রা বিবারে বাংশকের দক্ত কি ও বেদান্ত ক্রিনর মতের সহিত ভারার প্রভেদ কি, এবং পরকাল-বিস্তার আভি বংশার মত কি ও ক্রেন্ড-ক্রিন্ত সাহত সহিত ভাহার প্রভেগ কি २ शक्षा जीकारकार त्या मण त्याक र्गात्मस्य मण्डा विस्कात्मर तारे तारे मण त्याक मण्डात्म मण्डा पार्यका कि कमा छेटकुके उ केशारमम

ও প্রশ্ন ব্যক্ষিক দারা প্রিবার-মধ্যে ও সাধারণ সমাজে কি ক্স উপকারের স-স্তাবনা ?

# দিতীয় প্রস্তাব। পুরস্কার ৫০০ টাক।।

> প্রনি। ঈশর-বিষয়ে, কর্ত্তব্য-বিষয়ে ও প্রকাল-বিষয়ে ত্রাক্ষধর্মের মত কি ?

্ প্রশ্ন। আক্ষাবর্দ্ম ছারা পরিবার-মধ্যে ও সাধারণ নমাজে কি রূপ উপকারের সম্ভাবনা ১

५० लक्षा विक्रि, मङ्ग्रम्म ए थाँकीम् माउत महिङ त्रीकार्य-माउत त्राम् क्राम् क्राम् क्राम् क्राम् क्राम् व्याप विक्रम् व्याम् क्राम् क्राम् विक्रम् विक्रम् व्राम् क्राम् क्राम् क्राम् क्राम् क्राम् विक्रम् व्राम् क्राम् क्राम्

ক্ষিত্র বেবলক বিন্যু লিখিত প্রকাশ নাজগার্মীর মান লক্ষণ বাবিলেল বিশ্ব সালের মুদ্দিত তামপ্র্যা প্রিত রাজ্পনা বাবিলেন্দ্র কা ক্ষিত্রান প্রাক্ষণার্শির বাব গার্মি কা ও ্রেটিনী পরিকার প্রকাশ ক্ষেত্র কান কো ্র বাবিতা ভালান্সালি প্রাণ্ডিন্যু সাহা।

## প্রিকার অবিম মূল।।

कितिकाल। এবং मक्त्रमण शहिकीमण्डे शिक्तिकाल। এবং मक्त्रमण शहिक किश्रम भूमा ठद-भरतार क्ष्माय कि मारम्य निश्वा रक्षेत्रम कर्त्वम, भरतार भूमा क्ष्मारम मारमाशी एडेरम ममाजरक अकार भिक्ति अक देवेरक, देश। जिल्ला मिन्द्रा भूक स्वान्त्रित स्टल्ट प्रति क्ष्मा भूका भागितिहरू दिवस कर्त्यम जाला च्हेरम जिल्ला मारम मानिक क्षिण दिसारम क्षिम क्षा शहिरत।

# নিধ্ তী। নববর্ষের স্থোর নবানি স্থান নব্দিন স্থান নব্দি

चात्रम प्रणा (निविश्वास्त्र करा) " (गम्बरमात्र केना) मानिक प्रणा

ार देशलीय गामियों संस्था प्रमेश प्रशास सम्बद्धा । स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान



बच्चोधकमिमधेकांभीकामा किसमानीउनिमः नर्कान्छः । उत्पर्व निष्ठाः कानमसः मिनः चष्किमहत्स्वत्रेक दमगाविजीहः नर्कवाणि नर्कानिमक् नर्काससम्बद्धिनर्कत्। किमक्षत्रकाण्याधिममिकि १७४० छटेनाद्वाणांमनमः। धीते विक्रमहिनक उत्पन्नविक्षे उत्तिम् श्रीजित्तमः विश्वकार्याभामक जपुणाग्यस्य ।

# निनीथ मगरस मागतवटक डाटकात खाळ।

ছে বিশাধার বিধাত। পুরুষ। কলম্পার্শ বিশাল সলিলময় সাগরবৃক্তে আ-মরা এখন তোমার অভয়পদ শাঞায় করিয়া ভাসিতেছি। এখন স্ক্রিকেই তোমার অনন্ত স্বৰূপের পরিচয় পাইতেছি। উদ্বৈতে নয়ন উত্তোলন করিয়া দৃষ্টি করিতেছি আ-কাল তোলাকে পরিমাণ করিতে সক্ষ হই-ভেম্নে, নিধেতে দেখি সম্পন্থিত বি-তীৰ সাগৰকৈ ভোমার অপার করণা অ-ভিক্রম ক্রিয়া স্থিতি করিতেছে—ভোমার महिन्न किन्नुतरे कुलना इत ना। अरे नावाय इसा लाकानत चना हुनम शर प्राप्त का गोदनंत्र (मणा। स्थानता त्य स्थानिक तांद्या उन कीए करनाम क्यांनात्र मिह्न जाति हो। ata i Mar aatea Attitude Cana PACT. DER APPLIE MINISTER EM ar i de archa alba la viria baba ACTION OF THE SALE STATES

इहेशा धामादनद "उवसीट क দ্ৰুগামিনী कतिएक्ट्, अदर मन्त मन्त हिर्छात्त अके তাপ দুর করিতেছে। হে জ্যোতি বরূপ। যেমন নিজনত আকাশ হইতে এই চলা-भार विभव कित्र मांगतनक मम्बा व রিতেন্তে, তোমার শুভ করণাম্ড ভেমনি অৰ্ভ্ৰনপে প্ৰশান্ত হৃদয়ে ব্যিত হয়। প্রাতে দেখিলাম তর্ণ ভামু ভোমার যান যোৰণ করিতে করিতে সমুদ্রগর্ভ ইইছে অপুর্বা মহিলা সহফারে পুর্বাদিকে নমুখিত इहेल, अरमीय काटल शिन्छम प्यासामाटक লোহিত রঞ্জনে অনুরঞ্জিত ক্রিয়া নীক मिलन मर्नान जागाति ब्यां किः इंगे विकीर्न कहिल, जावात होरे निशीध नमहत्र जन्म-कर्ण कुँउनकर्ण स्मीम्पर्धा द्वित्रश क्षण्य केष्ट দিত ইইডেছে। আকালের অগণ্য এলীপ-माना जामारमञ्जूषी रुहेश अथ अवस्ति कंत्रिटण्डह, नमीत्रा छत्रम्यां मृह्नम् मक्शनिक हरेगा मधुमस गुरुक हिन्दर्क स्मी-हिक क्षिटकार जागात महान की ई प्तरिष्ठ (विष्ठ नश्न अनग्र, श्रेगश आह-विक प्रदेश । अबे विश्वास सिख करासा गरि

আপেনি ভবে কেমন মহান তাঁহা জাবিতে लिया या कि विद्या चारितमा स्थि। क्लिमिक पारतरम् स्था एक एतिस এই अनस्ना প্রদেশেও আলোক বর্ষণ করিতেছে। ভূমি विटम्पन असित शुद्धी समादम्त क्वांवि व्यदशं-জন স্পান্ত দেখিবা সকলি আমাদের অনুকুৰ कितियां द्रांचित्राष्ट्र। आमक्ष (पथारम घारे एक गांत करूवा नित्यायत **करत**्यामातमत मक इंग्डिं इह सा। कांश्व करूनांत्र केनव লিক্ত করিমা আমতা এই ভয়ানহ সন্তা शर्म भाषामात क्षेत्रच<mark>्चाक्म कतिला</mark>म ? দ্বৰ মাগৱ ধনি জোমান আদেশে নিশুরক हर्नेन एएवं सात जामारमर एवं रक्षां ? प्यांबारिका शनिक्षत वृक्ष विक्षित दहासीत हरस আমাজিবনে সম্পান ক'ল্যা কিন্তিত হই-शास्त्रक, कृष्य । अखाव भाग व्यागानितास ক্রোভে রখা ফাবছেছ, এব ফে স্পরিচিত पारका नामशंत्रतक सर्भा योहेत्र तमर्थात्वक दणानीत अनारभ नक्रवादे सांगारम्त समुनुस स्ट्रेट पर पर नार्थः क्षा गटक सावित्स की भर त्रशुंह नहीत् तिहरूकन रामान इत, व्यंश িতি এ নেৰা দে কিংবৈতিত বেশ্ব হয়, অগম স্কু-গ্রাম শীলামা পর্যাতেও পরিকার পথ প্রস্তুত क्रेशि वंतरक **वाभग ध्या वाभार**गत মাভার চেলত প্রিভাগে করিয়া কভ মুকে পাৰিতাতি বৈউ ভুনি ক্ৰ**নীয়নায় এখা-**নেও বত্ত্বের পরিত জাহার ও পানীর দিলা নি মুখের জন: জাল দিশকে মাতার ও ভাব জানিতে পিতে: া—ভোষাৰ বজে মাতৃ কেন্দ্রে পাত্রা নাই · <sup>জু</sup>হে মাত কোনার ্দ্রময় চনণ্ স্থাপে, দুখ্রিত আত্রণকে ज कान यनिद कई सांगादमत नवाग समिता निक्ष के अपने पाक्ति (में आसार केरिएन) मझरम् का १४ फिल्लिक उपरिश्राम लकाकरन कुळ के। तरनहरू नेना है। उपाणि याभारताः अकाना । सङ्ग्रेट्स विक

कन मा इस ट्यामात निक्र करे जामाटनत व्यार्थना।

अं करमवाविजीप्रः

## उन्धिया थात्रा

खम निर्भात निर्मीय ममत्त्र यदकारन লোকে অধর্ম নিদ্রায় অসাড় ও অচেতন-चात रहेता बीटक, बदकटिल कूम काद-िह-ত্রিত স্বপ্নবৎ ঐহিক ও পারলৌকিক মুখ-লালশায় লোকে অবশেন্তির ও বিহনলচিত হট্য়া থাকে, তৎকালে সহলা জ্ঞান-গগনে যদি অখর ভাপানিত মহাস্থরোর আবিজ্ঞান হয় তাহা হইলে সোনাজ্যকারনিম জ্জত মানবীয় অন্তৰ্কক বিভান্ত আকুলিত ধইয়া भार ५ ज्वर मकरन म **इत्य क्रम्य** करा है আবিদ্ধ কৰে। এতলিশক্ষণ ঘট ঘট ধশা व्यक्तिमान व्यक्ति श्रीवर्तातः ममनिक अति-দাৰে প্ৰচলিভ ছইয়া আসিতেছে ৬-**छ।** ४०३ शयरम **जनसङ्** छश्र अप्रतिभूक উপায়াবলিতে দেশ পরস্পরাব এচারিড म्द्राधिन । প্রাস্থানত নবে স্থানিত প্রত্য कांग काटनहें माधारन लाक ममोदन जो फरनीय **एय नाहै। क्ल**िट्ड ७ थंथा-কারে ফেরপা বিয়োগ সভোতে ও জন্ম ভোজে হতোধিক। ধান্ধপ্রিয় নিশাচয় शक्ष भक्तीनन कर्षाक्षद इक्टमा वज्र प्रिया त्वादक नयन खेयीवन ७ रिष्यं केतिएड भारत, किल अगडाधित जात अवार्षिक लोक गंगीरनान महा कविएक भारत मा. হ্ৰয়-থাত স্কাকারপূর্ণ অজ্ঞান তহায় অ বন্ধিতি করে, এবং ইচ্ছা করে চিন্নদিন সিদ্দা অবস্থায় জাবন অভিবাহিত ইউক ৷ পরস্ত क्रिश्रदेश शास्त्राः देशान । अस्ति । अस्ति । श्रहे वित्रकारी नाम । एवा प्रकार प्राप्त प्रमादन रकार र कड़ गरील जनक्ताकारत उप THE THE PROPERTY OF THE PARTY O

বসনা উষা সকল মোদনীতে অংলোক ও

ভানন সঞ্চান করে, অম্যানিনীর অবসানে

সেইরপ সভাস্থীরণ সঞ্গালিত হইতে
থাকে, সকল হ্দর লাগ্রত ও আলোকিত হয়

এবং প্রভুল করে ভোতিস্কাশ প্রমেশরের

মহিমা গুণ গান করে।

বর্তমান সমরের তিন বৎসর পুর্বে यमि आभोमिनादक (कड़ किन्छोमा करिएकन, কি কি উপারে ভারতবর্ষে ত্রাহ্মধর্ম প্রচারিত इहेटर जोशं हरेटल इसक आगता अहे বলিয়া নিরস্ত হইতাম যে যিনি ত্রাকাধর্মের প্রের্মিড। ও প্রবর্ষক এই সকল উপায় তিনিই জানেন, কেবল এক মাল বিখাম थांमांतिरगंत शरक, रमरे विश्वाम अवलयन ক্রিয়া আমরা সধল চিত্তে আশা ক্রিভে পারি যে 'সভামেন ক্রতে নান্তং'। মতই कांश शाहरकरङ् धाहे विशास व्यामापिटधत स्भारत ७७३ तमस्य अमेरकट्ट वनः देशह मदम मदम विश्वस कार्यत छै। अक हरे কেতে মন্দ্রার আমরা উল্লেখিত উপায়াবলি ার্নান্ত স্পার্টকাপে দেখিতে পাই। কি बना दला योग्न ना, किछ विद्वपना क तिदल विलक्षन द्वांत्र इत्र दय वङ्गिवमाविश ভারতবর্ষে পরিবর্তন এবং উন্নতির চিক্ আয় কিছুই লক্ষিত হর নাই। পাধীনত। **ও ख्लांगाधकदर्वत मदम मदम भूणिवीयत** गर्वटकडे चारमाधन विस्ताव ७ गतिवर्डन मुके बरेशा बांदक; किन्छ जातस्यदर्व गकनरे স্থির অচল অস্ত্রভাবে চলিয়া আনিভেছে। कि अर्थ विसंदर्भ कि तोकतीं विषया, कि नामाक्षिक व्यानात अवस्था विवरण, मकन विषदार हे नुभ आहल विज्ञीय द्व जिंकि इते। अञ्जाः संदर्शान जाकार्य अस्ति अस्ति अस्ति है इर्ग असन दरदर्भक् मृत्यूक्ट कार्यक्का दन जाते कि छ-शास कारो नगरूकत्थ काहिक रहेता.

व्यववादन करा जरूक ट्याप रहा नाहै। काछ-थियता शिक्षणकोत स्थातत तम्म ७ छ। त्रख्वरचंत्र महर्या धकरी व्यक्ति व्यक्तिमा-मुना विकिञ् करा। च्यारियम प्रिष्प सान क्हेंटल क्षाता क्हेबाइ भूटर्स छेळा दिन्या ध-ৰূপ হীনদশাপৰ ও অজকারারত হইয়া-हिन त्य त्वह सम्बन्हे व्य लांग्ने करहे गाहे कथात्र ऋशविद्ध भृष्टीयसम् सम ाहर क तिरव, कियां कग-अर्व कतिका अठाति । হইতে গারিবে। সংকালে পারব দেশে भक्षात चीत वर्ष अगास कात्रव छवन चात्रव দেশ অভি ভয়নক অবভাতার আলয়ছিল। क्यान्य स्थानितम् क्यास्टक(माध्या क्रिक्तः) মেৰা, অন্ধা, মোনিতপ্তি,এবং পৌষ্টালিক উপাদন।। মহক্ষ অতি স্মানা লোক ছি त्नन, कें। हांत इं कि मरबार व्यक्ति कारण हिला ভিনি যে এক ঈশবের আবাহনা আন্ত হরিয়া রুডকার্য। শ্রীবেন, কি কারন প্রয়া विषय 'अमला अनेतिएटनोक्टिनात निकल শিস্তার পাইবেন ভাল্য প্রণমে কেনে ক্রমেই मयुर्विष्ठ १९१४ इस नाहे। वर्षमाम १०% লেয় কিছু পুৰেদ ভায়ত এর্ম্বরত মলপারে! गांति शैगांदश एकिशाहलः র্ষের মধ্যে বঙ্গালেশ ক্রাবার গ্রেস জ अत्। अविरुख ग्रीश्रमित्तर खोश्री अध्राम ব্ৰাহ্মণা প্ৰবৃত্তিত গুলকানিত ভ্ৰমণাছল জ্যিকবা একদেনে র মধ্যেও ভাচুক খার্লের প্তিপ্তি সম্পন্ন নহেন। এভবেছাম যে मायहर । लाहकर जोजस्य यहांत वियहम সন্দেহ উপস্থিত হুইবে আহার আচ আ-15 kg }

किश्व जकरन जिल्लाहित मक्त महस्य पूत क्वेटकर्छ। जीतज्यदर्भत मृत्र क्वेटकर्छ। जीतज्यदर्भत मृत्र क्वेटकर्छ जवन जिल्ला मर्गक जामा उदमाह कार्याक्ताल मंदल मर्गक के केंक्कुल क्तिर्क्ट्या नृत्राचन

क्षांब छ्यटेसर भव स्थोवन जूनद्रांशक प्रदेश, কাহার মুখতী পরিবর্তিত হইল দেখিয়া কালর মন না আশা ও বিশ্বাসে পরিপূর্ণ इत्री किल अनकन किटमत सना रेशांत कि कांच উप्पना, कांन अर्थ नाहे ? वि-गुङ विज्ञुश गण्यम वष्टमिन शदः विनि शुन त्रानयन कतित्वन काशत अहे हेव्हा त्य नत्वा-मिछ मण्यामीद्यादक ভाরতবর্ষ छाँहांत्र मरा জ্যোভি সন্দর্শন কথে এবং ভাঁহার আ-দিখী সন্তের ধর্ম অব্বর্ন করিয়া সেই भन्त्रभाषा करहा ।

ভারতবর্ষের পূর্ব্বোক্ত মুর্বালভার একটা व्यथान कार्रन भगाँखारनत जामखान, जनर ভাষার বর্তমান সঞ্জীব ভাবের একটি প্র पान कातन खारनाश्रकि : भृथिवीत वैकि-कुछ शांठे कतिरमं अमन द्यांन समाई नुष् इस मा यहा এक समरह छि बिक्यक्स नियान एटर सारे ; मना जिला निक्रिका-বস্থাতে কোন অকার না কোন প্রকার পৌ-ললিক ছা এছণ করা এছ স্বাভাবিক, যে ংখাতিরেড়ে কোন বিশেষ মান্য **জা**তির बार्याविक इरोड भारत किना मरकह। বিস্কু আবার ইহাও সভা যে কথনই কোন अंद्रुए। क्युन्तित मर्था (भीजनिक्थर्य छित-श्राही स्व मारे, जिल जिल अकाटत रेश अन्ति (परभारे उदमन् अखि हरेशोरहा (भी-ভুলিক ধর্ম গ্রহণ করা যেকাপ স্বাভাবিক পরিত্যাপ করাও ভক্রপ স্বাভাবিক। অজানতা হেতু সৰ্বতেই পৌডালিকতা এক कात्न आहर्ष च रश डारांत्र अदगातनरे गंडा ধর্ম প্রচারিত হয় ৷ অত্তএর অক্তানও জ্ঞান মন্ত্ৰহোর প্ৰেক যে কপ স্থাত বিক হৈপাত লি-कडां ७ म्डानक मसुर्यात श्रेटक

शांडादिक। जामता क्रेड कांत्रन दक्तिन धर्म मन्य महोमिटाह मके देशों के शक्तिकारक अक्कोटन श्रद्धभटा अभिष्ठ महामू का

मस्मग्रस्त्र छेलपुक्ष विद्युष्टमा कहिना। विश कारनागर प्रत महत्र रहा की बेलकर्ज पूर रेश करव बिकामा रहेर है लादे देश अमा विध छात्रकत्रव स्टेट्फ कि क्या कुनारकात्रवत्र कितारिक स्टेटकेट में कि बना देशत गैर्करण रे आकारण थानात स्ट्रेटिंग्ड मी र कर করিত রাজা রামমোহন তার খনেশের মঞ্জা-উদ্দেশে সভ্য প্রচার করিবার জন্য প্রাণপণে यञ्ज कतियां कि अमा त्यादकेत विषम विद्या ভাজন इरेग्रा हिटलन, भिछा भाषा करेटल বিচাত, গৃহ ধ্ইতে নির্বাদিত পর্যান্ত হইয়া ছিলেন ) ছুর্দিনে জন্মগ্রহণ করিয়া ভাঁহার জীবন কি জনা পরিশ্রমে ও যন্ত্রণায় অভি বাহিত করিয়াছিলেন, স্বীয় প্রাণগত শোলি ভাক্ত চেন্টার কিঞ্চিয়াত্র কল ভোগে করিয়াও ইহুলোক হইতে বিদায় হইতে পারেননাই ১ একাকী নিশীথ সময়ে ধর্মবলৈ ভাঞত ধা-কিয়া যথা-গাংখ্য কি জন্য ভিনি ভারতবর্ষের শুভ্যাধন করিতে নিযুক্ত ছিলেন, লোকে তাঁহার উদ্দেশ্য বুঝিতে পারে নাই,জাঁহাতে কত তিরকার করিয়াছিল, অবমাননা কার য়াছিল, ভাঁছার জীবন পর্যান্ত বিনাশ করি-বার অভিসন্ধি করিয়াছিল 🤊 এ দকল 🍪 **ध्यात श्राप्तिक स्थामता मुक्ककर्यः** निवास পারি যে দেশের যে অবস্থার মহাদ্ধা রাজ। तामरमाहत तांत्र जगायहन कतियां हिटलन ভাঁহার উদ্দেশ্য অদমুক্প ছিল,এবং ঠাঁহার থাবল পরিশ্রমেও তাঁহার শিষাগ্রণের সমুহ यदक् रम छटलमा सर्मिक स्रेशिट्छ। দেশকে কুদকোর ও পৌস্কলিকভার হস্ত হইতে মুক্ত করাই তাঁহার বিলেব ইচ্ছা हिंग, रेश्वर बमार्ट ज्ञानि शहर में रेफ मल्लाम हहेगाटल. ट्रानीम राजदलीक जान-दशहे थात अवनिक विक्रुपटकार वर्गातक। नवार बरन इकिएन शाहिबार । इका अंतरमान्त वाव अकारन रव विवाह सके आ

विकि कहान, किनि गकश-मेटनारण वहेत्र। अव्दर्शकातीचत्रदक धनायात कतिरक हन।

हर् अतना चीक्या (स. अकटन स्नटमह প্রাম সকল ভয় সমাজেই পৌক্রিকতার अंडि अधका कांगगाटह। किन्न गोन्न त्नी-ভেগিকভার উপর অভক্তি জমিয়াছে ভাদুশ সকল স্থানে সভা ধর্মের উপর বিশ্বাস कट्टम नार्वे। माहिला, भुगार्थ-विकानांपि विविध अन्तर्भ विमा निर्मा करण अछाम ক্রিলে নিশ্চয়ই লোকের মন হইতে পৌত্ত-লিক্সংস্কার্কাত ভ্রম অপনীত হইতে পারে वटि, किन्नु जन्म विष्ता ७ मानवश्रक्ति उद गमाक् कटल अञ्चर्धावन मः कवित्व गट्छात প্রতি একান্ত আদ্ধা এবং ত্রাক্ষধর্ণের প্রতি একান্ত অনুরাণ হইবার মন্তাবনা নাই। মহাত্মারাক্ষারামমোহন রায় তক থড় গ হস্তে লইয়া পৌডলিকতা**খৰপ নিবিড অ**রণ্য ছেদন করিবার উপায় প্রদর্শন করিয়া গিয়া-ছেন। প্রমপিতার অনুগ্রহে তাঁলার আরেন মহৎ কাঠা কতকদুর সমাপিত হইবাচে, এক্ষণে সেই পরিষ্ঠ ভূমিতে, বিশ্বাস ভক্ রোপণ করিতে হইতে, **ধাহা**র কল ফুলে ভারতবর্ঘীমের৷ পুরুষামুক্রমে ইছ লোকে এবং পরলোকে অমন্তকাল পর্যাত্ত স্বর্গীয় ষ্মানন্দের অস্থাদন মন্তোগ করিতে পারে।

तक्ष-विनाद वाता अकाल गर्गाष्ठ तक त्मरनात् त कजनूत উপकात करेशांक जारा काममा स्मानी कारा राज्य कतिर्क जागर्ग । तामभूक स्पता त्म कारन खारन देशांक अरः तक्षरकार्यम तत्यांका करियार्यन ज्ञ्यन जाशांकारक चामहा पूर्व क्षप्रदेश स्वातंत्र कार्या कार्या क्षप्रमाहे क्ष्ममा महणांक कार्या कार्या क्ष्ममा कर्मा कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य का

शरत डांशानरवात शांच्या इति निवनित वक यानि मानिक भविका निर्माणकरण यका-নিত ক্রিয়া বিশুল তত্ত্বাকোক স্থাকার হত माकृष्ट्रिक मस्त्रशंदन विकीर् कदिएए मान तिरलन। छ९भटत मगदग्र महत्त्राकनामू गोदत धक्री **बन-**विमानस मःशानिक हरेन। अके थकादत वक् रहेटच वक्षु गर्धा, भक्रिका हरेट शांठक मत्या, विमानम स्टेट प्रांव मस्या द्वांपविमा-स्माणि श्रायमं कविया ध करन क रमनीय मकन लोक; मकन शकिनी, সকল বিশ্যালয়ের মূল উচ্চ্যুল করিয়াছে। त्म क्षारम शमन कति भगा नियरशत है ज्यारला हमा (कथिएड शाहि । क्रबादिमा युवक-वृक्त कः कृंक मरकाशिक माओ भागा, आंकांक्क मा खोरिक भाक्ति मानिक मीत्रध्याद्विक नकल প্রকার স্থাদপত্ত মহেচ, বিদ্যালয়স্থ শিক্ষক ও শিন্যগণ মধ্যে সকলের মধ্যেই াঞ্জ দেশে अकारमध्या अन्त इरा अभाग भ অকারে ত্রেমা বিদ্যার স্থারা অরুত দেশো মতি ও ত্রাক্ষরশের গাচন কার্য। মংসাধিত इंदेर**्ड** । योगता मधुनाध क्रमस्यत म शिष्ठ अरमनीय खाँचा ७ जीनीवयरक छैद-মাহ প্রদান করিতেছি যে, ভাঁছোরা অবি কতর অধ্যবসায়েশহকারে প্রাণিবংশ নশা-लिहिनांत्र नियुक्त क्छेन, छैहिहिन सञ्चल इहेराक घटनरमात भीतित दक्षि हहेटद, वदः পরকাষে উচ্চাদের মুক্তি লাভ ছইবে। (सक्ष व बक्र दन्य मत्य) खक्तरिमात क्रोटनां हम। হ্রতিহছে এবং ভাগরে দারা শ্রন্থ ভুত উপকার लक्ष इंट्राइट्ड, ममञ्जू हात्रुवर्ष गयरम् क्रांश्य प्रहेटव, मत्मव् माहे।

বিসিচ হিন্দু ধন্মের গা ভার সন্দর্শন করিলে এটাতিহয় যে, দেশীর আচার নাসহারের সঞ্জে ভাছার অভেন্টা নয়ফা। হিন্দু ধর্মকে বিনাশ করিতে গোলে দেশীয় প্রধাপরক্ষরাকেও বিন্দু করিয়া কেলিকে

रंग, बन्धे अकेनीका मार्गकपूर र देशक रखा। कामहिंद्र बर्श अकीत राज्ञीत हुन का ना बाबा किन्छ पटनीक महिल नाहि बटना সংযুক্ত নতে ৷ কি সামাজিক কি পরিবার मंद्रका अ गक्क अक्षेत्र असू के न हे हिन्छ धटर्भत जमुद्रमानिक छ प्रक्रम्यान, मामा करु धर्म-পরত্যর। পরিতার্জ কইলে হিন্দুগর্ম পুলা ्राप इस धरे अठि महत्करे विनये हरेटड হিম্পুধর্ণ গভ পৌত নিকভাত উপর थांत्र गवरनात्रहे व्यविश्वांग आहर, किंख व्यक्ति ३८५ छ। अतिकास करो धरे জন্য কঠিন যে তাহা হইংল প্রায় সামাজিক সকল আনির স্বহান্ত ভলাপ্তলি দিতে इत्रें कवर मंग्रक्तांक एडेएक रहा। অন্য কোন মহত্তর খর্শের আভায় এচ্ন मा कक्किमा हिन्दूपर्यादक विमान कतिएक পেলে, সামাজিক পুঞ্জা বিপ্র্যাপ হইয়া এकमा खर्म कुमः जादत **अम्मू**त्ङ হইয়াও অন্যাব্ধি অনেকে অকান্য ক্রেপ चीत विभागांत्रगांत्रक कार्रा कविट्ड ममर्भ इराम गाई। किइ गुडा छ श्रवित शार्मह महित्या हैलि छि एम्मानंत मभूर्टक शति বহিত ও সুমাজিত করিলে পৌজলিক কুনংস্কার তেরোহিত হয় ও সামাঞ্চিক প্রথা ब्लाइकर व्यक्तादवांभागी हिकदत हत। किन्छुयना त्रांत्रडांकिटशङ्क कि कोमल । मामा-ক্রিক পালের জাতাদিলের কি অপুর্বে দক্ষতা। চন্দ্র সমাজপরিপোষক, **এবং সমাজকে** গতপ্রিপোষক করিয়া দিয়া 'কাঁমারা স্বাব-নাংত মতাবলিকে একুপ বিষয় কুৰ্বাৰ ছিছ করিয়া নিয়াছেন বে, শত ব্ধরনের বিভাগ াল চেটাতেও তাহার প্রশ্নাম ক্ষতি ক-বিত্ত পাজে মাই।

পার্গের বাদ্ধর্ম গেই কেলিক্ট গোস্থীরুত ভরিরাছে। বেলিক 'বাদ্ধিটার প্রত্যান ' ক্ষমি আমাদিক্টে কিন্দিন্ত

ৰবিষ্ট ক্ষাৰ্ক লেই বিনাধ্যি সংখ্যাৰ এক पुरुत पुर्वी आमानित्यव मधव ८०१७वे करे-TICE I TESTINE THIRT CHICAG AS ANIAIMA MARANA MACAMICE, CA वाष्ट्रभव वार्विक शर्बक क विकासित्रक भारत अन्य कार्या नामाना ज्यारकत क्रमालक ध्येवः भीवत्यत्र ज्ञानं स्माहम् कहिट्ड शहित नाः अध्यक्ति बाक्षायम् त्य कान लाटन सम्ब ভারতবর্ষের ধর্ম হইতে এমজ বিস্থাস কোন करमरे मजरद ना। किस अकटन दम अन দূর হইরাছে। প্রশাস্ত গভীর উর্বভর্ম জ্ঞানসম্পন্ন আভিহিম্মির মনোগত সকল অতাৰ মোচন কবিয়া करम करम कर স্থীয় ধর্ম উপাদনা অনুভাপ দ্য়া কমা विश्वांत्र नाम निर्फार्थिक। षाञ्चक्षयक शाः नत क्षर्य অৰ্ভর্থ **८७६ष्ट**, এद९ षाक्रनामिरशत भूतल स्रुट्ली-প্ৰবেশ कतिए। छाहामिश-मल श्रुष्ट्र কেও ডব্লিভার্থ कतिरङ्क । (कवन देश नत्र, आंबार ग्रंड गामाल्यिक कार्कात সজে সামালত হইয়া ভক্তাদিলের জীবনে গ্ৰুকপে নিহিত হইতেছে। ধর্মা, কেবিয়ে কোন ফালে থকাশিও হই-शाहिल । दिन्छमनादश खाजधर्म करवना করিয়া দূষিত সামাজিক জিলাকলাপকে स्मार्किंड क्त्रिएटर्छ, अक्रीकास्त्र ८७म ক্ষিয়া পাছ্যিত আছার ব্যবহারকে পাবিক क्रिट्ट्रेट्ट, मांगक बाह्यिका, यूनक, इक दक्ती, मकरणत चार्डाक माधु देन्हा तकन शूर्व कतिशा व्यरक्षा व्यवन व्यक्तिश्वत क्रिक আপনার শরীরকে আবেন্ডি করিভেছে 🖥 वर्षनाम काटल रिक्शुनम्बन यहना कि कुछ रग । क्वल विवास, बिद्धाम अक्टिश मद्दर ष्ट्रांग, र गठेका,माधिकका । अञ्चलका त्यांत्री रहेटल उरुनम स्टेशारह । असामधान कुन नीत वालांगि स्ट्रेट्डा ह्यं मेगारिकत पार

बाबरांक तमाचक रगांक नित्यंत्र हेक्कोंक केवर चा हरता गरक त्य शांकातन विक्रित तेम है शहिमादिन दमहे नगांच छत्रक्ष अन्तः अवश्रा পরিমালে উলিখিত স্থাচার বারহার লোক विद्यात अभादवत डेमद्यांकी दमेरे महिमादक ग्यांक स्थी ७ उन्निजनील िक्कि नर्ग-নের প্রধাবনি উন্নতজ্ঞান উত্থানোলুখ व्यथावनाम्र-मन्भाम नवा मन्भुनादम्ब हेन्हा विक्रक, इन्द्र विक्रक छोन विक्रक, धर्म-বুলি বিরুদ্ধ। অতএন হিন্দুসমাজ অভি ज्कगा । कत्रका विश्व विश्व । **छेकु निक इंटेरन चत्रः कांबाटक मांबाना** বালুকা বস্তানে আবন্ধ করিও, আংখ্যান গিরিগজার নিক্ত গাড়ুধ্ম প্রস্তর অগ্নি-জনগতে বরং নিশান ছার্চ নির্বাণ করিতে চেন্ড। ক্রিড, তথাপি মন্তব্যাকার নিমেনি-বিত বজুসম বলবতী আশাকে অবরোধ ক-ति अ ना । तमने छूटक कोटल हैं स्वात कदर धंद अहे हुन १४१, व**क्ट एट १३ अहे ह**िर्मिन !

একনিকে ভ্রমসন্ধুল অপবিভ নামাজিক দেশালার, অপার দিকে বিরুত অস্তাভাবিক विदनभी प्रवादकारतत हीन असुक्क्षण छ मः मामविष्टा कि; अक्षित्क कुमःकात व्यक्तिक। পৌস্তলিকতা, অপর দিকে সংশ্য নাক্তি কতা, অথবা ক্রিয়াকলাপশূনা ভ্রিভাদা-रीन प्रश्नभाक्षिति क्लिक व्यथहरू किन्न्न्न কাৰ্যা-কারণ-সন্তুদ্ধ প্ৰকাতন ছবেৰাধ্য বি-জ্ঞাৰ প্ৰা रहेत्रा मकरलंद भर्या नाष्ट्रि गांचक्षमा मन्त्रा-पन कड़िट्डट्ड । वर्गीका छाटन मकन व्यक्त व्यवस्था जिल्लान कारण अध-तित भारत सक्त सन् भारताच हरेएएए, धनः मस्या मान्या तन्त्रा विश्वान कति-त्वरहा द्रशासक की कार की न, पति एते. विकास कृत अवाशा कांग्री सकटनत क्रन्टरत THE CRISE SECURE SEASON STATE

सर्कान वर्गानीरक मामाजिक मुखला निवक করিতেছে; বিদেশীয় বাবহার পদ্ধতির সভা-मात गरबार कतिरण्ड मामानिक भारतर विश्वक उर्शरमण करम ममाजरक अर्थ धर्मारक प्रकृतिक क्षिता संशोष्ट ७ घटनमा बटन व्यविषा केत्रिटक्ट्रहें, धरेर नालिकके स महमा-अणिक विष्णाम भटकत शर्थ व्यवदर्भ क हिटक-**८ए। ८२ वक्र राजीतिमा (२ व्यक्ति। वर्ड मिनानी** ভাতৃপন। জাগ্রত হ'ত অজ্ঞানত। প্রিচার कत, बुजुक् रहेश लेतरमधरतंत्र अमारम का ম্পানিক ধর্মা প্রিক্যাগ কর, এবং নিকা সকা ধর্মকে অবিলয়ে আক্সর করিয়া চির্দিন প্রথ সংসদ্ উপজোন কর: " ATIT প্রমণিতবাং ধর্মার প্রমণিতবাং অমদিতব্যং। সভাং চর সভাং সলক্ষ্ ভুজনিং মধুঃ। কাম্পনিক গর্মের গ্র পরিত্যাগ করিয়া বতাকে আশ্রয় কর, এ-পকে আতার কর, এবং উহার আদিই লা भाषमात्क जालाश कता

--

## गटना विष्यान।

গনা সেই জগদীখনকে যিনি এই নিচিত্র
মনুষা জীবনকৈ সংশ্লতি করিয়াছেন। বহু
নার ভাঁছার স্থানী কোশাল প্রণালেছিল।
করিতে নিযুক্ত ২ই ওতবারই মনুষা জী
বনের অভ্যান্ডর্যা রচনানৈপুণা দেখিলা লি
কিছেই। যাদাপি সক্ষাব্য়ৰ পূণ গ্রহান্ত্র
করিছে পাই অভি মান্স স্থায় শান্ত্র
করি, দেখিতে পাই অভি মান্স স্থায় শান্ত্র
করে স্থান স্থানে অল্পান কৌশালসহক্রারে স্থানে ভাইয়া উৎকৃতি অজ সৌ
করি সাধিন ক্রিতেছে। রস্পোশিতহেলাত্র
ঘন-বিনাক জগদা স্থানান্ত্রকা প্রণালী
কর্মার্ক স্থায়া প্রত্যাক রেশিকাকে প্রান্ত্র

TOUR THE STATE OF THE STATE OF

अविभूके कहिर्छा । विश्वाम अविभाक इक्टर्गक्षांसमापि विष्यप्रकत किया वार्थना भाभिम मन्नव रहेव शहेटल्ट । वनवल म्बर्य प्रकार अकृषि अटकाव माही विक्य-श्रेहे विच्छि । वृद्धित संभग त्वाम हरे टिल्ह কিও আবার যদাপি মহত্তর আক্ষাত্র छ होके भरनामिन्द्रत थिक नम्न निर्केश কৃত্বি ভাবে ক্ষুট্না বিমোহিত এবং ক্ষু-श्रुकारक पूर्व रहेगा श्रीष् । दर भारीक्रियमा আলোচনা করিয়া সহজ্ঞ নান্তিকের কঠিন क्रम्य भारत्यं जिल्हि तरम चार्क हरेगा याहे-তেছে, পরীর বহিজ্ ত যে বাহ্যবিজ্ঞান আ-- रब्त्हर्गक्ष बसूभा अस्थि पछि ७ मसूषा मछाङ। विविश्वहा मानद्र एक काट्सव सावधानटक कंकियम करिया वाहेट हाइ, यनई छोहात बिशाम कृति । मरमद अथवा क्लांटनड नियं-ख्राबुद क्षति निर्णत्थाय स्ट्या असे ममल व्यविश्विक क्रिटलर्ड, अवर दय श्रांदम भटनत যে, ৰূপ প্ৰস্থা, মে স্থানে ভাছাদিগের फ्रांमुक व्यवश् ।

वस्रतः क्षारमान्य अन्तरं केन्न वर्षे যে কাছা এক বিষয়ে সংঘটিত হইলে তং-मश्रुतीय मकल दियदब्रिड छिश्कर्म माधन कर्व এবং দূরভিত অলক্ষিত অনেকানেক বিষয়ের बर्काण संद्रात लीए मश्रक निवक्त करत । भी-तीइविष्याध एम हिकिथमा मारखन छन्निक ক্রাং, বাস্পত্ত জানে <mark>যে যন্ত্রিজ্ঞানে</mark>র क्रकर्म लाज इहेरव हेंह। मण्यू व बेर्ट्स म-মাবিজ, কিন্তু জোজিবিদ্যায় নাবিকতা भारत्यत समेलि दहेटव, त्रगांत्रनभारत्य क्रवि कार्यार े छेपकोड यहेरव, छोड़िश्चिकारन अल प्रतीत उपने नाम स्ट्रिय (काथ-क्षामा क्षार्शिक है कि किया महरे करे थ जीक हरेरप रथ विकास संख्यात महस्र अकरी। करि तर सक्य प्राप्ता । विषे सक्य पाता अभि विकास एकः - ३३ टेन मुक्त किल-

शहे छम्ना करें। किंद्र मनिल अनक गटबारेन बाक्य जरुमा द्वाखरूप छ निष्मिश्व स्ट्रेटन रम्बन गमल काततानि वाटक लिए वह कर गरा-জাত তরঙ্গ মালা ক্রমণ প্রশাসীকৃত হই।। कुनएक वाणिकन करते. तम् सन हिर्माः लिंड विका मत्रमीत उत्तकतीक निग्रंड विश्वंड इक्ट बाटक अवर श्रीतदगढन छाउँद म लिलतामिटक जोव्हन करतः। शहेक मकेन विमाति भेटनत मटक समान संबंधी कारा र्केटक विक्रिय-मंत्रका स्ट्रेटन मट्खर कर करा কান বিদ্যাই তিষ্ঠিতে পারে না। মনই বিদ্যা লংজার রাজধানী,ভাগ শবিকার করিলে আর मकलहे अधिकृष्ठ वष, छ बात एन् अवश्र हरेटन गकन उच्चे स्वताच इत्यां मातः কারণ যে কোন প্রকার জ্ঞান অনুধারিত হউক মনোকৃত্তির পরিচালনাই ডাইরে জ-পরিতাজা উপায়, তদাভিরেকে কোন দিলা: त्र है छेन्छ अञ्चातिक बदश नि नामभी है। বিদ্যা বিষারদ পণ্ডিতগণ,কৈ স্কনিপুন চিত্রক: দল,কি সুমাজি তবুদ্ধি ধর্মশাস্ত্রজগণ, কি ক ঠোর পরিশ্রমী পদার্থ বিংবর্গ, কি সুবক্ত ভ भट्टे भश्चित्र मन, मकरमहरू गर्थश्वित्र करन मरमा इंडिंद्र मोशीया श्रद्ध कतिराउ रूप, ७२० মনতত্ত্ব অবগত হউতে হয়৷ সকল বিদাং गम्दक् भरभाविकान अज्ञात्र व्यक्तिक स्व महरू। মনোবিজ্ঞানের এবস্থিধ মহত্তকে সাম্বন্ধিক महद् कटह। किन्नु अहे मन्नतिक महद्य रा-তিরেকে ইহার একটা উচ্চতর স্বতম্ভ দৃহত্ব 

পৃথিবীর মধ্যে মনুষাই সন্ধারেশ্বন্ধা লোগ পদার্থ, এবং মনুষ্যার মধ্যে মনই নানাপেকা লোক। এটিন লীস দে নীয় এক জন সভাজিতান হৈ ভাগন বাকে ভিজাসা ভালিকা হৈ ভাগন নোন বিষয় চিতা করিবে জনী হওৱা বাই এ আব্দ্বা উত্তর ভালিকো শ্বান বিনার

CHICA CRIS THE BY AND STORY ! TO ALEXANDE OF STREET, CALL WIT WATER, WIR WATER BOOK LAND WIP'S SICE OF AWAY SUPPLY WIS তোৰাতে পায়ত কাছ কোট ছোটি ঘোষন উৰ্দ্ধে সন্তান অবুক লোক সঞ্জাক ধাৰণ क्रिया मनाकी प्रभारक्त भट्ट अक्टबाड रहेग्रा विकि कृतिएक्ट्र । अहे बाकारणत महर्पार्ट्से तारे छूर्तम छुत्रवर्गाश व्ययस्था ব্যেক নিচয়ের বৃহত্ত কোমারকুর শরীরের भवित महस्र पूर्वि समुख्य कविट्यस, धावश जारामित्वा स्थापि चन्छ भर्यात्माक्रमा कतिग्रा কালের অসামতা ক্রণত করিছেছ ৷ কিন্তু छान पृष्टिक अञ्चलक मोवधादन पर्नान कत्, अन्तर्ग लाक मिछक अनीम आकाम अ-পেকা মহৰত ৰূপে অন্ধেরভাব ভোমার वाद्यात शिक्षिक १३.८ - भनग्रसान अ-নস্তঞ্জীতি অনন্ত পৰিত্ৰতার আভাদ উপলক্ষি कतिक्षां कृष्यं इहेरना महान् धाकां छ নৌর জগতের উপমার ভোষার শরীর ধলি-क्यावर यदमायांना । तक निर्म मरबाहित অপরিষেয় লোকরাশি সহস্র মহস্র বৎসর चाकाम बदक जागामान इट्डिट्ड, बात निटक की प्रेवर मामवरषद स्तारम स्मादक मीर्न रहेशा शृथिकी करन वह स्कटन विकास कति-**उट्ट केतर गर्म क्ष्मत्र ममाभित्र मा स्ट्रा**ङ হাইকে হাজিকার সহিত ছিলিত হাইকেছে। अव्यव विश्व कंगरंडत सहिङ आक्रोलिएसर महोरतक निजास चानसाती मस्का धनर सर-तरिक मामक सिरायुकी है महात साली क TATER TO THE THE TATE OF THE T A COUNTY OF THE PARTY OF THE PA 

বার প্রকৃত ইইটোই বৈচক্ত অহাত চালোক গওলেরত শের মাতে, গেই ফানেতে ই
প্রকারণ কর্মত ভইকেছি যে অভান্তিগ
শালানিকিত শাতি পরিভারে প্রকানিক নাই।
নাং হর্মা নির্মান হর্মা নাইবে, বিশ নেতু
ভয় হইনা বাইবে, আর্হণ বিকরণ বিশ্বনিক কারর চুর্গ হইনা হাইবে, অধাপি আলার
বিনাশ হইবে না ইশ্বের প্রভিক্তি।
আ্যা, অনিক্ষর নতা প্রক্রের প্রভিক্তি।
এবন্থার আ্যার প্রভান ক্রু

विकाशिक प्रेश्वर आकृष्णेजात्व व्यवस्थित कतिरण्डाम, अञ्चलके काशत अक्कृत कः প্রাকৃতিক ঘটমাপরত্পরা মনের मद्भ विष्ठित मश्या हरेटन पर्य होम लाहा হীনফঠোর কার্যাকারণ-শৃত্যালা মাত্র একান করে, কারণ শক্তি সৌন্দর্য্য ও কৌশল বাহা कि हु मक्तरे भटनत जार । **এই क्रांग ग**ि হারা অমাজ ও আগ্রহত্তিমূল হইয়া মনো-বিজ্ঞানকে শুঞাছ করে, ভাহারা অকুন্তিকে মৌন্দর্যা শক্তিও অটা বিচীন, অনন্ত কার্যা-কারণ স্রোভ বিবেচনা করে, এবং গৌর नाल्किङ। भटक निमध रग । किन्नु दर बीत পরতি মহারারা আত্মানুসম্বান করিনা তদ-कर्ज् क ब्लान बीहि ७ श्रीमिका मन्त्री । विविध मत्नात्रस्टिक উक्कृतकाटम উপन्नि करहन अवर उदगोहीट्या जनअविष्ठ मकन विषद्धक वर्ष अपग्रक्रम करतम, डीहोतोरे के सद-भारतिस् धर्मनीन, जाहाबाहे मध्यांत अव्यक्तिकांत य वर्षि छञ्ज व्यवश्रक स्ट्राम । व्याचानुमक्तरिम आंखां लोहमात्र विवेश हहेगा वोक् आंद्रमादंग উষ্মন্ত হইলে, কিয়া শুল ভৌতিকপদার্থ-विष्हारंग निमध हरेटल. मत्नेत्र धकुक बहुन्द्र ধর্ম দরিয়া বহিচ্ছ গতকে তছুপরি উদ্বোদ भन केतिएन, व्यास मोखिकडा खा जमार्क चा-देरम् । शसिक बाजाजिमानी विद्यानसूत्र

लगा विद्या विश्व विष्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व

भागानिकादम्य भागांकन व वटाए म-্র প্রিপা**র** ধর্মনা, এক্সংগ পৌলনের চইসের क कि केशादम काश खड़तम भारता अयोद्देश मुक्ता अधिक्रिति है कराय कहा पदिभक्तिक्षित्र भक्षणः विष्यंतः संसद्भवद्यं पादे म्हार्ग ८ ५५ - स्वीतिहरू स्वीतिहरू स 化光线设置 群后 無生無 《沙沙山公 下每 小生性 भागत्व मेलेटल भाष्ट्री भाष्ट्रम हिंद का ना ना वेपत, कि प्रकानमा अस्त्र वं स्थीप मधात, वं कि जीन भीन एक स्वीद, अकरतनहें हा-क्षिक सार्थ आकि। यो विकास क्षेत्री अर्बहरू ক্লাদ্যক্ষম চাৰ্ডাটেল চিকিন্ত মনেৰ ভাষ अन्त वर्गना कन वर्गनिक्त हम कन ं भं कि कि । अधि अस्तु स्थ इत्य सम দীও নাল, ফেক্টেক নয়, চ্যায়া নয়, অঞ্চলার ্ৰা তাহা জনে প্ৰীক্তি স্বাধীনতা সুস্পন্ন ্যান প্ৰাথ মন্ত্ৰাল ব্ৰিক্লিটিডে ভাইাজে रम्भिक्षा भाष्ट्र भाष्ट्र मात्र मा। सिट्य**ट**म्ह **सट**मा ংখ জাইটেড কন্ত শত শত ভাগেৰর উদয় হয় क् अकार मध्या। कतिहरू साहव, अवर ८ जर् 打 医圆角体体 海海州河 计时 海豚 भारतः विश्वारकतः माध्यक्षे अन्य क्रांद र्याच्या करते थेपत्र इष्ट्रः तिष्ठुतस्त्रत्व नाम्य वि-लुभ हम जात कार्र जिस्सा किस स्थान पूर-राणि पूर्व २२ व । प्यानकानः वार्यप्रि प्र-ः भाषा हरू व करवाती इत्रियोक्त अंतर

তৰ্কে একৰীছিক ক্ষান্ত্ৰীত দ ব্ৰিচনেক দলে ভাষাদিনেক প্ৰকাশিক ক্ষান্ত্ৰীত একং এই দমত শাধাৰণ আনুতি ভাষান্ত্ৰীত কৰিয়া ম্বাতীত কাম গাঁতি ইন্ডাৰ সাহত ভাষা-দিংগ্ৰ সমভাৰ অনুস্থি ক্ষান্ত্ৰীত প্ৰিন্তি শ্ৰম্মাধা। এই চুক্ত কাৰ্য্যে ভ্ৰিন্তে আমানিগকে প্ৰস্তু ক্ইডে ইইবে।

## ত্রাক বিবাই।

षांगता जाकास कांक्सारनंत्र महिक छ। লাশ কৰিছোছ যে, বিগত ২০ কে হৈছাও (क्रिकी पुरुष क्रिक्ट क्रांड आस्त्रीमन प्रस्तु अकः শাহেণ অপিমাঃ ভাগেনা, স্থিত জীমুন্দে কুণ্ডের . यहिसर असिन्न कार्या कहि तेष्ट्र अस्टर 獨好於 有飞竹 解别例 西南海,10日报日本 1 1 100 स्मरको अवश्रक सावित मधारतम शिश्रक सः अलाह्यंक्षण बस्य महास्त्रात व्यापनीत्त्र हा विद्यानत रेन्द्रां कि निमानियम क्षांच (भवन करः श्रिकामक भागम अंत महार्थित " नाममः রায়ণ ব্রুর ব্রুপ্ত। ব্রুপ্ত। ব্রুপ্ত। दर्वमान महर कार्या श्रीतो आमहानहत् । अर स्क्रम वीद्यातिष्य यस महाभग छ। कर्द्यात भक्तियाँ माधन चांटर अन्, ५० का का किल মুখণীয় সামাজিক নিয়মাক পরিবর্তিত কবিয়া বেশের মুখোক্ষাল করিলেন, আধানার ফুলাক্ষ পৰিজ করিজেন,এবং একটা নেক্ষেপ্রিয়ারের প্রতিষ্ঠা করিলেন । জাহালে দাব্যাদ প্রদাস না করিয়া আখন নির্প্ত হতে প্রায় না চু পাত্রটী শ্বনি স্থলীশ ধর্মপরাধন ও কড়বিল্যা िम अरे वत्मात भिष्काल काटनरका ইংরাজি শ্রেণীর শেষ পরিক্ষায় উত্তীর্ণাইত शाहित वरः शर्शाहिल किलाबि बाह्र करे ब्राट्स्स । दर्शयका जन्मरम हिद्रिस्मानीय-,मांच भारत व तिया कीश शतिकारक नेम्बिक প্ৰেয়াত্ৰিক উল্লেখি সাধক ক্ষিত্ৰেই ক্ৰমানী

मुभाक्ता, नगंदांता जार वाल खाल. केशिंद नेशक्ते त्यात क्ल्मित वर्ष । रेगम-त्राविक रिन्त्र शिव्यादन नटकीले क्रिक्, अलि इन्हें। विकादकत भूदलाई जिलि विका तिवरत উন্নজি এবং উপাৰ্যনাদি শিক্ষা করিরাছিলেন, जेकार व बल न दल्कि इट्ड अनल इहेरा एइन भी खर मकल विषय अधिक उत्र छे एक से ना छ कतित्वन भटकह नाहे। विवाह छेपलाक পথের অস্থ্রিস। জন্য অত্তয় 'অনেক রে।স बरतत चालुगाज इन्ट्रेंट भारतम मोर्ड, किन्द व्यक्तिम्बुद्धः व्यटनक महर ७ वक्तिकु व्यक्ति রাজনারামণ বাবুর ভবলে সমাগত হইমা भाषामध्य जीहारक छल्माई समोहास। आमान क प्राक्तिमा, असन कि क्विन कि के দি:গর পরিবারাদি পর্যান্ত টংগ্রা নিকেতনে १८६४म फविए र सम्राह्म हारास नाई। १५४१म कार महोराबार भुक्षक भव्यक श्रेशकिन। -भारतीयुर्व धककारयः समुभूम् माण्यापि-शक्ति। तभी निष्यं व पाटनात्रमानोध मा कीय, भुक्त भक्तान मक्ताइक, दामराइनदम ারপুন, স্লাজান স্কান (কাশাহরে প্রতিষ্ঠানত গ্রাহ্যালয় প্রাক্ষেণ আল্লাক্ষ্যাল কল तत्व व्याक्त करेन, व्याधकारमाव निवन वर्न क्षािकटक सार्थ। विक श्रेम जवर स्वयः खींद्र भटक भन्दात्रभाग इंडेएक नाजिल। मन न कारम हे फिलाग मरहाद गत, काहांत अ ग्रुट्श च-নজেৰ ও বিষাদের চিহ্ন লাক্ষিক কয় নাই :

কানন স্কপ প্রমেশরের লাগালে।

সাদেশে রাজ্বশ্যের লয় লাভ চইবাব অনি

কিছু অবলিই রহিল না। রাজ্বপ্রের অনু

ইনাৰ আলা, প্রিনার ও সমাজের পান
কলা এবং আনন্দ বার্তিত ইইতেছে, এবং

বিক্তিতি কান্দ কান্দ্রী আরি কান্দ্রী আনি

প্রায়ণ ইইবে প্রত উন্দার্গ আর অনিক

উপ্রায়ণ ইবা প্রতার কান্দ্রী কান্দ্রী ত বাব্

বারা দক্ষা অকার কান্দ্রীকর্মনানত কু

সংস্কার পরিভাক্ত হর এবং উপশ্বকার নি-হিত ইনীয় নতাজোঁতি লোকের হিতের अंसा भाषतीं उटन नमानी उपत : तम वर्ष भारा भोजित ताजा श्रविरीत मीमा क्हेंटक भीभाष्ट्रत शर्यास नाश्व इस. देव स्टर्म लिखा পুত, खोड़ा 'ভिधिती, जी भूक्ष मध्या भारम পৰিত্ৰ স্নেহ স্থাৰ আৰম্ভ হয়, পাৰিবাহিক मकल क्षकात भक्षण गरमाधिक वन ममारक्षत पृष्ठि धार्गाली हय निमंत्रे क्या अवर ७६-পরিবর্জে বিশ্বস্থা কর্মনান্ত্রাদিত আচার रादकत आलिकिट हर्देश मगल प्रिवेटिङ क्षाकरमी, धारकत स्थिक त्यांत्र मन्त्रीहरू कर्त्, दब्रस् करने ए शुक्त निष्ठकात स्थलपान स्था ८५ र पर्याते मछा रगप्ते प्रयोगे असर्वाय अवस्त चित्रम राष्ट्र शिविवी भट्या काल कोटकरे करा 海南 本語 無信 电影 与时间为外的不知 (對)中 明都 医第二类管理的复数 法分别的 电压 **कर्रे**देद १

## त्राक्षां मरभय मानातन भारती ।

াক ৰাণৰ কাৰ্য কুমন লোচ ক্ৰিছা এই হ কাৰ্যটোৱা নিযুক্ত কৰিবলৈ আনা এটা বিভাগ সন্ধানত আৰু আৰ্ম্মিয়াক কিছিল চিত্ত লোচ এক কু মিৰোৰ আহ্বিশ্ব চিত্ত ল

শ্বিষ্ণ করে কৰা দক্ত নেত্র কাল্য নিত্র কৰা দক্ত নিত্র কাল্য করে ক

	জ্বাদ	•.
海 化二硫二甲烷基环	देग भाषा भादा %	r 1
नगः ∰्र.	•	Lean of
পুৰা হাৰ কিংক	. ,	* · · · · · · ·
		n resum
		والمواولات
	<b>€</b> (€)	

পরেকাছ এর্থন কর্মচারীপণতে ধন্তবাদ আর্থত বছলে পাতৃত্বে ঘাটাত প্রিযুক্ত নাতৃ দেকেন্দ্রনাম ঠাকুর মাধানতের প্রভাবে ও প্রীযুক্ত রাজারাম মুখোপালের পোদকভাত বস্তবান কর্মের কর্মচারী নিকুক্ত করা ক্রিড, ব্যাঃ

भणाभकि।

विष्ण भरवस्मनाथ हेर्चुकः

जनाकः।

विष्ण कार्यकान कर्यः

विष्ण कर्याकान व नाक्त्रकी।
विष्ण कर्याकान कर्यः।

विष्ण कर्याकान कर्यः।

স্থান্ত নেলান্ডল সেন। সংখ্যান লালাদক। প্রায়াক।

श्चिमुञ्ज देवकुणंत्रताम इमार र

क्षिकि सहारण कि क्षेत्रक राजस्कर (जान्यों नार विश्वत द्वासमा जार १४३३ रेस्टर वाहे के हिटल कर्मा छ आंश्रेस्क, किशा किस कि श्रेड विराध गारे क्षिक्रकर .

可以便用的 明 相目并以 阿伯斯里 图像。 从数据处理 155[B] 25 在(故) - 15 为() 电 电(视光谱 ) 解-र्वित करियो विद्यासम्बद्धाः । अस्ति दशकी १ शहर 化香酸 声景 唱音电话 网络 医子乳毒素 医外侧 . पर के विशेष लिए में से अ रुराम कांध्र 'युक्तां तुं खड़ भारत हासियाल कति अपन करणा करेगा आहि. रात्र प्रयासित कास्ति सम्बद्ध कार्या कान्नेस कीर-नाम पूर्व अहेरा होते. उक्तांन मन सम्बद्ध स्थाप ्यक्रिमः कविताः सिक् भिक्षाः स्वित्रायः स्य, क्षेत्रद्वद्व अधि । तरेन महाहे आस्तुमध्य क्षत्राहर क्षत्र मध्य নিপা, ব । জানান নিছ কেন্দ্ৰত উপায়েক্ট্ৰ অস্বলম্ব ক। বহু া া া শত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত প্ৰথম সংগ্ৰহণ কৰি মান্দাৰ िन्दिने भी अभागमां के अलाइ अनुमानम्म क्रिक्स 如何知识 ेमध्य फ वन्द्र जिल्लिक कहेटकर

া কৰিকাছা **একাসগান**। তথ্যত আনি ক্ষেত্ৰাক কাল কৰিছে, বাকিং তথ্যতিক ভা**লা প্ৰাক্ষ**নমাজ।

ে স্থাকটা কলিকাতা প্টন্ডালাহিত।

ত কি তথানে উপাচাগোর কার্যা করিয়া থাকি,

ত গালনার পরে এক একটা বক্তা করিয়া

ত গালনার পরে এক একটা বক্তা করিয়া

ত গালনার পরে এক একটা বক্তা করিয়া

ত গালনার পরে এক

া বেল্যুদ্ধা ব্ৰেক্ষ্মমাঞ্চ । এই সমাজ কলিকান্য **পৰিপ্ৰিটোপ**নিস্ক বিচাহৰ ভাগি উপালাহায়িত কৰিও স্কৰিণ একিং करा उमानवाद शह क्षेत्रका रक्षणा । करात्म काम ३ क्ष्मी वक्षणा क्षित्राहि ।

ह। डामकुक्कश्रुव जीकाममान

व्यक्ति सक्तिमाद्ध गेकाहि शत करे त्रमाध्य हरेगा पाटक १. व्याप सम् करे नमहिल क्षित्र शिक्षा-फिलाम, व्याज मिनल क्षेत्र क्ष्मिक स्क्रिका क्षित्र हिलाम। फिलाम।

थ। गांकाबाही आधाममाम

खेक जीदम क्रकि इविवास मधाति शह अर्थ.
भगाव्य रहेमा थादम। वर्धामकात मधा मध्या भरता।
५ ३० कवा द्वाभ हत करे मभादक व्यक्ति विवय क्रिका कर्या।
भगाकियाम, वर्ष्य क्रिका विवय क्रिका मध्या मध्या क्रिका द्वा श्री क्रिका क्रिका व्यक्त क्रिका क्रिका क्रका दिन्दी क्रिका क्र

८। दक, माम श्रेष्ठ (त्राप्तर्भ) क ६

ত্ত্বান্ত ক্ষিত্ত কর্মান ক্ষিত্ত কর্মান ক্ষান ক্ষান

ণ। ইণরামপুর রোধাণনাজ

व्यक्ति होति है स्वाहित शहर एक स्माह कर्यः भारत । असानकार मक्षा मर्गा एसमा १०१४ कन । असान कृष्ट पितम निगा कलाए लागम पितम केशांसनाय कानमाकका । निगाम अवस्थि एक का किशांकिया । अकीर मिरम अक तर्शक द्वाकाण्या अकन किशांकिया । अकीर मिरम अक तर्शक द्वाकाण्या अकन किशांकिया । किशांति किशांका मिर्वाद किशां सहका अकी स्थार क्रिकांका

५ ' मासिश्व बाकगयांका।

শান্তিপুর ত্রাধানমাজে এক দিবস প্রমন্ত করিয়া সেখানে বিশ্বাস, প্রীতে অস্ট্রান নিই জিন্টী বিষয়ে বস্তুত করিয়াভিব স

ত্ম বল ভাষে ভাষে ভাষে ক্রিয়া ক্রিয়া বীয় উদ্দেশ্য সাম্ম ক্রিয়া আর্বান্ধ্য প্রের ১৭৮৫ শংকর ১৮ই পোষে আন্তর্গা মহার্থা ব্যালা ক্রিয়ার অর্থানি

वाभावाह का अधिक शवन कविनाम, के क अधि कालका का श्रेटका का प्रकार का अख्या । बाल्मीय मंग्रेट त्यारण हाकब्रा का अप्रकार प्रकार अभावत्क नेयन कवल (महे कारने प्रकारित हे त्याम करेत्र त्यालांकमनेत्र आरम्ब लाख्यांचांप अधिक अविविद्य क्षिलाय!

ালিটে লগে গমল করিছে আরম করিয়া প্রায় হটার সময় বাগ্লীচড়ায় উপস্থিত হইলাল প্রায় করিছা প্রায় হটার সময় বাগ্লীচড়ায় উপস্থিত হইলালিলাই। করেও প্রপ্রায় করিছা করি

外。 (有为户 文章 174 ) 高[編纂(項頁 ] 军 元 对称的 होर प्रभावता दुवालिय । तर म म्यूनिमाम । प्रभा बर लोकांका है। संबर्धात्तर तेकाम जान १७ १९२० अभिनम् धण्यत स्था नामुल क्षेत्राः स्ट्रीलाचन । "प्रशास किल्लाहरूपात পিত্ৰ প্ৰভাৱ প্ৰচাৰ কৰিব কৰিব वह कदिलाग । व्यक्ति स्वयान्त । विनय दिलाक अकार राजा २७के आहरतात ज बाधमां सहसं की स टलस . हिर्माचा **जानामचा ज्यूबन काद्रश**ेर वर, इन्हेर ক্টিলেড়ার দাসক সংগ্রাস্থ রাশিক্ষেন জাতা নতে, त्राभाभवी अस्टराव मटक मटक भाग्या प्रिकृतिक किया कि 讲作者 医骶骨韧带 计复杂指数 电传播程序 1 मनावर लोश निर्मनी, जारमकाक विषयराध्य जना वं कछ व्यावेटल इश्च किन्द ईक्ट्रेयपद वर्षानय সম্রাণ্ট হইকেও অধিক হইটা উদ্ধিন : ইং বি क्षा नकता है त्वया ने काल कार्यन ना, क्यां न क्रीनि जीक, कुछकाशंदण देशीरम्ब अपन पूर्व **इहेब्रा श्वल** । यं होता **जूति जूदि भूक्षक** अधाया করিমা বিভান বলিয়া গারিপনিত ছইয়াছেন, बीकार बत व्यार्थत समा करें लाहेटल इस नी, उँ। क्षाता अकसाद के विषया वृश्विदीन किया द्वारिक निर्मात धनी रत विकास हित्रों निका कहाने व्य. जीकापण रकरंब धनी के अखिहांकर समा महर, हैं श पृषि बीन्ड मधुपाप अपूरालदन्द विवर्गनामि । यनस्त. रमसारम् अस्त्री जासनसङ् द्वानातः कवियो कालः नावाप अञ्चलका निवाधित केरिका

विकास उप्तममाध्यक नीमर्गिक नमाएक

३३ हेरेल्ल भारता लकाल वेगस कविष्ठः डिलाम !

निक लोडमांत्र इंड्रेक्टी बाणममांक लाइका

व्यक्ति भवित्राः वस्ति भव निवन निवनिक्ष वित्रास्त्राय व्यक्तान भिक्षक श्रीपुष्ठः । १४ द्रव्यक्ति १ ४ श्रीरम्भ नारम् वक्ती त्रक्षमम् २ व्यक्ति स्टब्स् मन्तर्य केन्द्रय व्यक्ति हाल्यक निवस्ति । व्यक्ति वित्रम भित्राय केन्द्रय व्यक्ति हाल्यक न स्मृक्ति । व्यक्ति स्मृत्याना, व्यक्ति स्मृत्यान्य स्मृत्यान्य स्मृत्यान्य स्मृत्यान्य स्मृत्यान्य स्मृत्यान्य स्मृत्य स्मृत

भारत्वि प्रकार के स्वार अस्ति । स्वार अस्ति । स्वार प्राप्ति । स्वार अस्ति । स्वार प्राप्ति । स्वार प्राप्त

প্রমান্তর বুলার মানে কলনে করে। সংক্রা প্রজার করে বিশ্ব বিশ

## ্ৰান্ত কৈবিলা আধিদাকিত। ) বিশ্বতি কাৰেৱে প্ৰাৰ্থ কোক্

क करन। अमा आणि कालात्मक ममहत्त्व রিশন্তিক শইসাল। আধারে ভার্মানারে বিধয় ন্দানি বিপক্ষণ থাবগৰ আছি ৷ কৈছ পিয় ৰস্কু "两个种民族集"、"确实"(2015年),他就是一种"专门政治","我就是企新 भाग र तम्हें कि निकाल है अधिक कि में कि नि য়াল্যাক স্কুল্য একালে একালে সংগ্ৰহক এই এই ট दर बज्जेत्स व है । हा आक्रम सरका राफ के कि लगान 如"海"等的称名。中部中央管理工作、中国的中央大学 如 解文 选择的 身態 实有的 经不可引入的 正月月 門長 लगाम व्यक्ति कामहोस एउसा करने कर्निक मार्थि 工作主义 饱暖器 不安後 "唐仁人" 古地 网络人名马特拉亚 "考虑中,抗躁治,不多。""欲愿。()) 网络一个额条侧套 好物 不不可能 婚一日 (本代) 有一点 門道縣 化 语可问 राज है। एस इसमा नेत्रह करा रह स्टाइन लाग न नर्द न 三、湖 计二元 智能 计数点 二氯乙基甲基甲基酚 电电流电流 एका व एक जिलारावा भागि के द्वीर कोरा है। यार 医性神经 化化物 化抗糖 人名斯特 医角膜 电二十分 化费尔德 新山區 医化聚物医疗病 有繁化

一本山 化 安一郎安尼山 學性 建氯 भिन्ता । द्वारा भाग १ महिल्ला लहनास्य इस्टीस्ट त्वस्य १, ५९५ ७ ११५ (स्ट्रिंग स्ट्रांट स्ट्रांस स्ट्रांस **स** ं । तं क्षा द्विष्टान्त्रणः 大连续 人名伊里 经收益 1 人名特尔斯纳 计错符时间 电子三流 建冷泵 (2) からはいんそう しょかける かおり でおり 間に当 判断! (名は かいし) という (A) (A) を利田利(新羅川 朝(M)) 的复数形式 化二氯化二甲甲甲基甲酚 电气线 电线线 人名格塞 करिका स्वरंग प्रकार का स्वरंग करिए THE LEAST WE CAN THE STREET STATES 人名阿利特 经证明证 医二甲酚 化烷基 重星群 知過不到 "班内公司"项门设设的 西门区 以破损增高。 哪個 《 物管》 ्यं तर्ष्यः प्रदेशासम् । पश्च प्रक्राप्तस्य विभिः मकस्य धन ারত হয়তে কাগিল ৷ সাইকের পান্সারিক ाय बद्दाराक एक एसामा च राग्न कोख का निवन এং ৷ বেংস বিজ্ঞী নিশ্র দেশীয় বোক গ্রীক. ्नारीत क्षात्रः लुधिनीद्व शक्किम खोषक खन्नाराना 1、19 碳流 强和化的 网络科恩罗姆 网络特殊 া ু দর্শন ক'ব, জেমনি न्या राष्ट्र भन्यामान বার বিজ্ঞা প্রায়েশ্য **প্রায়েশ্য পূর্বা-পঞ্জাতিক বিভাগ** अभएर म कर्षक के विशेष के विशेष करा का का क यो भव १७ ११ पुर प्रदेश के किया के हैंग्यू औरके १ कि के की अल्ला नर्य, व्यक्ति की किशन ্প্তে প্রভাগ্নির এইজে অধুনাভন্কালের জ

जिप्रायं य अनेत्र हेही जारा रहेरता मिलिक लोहे व्य निर्माचुकेरियत त्याकि क्यान व्यक्ति स्वरंश, क्यान या मुद्दारा यावरकाम क्रांशाहात श्रेशा क्रापित থাছে। একণে জিজাস। ক্রি. কেন্ট্র চন্দ্রিকে এই সকল ঘটনা আমাদের নেতস্থে প্রতিত হয় ৃ क्रमहे मनुसानन अन्य बहुएक अनुकान हाई। বাল্য সমত্র কইবাছে। প্রতীয় সম্পূদার ভাষা নি (কে ক্ষ্য) ক্রিক ও নাজিক বলিয়া মুখা করিছে भारतम जन्ममुका भी म क्रिक भारिक निःकार यन थ। श्रेटक शहिबको अदेशा कालाइक्यद्वात प्रकृत्य पर्याच्या कार्यात कार्यकार्य कार्यकारकम् । ইং, ৰণিধা ভাষ্টেম্য সংজ্ঞানীত আকি লভ্যাপে १७ विभिन्न स्ट्रेट जारिक, किंक खारण्या भने अ-क्ष १३४१ इच्छे अञ्चरमञ्ज अवलाज्ञीक निषद्ध वर्ष होंगू हिंकान के लिक्षाभी तम ली, बदर एक्स राज र्वाष्ट्राहरू काम्यान वर्षकार्थे हेन्स्यान स्थापन है ा व्याप्ति के के हैं है, विदेश हैं है, है के लिए हैं के दिया है, नम रा अन्यान्त्र सम्भः विकित्तिस स्वयूप्तकः, न्यान्तराज्ञ प्राथित एक १ एक १ जान में जाती हैं के अधिक हैं। তিষ্টাৰ স্টাল্লন্ত আছানেন্ত চল বেকান আলি 使混蛋性 (放)性 1.4距(何以) 1.2 有 2 经 1年 2年(安文 一个小女子的 野山 新山山 (1911年 ) 阿尔德 (1911年 ) व्यक्षेत्रं अकर्र भाषामुख्या भाषा क्षाता । यह केंद्रदास खदम मन्द्रमाम हाला हा हा है। 🔊 🖰 📆 电音声波 查找什么人会开个 每点的信息性 (4 字) 所证。 यस्तर **१८ भटन्य** ६ अष्ट्रहरू । स्टेबर पूरिकर ५ । सम अक्ष करदम रिकीस ध्य लाजमात्त्रील अबर, स. २ तुराव व नोहरू को इस्पाप सिक्किय हरा। प्रमान के श्रीहरू हार हिराष्ट्र क्षिण्यम् इति वारापः । १५ सक्य अपेस लक्षे क्षित्रा कि जिल्हा रुट्ट रहता भक्ती आल जीत के है एक्स काब, क्यूंकि रिष्टा के संस्थान किया भां क्रमण भूभाधिक ३६, ७ थ्या ला,घरा का १९८४ कि कहिरात अवस्थाकन क्षिण एणन एक देशिहे एकि ব্ৰোচৰ সচি না ৰে. ১৮ - কাৰ সম্ভ জাছাই লগাতখ নাত করা খাছ দে জননি ব্যাকার সহিত্ত ভাতা आभागतिमुधं कमाल अमान किलान अल्लंड क्या কোনটা ডাঙার আছিতের হয় জননত সে খুবিটেড পারে নাই কিছা স্কুখার উচেব হওয়াজেই যে रम सन्मर्भ है।। अ एक अन्य समूत खाँख शांविक हरू. ८४१४ को १ ८७२३ फार | अबीकोत कविराम मा। মন্ত্র ভাষত ভক্ষে স্থার ভাষত অর্থর 的松 明明,四年四年的李明明,阿德德 李精群的中,第一 क्ष्यार सामन्य जानाम कानाम कानाम कानामकान अ-तिष्ठत्रहे १६६९/२, क्या, यनिक टम त्य**थरम् शल**्ज-टलकर एकरल किस्क्रिक प्रक्रिक एकर् करत. ए क्रिक्ट रह रह पूर्ण, क्षाहाझ जगरत रह वह-

संग अके। यार्डपाम 'वाकिया बीग क्रमंत्रित्य में जि ও ভেজঃ প্রভাবে এই সমস্ত সৃষ্টি করিয়া ভাষা-निरंगत अहिर्देशन कार्या निर्दाष्ट्र कहिएकहर वरे विश्वाम अथम इहेरण्डे खानाव मानीमर्था जीति-ভূতি হয় ৷ ভাষার আছরিক প্রথা ভাবে সকল **७५**न ७ अन्तुर्धं ३ हम् मार्चे, भ रक्शन अस्पेरक व्यकृष्टि बार्श कांक इंहेर्स्ट भुक्द्रीए साराटकरे কিয়ৰ পরিমাণে মন্তব ভাব দেখিতে পায়, ঘাইা-ভেই একটু অসংগারণ শক্তি ও ভেজ নিরী**কণ করে,** खाशतक कामनि त्महे अवीक्रिम्त निवा। शिकि क्रों क्रमाहि वृत्ते हत (य सर) ८ छ छ-অহল ক্ষেত্ৰ শানী প্রভাকর ও সাধ্রতে, প্রচণ্ড প্রভাব বিশিষ্ট माम्दर्भ । अनदस्त्र । अक्तिया की धर्म गरस भाग खदस वालि आर्थे ने प्रयुक्तिक जनर कात्मव ५व्याम राभगः কাৰিণী গোচনজীকে ও মনেছের কিন্তু সর্মণ क हो पुष्पिक हम्मभारक मञ्जूत काष्ट्रिम करित रह राज्य प्रतिकार कार्यकार क्षित्र व

(राज्याः अकामा)

#### wastig Com

#### गहबाधवात ।

हि क्षिणिय से रहिम भावाद स्पाद प्राप्ति शहरे होते हैं।

रहिन करित क्ष्म कान्याति र हा के नक्ष्म होते हैं।

रहिन क्ष्म का स्वाद का स्वाद का नक्ष्म होते हैं।

रहिन का सार हिन का स्वाद का स्वाद का स्वाद का है।

रहिन देन का सार हिन का स्वाद का स्वाद

नाम कि नगरत रवण महीन मान कुकी श्र क्षमणों के महणां शिला नियार छ। मना के शिलां ने मिना कि महणां के शिलां ने सिना कि महणां के तिराम कि महणां के तिराम कि महणां के तिराम कि महणां के तिराम के नियार के देख के तिराम के तिराम

नरस्मानीस् केलिनात्र लाली व्यवस्था हो।

ल्याम्बर्व अस्ति अस्ति ख्रीय ख्रीय स्थान कर्ष इति महारा इत्याव लक्षिण महिल वस्त्र द्वाच्या महत्वच अकित्र महत्व विषय कर्षि श्वा कर्षा विद्यान व उक्क कार्षे) अस्त्र क्षाप्त इति एक विद्यान कर्षा विद्यान व सम्मान्य महा अस्ति क्षाप्त क्षीप्त अस्ति ख्रीय कर्षा ख्रीय क्षित्र महास्ति क्षाप ख्रीय हरू स्व द्वीप दिल्ल क्षीय क्षाप्त कर्षा क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त कर्षा क्षाप्त क्षीय क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त कर्षा

साम में (१००) अरेग्स्य सम्मा स्टब्स्टे अरेक्स्मात में अक्साम नदा किर्द्धा १ साम्ब्राट संबद्धा छ प्रान् तुर्वाम वर्ष कर्षण हा क्रिस्ट कर्षा क्रिक्ट कार्य प्रदेश स्थान सम्मार्थीम एक पश्चिम र्श्वित्राह्म अक्षा त्रार्थ छ । जिल्लेक्ट एक्सा १ वर्षम स्थापक सम्मान्य हा स्थापन । जन्मी (१९६०) १९६० तथा वर्ष १९६० ।

ক্ষুষ্ঠানেৰ ক্ষেত্ৰ হার্য্য হছন। আবাধি নিয় বিশিষ্ট হাতে বিশ্বস্থিতি জয়ুঠান চহিত্র শব্দ হয়্যাহেত্ৰ

ব্রিষ্ঠান ব্যক্ষালয় মুক্তের প্রক্রের স্থানের প্রক্রের স্থান্ত ও

প্রীমতে কেন্দ্রনাল ও সংস্কৃত্রের সভায়ে বিষয়ে। ১ লেকে (স্থানেক )

জ্ঞীয়েত দেৱে নালে সংশ্ৰুমন্ত্ৰ লৈও ৰ ও মন্ত্ৰ জ শংক্তি কৰা সংগ্ৰহ

শ্বীয়ালয় আনে।প্তভা ধ্বুম্মটারে। প্রশ্বাধ আছে। ১ কল্টেখে।

बोशुक्राक्षणाम् २००० १ प्राप्त १९७४ में ल स्थानकार्षः । सन्तरकाताः

क्षेपुरुर क्यूमानाल न.. १ पुरस्य साम्यद्रन १

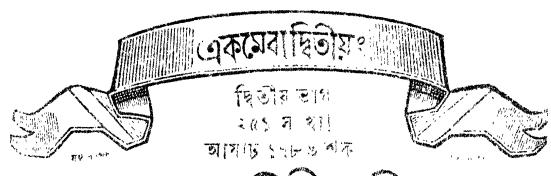
( । (भ्रीक्षेत्रमा)

প্রিয়াক প্রথণ কুলার গ্রহণের প্রহার নাগকরণ । ব 'বাজপুরুর ই'

भीतुम्हः अक्षर्युभाव मन्त्रपनात्वय कस्तुत्वः अन्यक्षरः । अस्यापकानः (कस्तुत्वातः)

क्षेत्रेक विद्यास्त्रमाथ श्रेष्ट्रदंड श्रेष्ट्रा कालका

and the second s	The second second	and the property of	The second second second		
अधिक वाद्रम् जनाभ महत्रामानारात्रव	THIS EI-	1	SHIDEN WE		WART CARE
किन्द्र र भीवन्द्रभा (वाष्ट्राम		113	ALATAIDE HA		The second second
প্ৰয়ন্ত কাৰীন্ত সংস্থা লিভার প্ৰাৰ		4.	All the same and the same	1961年中華	
	471	1 12 14	उगानाय अल	Constant Constant	
(স্ক্রিপুর)			CAPES AM		
अपूर्व द प्रकास शतका विखासीत ।	প্রাক্ত		নিভানাথ গোস		1 tim
( n(made )	and the second	1	नम्बद्धां मुक्त	د در این ولای	11.00
विश्वक अध्यानगणायाच्या लगमामानीय वि	পতার আদা	44		A CALL AND A	
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	, 10	टकला स्था हर धन	A CONTRACTOR	A No.
		r=			n (II)
শ্রীযুক্ত ভাষ্টেশ্বরির ক্রেরের ব্যাহরে 🗃	门村)组[編]	į.		to (4)	Ho.
(१ (भागामी)	0		ৰিমটোদ ৰাখড়ি	أهأج المحافظة	afficial to
नागुक नीमनाथ शक्य-११३३ विकार	गटक्ष भागा		विक्यामाभाग वि	4	
ल्याम्हा ( ने.सन्ताहा वाल )		i .			
	in artist i		ter de France	ا سداست	202110
क्राविक रहेरकान्य रोग ो । बेरचर विश्वास ।	4412	, <b>4</b>	ના ! ત	मान ।	
ू अंतर्भाष्ट्री है।		in Man	कालीसाम आजिए		·
衛衛 大野水平 5.0%。 计对外通过 详知时	अ क्रिक्र	1 4,	तानि अर्थभन्ति		5 <b>k</b>
and the second		4.	ज्यानुकर विक		1.3
अपूर्क ताक्रमानावर प्रश्न कर्मात विश	14th (		्याक्षा अस् समू		
( १०० विश्वास्त्र)	•		A STATE OF THE STA		25
	25 5		धमत्रस्य (यमग्र	ংগিই দ	\$r
動養物 经出租工 山本山外 化克斯兰 血症		1	ं ग्रामालिक स्मर	.,	ì
かられ かしょう こうしゃがく ある様	न्द्रकान कर	,,,	भारतकाम जिल्ह		£.
こうできる ハンジャンディオリー	•	j "	बामहत्स त्याकाल		
MARINE LATERNATURE TO STATE OF MARINE		1 44	भोताकमार रहना।		ξ,
जिल्हें के किया है। अंक के अवसी है जिल्हें के	rite famo		अधिन के (अ. १.७)		
• •	ेक (क्रिकार	i .	The state of the s	,	e
(state)			के लिखालाई र भी	17 · · ·	,٧٠
		1	ीलक्ष्यः विक	p. 1	a St
		**	रेव्हानेनाभ म	*	۸,
一句目的人的主题情况的主题中 110	18 Th. 45				
the state of the s	Proceedings:	!	mile from that the st	seren tasi i	
海绵病 地名美国拉尔 化氯化	A ( 11)	i	लक्ष प्रमुक्त कर राज		
अनिहास प्रमुख्य व्यस् विस्तर	er 1	417	大门 经产品 对领用	14, 17.	4
	•	* .	ाक्षारा महत्रान	₹:	*
e V	* + 6 11 Ja.	1 44	<b>इस्ट्रास्थ्य वेश बुद्ध</b>		÷
man to the state of the state o	12 17 3×18	+ 4	ं देकत्मनाभ सीप		,
	المراجع المراج	i	it was end add in 71 f. 28	**	A
	286 9189		1.5		. **
•		;	একফাল	्रिस स्रोच ।	
	Lamber Harley	الله الالله	ध्यमधनुष्राप्त भाषा	1971'4I ( ·	
化酚磺甲酚医酚磺甲酚 医水杨二二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		रकान्य हास्त्र हे करा		
<b>作序了模型</b>	i	1	Carrie Ban traini ( Mila)		. ,
護衛性的 選別の前 しょうしょう シェーディ	2000				Ú
** * * * * * * * * * * * * * * * * * *	(Lu)		311-4-24	६ व्यवस्य ।	
		(M) 1834	greentein va		
स्मिन्। १०११ क्रांकिकाक महिद्दर्भी	ब्रिके निध्ये ।	4 1 1 1 1 1	हर्तान लोक		· 66 60 5
	*****	. ,	<b>ি</b>		ALASA TELEFOR
國民學 化红斑结构 化二碘亚丁油酸铅矿 一一一一	30	, , , , ,	(a)	*25	
The state of the s	\$ # <sub>1</sub>	٠, ٠,	i		ल्यं.
对于南部人物 人们特别的	26	Time To	Wash Higaria		
The Sale of the alle	<b>∑m</b>	35 + 35L G	শু প্রেট হ	LANCOUR IN LANCO	Slor
A STATE OF THE STA	4				
		<b>स्ट</b> भार्	數据 ''		( C
भ प्राप्तकानाके दस्यः । १ ५०%	141-50 11 11		4 <b>5</b>		1 5 th
and the state of t	74H"	ত্র ক্ষা	这种,人。这个 shall		3.4 57
or enter hitsing	***		शत का विभागत हो।		, Bonggi
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		गरराम			<b>3</b>
क सम्बंधान सङ्ग्रीस ।	1 2 4		য়ে ভি <b>ৰন্</b>		27
The state of the s	m . 5°. i	* 15,1 T	3.34 1.77 <b>年 [27]</b> 3.71 年 - 1.71 日 - 1	4 m	The state of the s
		e in the	المستعادم المسيدة المسادر	the state of	e de la companya de l
Mary High		A. A.	रविभिनी असिक	ite man f	च च्युर १ क हैं
ंब्रिट्स असे स्टार्ग 🐪 🛒	Jan Baras		भूगः । किंगका छोड		
一种 特特拉斯斯 流流		4.4	श्यक्षाम् अस्त )	i waa kaasa	740
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	But & the t	শাসিক			late
मुश्रिक रुक्तिल एक्स	14.00 S 2001	(c)# (i)			10 July 18
李·刘州中等《 4名	Branch Branch		THE PROPERTY OF SHEET	A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH	Succession of the second
中で成態機能の <b>を</b> 整		- TO 100			
Superior Control	A MANAGERY			the state of the state of	E AND AND A
e e e e e e e e e e e e e e e e e e e		w	and the second second	· "我们是有什么。""那我	



# - जबवारनी थांनेना

्रभार द्वार्तास्त्रस्थकार्त्रोत्स्तासः, हेन्स्मस्त्री द्वामिन त्राक्षत्त्वः । एदान्यः विद्याः देशः सन्दर्धाः ए रक्ष्यंद्रवाराः प्रस्ताः १ व्यव १ और १ कक्ष्यद्वाः । व्यक्तिः श्र सम्बद्धाः ए एक्षणेत्रः । कित् वश्चार्त्रः । १००० । १०० वर्षाः स्ति १०० १ व्यक्तिः व्यक्तिः सम्बद्धाः । व्यक्तिः । वश्चार्तिः । वश्चार्तिः । वश्चार्तिः । वश्चार्तिः । वश्चार्तिः ।

## याजभरमात्र संस्थानः

ন । বিজ্ঞান সমূদ কাইনাৰ । তথ্যসমূহত সংগ্ৰহণ কৰি কাইনাৰ বিশেষ্ট্ৰী

四月间 日下 可 事委事

14. 14. 15.

भागाः कामानसर्छ नामा-दरः मद्रशासीशायकस्मा भागाः भाग शोदाञ्च स्वतः विक्रिः। धुःसः मसुद्विष्टिं म भागांत्रस्य ॥

বালকের — নিকোপেরা বছিকিল্লাবন প্রতি মনকে থাবিত হইতে দেয়। তালাল মোলাজন হট্যা ইন্দ্রিয়ের বিষয়—ক্ষুত্র কামনার বিষয়—ক্ষুত্র কামনার বিষয়ের বিষয়—ক্ষুত্র কামনার বিষয়ের পশ্চিথ গমনা করে। 'তে মুত্রোমান বিকলি মুকুর পালোবক হয়। তালারদের অমৃত লাভ ক্য়না—তালালা সংসাতের অমৃত লাভ ক্য়না—তালালা সংসাতের অমৃত লাভ ক্য়না ক্ষুত্র বিষয় সুখালাভ ক্য়িনাই কৃষ্টি প্রকাশিক। কিন্তু বিষয়ে সুখালাভ ক্য়না আমৃতত্বকে জানিয়া—মেই অপ্রিক্টিনীয়

আছে, নিম্প্র আছে— সুযোর আলোকপ্র আছে। বলনীর অধার্থ আছে। সেই কল এখানে ক্রাঞ্চল আছেন, বিষয়ীও আল জেন এখানে ক্রাঞ্চল আছেন, বিষয়ীও আল জেন এখানে ক্রাঞ্চল করিছেছেন বিশ্বালি দিলালে করিছেছেন বিশ্বালি দলে সংস্কৃতি আলোক্ষণ আলোক্ষ করিছেছেন বিশ্বালি গালেনেশা, ভালোক্ষ মানু বিশ্বালি গালেনেশা, আজেই মানি বিজ্ঞানিক ক্রাঞ্চল বিশ্বালি গালেনেশা, আজেই মানি বিজ্ঞানিক বিশ্বালি বিশ্বালি প্রস্কৃতি বিশ্বালি বিশ্বালি প্রস্কৃতি ক্রাঞ্জ্লা, হলা বিশ্বালি প্রস্কৃতি বিশ্বালিক প্রস্কিতি বিশ্বালিক প্রস্কিতি বিশ্বালিক প্রস্কৃতি বিশ্বালিক প্রস্কৃতি বিশ্বালিক প্রস্কৃতি বিশ্বালিক প্রস্কৃতি বিশ্বালিক প্রস্কৃতি বিশ্বালিক প্রস্কৃতি বিশ্বালিক প্রস্কিক স্বালিক প্রস্কিক প্রস্কিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বালিক স্বাল

रिश्रम श्रीकारणस्य लच्चा लेखा छात्राच লেক্ট উপুৰি ৮ - তেকেলে জাধ্যকে পদ্ধান্ত মানুনের মাজ জনজন কেন্দ্র বর্ল 💢 হা ভিবেদের 羅賴語 粉稿 经工作 医二氏红斑 医红斑 网络 क्रोतिक खडाक देशीय एवंदर खिलाल करहें --के संदेशक (देवरा स्थान लाइसन छ्रात्र करता) জে (ক্রি) আলোল আনু বিদ্যালয়ৰ বিদ্যালয় প্র (甲丸、丸) (甲丸) 引强(交) 例(四)中的 (十世間) 李阳(1) 南西山 野山西京( 青分配 五川野河 [春 ·新信用的,如BB的 2 · 唐. 形分 · 相似的心。 2 · 解醉解 रस्य 👉 क्रान्ट्र, ज्ञानीय अर्थि 🗝 "सि बाब एर्क संभावत् १,००० छन् प्राप्तिनातः विश्व भिराद गण भगपर जासुक्त प्रतिक েহামারি ৷ - তাংগোর এম আম্বরিক আর্থনা नरम भून इस, ७५२ हो इति इन्हार इहेटड ক্রজন্মরে<sup>(ন্</sup>র বিজ্যাত হইয়া **ঈশ্**রের চরতে ধ্বিভ হয়। বেমন উ।র বিষয়-তৃ-<sup>সভার</sup> নির্ভাড় ২৪--- যেমন তিনি সংস্থোম্ভ লালে তাবেল বেমন ভাঁহার স্থাশন্ত **প্রদা**র আছে: ১ ইপ্রকে বিরাজিত দেখেন; ভিনি अक्षार्थः ११६। त्रक् कद्रमः " आक्षार्थाः। ला कार्या । - जाक्या जायां प्रा, कार्यामा । অংশ্যান ভোমার করুল্ন-ভার্মি কে গ্রে শান কে ভূমি দেখা। দিতেছে 🔭 ভিনি ক্রত-

অভা কোথায় রাখিবেন, কি প্রকারে ব্যক্ত করিবেন, তাহা তিনি জানেন না। তাঁহার প্রেমার্ক ক্ষয় ঈশ্বরের মন্তাতে পূর্ণ হইল— তিনি কি করিবেন, কি বলিবেন, কিছুই স্থির পান না।

পর্যা তথ্য তাঁহার অনুক্র। যে ধর্ম আফারনের এই পৃথিনীর অন্ধ — যে ধর্ম স্থানি বন্ধু— যিনি আমারদের হস্ত বারণ
থারিয়া পারম পিতার নিকটে লাইয়া গাম,
মোই বর্ম উহিলে স্কেশ ও মন্ত্রী । তিনি
উলি মান্তরে হস্ত দিয়া লগেল। আলাত কি
থিনি তোমার নিকটো পোরণ কলিয়ালেন উহিলে আলেশ এই লে আলা তোমাকে
ইলার্ড্ নিকটো লাইলে শাহন । শামা উহিলে এই মন্ত্রা গাহন । শামা উহিলে এই মন্ত্রা বালেশিয়া লালে নথা বিহার অনুবামী হন দেলে শাহন নথা বিহার সম্প্রামী হন দেলে শাহন কলে বিহার সম্প্রামী হন দেলে শাহন কলে

दक्षे इंद्रिकेश व्यक्तिका दिल्लाहरू करिकृत। वर्षा रथन धार्राटक भागी। ५०-खाः । व ह्यां च लावस्ट्रिक धना । १ व न यस র্থমর বিষয় তার্ল ক্রিব্র আংশেশ ব্যালন ওখন ভাগার মনে ফে আছেশ কি কটোচ-ক্লিক স্ণিভাত কামনার (4)4 3 1 ! বিষয় পরিভাগ করিতে যে কেমন কুঠি ভ হর! সে পর্নাকে কটোর শিক্ষাকের সম্মান দেখে, ভারার মণুমল ভার গ্রহণ করিতে পারে ন ৷ সমৎসৰ কাল পরিশ্রম করিয়া यथन म छ। श्रां अतिव्यस्यत वियमस कल. নীচ প্রবৃত্তির পাপ-দ্রাদক বিষয়, লাভ করি-বার জনা হস্ত অসার্গ করিতেছে—ধর্ম বলিতেছেন, মিধা৷ সাক্ষ্য, প্রবঞ্না, শঠতা পরিত্যাগ কর, এখনি পরিত্যাগ কর— অ-নার কপে পর-দ্রব্য গ্রহণ করিও না—নি-

র্জোনকে ছুর্জনকে প্রীড়ন করিও না—পান-एग्स, वाक्तितात एग्स जांत्र कत- এই भक्त আদেশ তাহার প্রবণে যেন বজুপতি হয়। याङ्ग्रा मर्व-धारञ्ज विषय-सूर्यदक्षे मर्वा করিতেছে, তাহারা ধর্মের জনা তাগি ক-রিরেও মূত তুলা হয়! ''ধর্মাং চর ''ধর্মা-भुक्षान करा, এই अर्थ-भूर्व श्रुक्र जा जारमम ण्डिति एवं निकटिं अटनक गमत अर्थ-ण्ना माजुर्देशिक कञ्जा । उद्योगात्रा भागात्क परार्थात कना, জ্পাতের জনঃ 'আখিজন করে না', ভাছার' অপ্তায়, সুধ জায়— সাংখ লভে ক্ষভির विष्धारहबुडमां कहता। धरे छमा प्रया छ। স্থানের নিকট কলেবে ওক্ত, ভাইবেদের স্থ সালে ক্রতভারের বিপ্রবারী ৷ ভাইরো भारतन समार्थ यदमात शृष्टम अन्तरमानि ব্কাসকল অব্যান্ম করিল সহা ভগালি 型一個一個可以

বিশ্ব গ্রির শ্রেনির, রক্ষা থাইর লক্ষ্য,
বিশ্ব দি হার গায়ন্ত্র হাইরা উহারই প্রাথ
নার প্রিরেশনেক উলের নিক্টি অনিয়া
দেন। শ্রেনিক জনের ক্ষেত্র শিক্ষণেক
আরি এক জনের ক্ষণেকর । করেন জুই
জনের লক্ষ্য মন্ত্র বিশ্রীত। একজন
স্বাধাপনত। চরিহাপ করিবর জন্য সংসারে
ভ্রমণ করেন, আরি এক জন সিশ্বর-নাড়ের
ভিনেশে সম্যার-ধন্য প্রেন করেন।

যাহরেদের ঈশুরেতে বিরাগ ও বিশয়েতে অনুরাগ, ভাহরো সীয় হৃদ্রের ঈশ্বরের আনন্দ-রূপ অনৃত-রূপ দেখিতে পায়
না। বিষয়-লোলুগ ও নোহাল্ল হইয়া পাপাগ্লিকে রুদ্ধ বোধে এহণ করিতে যায়, দক্ষ
হইয়া কিরিয়া আইনে। মস্তকে ধন্ম-দণ্ড
সহু করে, ঈশ্বরকে দেখে যে তিনি উদ্যাত
বন্দ্রে ন্যায় ভ্যানক। ভাহারা অন্যায়াজ্ঞ ভ সম্পত্তি ও পাপ-প্রস্থৃতিকে বিসক্ষন দিয়া
ভাহার শরণাপন হইতে চাহে না, ভাহারা তাঁহা চ্ইতে দুরেই যার এবং দুরে থাকি বার অভিনাধ করে—স্থতরাং নির্ভন্ন হাইতে থারে না, সংদার-মোহে মুগ্ধ থাকিয়া শোকই করিতে থাকে। তাহারদিগকে এই সকল যত্ত্বা তাড়না কেন ভোগ করিতে হয়। ঈপরের অভিনার এই যে তাহারা বিষয়-স্থেমতেই তৃপ্ত না থাকুক। তাহারা আপনার হীন লক্ষ্য পরিতাল কর্মক। তাহারা আপনার হীন লক্ষ্য পরিতাল কর্মক। তাহারা জ্বান-মেরা ভীষণ অরণা হনতে আপন পিতার আলহাত্ত তিরিয়া আলহাত্ত বিংগান পিতার আলহাত্ত তিরিয়া আলহাত্ত মাধন পিতার আলহাত্ত বিষয়া ক্ষাপ্তক, বেগানে মেরি শেবের বল নান, সংমার মন্ত্রণ বর্ষা নাই, গাপ ভারের আলহাত্ত নাহা

विधास भाषायातमा हामा, स्टा हिला ह काशहरकत भी विकास । (राजनीर थर दक्ष वन विषय स्टब्स्ट भारमुन । भिन्तो वनक মুকুরে গতেও পুথিবীর পলিকে করে। সইয়া হালিজে লাজে। জিলি মূলি জগত্য 🏥 ৮% विवस स्थय श्रांति कारण सर्टन्स--। यो ग्रांशिद्यव क्रमा मका श्रीतरासर क्रमा जराहरक नीक्षीत कर्षान, जार्य भग्रय चा स्थान राज्य ता उत्थासन দ্ৰূপ আৰু জন্ম ক্ষিত্ৰে সুব্ৰোৱান্ত ভাগানু ক্ষান্ত राण निषय ना ७ इत्यान । १७% म् अत्राहान काम नार्य क्या क्रमा र र प्राप्त अवस् राजिक र्रिकारक विश्वास राज्यात राज्यात है। कृष्णम । "उपानीसरमह क्षेत्र प्राप्त के के किया है कृताः। जन् कर्रे खाक्रदाम कादण--" পরাচঃ কার্মান্ত্রাক্তি ন্রাংগ্র ক্রেছ, হবি निष्ठमा अर्भशो। (सहस्रातना वश्किस्त-बद्धत्रे लक्षा संत्याः । इतः विकीनं মৃত্যুর পালে বজ 🕬 🖰

কিন্ত নামান বিশ্বনের বিং কালা, কি অন্ ভিলাম। তেনি একাকা। করিতেছেন স্থ-গোডে স্থানের সমল মূর্তি দেখিতে পাই-বেন, ভারতে বিশুক্ত প্রাভি আরো অবিক গিতে পারিবেন। ভারার সমা এক পূর্ণ নয়—দেব-লোক হইতে দেব-লোক তাঁহার क्रमा श्रञ्ज विशाहकः; উरक्करे ज्वान-श्रीजि-সমস্থিত দেবতা-সকল ভাঁছাকে প্রতীকা করিয়া আছেন ৷ অনন্ত স্বৰূপ ভাঁছবৈ লক্ষ্য — সন্ত কাল ভাঁছার জীবন। তিনি স্বর্গ ≠২তিক স্থা-লোকে জনিকই **ঈশ্বে**র স্লি-**्रिक क्षेट्रक थाकित्वन : व्यक्ति फिनरे कौरा**त भाकारमञ्ज्य ४ केट्ट। ध्यामहा अहे अर्थाटनके প্ৰশ্বৰে জ্বীভি দান কৰিয়া য**ত টুকু আনন্দ** সপ্তভাগ করি, যাদ ভাহার এক মাত্রা আর आभित इन, उद्भारम (ध्येम, १म आर्मनम वि भाग ४ हर भन् मित्राहरू (**८५** म्हरू **४३**३) राउ स्थानलाहरू हैं। मीत अविक आनम स्हा উপচন্দেল করিছে আইব, তাহা এ প্রথিকী रहरक कि एक्कारक खन्न इस क्वरत ? आमरः कर्म स्थिती कर्षाक विभावतास्त स्थापन क्षी : एवं डेबंड करेगा गयन केश्रातन महस्र कोट्डा ताफ-कर्भ मामिति हरेव, उश्व धार्मात भारति का गास्त्र गरेता है। अहे बाली শারে লে না উচ্চন যা ্রামার্শ্র অ সার্বেদ্য মধ্যে এই উন্ত আশা পোরণ করি। ব্যালকা তিকি লিগদেশ দিতেত্বেক্ত ৰে আ্মরা উপ্রের প্রিণ সম্ভান ক্ষি। আম্রা প্রম। পিতার ভাগ-পুত নহি। আমরা অমূতের পুজ্ঞ-শমূত-লাভের অধিকারী। দেবতাদের भटक आंगोतरम्ब सभीन जानकात। आंकारम অগ্না অগ্না ক্ষাড় আৰু লোক-মণ্ডলে ন্দান পৰ্যা প্ৰীতিকে ভয়ত দেবতা-সকল যা-প্রমাহমা সহত্রে পরে পান করিতেছেন, ভাষার মত্ত্রে আমারদের নিতা কালের যোগ । এই সময়েই বধন **আমারদের স্তুতি**-গানে আকাশ পুল কইতেছে, এখনি কভ ক্ত ১ছন্ডিকাৰ গোক হইতে **ঈশ্বের ম**-হন-প্রতি মারিত হঠতেতে। যে যেখান एडेएडर इस्ति भुक्त करत, मकन शूजिंद ভাঁহার প্রকাল ওক্ত কইয়। মি**লিভ হয়।** 

হে পরমান্ত্রন্থ । আমারদের থতি ভোনার কপা বিতরণ কর। এই বন্ধ দেশের দীন হীন সন্তানগণ পাপেতে মলিন রহিন্যাছে। যেখানে দেগি, লোকেরা ভোনাকে ছাড়িয়া কেবল বিষয়-স্থথে উন্মন্ত রহিনাছে। হে পরমান্ত্রন্থ উন্মন্ত রহিনাত ভাবে প্রথমা করি, তুমি আমারদের ক্রম্যকে পরিত্র করে। ব্রাক্ত ধর্মের উন্নত লক্ষ্য সর্বত্র প্রকাশ করিয়া এই বন্ধ দেশের দ্বিত ভাব পরিস্কার কর। হে নাথ। তোমা ভিন্ন আর আমারদের গতি নাই।

उं এकस्मवाधिकीयः।

## बीग-िछ।!

भगन्त्र अन्य-एकरान जनः भीनव-कीनरः भक्त मगर्य ५ मक्त व्यवस्टि केश्टनर মাজ্য প্রকাশিত ব্রতিষ্ঠাতে প্রকারন ञ्चममः मध्य जि र तमन्य भगीतव कु स्वीत र विजि কিন্ত্ৰীটি স্মান্ত শক্ষা বহন কৰে ওখনও জ্ঞান महिमा, आंत अपेस (श शतन धीम जाइस)त विकलाञ्च ७ मेथ्य (भर) इस्मा भृशितीत সমস্ভাব হাহাকার করিচেছে এখনও তাঁহার মহিমা। যথকালে কাট-সাধ্য ধলা-ত্রত প্রাণন করিয়া প্রশাহ চরিত্র ধার্মিকের क्रमग्राकारम यानमः (क्रां प्रका श्रकां भार হয় তথনত ভাঁহার মঙ্গল ভাব, এবং আল-প্রামি ও অনুমোচনার করাবাকে আকুলিত হুইয়া পাপী ধুখন হা হতে পিয় শব্দে ইভ স্ততঃ ভ্রমণ করে তথনও তাঁহার মঙ্গল ভাব উজ্ঞানপে প্রতাক হয়।

এই ভয়ন্ধর প্রায় কালে কেন্ত কেন্ত্রিনম অক্তাপে নমস্ত রাত্রি জাগরণ করত স্থেদ-সিক্ত শয্যা পরিত্যাগ করিয়া জুর্বল কুর্মা। ক্ষম শরীরে প্রাতঃকালে গাজোপান করি-

**लब, এবং जानम्या जाकूल हहे** से जर्ज-মুক্তিত অবসল নরনে বারছার ধরাশারী **इहेटक लागिटलन। कान कटमहे निवांत**-•ভের মধুরতা উপলব্বি করিতে পারিলেন मा। क्रम्ह कम् वा नाइस्य यामिनीत मकन क्रिम निवादन मनिटम व्याज्यकाटन वह कन শ্যাবলুঠিত হইয়া অধিকতর নির্বীর্যাও নিজ্যুভ শরীরে নিতার অনিজ্য-ক্রমে দি-বদের নিয়মিত কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতেছেন। ध्यश्रत (कह तकह ममस्य तकनी छेदमत-तक।-लाहरल उग्रेख हिर्लिन, এवर अयुद्ध कराना আমোদে শরীর-মনের তাবৎ বল নিঃশেষিত করিয়া, অধোবদনে, মৃতকম্প শরীরে, লজ্জা अ ब्रानिशूर्व इनरव, अकर्ष वाशन। निर्धित क्र रुविद्वार विषय भावन कतिरुव्हिन। था-কৃতির প্রফুল মুখ ক্ষম অবধি মুখন ও বি<sup>ষ</sup>ধ বেগৰ হইতেছে। স্বীয় অধিকার-কাল আরম্ভ ন: হইতে হইডে কুপিত বিভাবস্থ সহস্ৰ াৰ্থময় খাত্রন্মিজাল জারা**অন্মতে বস্তুস্করার** শান্তি-নৈশভ্যকে বিন্দী করিতেছে। উযার শিশির-হার ছ্রাব্যনকে পরিত্যাগ করিল, পकिशन नीत्व इहेल, धवर मदमा भार আহলকুল্লমরাজি অকালে মিলমাণ হইযা পড়িল। ক্রমাগতই দিবমের ভারস্কর ভাব র্জি হইতেছে! গ্রীমাজজ্জারত অবদন্ধ শরীরে, হে সর্বনঞ্জনময় প্রম্পিত। । প্রাত-দিন প্রাতঃকালে প্রভাক ব্রাক্ষ প্রেমাক্রপূর্ নয়নে তোমার স্নেহ্ স্থরণ করিতেছেন, প্রতি তেছে, এবং সকল তাপ সকল ক্লেশ বিস্ফৃত হইয়া প্রতিজনেই অন্তর-জগৎ-মধ্যে বসস্থ-শোভা সন্দর্শন করিতেছেন। তুনি ভক্ত-वरमन-मीन भवन, जूमि धनी निर्धन मकटलवरू বিমল বাসনা পরিপূর্ণ করিতেছ, ও সকলের শারীরিক ও মানসিক ক্লেশ নিবারণ করিভেছ। त्र नाथ । (कामोदक धनावान कति ; कीवदनत

ছৃংখ-ছতাশনে যেন তোমার প্রসাদ-বারি আমাদিনের আত্মার পতিত হর, এবং যথন পাপদক্ষ অনুতাপিত ও নিতান্ত মুমুক্ হ-ইব, তথন যেন তোমার প্রযাল মুখ দর্শন করিয়া নিরাপদ্ এবং ক্লতার্থ গইতে পারি।

अरे बीश कांटन स्थांक नमश्रक ভয়ানক! প্রচণ্ড রবিনিঃসত অগ্নিক্র লিক দহনে সমত্ত জগৎ-ক্ষেত্র দাহামান হইয়া **छेठिल,** काठाव माधा विङ्डीटश করে। চতুর্দিক নিওক, পশুপকী নীরব, পথ ঘাট জলন্ত অঙ্গাবদদান উত্তপ্ত, এবং गद्यांच्यमानन वियम छेक महोशा छेठिएक एछ । मकल इ नीतन, किनल भएषा भएषा मृहिष्डिए इरकालविक निकान प्राप्त निवाद **স্চক শব্দ আকাশ**েচন কপিয়। অণু কৃষ্ট্ৰ অবেশ করিতেছে; স্বর। কোন শেরি। पूरा अनेनी खेकाकिनी अनावृत्व वर्षावत्र **ঠিত হ**ইয়া **প্রাণ্যম** প্রেল্গ বিখোগ ব্যাপার স্মাবৰ কৰিতেচেল, এল চুলিবান্ন শোক বের মমরণ করিলে অকল লেইন ব্রেল্র **উटेकः य**टत ७३ कर्ण वित्राण कविरुग्धनः ভাঁহরে রোদনধান মলে মংগ্র জনক্তরে অবিষ্টি ছইডেছে এবং জনগণে জাণ্ডত क ब्रह्म । अहे अधीव मण्डा ३० शह-মামান্। আমরা কোমার শ্রাণ্ড ১টা ब कर्न ग्रीमंत्री रक्षांमारक क्रमरत व्हान किंग्रा म्यूप्रमान प्रश्न কার য়াডেন व्यानाम প्रतिभूगं दक्षिण्डन । एक नश्यनत वाख्या ७ कर्मात्मानाश्तमत्वा, क नज़ी-আমন্ত নিজৰা গভীর শাভিমানা, কি মান গরবক্ষঃস্কিত পোলেনলে, কিন্তা ড় অর-लाइ विकास ग्राम्बन्स्याला, व्यक्ति ভাঁহার৷ অবান্ধতি করিতেছেন দেখানেই সাধ্কমজনিত নিকা শাখত ত্থা বড়োল করিয়া তোমার নাম কীর্ত্তন করিতেছেন। अहे कोटनत मटक अवश्भृद्वात मटक निश्

मामुना लक्षिक इष्ठ, हेरू। यम नित्रकर मृजादक न्मात्न क्रियो निटफर्ट । मृजूत मिखक नीतव অসংগর ভাব বেন ইহাতে মুক্তিত হইয়া त्रश्रितात्ह। हेकात नाति मृजूात गमत गकन हे নি মন্ত্র ও গভীর। এক্ষণকার ন্যায় ছৎকানে महीत व्यवमञ्च ७ विकल इहेरव अवः ममरत ममरत्र ऋषु अस्म। मत्या वित्र পরিজনের রোপনধনি আভিবোচর হইবে! আত্মা ८म्डे ज्यास (भाव शत (मात्कत पिटक) दीत्व बीत्व अभन क्षित्य, अवर मज्य छ একাগ্রচিত্তে স্বীয় কর্মানাকল চিন্তা ক-রিতে করিতে মেই কেন্দনশব্দে চাক্ত क्षेट्रा मः भर्त्रधन्कृति **अश**्कृत्यम नीत् কাবনভরুকে প্রভাগে করিবে এবং মান-শুষ্ক ও সৌরভ বিহীন চইয়া পৃথিবীর ধূলিতে প্তিত ছইবে, বিলেশ বিদেশ বোধ হৃহতে, স্বদেশ স্বদেশ (বঃ৭ চইবে ে প্রাপ-ছার্চাশন महत्व **७%-**अन्य ३०व (कर क्रिके क्रिके विभावन " श । (रायाम वागिसां छलाँम, কোনায় গদন এলিডেডি, কাছার নিমিস্ত, কিদের জন্য এও দিন পরিশ্রম করিলাম? का। अबे ज्ञामध्य अक विन्धू माखिवाति मान क्रिशा अधे निराध्यय विटमशीत यखना কি কেছ নিৰ্বেশ করিবে না ২ বফু-বান্ধব-ক্রা-পুত্র কেবার র**হিলে? ক্রেপডিড-পা**-বন ছ্ৰীডন জীবন প্রমেশ্বর ৷ ভোষাকে विमा ७ इटेरा शामामिरशेत जना अंड मिन মন প্রাণ দমর্পণ করিয়াছিলাম ভাহারা এই বোর বিপদের সময় আমাকে পরিত্যাপ ধ্রিল। তুমি পাণী তাপী কাছাকেওপ-রিতর্গ কর না, এই ভরসায় **আমি সন**-নালণি চইয়া ছার্থনা করিতেছি বে ভোষার নাারারুগত বাজিম্মিতে আমার অপবিত্র আত্মানেক পরিশোধিত করিয়া চরণধূলিতে श्रीन पाछ। ' स्रांत याँशाता कीवटनत मीज বনস্ত জীম সকল কালেই সমভাবে মুধা-

নাধ্য ধর্মের আদেশ পালম করিয়াছেন তাঁহারা এই সময়ে বলিবেন "যে দিনের জনা এত কাল পরিশ্রম করিয়া প্রস্তুত হই-য়াছি, অদ্য সেই দিন উপন্থিত। হে অ-• মাথের নাথ পরমেশ্বর! চিরন্ধীবন একা-দিক্রমে যে সমস্ত স্থাসম্পদ্ অজন্তমারে বিতরণ করিয়াছ ভাহার জন্য ক্রভক্ত হৃদয়ে ভোমাকে ধন্যবাদ করি। স্ত্রী-পুত্র-পরিবার, ধন-জন-ঐশ্বর্যা ঘালা কিছু আমাকে প্রদান করিয়াছিলে সকলই ভোমার হল্তে প্রত্যা-পণ করিয়া বিদায় হইতেছি, ভুগি সকলই রক্ষা কর; আমি একাকী একনাত্র ধর্ম মন্ত্রল এহণ করিয়া অনত্যের প্রথে যাত্রা ক-রিভেছি, ভুনি আমার সহায় হও।

মৃত্যুর পরে পর লোক যেরপ মধাক্ क दिन इ भव मन्नागिमन (महेनभ ? रूपा ज् স্তামত কইলো **প্রকৃতি** অপুনা শোভা ধারণ कृत्त । नडिशंग अल ममुक्तु ल स्थापित व्यव-শুকিত হয়, এবং ভাগিরখীপারে পশ্চিম দিক্ মহাপ্ৰ ভ নীল পীত গোছি গাদি বিবিধ বর্ণান্ত্রপ্রিক্ত স্থানন্ত ষ্বনিকার স্থানাভিত হয়; পরিশ্রান্ত বিভাবস্থ তাহার অবরালে নিষ্কু শ্ভ হয় এবং প্রকৃতি রক্ষভূমিতে ভূতন মূতন অভিনেতার সাবিজাব হইতে থাকে। শোভনতমা স্থকুমারী মেদিনী ছরিদ্দরে পীতজ্ঞটা ধারণ করে, মুকুলিভ সন্ধানুকৃষ্ণ একে একে अक् िष्ठ इत्र, घन-शिक्षानिष विश्वक मकिन मभीवन ह्यूफिटक ध्वतिहरू হয়, এবং নিজ নিজ বাসরুকে বিচিত্রকার क्रूक दृह्द अकल विहत्रम একতে लिख कनत्व वांत्र करत्। এই ममस्य भत-লোকের ভাব সারণ মা করিয়া কে নিরস্ত ধাকিতে পারে? ইহলোক ও পরলোকের মধ্যে মৃত্যুই ব্যবধান। স্থ্যা বেমন পশ্চিম আ কানে অক্তমিত হইয়া অন্য স্থানে উদিত হয়, तिहेबले की बटमत्र भीन जीन नित्रिक्षम नोज

করিরা ধার্ম্মিক জনের আছা মৃত্যুববনিকার অন্তরালে অভিক্রান্ত হয়। স্থ্যান্তসময়ে পশ্চিম আকাশ যেৰপ দেদীপ্যমান বোধ •হয়, ধার্মিক আত্মার নিকট মৃত্যুও ডক্রপ বোধ হয়, কারণ মৃত্যুই উজ্জুল ব্রহ্মধানের व्यटंबमदात । अर्गीत आनम्-ममीतर्ग धा-শিক আত্মার পবিত্র আশা-কুন্মন বিক্সিত হয়, ক্লয়ভার লঘু ছইয়া যায়. প্রীতি নবীন तिन शह्भ करत, अन्ना चिक्क व्यनिवारी। বেগে উচ্চলিত হর, এবং তাহার কণ্ঠ-নিঃস্ত ব্ৰহ্মনাম ममञ् অমর-লোকে প্ৰতিধনিত হউতে থাকে। এই ৰূপে বীত-শোক, বীতপাপ, হৃদয় ভার বিমূক্ত হইয়া পুথিবী হইতে শ্রতি দিন কত আত্মা পর-लांक निरम्जरन शमन कतिरज्हा, वरः वित्रकाल है भगन कहित्य।

কিন্তু প্রতিদিবসই ত প্রকৃতি শোভা ধারণ कटत मां। कथन कथन पिवावमादन औषा-তাপ সমভাবে অবস্থিতি করে। বায়ু অব-ৰুজ হয়, নিশ্বাদ প্ৰসাদ প্রিচালন কফিদাধা दरेश छेटरे, आकाम म अन अभितिक् हे मनिन বৰ্ণ মেছে আচ্ছন হয়, স্থালোক প্ৰয়ন্ত ममाक्-कर्ण पृष्टिशावत इस मा। त्रक-लेकवत ন্থির হয়, এবং পক্ষিণ্য নীরবে আকাশ-योर्गमधा निज्ञा च च कूलांद्य शनोधन करत। গভীর ক্লফবর্ণ পর্বভায়তন অক্সাং स्मयमाना पनवक रहेगा चाउतीरक रवटन विष्ठत्रभ करत, अवः निरमस्यत्र मरया भृषिवीरक স্বাকারার্ড করিয়া ফেলে। প্রধার তেজ-विभी विश्वास्त्रका मर्गीकर्तात मात्रिकरन करन ৰহিৰ্গত হয়, এবং দকল লোক ভৱে ভটক হর। পরিশেষে অতীব ভরত্কর নির্ঘোধিত नम्बिनाहादत थन्त वाद्या পृथि-বীকে ছিল ভিন করিয়া কেলে, ভক ভ-त्री जनमध रत, कड कड मराम् इक तम्रत ধরাগাৎ হয়, কত অটালিকা চুর্ণ হট্যা

বার, কত লোক হাহাকার করে। পাপাত্মার জীবনও এই পাকার। যতই জীবন তাবদান হয়, ততই মৃত্যু তাহার নিকট ভরঙ্গর বেশ ধারণকরে। তাহার শেষাবস্থা
শোভা শুন্য, শাস্তি শুন্য, অন্ধাকারারত। মৃত্যু
নিকটবর্ত্তী হইলে তাহার পাপা-চিন্তা হৃদরমধ্যে ভয়য়র বেশে বিচরণ করে। পারে সে
যথন পার লোকে উপস্থিত হয় ও পারমেশ্বরের রুদ্র মৃত্তি দর্শন করে ভখন ভয়ে
কাম্পিত হয় এবং নিতাৎ, বজু, প্রবল বাত্যা
তাহার আত্মাকে বিষম অর্দিশাগ্রস্ত করে।
সে শোকদাগরে নিমগ্রহার হয় ও নির্মেশ্ব
হইয়া হাহাকার করে। প্রতি দিন এবশ্পুকার তরবস্থাপন্ন হইয়া কত কত লোক
সংসার হইতে অবস্ত হয়্তেছে।

The second secon

তথাপি অদাবিধি একটা আলাও বি
নিক হয় নাই! ঘাঁহার অলুলির চিপে
সমস্ত্মেঘনালা, বলু, বিছাৎ কড়, হুটি গগনমধ্যে সঞ্জন করে তাঁহাবই অলভ্যা আজায়
তাহারা নিজ নিজ ছানে প্রস্তান করে।
পুনবার অযুভভারকমালা পরিবৃদ্ধ স্থাতে
নির্দাল নভামগুলে অভ্যানত হয়, এবং
মুছহিলোলিত সর্গা-স্লিলে প্রাল্থিছিচ
হুইয়া আনন্দে নৃত্য করে। ইম্বর গ্যাতে
পাপান্তার জাবন-আকাশও এক দিন প্রিশুদ্ধ হুইবে এবং তাহার ছ্রেয়স্থাইতে
প্রিভ্রাবিনের কর্মণাক্ষ্যি প্রতিবিধিক
হুইবে।

হে পুণাপাপদর্শী পাবনেশ্বর। এই বিষয়
সংদারদাগরের পর পাবে নির্ক্তিম উপ-,
নীত হইবার জনা আঘোনত সনে ভোমারই প্রতি নয়ন নিক্ষেপ করিতেছি, আমাদিগের দোদসক্ষম আঘাকে রক্ষা কর।
পৃথিবীর ঘটনাবনী দেখিরা আশ্চর্যা হই,
এবং ফত সময় ভাহাদিগের ঘণার্থ ভাব
গ্রহণ করিতে মা পারিয়া হৃদ্দের বড় আ-

কুলিত হই। মন্ত জীবনকে যথার্থ পথে
নিয়োগ করিতে না পারিয়া শোকে ভাপে
কত সময় বিষয় হই, কোন স্থানেই বিশ্রাম
প্রাপ্ত হই না। জোমার নিকট প্রাথনা
যেন সকল অবস্থাতে ভোমার মঙ্গলভাব
ক্লয়ঙ্গন করিতে পারি। যথন গ্রীম ভাড়
নায় বাকিল হইব, যথন বিকারতাপে
কোপশ্যাকে নিপ্যান্ত করিব, যথন মারীভয়-প্রভাবে সমস পরিবার ও সমস্ত দেশের উল্লাম আশালা করিব, যথন ফুডিকা
লীজান জীব লাব প্রাপ্তিশালবাশ্যে হইব,
হর্মান বেন ভোমার জবিচালত মান্ত্রিস্থ

# রাজতর্মিনী।

· 解、柳木对片 对情况是什么 () 一对神经 对法主

fate 3-करन्त मार अंश्लीक तक राज्यो चिक्षत्र कर्रावर होने सर्वार्थम नामक दन क्षति अभिन काल्या हिटलाहा ाउक्ति (दे**. अ**हि. भारत कि किस्ताम, दारमान्त्री, ग्राह्म वर्ग भागम कर् 解放 医野食同年四十五日 副代献代的司 副二四十八日 日 व्यक्तित् भूतः । शालामिनः। । शक्मिन्द्राम् व्योध कहरा यात्र अवस्थित एकत्वका छ জাজ্পেলেন কেন্দ্ৰ আজিশ্ব বিধাৰি কইয়ান ছেলেন - নাদানে প্রজানর হিন্দুধর্মায়-शकी स्वाप्त रुखान व्यक्तिभाजन करत जनः হিন্দুশ্বিষ্টে ও কক্ষক। ও অন্তর্ভান করে তদ্ বিসংগ্রহ ভুগ্তি।বনেশ এরবান্ছিলেন। स्कृति अस्त्रायुद्ध रणम् ५वेट**ः । क्रमावीन् ७** मम्पानी जानान गरक ममामत भूका व ২০৯ ত ১৮৮ ক্রিল্ডিলে**ন** জপর াম প্রত্য প্রাল্য জগ্ডাবে**ড্রান্ট ইইরাছিল ত**্রি হলেন্দ্র বি কিন্তেদ করিয়া দণ্ডিত করিক্তর এবং ভিত্তি সঞ্জ वाडीड পশুক্তিনা এতে বাংলে প্রতির করিয়। দিয়া

ছিলেন। গোপাৰিত্যের পর গোকর্ণ, তৎ-পারে নরেন্দ্রাদিতা, তদনস্তর যুধিষ্ঠির নামক নরপতি সিংহাসনত্ত হইয়াছিলেন। সুপিতির প্রথমত মুপ্রণালীক্রমে রাজত্ব করিয়া-, ছিলেন কিন্তু কালক্ৰমে দৌভাগ্যমদে মন্ত হট্যা নিতান্ত গঢ়ি তাচারে প্রবৃত্ত ও অসং-পাথাবলগী হইলেন। তিনি এক বারে সমস্ত রাজক যা পরিক্যাগ করিয়া ই ক্রিয়-দেবায় আপনাকে বিসক্তনি করিলেন। দি-বারাত অসংপুরে থাকিয়। স্থরাপান ও স্ত্রী मरमदर्भ कानहरम कतिएक नाभित्नम। वा-জকান। স্করাং বিশৃশ্বল চইরা গেল, স্থানে স্থানে বিজ্ঞাহ উপত্তিত হইতে ল'বিল এব' নিকটন্ত ব্রাক্তগণ অবকাশ পাইয়া ক্রমশার! কোর আক্তার আক্রমণ পুরুত অবিকার कतिएक जाशिया अहे कार व बारकान চন্ত্ৰত। লোখন। প্ৰিশেষে ক'ল মান্তৰ্গ ्राम्भ क्षिम देमना मध्यक भूक्यक लेखा ভব্ন আক্রমণ কার্রল ৷ ভাষণ্ড ভোগ-अभागाल बतुलांक स्थानासाय औड दहेत्र. রাজ্য ৪ টক্তে প্লায়ন করিলেন। খমাত।-প্ৰকাল্পান্দভা নামক ভিন্ন দেশীয় এক নরগ,ডিকে আংবান করিয়া ব্যক্তপদে অ-ি,ধার করিল , তাই ভুপতি বহু দিবস নিকোরেও প্রশাস্তভাবে কাজ্য শাসন করিয়া लोरान्द्रिण भगा ज्यमात करलोक मो নত উচ্চার পুর লাজা হন। জলোকের তন্য কুল্লানের রাজকুকালে কাশ্মারে অভিমাত্র তুষার পতন হেতু ভয়ানক চুকিক উপস্থিত ক্ট্রাছিল। ইহ্তে অ**সংখ্য লোক অন্না**-ভাবে মৃত্যুত্রামে প্রিত হট্যাছিল। এজা সকল একে বাবে শীৰ্ণকায় মৃতপ্ৰায় হইয়া স্বীয় আত্রবের মৃত দেহই আছার করিতে वाधा इक्षाहिल। त्रांका ध्यकामिटगत अहे ছুংস্থ সাত্ন! নিবারণার্থ **স্বীয় ধনাগার মুক্ত** করিল দিয়াভিদেন। তি**নি অন্যান্য দেশ**  হইতে ধান্যাদি আনয়ন করিয়া বিভরণ ক-রিতে লাগিলেন। ইহাতে কিছু কালমধ্যে রাজভাগুরি শুনা হইয়। গেল। পরে অমাতা গণেরও দর্বাহ্ এবং রাণীদিগের অলকারাদি भुरेकाल धारत रहेन; उथालि उ इर्डिकात উপশম হইল ন।। ভূপতি নিভান্ত কাতর ও হতাশ হইয়া স্বীয় প্রাণ ত্যাগ করিবার প্র-তিজ্ঞ। করিলেন, কিন্তু দৈববশত এই সময়ে এক অতি বৃহৎ কপোতপাল উড়িয়া আ-দিয়া পড়িতে লাগিন। তাঁহাতে লোকের কথাঞ্চ আগবারণের উপায় হইল, এবং পরে শদ্যাদি উৎপন্ন হইলে ছুর্ভিফের শাস্তি हरेल। पूक्षीनताक ७ डीहात महश्रिमी छ इट्स्ट्रे भ्रम धार्मिक छिएलन, किन्छ ठीरांत অপত্য ছিল না, এই ছেতু তঁংহার মৃত্যুর পর বিষ্ণার নামক অপর এক বংশার ভূপতি রাজ্যাভিবিক্ত হইলেন। বিশ্বরের পুত্র জ-রেন্দ্রে সময়ে সঞ্জিনতি নামক এক অভিশয় निकारत अधामाना-बौगाकि-मण्याम वाकि य-माठा भागिविक्क इहेताहित्वन। हैनि রাজকার্যা স্কুচারুজপে নিঝাই করিয়া বিশেষ। প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছিলেন, কিন্তু রাজা ছুট লোকের কুমন্ত্রণায় মন্ত্রিবরের প্রতি বিরাগযুক্ত হইয়া তাখাকে পদচাত করি-লেন। সন্ধিমতি এইৰলেপ চুত্ৰস্থায় পভিত হইয়া অতিকটে দিনপাত করিতে লাগি-লেন এবং দেবার্চনা ও ধর্মচিন্তায় আ্পনাকে সমর্পণ করিলেন। ইছাতে তিনি লোকের নিকট অধিকতর পূজা হইরা উঠিলেন, এবং कत्म धरेकण खनका छ हरेल एव (मर्वासू-पृशेष मित्रिकि ब्राइम्भ व्याख इट्ट्रिक। রাজা জয়েন্দ্র এই কথা শুনিবামাত্র আশ-কাযুক্ত হইলেন, এবং পাছে সন্ধিমতি জা-হাকে রাজাচ্যুত করে এই চিন্তা করিয়া তা-হাকে ধৃত করিয়া কারারুদ্ধ করিলেন। ক্ষিমতি বহু কাল এই প্ৰকাৰে কারাবন্ধ থা-

কিয়া অভিশয় ফ্লেশ ভোগ করিলেন। পরে करमस्य भृजूति शृत्व कातावक ইতিকে শূলে স্থাপনীন্তর বধ করিলেন। ইভিহাদ কর্ত্ত। লিখিয়াছেন, যে, স্থামিতি দৈবনিকান্ত বশতঃ পুনজ্জীবিত হইয়া প্ৰজাগণ कर्जुक कर्यसम्बद्धाः मिश्होन्त अस्ति विंड रुरेग्राहित्नम। এবং जिनि चार्मात्रां नाम খ্যাতহইরাছিলেন। আর্যালাজ স্বয়ং অভি-শায় শিবভক্ত ছিলেন, এবং দেশমধ্যে শিব-লিক্ষের অর্চনা গঠি প্রশস্তকপে প্রচলিত ক-রিয়াছিলেন। তিনি যতিও সন্নাদীদিগকে বিস্তর সমাদর করিতেন এবং সর্বাদাই তা-হাদের দহিত আলাপ ও মহবাস করিতেন। আর্যারাজ প্রায় ৪৭ বংগর রাজনের পর স্বীয় ঐশ্বয়া ত্যাগ করিয়া তার্থ গমনের মান্স कतिदलन, এবং এक नित्म माभाना (दर्भ অনার্ছ পদে পদারজে পুরী হত্তে ব্লিগন্দ করিলেন। পৌরগণ রাজার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিলে পরে আর্যাল জ নগর হইতে কোশাধিক গমনায়ে এক তমুভলে উপ-বেশন করিয়া প্রজাণগতে লেখ্বাকে বু-কাইয়া গৃহে অভিগনন করিছে কাহলেন, এবং তিনি স্বলং নন্দীকেল নামক ভীর্থে যাতা করিবেন। রাজনিংলাদন এইকপে শ্না হইলে পর প্রজাগণ সন্ত হর্য। মে-ঘবাহন নামক রাজবংশীয় এক ব্যক্তিকে রাজপদা ভিষিক্ত করিল। (मध्यक्त রাজ্যাভিবেকের পূবের ছুরবস্থাঞ্জ ১ইগা গাঁকার-দেশাবিপ্তির আশ্রয় লইয়া ছি-লেন। পরে ভিনি প্রাগ্ভেয়ভিষ দেশীর মূপকন্যার পাণিঞ্ছণ করিয়া নৌ ভাগাশালী হইয়াছিলেন। মেঘ্বাহন যুক্তির ছি-লেন। তিনি পাপবিতী রাজগণের সহিত সংগ্রামে নিয়ত ব্যস্ত থাকিতেন, এবং ক্রিড चारह रय जिनि रेमना मामस लहेश लहा-ধীপ পর্যান্ত গমন করিয়াছিলেন ও তথায়

हाक्यमत्राक्ष विजीयनटक भराक्षप्त कतियां ध-ভাগেদন করিয় ছিলেন। মেঘবাছনের মৃ-ভুরে পর তৎপুত্র প্রবরদেন রাজত্ব করিয়া ষীয় ডুই পুৰকে কাশ্মীরের সামাজা ও থৌৰৱাজা প্ৰদান করিয়া লোকান্ডরিত হন। এই ছই রাজপুতের নাম হিরণ্য এবং ইহাঁরা অভাপা কাল মাত্র ভোরনার। একত নিলিক হুটাং, রাজত্ব করিতে পারি-য়াছিলেন: সুবরাজ ভোরমাণ স্বীয় নামে युक्ता अवस्तिक सहाटक है कैश्रित com केंद्र म-হিত বিবাদ উপত্তিত এইল। হিরণা পরা-ক্রম সহকালে ক্রিউকে গ্রান্ড ও কারা-বন্ধ ক্রিলেন। ক্রেম্পের পান্নী এই সময়ে গাৰ্ভৰতী ভিলেন : ডিনি শ্বামীর এইৰাপ निभम् (मधिशा ध्वान्डदश नगत क्रेटड भ-नार्य क वर्षा क्रक कुमकारतत १८६ अक्रम-काद्द त्रविधान क्रांच करे शादन का बन्दन चित्र क्रिक्ट श्रुट अन्त क्रिट्ट्याः हिद-গারান্ধ অনেক অনুসন্ধানের পর ইহাদেনও मकार पहिंग, जापक जानदा नहेंगा लालन, अवर याहोटड ट्रांतमाटनत मुख म স্থান হইবার কথা কোন ক্রমে প্রকাশ না ছ্য় এই আভিপ্রায়ে তিনি তোরমাণের সহ-ধর্মিণী ও ভাঁহরে শিশু সন্তানকে সংগো-প্রেরাখিলেন: কিছুকাল পরে তোর-मान काहाभारत धानकान कतिरलन, अव হিরণারাছ স্বীয় জাতার প্রতি নিষ্ঠুরাচরণ-क्रानिङ অন্তর্কেদনা হেতুই ইউক অথবা অ-পর কোন কারণ নশতই হউক এই ঘটনার পরেই ভ্রাতৃষ্পুত্রকে সঙ্গে লইয়া দেশ ও তীর্থ পর্যাটনে গমন করিলেন। কিছু কাল পরে বিদেশেই তাঁহার মৃত্যু হইল। পার।জের পুত্র ছিল না এবং তাঁহার ভাতু-স্পুত্রও তংকালে অপরিচিত ছিল এই হেডু কিছু কাল কাশ্মীর রাজ্য ভূপতিপুনা হই-शक्ति। श्रात्र वहे कथा मण विष्मा

প্রচারিত হইলে উজ্জান্ত্রনী নগরাধিপতি
প্রীমান্ হর্ষ বিজ্ঞাদিত্য বিনি এই সময়ে
মহা-প্রতাপানিত ছিলেন। তিনি তাহা প্রবণ
করিয়া তাঁহার সভাসদ মাতৃগুপু নামক এক
রাহ্মণ কুলান্তব ব্যক্তিকে রাজপদ প্রদানার্গ্র কাশ্মীরীয় সন্ত্রাস্ত ব্যক্তিদিগের নিকটে প্রেরণ করিলেন। তাহারা হর্ষরাজ্যের কথা
প্রবেহলা করিতে না পারিয়া অগভ্যা মাতৃগুপ্তকে রাজত্ব প্রদান করিল

## गटना विख्डान।

কোন বিষয় অনুধাবন করিবার প্রকা সকলেরই স্থির চিত্তে বিবেচনা করা উচ্চত य भानवीय छुक्तन भटनात्रखित माश्रीया जाह! क्छ मृत প्रधास अ'स्ता विष्टांत कतिए। समर्थ, এবং কত দূরই বা উক্ত বিষয় আমেণ্দিগের বিবেচনার অধীন হইতে পারে: যেমন জল-পত্য ভরণী সঞ্চালন করিবাব প্রকে ভাঙার দূলতা ও গঠন-কৌশল পরীক্ষা কর: এবং সমা্থস্থিত জলরাশির গভীরতাও বিগবি পদের পরিমাণ করা কর্ত্তব্য, দেইরূপ কোন বিদ্যাবিষয় আলোচনা করিতে গেলে মনের প্রকৃতি ও ক্ষমতা বিশেষকপে অব-গত হওয়া এবং আলোচ্য বিষয়ের স্বভাব ও কাঠিন্যাদি অনুভব করা নিছান্ত ক-র্ত্তব্য। কারণ এতদ্বারা আমর। বুঝিতে পারি যে উপস্থিত কার্য্যে আমাদিগের অ-প্রদর হওয়া উচিত কি না। এই সামান্য উ-भटनम दिन्य ७ इहेशा अदनकादनक महाभ-বিত এমত বিষম জনজালে জড়িত হইয়া-ছেন যে তাঁহাদিগের নাম চিরকাল জ্ঞান-জ গতের তুরপনের কলঙ্ক-শ্বৰূপ হইয়া **অ**ৰ-স্থিতি করিতেছে।

मसुद्यात छ्यांन व्याप्तिक्त, त्य छ्यान मच्नृर्व-क्राप च जाव-व्यवख व्यव् खि-मकरनत প্রতি অপেকা করিতেছে! পরমেশ্বর ম-মুব্যের মনকে নিরপেক্ষ ও পরিপূর্ণ করিয়া श्रिष्ठि करतंन नाहै। ज्यापिर गत गांती तिक ও মানসিক কল্যাণের নিমিত্ত তিনি আ-मा। मर शत मतीरत ७ मरना मरधा कडक छ लि প্রবৃত্তিকে সলিবেশিত করিয়াছেন। এই ছি-বিধ প্রবৃত্তির পরিচালনে থিবিধ জ্ঞান লাভ क्रिया आमता उँ हित भन्न नमशी रेष्ट्री नापन कति । इक् कर्न नामिकानि ऐस्टिय-নিচরের নিয়মিত কার্যো আমর। বাহা জ-शटजत-विषय मकल व्यवशं केश्व कीवन ধারণের উপযুক্ত উপার অবলম্ব করি-**्ठिहि ; এবং छ्वान श्रीकि डेक्ड्**मि मानिमक প্রবৃত্তির পরিচালনে মনোগত তাবং ঘটনা অবপত হইয়া আলাব সমূহ উলচি লাভ क्तिट्छिछ्। हेश्त गए। माश्त ए धात-ন্তির অসন্তাব, ভাহার জ্ঞান সেই পরিমাণে मकीर्व क्वर एवं श्रीतमार्थ यांश्रीत करें भ-मल धवृत्ति উन्नड त्मरे পরিমাণে ক্রান প্রানস্থা কামরা বাহা কিছু জানি েছি যাহা কিছু দেখিতেছি তৎদমুদায়ই আলেকিক, তৎনমুদানই সম্পূৰ্বপে আ মাদিগের শরীর ও মন সাপেক্ষ, তাহা-**मिरशत मशका इहेटज विक्रिश इहेटन आंग**त। সমৃত্ত জ্ঞান বিবজ্জিত হইয়া পড়ি। অপিচ উলিখিত সকল বৃত্তিই কুদ্ৰ, অসলপূৰ্ণ ও **जग्गीन, ञ्रु**कतार **जागानिर**शत कावर स्थ-नरे अमुल्मुर्वे खम्भीता विश्वक्रवेश मध-ন্ধীয় অনেকানেক বিষয় আহে যাহা আমর! উপযুক্ত বৃত্তির অসম্ভাবে কিছুমাত্র উপলবি করিতে পারিতেছি না; তক্ষেষ্টা আপাততঃ আমাদিতের পক্তে মুখ छ।। আমাদিতের স্বাভাবসিদ্ধ শক্তি দারা জড় পদার্থের ক-তক থালি খণ উপলব্ধি করিভেছি এবং

সেই সক্ত গুণ ঘটিত কা স্থানে দর্শন করিতেছি; ি এৰপ গুণ থাকিতে পারে गातीतिक ও मानमिक दर সংলগ্ন হয় না, স্ত্রাং ত কিছুই জানিতে পারি না। ৰূপ আত্মার বিষয়েও দেই আন্না হইতে এৰূপ প্ৰবৃ পারে যাহার বিষয় আম: চিতাকরি না। বাঁহারা রিস্থিত উন্নত ধামে कै हिर्गापदशंत উন্নত শক্তিসম্পন্ন इरेग्ना অধিকাংশ অনুভব করি হাদিগের জ্ঞানত আপো ता अ चीत चीत वृष्टि-मभर চালন করি**তেছে**ন। পর্মেশ্বরই নির্দেশ্ফ ৬ হার চন্দ্র দক্ষ্,থে জনি-ম সকল সভা প্রকাশিত রহিং প্রাণিমাতেরই নিকট অ অন্তরের অন্তর্ভম ভাব-ম न्त्रके-धर्कीयमान बहिगाद মন্তুদ্যদিগোর পরস্পর এবং हितकाल अध्यक्तिक शा জ্বাধা ব্যক্তি অকমাং ই প্ৰবয়ন হইলে হেমন আৰু অসদৃশ শোভাদে খিয়া অ হয়, চির-বধির ব্যক্তি জ **रहेटन (यक्तश ग**र्साधन क অপুর্যন আনন্দ অন্তভ্র ই তুঃখ-শোক-অন্ধকারময় স স্ত হইয়া আমরা মহত্র করিব, ভূডন ভূতন মত্য निरमय मर्पा विश्व-धरक হুদক্ষম করিরা বিস্ময় ও

এই প্রকারে পর্যেশ্বর মন্তুব্যের মঞ্চ-লের জনা বিশ্বজগৎ-সর্কীয় বছ বিষয় ভাঁহার নিকট প্রকাশিত না করিয়া স্বকীয় ছ্রবগাহ্ম জ্ঞান গর্জে নিহিত রাখিয়াছেন। যে প্রশান্ত এক্তি স্থারা আপনাদিবের ছকলতার মধ্যে সর্বপ্রকার গুড় অভিগ্রায় র্ঝিতে পারিয়াছেম জীহারা সেই দেই বিষয়ের অ্যঞ্ভ আলোচনা হইতে বিনীত-ভাবে দুরে অবস্থিতি করিয়াছেন, এবং সাধাা-বুগত স্থীয় জ্ঞান উন্নত করিয়া পৃথিবীর পরম मध्यत माधन कतिहारहन। जार गाहोरी ছুবিবিনীত হাদয়ে আপনাদিবের বুজিকে স-कं निक-मन्त्रात महम कविशे निविष्ठ प्रदोहना -छ। विषदात व्यादनांचनांस शहा स्टेसाट्ड, তাহারা লাভি-সর্প আবিহ্মান কাল নকল লোকের তিরস্কার-ভাঙ্গন হইরা আদিতেছে: करे समारे विष्ठानमाञ्च महस्स अकाल ४-र्याच रम्भन रकमश्थाक महान् गरा वाकः শিত ২ইরা মরুধোর মুখলে উল্লক-तिभारिक, रमरे कर्ण व्यवना व्यक्तिया ज्यान জ্বাকাশকে অজকারে খাজন করিয়াছে। পুথিনীতে মন্ত্রাবিদ্ধ সভা প্রাক্ত মংখাৰ অধিক কি ভ্ৰমমংখাৰ অধিক ভাষা সিজাত কর নিভাত সহল নহে।

কথিত কইল আমাদিগের জ্ঞানের নিমিন্ত থিপ্রকার উপায় প্রদন্ত হইয়াছে,
শার্নীয়িক প্রকৃত্তি এবং মানসিক প্রকৃতি। এই
উপায়ছয়মন্ত্রত জ্ঞান ভইপ্রকার বিভক্ত
হইতে পারে, পারিদর্শানক জ্ঞান এবং
নৈমিত্তিক জ্ঞান। বহিবিশের দর্শন করিয়া,
পুরারত্ত্ব পাঠ করিয়া, গুরুমুখে উপদেশ
প্রবাধ জ্ঞান কহা মাইতে পারে। এন্দ্রনক্তান করি জ্ঞান করি গ্রাক্তির
কার জ্ঞান উপার্জ্জন করিতে মনোর্ভির
ভাদুশ প্রিচালনা হয় মা, ইহা অপেক্ষা-

রুত সুশাধা। পৃথিবীয় ঘটনাবলী এবং
পদার্থ-নিচনের অন্তিত্ব মাত্র অবগত হওরাই ইহার উদ্দেশা। চিরজীবন পরিক্রম
করিয়া পৃথিবীর পূর্বতন পণ্ডিতগণ জ্ঞানবিষয়ে যত দূর উমতি সাধন করিতে না
পারিয়াছিলেন, অভি সামানা চেন্টার অভি
অপে কালের মধ্যে আমরা এ ক্ষণে তাহা
হইতে অনেক গুণে অধিক উমতি লাভ
করিতে সমর্থ হই। মাহাত্মা ব্যাস, বাল্যোকি, শক্ষরাচার্যা, সক্রেটিসাদি আমৃত্যু যত্ম
করিয়া যত শিক্ষা না করিয়াছিলেন, বিংশলি ব্যীয় বিশ্ববিদ্যালয়ন্ত একজন মুবা শুদ্ধ
প্রুক্ত পাঠে ভাহা হইতে অনেক গুণে
অপিক শিক্ষা লাভ করিয়া থাকে। এবির্ধ্ব

কিন্তু এতখ্যতিরেকে অপর একপ্র-कात छहान अ नाक नय। शर्मार्थ निष्दास्त खः থবা ঘটনাবলীর কেবল স্বস্থিত্ব মাত্র অবগত ছইরাই লোকে নিরন্ত হয় না, কিন্ত ভাহার কারণ অনুমঙ্গান করে। এই রূপ কাব্ণ अञ्चलकांन कर्त्रवात्र हेक्हां विद्यवन्त्रा कर्तिन मकत्नद्र भरधा है निकिष्ठ इस, छत्व (यः त्य পরিমানে ভর্নস্পন, নে নেই পরিমানে পুড় করেণের তত্ত্ব করিয়া থাকে ৷ টেলবাং কোন শব্দ অৰণ করিলে অজ্ঞান শিশু তা-হার কারণ জানিবার নিমিত্ত চতুর্ক্তিকে দৃট্টি পাত করে, দৈবাৎ কোন আশ্চর্যা ঘটনা দৃষ্টি করিলে প্রাপ্তবয়ক্ষ মনুষ্য তাহার কা-রণ জিজ্ঞানা করে /এবং উন্নতজ্ঞান পণ্ডিত প্রাক্তিক সকল বিষয়ে বিশ্বিত হইরা পদার্থমাত্রেরই করিণ অনুসন্ধান করেন। বস্তুতঃ কার্য্য দেখিলে তাহার কারণের প্রতি বিশাস এবং তজ্জিজাসা মনুষ্টের পক্ষে নিতান্ত স্বভাব-দিছা। কিন্তু বিশেষ বিশেষ কার্য্য দেখিলে তাহার বিশেষ বিশেষ কার-ণের প্রতি প্রভায় খাছে বলিয়া যে আমরা

দকল কার্যার কারণ অবপত আছি বা হইতে পারি এমত নহে। শুল্ধ কারণ অন্দল্লান করাই আনারদিপের স্বভাবদিছা।
এই অনুসন্ধান দ্বারা স্বকীর পরিশ্রমে আমরা যে জ্ঞান লাভ করি তাহারই নাম
বৈশ্বিত্তিক জ্ঞান। অতএব নৈমিত্তিক জ্ঞান
কঠিন ও কই সাধা, ইহাতে মনোর্ত্তির
বিশেষ পরিশ্রম হইরা থাকে। স্বীর যত্রে,
স্বীর চেইটার, চির জীবনে যিনি বিদ্যাম ওলীস্থ একটা বিষয়েরও গৃড় তত্ত্ব অনুসন্ধান
করিতে সমর্থ হয়েন। তিনি সহস্র পুত্তক
অধ্যাসনাপেকা অধিক কার্য্য সম্পন্ন করেন,
ভাহার দ্বারাই প্রকৃত জ্ঞানের উন্নতি হয়।

रेमम्बिक घंडेमा श्रुक्शता व्यवस्माकन ও ডাহাদিপের ওক্ত নির্ণয়কে বিজ্ঞান শাস্ত্র কছে। বাহা জগতে নিয়ত নানা প্রকার प्यान्हरी। वर्शिश्च एक इंट्रेट्ड्रिं। এই ममन्द्र দুষ্ট বিষয়কে উপযুক্ত মতে বিভক্ত ক্রিয়া त्य त्य कावन मरद्यादध डाइन्ता निष्णन हरे-য়াছে তাহায় নিৰ্ণয় করাকে প্রাকৃতিক বি-জ্ঞান কহে। জনৎ মংখ্য যে সকল পদাৰ্থ अञाक क्रेट्टरक् उद्मयुष्यिके विर्धाय বিশেষ কার্যা। কতক গুলি কারণের একত্র মিলন ও নিগড় সমুদ্ধ হইতেই তাহারা উৎ-পন रहेशा थोटक ; ग्रूफवार এই ममस्र का-যোর কারণ জিজামা ও নির্ণয় করিতে পা-तिहल हे भगोर्थ विष्ठात्न तुर्भि खिलान। আকাশ পথে দৃষ্টি করিলে ধুমকেতু, ইন্দ্র-ধরু, বা স্থর্যা গ্রহণ দৃষ্ট হয়। কি কি কারণ मिनात्त पुमरकचू हेस्प्रस्यू वा ऋर्याधाहन দৃষ্টি গোচর ইইল ভাহার বিশেষ নিদর্শনকে প্রাকৃতিক বিজ্ঞান কহে। মনো বিজ্ঞানও সেই ৰূপ! মনুষ্যের বিশেষ বিশেষ কার্য্য ও মনের গতি দেখিয়া কোন কোন প্রবৃত্তি এবং কি কি কারণ সংযোগে তত্ত্বাবৎ উৎপদ হইভেছে, তাহার তত্ত্ব নির্ণয়কে মনোবিজ্ঞান কহে। অতএব সম্ক্ ৰূপে ভৌতিক ও মানসিক কাৰ্য। নিচয়ের কারন নির্দেশ করার নাম বিজ্ঞান শাস্ত্র, বিজ্ঞান শাস্ত্রে যে জ্ঞান জন্মে তাহা নৈমিভিক জ্ঞান।\*

পৃথিবীর নর্বা স্থানেই কার্যাকারণ শু-ষ্থলা বর্ত্তমান রহিয়াছে। যতই বিশ বা পার পর্যালোচনা করি ভতই প্রশস্ত কর্মো কারণ শৃত্যলায় উত্থান করিতে থাকি। সমুদ্র গজ্জনি, বজ নিঘেষিণে, ভূনিকম্পে, আ-(ध्रम शिवि डिक्सीवर्ग, मक्टनब भट्यारे स्वित-চিত্ত বিজ্ঞানবিং বাক্তি কাষ্য কারণের পরি-एश आश्र हत्यन । किन्न विश्वमत्या पविश्व निर्मम विर्मय क्रांट्यांड निर्मय टिर्मम কারণ দ্টেছ্ইতেচে ভগ্পি এই সকল क्रिश्चे अर अक्षी कार्या याता । याहारक আপাতত কারণ বলিয়া নির্ফেশ করা বা তেছে বিবেচনা করিলে পর ভালত কোন মহন্তর করিবের কার্যা মজে প্রভীয়মান হয়: ভাৰাই প্ৰকৃত কাৰণ লামেৰ ৰাচ্য যাতা একা-জ্ঞেষ্ঠ, মহো কালার দারা স্থাট নহে। এই कारा मन्द्रदाश्च भाषान्त्रकी वाक्ति कांत्रन. পরমেধ্র ভিন্ন অপ্র কেচ কইতে পারে না এই महाका । स्वित्व है। हात्वे महद खक्कित छेशयुक्त । यमाभि क्या १८१ लावन धन वन्नीन कराई तिकां- भारति है। फिल्म, व्या ऋति ভাষা মির্ভ জন্মতের দিলে বাজ্যা। লগ পরিষ্কার করিয়। ক্রেছে। বিন্টুলীল স্কঃ বিজ্ঞান ভাগৰান ব্যক্তি এই কলে কলে। ভ্ৰতিভ করিণেপিরি আরোহণ করিণা নমস্

<sup>&</sup>quot;Some of the defination of places to be a considerable philosope as, are as to assemble for each of things divine real terms of the Same set and other times are contained." Orders, at the Same set and other by their causes." It shows as to escence of sufficient reason." I doubt a "Tree Science of the telephone of the knowledge to the case of triangle change as the supported of the set of philosophical knowledges; the knowledge of other as dependent mean their causes." It William Hamilton

ভূলোক ও ছালোককে অভিক্রন করত প-विस्मारन रम**रे मृत्र काहन, रमरे कां**वरनंत्र का- इक्त शतरमभदत्र मण्डद छिन्नीङ অল্জা কার্যকোরণ र्राय । जगः थ। আসরণে আবেটিত হইয়া তিনি প্রজ্ঞা ভাবে পুথিশীয় সকল বিষয়ই নির্ব্ধাহ করিতেছেন। भात राज्य है काशा त्वरण डिनिहे क्रांतर। निय करण मालिन यस्त्र, जित्रे कार्निन (क उस, घर 5 निरक्षन। **मुस्म् प**ति **डेग्रड** गुक्त महिन कर्निया त्यमन भवत्यावन विभावन 'याक्षानदक टाइक एउक भिन्नक क्रायान्हे বিকে উন্নত ভ্ৰিছাতে, দেই ৰূপ অপ্রিমীন কাম, বারণ রাশি উপযুদ্ধরি বেরস্থিতি ক্ৰিয়া প্ৰতি ক্ষিত্ৰ জিলোক চাৰ স্পাৰ্শ করিয়া র্থিন্ত্র। সমার ফটিক হা প্রা-লোচনা কডিয়া বিশেষকলে উল্লেখন জগ-ল, ন করা স্থাদ আশু,ব(শিক্ট মধু,বেং)র প্রাক্ অব্ধান কৰি <mark>কি ভাল্ড অসম্ভূব ব্যোপ্ত</mark> ইতে পাতিও तहरूक जो १ कि तु ते हारी बाबल अ'बरबह कित्सवर, शेराके महत्वनिकारमात के फामा।

#### आहर्गात ।

ं लिविक भारताचे सर्वता व्याचिति व क्षेत्रिया रव পুরেশ্বর বার্নার ৮। এলম্ম নে ক্রাক্স পর্বিধ্র চয়ের বিষয় পাসনতে উনিংখত ভগ্যাচিক উ,হারা লেশ্যাদ আশ্ৰাদিশের আনে একটা ব্ৰাক্ষণাজ क्षांच्या कशिषात्रस्य जरु ज मार्ग्य गर्ड छ रे किति বাং কান্য সম্পন্ন ক্ষেণ্ডেন 🔻 শ্রদ্ধাস্পদ জ্রাদ্রক্ত বিভান্তাভ ভোগামী মহাশ্র উছোর্দিরগর উপ-प्रकृति । 🖙 🗷 स्थापनिवादीमदर्गे विवरस्य विदर्शन নভূতে এই মে উচ্চের্নিমের সরস্তা ও ধর্মপর্ন-নলভা অভি আশচন্ত। তথাকার জীলোকদিণের ए। प्राक्तिका क्या । अकल अकात ध्रकारी जवर দকল প্রকার আমোদ প্রমোদ পরিত্যাপ করিয়া যে সালে উপারের উপাসনা হয় ভখার ভাঁহারা হা ক্রতিতে প বিভ হয়েন, এবং সর্বাদ্ধি এমজ প্রতির জড়ি আদ্ধবি পরিচয় **এনে।ন করেন যে** श्रक्षात्र वर्षकः भाषात्रकारे **छमवत्वाकरम अछाछ** ीक्ट्रेट्ट एवं। वैश्वस्त्र निक्रें आर्थना स

এই পর্যা জিজামু সরল লোকদিগের ক্ষয়ে জ্ঞান ও পবিজ্ঞা প্রেরণ করেন। সকলেরই প্রক্তি আমাদিগের বিশেষ অনুরোধ যে ভাঁহারা ত্রায় বাগাঁচড়। গ্রায়ে একটা বিদ্যালয় সংস্থাপন ক-রিভে টেউডি হয়েন।

সিল্রাপটি নিবাসী মৃত প্রাযুক্ত কাশীনাথ
মিল্লক মহাশয় মৃত্যু কালীন দেশ হিডাবেংপঞ্চ
লক্ষ্মা দান করিয়া পিয়াছেন। এই অর্থ হহাছি
ছইটী সংক্ষ্ ত বিদ্যালয় সংস্থাপিত হইবে, দুগায়
দালেরা অবৈতনিক শিক্ষা ও পাঠাবস্থায় জ্বল পোবন ভাবতি প্রাপ্ত কইবে। ভাপর কতক শুলি অন্ধ গঞ্জানি দীন হীন বাজিও সময়ে সময়ে সাহায় লাভ করিবে। ফর্ণীয় প্রীষ্ক্ত কাশীনাথ মলিক মহাশালের এই মহৎকালোর জনা সকলেরই কুচ্ছে

মান্ত্রাক্তির কেন্দ্রের ক্রেন্ত্রান ক্রেন্ত্রান বিনী পজিকা জ্ঞানেধে প্রকাশিত ৩ই তে আর্ড क्षेत्राटक । जला काळ्ला एए हेंद्रा फाउकमा-क्रांच किं है जिल्लामा के कर्नन (अपन करादक) है। किरमत 'जनावनाम छ महच मस्पतिक कर करा कामना अभावा मालाक हार । 粉帶 斯克斯特 化甲磺二丙甲酰丁酯 上海上上 দা জানাতে ভাইটো কাইই বুণিতে লা ৮০% এই ভারভর্যের ভিছ জিল স্থানত্র হটতে ভারত গিনী গালিকা প্রকাশিত হইছে আয়ন্ত শ্লিগুড় ক,নকাছা বৈধ্বেলি এবং মাজানে । সংখ্যা , ভ সম্ভিত্ত সম্পান্তন মহাশ্যের যে পতে বিগণ 🛒 🦠 🔻 ন্থৰ নিৰ্বেশ্ব জন্ত জন্ত মাৰ্কিন কোনা কোনা কিছিল কোনা নিৰ্বাহন কৰিছে ল লাখন স্পাধ্য প্রাথমর। সকলেই প্রিভান এক ক্ষেত্রি, কলা, যেনি আম্মানিধের বলাও সভা ভিনান कामा किनि भाग क्षेत्रकार्धम, किन्र किन्नको कामग्र ভারত্রিজ হাইব লা, কারণ আমরা গর্মেরণেলে मैक्टबुब (क्षित्रां मुठे। दस्त । यद्य व्यामन क्रेटक्टि আনসর হও। সাধুমাহার ইচ্ছা উপর ভাহার भ**ङ्गा** !

বর্দ্ধনান ব্রাক্ষনবাজের নিশেষ উন্নতি হইছেছে।
তরত ব্রাক্ষ নহানিয়ের। একটি ব্রন্ধবিদ্যালয় সংথাপিত করিয়াছেন এবং প্রায় মধ্যে মধ্যে নিকটত্ত্ ঘানে ব্রাক্ষপর্ম প্রচার মান্সে গমন করিয়া পাকেন। বোধহয় ভাঁহাদিগের দৃষ্টাত্তে ও বড্লে বর্দ্ধনান নগরের অনেক উন্নতি হইবে।

সম্পুতি বিসাতে এতদেশীয় স্থীবোকদিনের মঙ্গল উদ্দেশে একটী সভা হইয়াছিল। তথায় আমাদিগের মদেশস্থ্ই ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন। স্থিয় হইয়াছে যে ইংলগু হইতে কতকণ্ডলি মুনি-পুণা শিক্ষিকা বলদেশে আগমন করিবেন, এসং তান প্রিবার ঘারা আহুত হইকে অতি সামানা বেভনে শিক্ষা প্রদান করিবেন। ভারতবর্ধের উ-মভির জনা বিদেশীয়েরা যাত্র চিভিড, নিবা-সীরা তভদুর নহে।

বলীয় জীদিগের যেরপে পরিক্ষদ ভাহাতে প্রেকাশান্তলে গমন করা দূরে পাকুক, ভাহারা স্থীয় ধীয় পিতা ভাতা ও অন্যান্য সম্প্ৰীয় লোক-/ দিগের নিকটে উপস্থিত হউতে সঙ্কৃতিত হয়। की लाकमिटशंत्र याधीनका विषयः, विस्मय कान অনুষ্ঠান না করিয়া, ঘাঁহারা কেবল একণে বিষ্ম গওগোল আরম্ভ করিয়াছেন, ভাঁহাদিগের প্রতি নিবেদন যে প্রথমে ভালারা সংদেশীয় ম(হল) দিলের পরিজ্জন পরিবর্ত্তন বিদংয় বিশেষ মনে(ছে। গা হয়েন। কলিকাভা ব্রাহ্মসঙ্গতের ाउँ ता, अकिनियम उँच्छ विषया आदनक विधवना प्रविद्या श्रीहरणय श्रीय श्रीय श्रीवर्तात मर्या प्रक्रमा-শ্রুলের পরিক্রম পরিকর্ত্তন ক্ষিত্রকল্প ইউয়াতেন, ক্রিপেক্স বস্ত্র ভাষিশাক ভাষা নিশ্ব ইইলো ্ৰাণ হয় সকলেই ভালা নিজ নিজ আলেয়ে एतर्ज्**क क**िंदरास । शदिष्कम विभक्ष लाग्सानि লোও আৰু ব্য সার্থান্ হওরা উচিত। স্থান্তর। ্মৰ্শভেও ঘটে কে! বিশেষ জগতির বজের स्तुरद्ध कवि लाग श्रेट्य काम कलागे लाग यम मन्द्रम व्यवसिंख दर्गनात महारम। महर्च, ज्यादकत भरभर कत्मको दक्षत मौतांत्रम वर्षादश नेश्रधानान्त्रम इक्रेस

একনে বাদাবোধিনী পরিকাধে প্রকার মু
চাক মণে নিকাঠিত ছইছেডে ভাহাতে জাহা বে
শীঘ বিশেষ উলভি লাভ করিবে এবং এতদেশপ্র
বামাদিকের বিশেষ উপকার সাধন করিবে ভাহাতে আমাদিকের সংক্ষা মাজ নাই। তার্বোদিনী পরিকার গাহক মহাশাদিকের প্রভি
নিবেদন যে যেমন উহিরা ভার্বোধিনী গাজিকা পাঠ করিয়া নিজ নিজ আল্লার উলভি
শাধন করিবেন, ভেমনি বীয় সীয় পরিবার্থ অঞ্জনাদিগের উপক্রের নিমিত বা্মাবে ধিনী প্রিকা গ্রহণ করেন।

আগামী ২১ আগাড় হালিসহর ব্রাক্ষসনাকের সামৎসরিক সভা চইবে। কোন কোন ব্রাক্ষের অসদাচরণ প্রযুক্ত এবং উৎসাহী ব্রাক্ষাদিগের বি-দেশ গমন জন্য যদিও মধ্যে হালিসহর ব্রাক্ষামাজ কিঞ্চিং ছ্রবস্থাপ্রস্ত হই্যাছিল, কিন্তু একণে পার-দেশরের প্রসাদে ভাষা এরপে উন্নতি লাভ করি-ভেছে যে নিশ্চরই তদ্বারা ব্রামন্থ লোকদিগের সমূহ মলল ইইবে।

বেহালা ব্রাহ্মসমাজের অধীনে ব্রাহ্মধর্ম্ম প্র-চারিণী নামী একটী সভা সংস্থাপিত হইয়াছে। যাহাতে সাধারণ ব্রাহ্মদিণের মধ্যে বিশেষ ক্লপে প্রাক্ষপর্য প্রচারিত হয় ভাহাই এই সভার উদ্দেশ্য, প্রাক্ষপর্য প্রচারিণী সভায় কার্যাপ্রগত্ত সহাপরের নিকট নিবেদন দে সভার কার্যা প্রগত্তী অনুপ্রহ করিয়া বিশেষ রূপে সাপারণ স্বাক্ষ্যণকে অবগত করেন।

বিগত ১৫ ট্রান্ট কোননগর প্রাক্ষান্থাকের দ্বিতীয় সাম্বংসরিক সভা এইছা পিলাছে। স্থাক হওয়া গোল ভর্পলাকে ভাবন্ধ লো, দ স্থাপাত হইয়াছিলেন। কলিকাভাস্থ এক থানি ইংবাজি সংবাদ পত্রে সভার ভার্ম্য বিশোষ কলে প্রস্থানিত হইয়াছে।

আমরা শ্রুভ ইইনাছি কাশী নগরে একটা ব্রাহ্মসনাক গুড়িষ্ঠিত ইইয়াছে। এ নগরত কএক ক্ষন ভাল কাশীয় ও কুজাবিদা বাজিই এবিসংগ্র নিশোগ উল্লেখ্য ও কুজাবিদা বাজিই এবিসংগ্র কাশীধামে এদি দিল্ল কুজানক্ষার নিগড় ছুর্গপন কাশীধামে এদি দিল্ল কুজানক্ষার প্রতিষ্ঠিত পূ সমাকৃত কটাল ভবে কালার বিকাশ লা হয় যে সন্ গয়ে প্রাহ্মপ্রা ক্ষম ভারতবর্গক অধিকার করিবে।

আমান অভ্যাত আহ্বোদের সভিভ সম্মান হৈ **ডেছি যে** জ্বেপ্ৰেয়ার বিষার 'আবেরাক জ্বেন কলে বোলাদিপের অক্ষপুর প্রাপ্ত প্রবিটি ক্লিড্রের भक्ति है जालक द्वाराकिकी व्यक्तिकाल श्रमान भारताम व्यापन करा १०७ । अ ब्राउनार्यक मुम्बन् कर्ता यात्र । हेर्, १८ क्ष्रजूत व्यक्ति छ प्रवराह विका ভাহোৰলিয়া, লেশ্য ফর্টোয়ে নাচ তল্পন নং लक्ष्मां औरजारकका निवास क्रक्यांत हवस यह নি দা ও কুসংক্ষার পরিভাগি করিয়া সভা প্রেয়ত্ত 'কা'ব্ৰেম শ্ৰহণ কৰিবে জবং 'কেটেবাৰ মতে মৰতে জ্ঞান লাভ কাইবে ও ভানন কথন্ট ব্জান্ধের প্র-কুন্ত উন্ধৃতি শুইবাৰ সম্ভাৱন। নৃষ্টে। 🕱 😿 কেন্টে নিশ্চয় সম্প্রসাধনারের মধ্য ৭৬০০ তে সংগ্র राप्तराः स्टेरनाम निरम्ब मृत्रः अवस्थिक १०% एक्षि अस्य धिवयाती इंडेस्स। र लस्या তিরদিন পুশিবীতে জনগ্রাজ ধ্রিয়া আফিলেভে। জন্মীর স্থনা ইয়া যেমন শেশুর শরীলে ক্রমত স্থান মাধ্য ও অভিন্ন সক্ষাণ করে। । সন স্ক্রণ, । ১ না প্রকৃতি ও মংক্ষার ভারার মন্ত্র । কি ৮ চবি । ক **থাকে। ব্যারেদ্রি সহ**কারে মুখ্য হন্ত ছেলা ক্রিছ मन्त्रविष्ट म् । दक्त, द्य कार्ति कारी १६०० व्यक्ति वाला मण्यति । भारतिमातिक आर्थक शान्स् পরিতানে করিছে পারে - দেই জনাই অনেকে कुछितिमा क ज्याप्त नग्राम स्टेमाच भग्ना बुद्धिः। व्यक्षातिक भागा क्रिटिक श्राप्तिटक्टफल मा। व्यं क्रि भी छ राहारङ अङ्ग्रह्म अलगि निरंशव घटना श्रामी द ভাব এবেশ করে ভজনা আনাদিবের বিশেষ क्ति। कर्रा लेक्टिं। अञ्जूष्मार्य आमाहित्यत अस्ति বে থেমন পুরুষদিগের জন্য প্রকাশ্য স্থানে একটী ব্রাক্ষদমাজ আছে, দেই রূপ কোন একটী তজ প-রিবারে কিয়া স্থানাস্তরে স্ত্রীলোকদিগের হিডার্থে একটী ব্রাক্ষদমাজ প্রাভিষ্ঠিত হয়।

#### মূতন গাস্ প্রাপ্তি।

আদরা কৃতজ্ঞতার সহিত নিম্ন লিখিত পুস্তক শুলি আজি ধীকার করিতেছি। "বিবিশ পুস্তক প্রকাশিক। সাহিত্য-সংগ্রহ" ভূতীয় সংখ্যা। "মুদ্রমানদিধের অভ্যুদ্ধের সংক্ষেপ বিবরণ। 'বিদেশার্মান সংঘাসনের উপায়।''

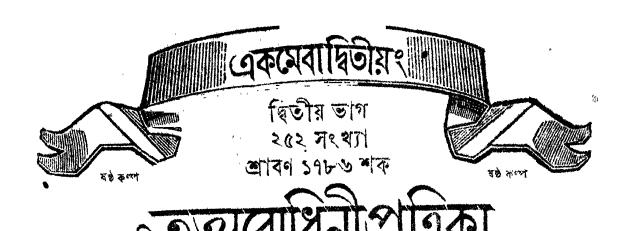
# रिक्डाशन।

আগামী ২১ আবাদ রবিবার প্রতিত কালে হালিসহর ব্রাক্ষদমাজের সাধ্বদরিক সভা হইবে রোজ মহাশ্যু দিগের প্রতি নিবেদন বে তাঁহারা উক্ত দিবমে থালিসহর প্রামে উপন্ত কণ্যা বেক্ষোগ্যুনা করেন।

কলিক্তি ব্যক্ষমম্কের এপচছ শ্রের কৈটে মানের জায় ব্যস্থ বিবরণ ৷

竹藏市	ब्रि रिप्रेंडि	٠	9	15 br 4/ e
			****	
			251	80 1/0
<b>4</b> ) ¥			6	65 /W
Hassi I	स्टल्य कटल्ड		G	(384):
	এভ	भुः		
1141	n 4月15年			2400
्क्ष	<b>*19</b>		(	800
	an and a section of the section of			
त् न	ন্দিগের প্রতিজাত ম	[ব্যুক্ত	দরিক	मान।
	ুক্লগেপোৰ সেন	••		<b>ર α</b>
	ैरेनकूर्यनाथ सम		. •	२.७
	त्यत्य का क नग्न		• •	>
**	গণেশালে স্থিত			>
46	泰州烈山西 山			5
	राषाचामा द्राव	٠,	• •	>
	•			

'' भीकर्मान घटकाशाधात्र >	
" टक्नवनाम मझीक >	
" नविनशीन विकास ১	
49	
মালিক দান।	
ঞীযুক্ত রাজা সভাশরণ ঘোষাল ৫০	•
" যড়েশ্ব সিৎহ ১২	į
ं कांभी श्रमाम रचाय ১२	
" क्यरगाशान स्म	
Amplication and the same and the same	
<sup>ন ৪</sup> শুভকর্মের দান।	
শ্রীযুক্ত রাজারাম মুখেলাগায় ৮	
् इंडरशंबिन्ह छोधुनि	
autona per la estada en auto.	
্ এককালীন দ∤ন <b>!</b>	
ি শ্রীযুক্ত কালীকুমার সাব	
दानाधर्मा अणांत क्या मान्।	
श्रीषु कुळाममञूषीत (अस् <i>क्षात्</i> कार ए	
অহ্রচ⊕৮√ফাফ	
'' পোপালচক্ত মলিক ়াণ	
440	
बिश के कि ।	
নিঘ্ণী পাছ। পুঠা	
নিঘ ণ্ট প্র। পৃষ্ঠ। ব্রাক্ষধর্মের ব্যাখ্যান	
পুঠ। ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান	
পৃষ্ঠ। ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান	
পৃষ্ঠ। ব্ৰাহ্মধৰ্মের ব্যাখ্যান	
প্রাক্ষধর্মের ব্যাখ্যান	
পৃষ্ঠ। ব্ৰাহ্মধৰ্মের ব্যাখ্যান	
পৃষ্ঠ।  ত্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান	
পুণ্ঠ।  ব্ৰাহ্মধৰ্ণের ব্যাখ্যান	
পুণ্ঠ।  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান  ব্রাহ্ম চিস্কা  রাজ ভরন্ধিনী  সংবাদ  সংবাদ  ভাগ ব্যাগ বিবরণ	
পুণ্ঠ।  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাথ্যান  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাথ্যান  ব্রাহ্ম চরজনী  মনোবিদ্ধান  সংবাদ  স্ক্রি  স্কর্মা  স্কর্মা  সংবাদ  স্কর্মা  সংবাদ  স্কর্মা  সংবাদ  স্কর্মা  সংবাদ  সং	
পুণ্ঠ।  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান  ব্রাহ্ম চিন্তা  ব্রাহ্ম তর্মিনী  সংবাদ  তাম ব্যায় বিবরণ  তাম বিবরণ   তাম বিবরণ  তাম বিবরণ  তাম বিবরণ  তাম বিবরণ  তাম বিবরণ  তাম বিবরণ  তাম বিবরণ  তাম বিবরণ  তাম বিবরণ  তাম বিবরণ   তাম বিবরণ  তাম বি	
পুণ্ঠ।  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যান  ব্রাহ্ম চরজনী  মনোবিজ্ঞান  সংবাদ  স্থানিক স্বা  স্পা  স্পা  স্পা  স্পা  স্পা  স্পা  স্পা  স্পা  সংবাদ  স্পা  স্প	
পুণ্ঠ।  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাথ্যান  ব্রাহ্মধর্মের ব্যাথ্যান  ব্রাহ্ম চরজনী  মনোবিদ্ধান  সংবাদ  স্ক্রি  স্কর্মা  স্কর্মা  সংবাদ  স্কর্মা  সংবাদ  স্কর্মা  সংবাদ  স্কর্মা  সংবাদ  সং	
প্রান্ধপর্যের ব্যাখ্যান  ত্রীক্ষা চিন্তা রাজ ভরজিনী রাজ ভরজিনী সংবাদ স	



প্রকর্গতিকনিদমপ্রকাসীয়ান্য কিঞ্নাসীজনিদং সর্ক্ষ্মসক্ত। তারেও (নি চাং জ্ঞান্মনভূত শিবং স্বভাচনির্বয়বন্ধেক-মেবারিতীয়ং সর্কার্যালি সর্ক্ষনিয়ন্ত্র সর্ক্ষাশ্রয়সর্ক্ষাকিন ক্রন্থে ক্রিন্তি ক্রিন্তি। একল্য ভূটেগ্রেগাল্নম্য গার ত্রিকনৈত্বিক শুভান্ধবিত। ভূমিন জ্ঞাতিত দ্য জ্ঞিয়তাই।সাধনক তদ্পদেন নি ব

# डाक्थरम्ब नाथान।

**--3+8-€--**

ভিতীত প্রকরণ--একাদশ আদেশ।
১ ৮৩ শকের ১০ মাথে কলিকান্ডা ব্রাক্ষেদ্যাজে
প্রধান আচার্যা কর্ত্তক
বিরুত্ত হয়।

# যএতিষদুরমৃতাত্তে ভবন্তি।

\* ঈশর আত্মার প্রাণ; তিনিই তাহার আলোক, তিনিই তাহার অমৃত। তাঁহার আলাক, তিনিই তাহার অমৃত। তাঁহার আলাকারে মান্ন হয়। তাঁহাকে কে মান্র গাঁহাকে এক মান্র গাঁহ আত্মা জীবন পায়, তাঁহাকে এক মান্র গাঁহ জানিয়াই দে নির্জয় হয়। তিনি বধন আলাকারে প্রকাশিত হন, তথান তাহা মধুমর হর। মেই মধুমর আত্মা ঈশ্বরকে মধু-স্বরূপর নির্দিষ্টার দেই মঙ্গল-কিরণে জগৎ সংলারকে উজ্জান নেথেন। তাঁহার নিকটে পৃথিবী, নদী, সমুদ্রা, চক্র হ্রা, সকলি মধুমর হয়। ফেই অমৃত্রের সঙ্গে, সকলি মধুমর হয়। ফেই অমৃত্রের সঙ্গে হোগ করিয়া তিনি অমৃত লাভের-প্রতি ছির নিক্তর থাকেন।

रच नालि सीन आंशाटि अतमाओंट मर्भन करत नांडे, या छोड़। एड्राफ हित जिन বাঞ্চত রহিল—নে ভাঁছাকে প্রীতি দার। পূকানা করিয়া, ইচ্ছা পূবেক কাঁরে কায়ঃ সম্পন্ন না করিরা, বিষয় সেবাতেই জীবনকে क्रम कविन ; धिक् छोत्र (मर्डे छोत्र । छोत ছুর্গতির আর ঋষু নাই- সে ক্লেশ হইডে ক্লেন, চ্ডিক হইতে ছড়িকে, পদ নি-কেপ করে। এ প্রকার দীন হান প্রায়ত वालगाव कर জীবনে কি প্ররোজন। मिलन क्षत्र लहेश है कि व्यानाइतनत की नग অবসান হইবে / চতুৰ্দ্ধিকে পাণ ভাপ प्रश्च भारतित मस्या योकिया योग मिन পবিত্র-ম্বৰূপের উপক নিভর করিছে ন। পারিলাম, তবে আর শান্তি কোপায় পাইব? व्यागांतरमत बना स्गा, हन्त्र, नक्षक व्यानीक ৰৰ্ষণ করিতেছে—বায়ু অবিজ্ঞানে বহুমান **ছरेग्रा आभात्रत्मत की**तन तका कतिटल्टि — वृष्टि आमांत्ररमत अना मिनिनेदक করিয়া আমারদেব শরীর পোষণ করি-তেছে—অজত্ম কামনার বিষয়ে আমরা পরিরুত রহিয়াছি। এই দকল ভোগই বি আমারদের ভাবৎ? ইহার মধ্যে কি আমরা সকা-স্থাদতোকে কৃতজ্ঞতা উপহার দিতে পারিব না ? যেমন এই পৃথিবী
নিঃশব্দে সূর্যাকে প্রদক্ষিণ করিয়া আলোক
লাভ করিতেছে, আমরাও কি সেই ৰূপ
অচেতন হইয়া তাঁহার প্রদন্ত কামনার বিধ্যু-সকল উপজোগ করিব ৷ না আমারদের কঠ হইতে মৃতজ্ঞতা-ধনি উথিত হইয়া
সমস্থ জগংকে ধনিত করিবে ৷

ঈশ্বর হটতে বে বিচ্যুত রহিয়াছে, সে মৃত্যুর অহীত শক্তিকে—সেই মৃত-সঞ্জী-বনী শক্তিকে আর হৃদয়ে অমুভব করিতে পার মা ৷ সে অমৃতের অভাবে এই জগৎ সংগারকে শ্বাশান তুল্য বোপ করে। মৃত্যুর মূতি দেখিরা ভাষার অমৃতের ভাব উদয় इय ना। त्य महीरतत याच वर्ष मांश्नहे দেহেখ্---অন্তরের আগ্রোকে পেথে না। তা-হার নিকটে পর লোক প্রকাশ পার না! टग । महिला करेंगा महन करते, श्रुभियो अधा-महें श्रीवन-मृद्धा करेल छि। लाव करेल। নে পুনিবীতে কথন কথন পাঁপের জয় পর্কোর পরাষ্ট্র দেখিয়া ধর্মাবহ পর্মেশ্বরের অকর ন্যার মনে করিতে পাবেনা। বে-খানে ধর্মালার মকল জ্বধের অবসান হ-ইবে, যেথা**নে অ**ন্যার অভ্যাচারের শাসন कर्टतः क्ष्मम स्थान एम एक खिटक शास ना। স্ত্রং মনুখার ঘটনা তাহার নিকট থাহে-जियांत मण्य परिक।

নৃত্যুর নিকটে কাছারোঁ বিচার নাই—
ধনা দরিজ, পাপী পুণ্যবান্ দে সকলকেই
ব্যক্তমণ করে। এখন থিনি স্তবর্ণ পর্যাক্তে
বেল করিতেছেন—যিনি বীণা বেণু মূদক্ত
থনি অবং করিয়া মনে করিতেছেন, তাঁহার
প্রের আর বিরাম হইবেনা: মৃত্যু এক
নামর ভাঁহার স্বথের শরীর হইতে সম্ভ মাতরণ হরণ করিবে। তিনি শাশানেশব
সইনা পড়িলা থাকিবেন। তিনি মথন দ

র্পণে আপনার স্থান্দর মুখ দেখেন, তথন আর মনে করিতে পারেন নাবে এই মুখ **এक ममन्न क्यांक्टीन अ**खंहीन हरेगा घा-हेटव । यनि क्यादन मुङ्गादक भावन कतिला আপনাকে জিজানা করেন, মৃত্যুই কি আ-मात रात ? ना मृजात शदत आतं कि हू আছে? আপনার মোহ-মেযাক্তন আপ্রী হইতে ইহার কোন উত্তর পান না। দিন দিন অপেকা করেন, মৃত্যুর পর দেশে কি আছে তথাপি তাহার সংবাদ কেহ তাঁহাকে আনিয়াদের না। যদি কোন লোকের নি-কট জানিতে যান, তবে কেহবলেন, "চ-ন্রলোকে গিয়া পুণোর সমুদার ফল ভোগ করিয়া পুনর্কার পৃথিব্লীতে আসিতে হ-ইবে।" কেছ বলেন, " পুণ্যাত্মাকে তিনি অনন্ত স্থগ প্রদান করিবেন--পাপীকে অ নন্ত নরক-ঘাতনার দক্ষ করিবেন। 🕆 ইহাতে তাঁহার ভর যায় না! ভিনি কোন কথ: গ্রহণ করিবেন ? কাহার বাক্যে বিশাস করিবেন ? আমারদের আত্মাতে যদি ঈ শ্বরের আলোক প্রকাশ না পায়, যদি উচ্ হার মঙ্গে যোগ না করি, ভবে এই সংশয় অজকার কিছুতে বিমোচন করিতে পারি मा। किन्दु राथम जिन्द्रदात महत्र यांश नि-বদ্ধ করি—যথন তাঁহার মঞ্চল ভাব হৃদয়ে প্রতিভাত হয়, তখন সংশয় অন্ধকার হৃদ-য়কে আচ্ছন্ন করে না। তখন আপনাপনি বুর্ষিতে পারি, ঈশ্বরের সঙ্গে আমার যে যোগ ভাহ। চির কাল থাকিবে। তথন নিঃ-সংশল্পে বলিতে পারি 'যএত্তিসূর্যুভাতে ভবত্তি ' याँ हाता अहे शतरमधतरक कारनन, ভাঁহার। অমর হরেম। বনিও মৃত্যুর পরে কি হইবে, ভাহার সকল জানিতে না পারি; কিন্ত জানিতে পারি, আমরা ইবরেরই আ-खदा शांकिय। अथारम याच स्थान, याच धर्मा, यत्र श्रीकि छेशाक्त कतिर; प्रमूनादत

উন্নত লোকে গিয়া উন্নত হইব। यদি আ-মরা কৃটিল পালে বিক্ত হইয়া এবং ঈশ-Cतत मंत्रगाणम मा रहेता हेर लाक र-इटड व्यवस्ट इहे, छत् यामात्रदमत निःमश्मुत घटधांगणि स्टेटवः, किन्तु रमथाटम তাঁহার ন্যায়-দণ্ড ভোগ করিয়া পরিশুদ্ধ হইয়া পুনর্বার তাঁহার সৎপথে ফিরিয়া আ-मित्। अन्छ यक्ष्टलत त्रांटका अन्छ न्तरक নাই; যিনি আমারদের প্রম পিতা, যিনি ইহারই জন্য শাস্তি দেন যে আমরা ভাঁহার পথে ফিরিয়া আদি; তিনি কি পাপীকে ध्यन स्वत्क मक्ष क्षिद्यन ? हेश यनि मठा হয়, তবে আর মকলি নিখ্যা। সেই মঙ্গ-ল-স্বৰূপের উপর যথন আমারদের বি-শ্বাদ যায়, তথন মনে করিতে পারি না যে তিনি পাপের জয় করিবেন—অনস্থলের जा कति वन-नद्रकाधिक अनन्न कांन क-লিতে দিবেন। যদিও চতুদিকে রোগ শোক পাপ তাপ দেখিয়া তাহার অর্থ সু-বিতেনা পারি, কিন্তু ইহা নিশ্চর জানি যে ঈশ্বর ভাঁছার সংসারকে বিন্ট হইতে দিবেন না। তিনি সম্প্র উপায় ছারা মঞ্জ-লেরই জয় করিবেন। ভাঁহার সংসারের একটি প্রাণীকেও তিনি পরিত্যাগ করিবেন না। তিনি সকলকে উন্নতি হইতে উন-তিতে লইয়া যাইবেন। পাণীকে ছুংখ क्रिम मेख मिया—भूगावान्तक व्यानटननत छे-পর আনন্দে মাবিত করিয়া, আপনার দি-क्टे चार्क्य कड़िद्वन।

এই প্রকার, উত্থরের সঙ্গে বিনি আআর বোগ করেন, তিনি কালের হস্ত দে
থিয়া তীত হন না। ইশ্বরের আলোক
বাঁহার হৃদয়ে আঁখারের দীপ হইয়া প্রজ্বাত হয়, তিনি লেই আলোকে সকল
দর্শন করেন। তিনি তাঁহার পরম গতি ইরম গতিকে দেখিয়া ভার-শ্বনা হন। প-

কিরা যেমন অরণ্যে গিরা আপন আপন मत्नत উल्लाटन मध्यत्र करत्र, किन्नि त्मरे कथ শরীর পিঞ্জর হইতে স্কুক্ত হইয়া ঈশ্বরের निक्षे यादेवात श्राज्ञिमाय करतन। अश्वातत উচ্চ্যুখ দেখিয়া তাঁহার জান উচ্চ্যু হয়। যে আলোক তাঁহার হৃদয়ে প্রজ্ঞালত হয়, তাহাতে তিনি মৃত্যুর পর পার জ্যোতি-র্মার ব্রহ্ম-ধাম দেখিতে পান। ঈশ্বরকে পা ইয়া তিনি সকল অক্ষকারের আলোক পান। শত শত এছ পাঠ করিলে—শত শত বা-ক্তির উপদেশ জ্ঞাবণ করিলে যে বিশ্বাস ন। হয়, এক বার কম্বরের আলোক দেখিলোলা-हेरल व्यक्तितरमत हक्ष्यु खेबालम इत्र । धक বার তাঁহার অয়ত-রমের আস্বাদন পাইলে রাশি রাশি গরল ধংদ হয়। ঈশ্বরের সঙ্গে যোগ করিলেই আমরা নুক্তির পুর্মাভাম পাই! বিনি এক বার পরমান্তাকে দেখিতে পান, দিন দিন তাঁহাকে অধিক দেখিতে পাইবেন, এই আশাতে ভিনি উৎফুল থা-কেন। বিপদ্ ভাঁছার নিকট সম্পদ্তুল। হয়— মৃত্যু অমৃতের সোপান হয় : দিনি পর লোকের প্রতি সংশ্যু-শূনা হইতে চা हिन, छ। होत्क अहे मांज चिन्छ भाति स्थ পৰিত ऋषद्य केश्रद्धत निरुद्ध शयन क्य कैशित मञ्जन मूर्कि पद्मीन दत्त, प्यदमाई गश्मतः भूमा इरेरव। " जिनारक अन्तर्वः खिल्हिनाटस मर्कमः भगः। ° डीझ्टिक (४-बिटल "क्ष**रततं शक्ति जग** इत्, मकन नश्मत ছিল হয়।' আমর। যদি পাপেতে কলাহিত रहे, छथानि आमता नितान हरे ना! आ-মরা অনুতাপিত হৃদয়ে তাঁহার শরণাপন্ন হ্-ইলেই তিনি আমার্দিগকে এইণ করেন। তাঁহার ইচ্ছা এই যে আমর। পাপ তাপ হইতে নিজ্তি লাভ করি। আমরা যদি আপনার ইচ্ছাতেই পাপ ভাপ হইতে নি-ষ্ঠি পাইবার নিমেত্তে তাঁহার শরণাপন হই, ভবে দে ইচ্ছা পূর্ন হইকে না ভো আর কোন ইচ্ছা পূর্ন হইবে; ভাঁহার শূরণাপর হইলে তিনি আমারদিগকে অভয় প্রদান করিয়া বলেন "বংস ভীত হইও না—আমি ভোমাকে গ্রহণ করিব।" তাঁহার অভয়-বারে গেলে তিনি আমারদিগকে দূর ক-রিয়া দেন না। এই পূথিবাতেই হউক, অন্যত্রই হউক, যথন যে অবস্থাতে আমরা ভাঁহার শরণাপর হইতে যাইব, তথনি আ-মারদের সন্তাপাল্য মার্জনা করিয়া আপন আলিজন পাশে বন্ধ করিবেন। "পাপী ভা সাধু অসাধু দিবেন স্বারে মঞ্জন-ভোয়া—কেবা জানে কত স্থে রভ দিবেন নাভা লয়ে ভাঁর অমৃত নিকেতনে।"

হে প্রমান্ত্র । তুলি আমারদের সক-লকে তোমার অভিত করিয়া তোমাকে প্রীতি ও তোম'র কার্য্য করিবার জন্য প্রে-রণ করিয়াছ: আমর: এখান হইতে শিক্ষা লাভ করিয়া ক্রমে ক্রমে উল্লভ লোকে গিয়া ভোমার অভিনুধে অগ্রসর হট্র। মে অ-भूना भाषास्त्रक्षत्र जूनि व्यानांत्रद्वत्र कमा ग-ধিংত করিয়াছ, আমরা খেন আপনার দোধে जार। रहेतः विकिए मा रहे। आभाइत्मत् আত্মানে উন্নত ও পৰিত্ৰ করিয়া যেন তো-মারই পদত্রে স্থানিয়া ককা করিছে পারি। কুমি আমরেদিগকে যে সকল অমূল্য অধি-কার নিয়াছ, তাহা যেন তোমারই হল্তে এ-ভূমি সহায় না হ-ভাগণ করিছে পারি! ইলে আমরা আপনার যত্নে কিছুই করিতে পারি না; অতএব তোমার অক্ষ সাহায্য শার্থনা করিতেছি, তুমি আমারদিগকে তো-সার অমৃত পথে লইয়া যাও।

**উএকমেবাদ্বিতী**য়ং

## আশ্বচিন্তা।

''যত দিন পুথিবাতে জীবত থাকিব তত দিনই অংশে অংশে ধর্ম সঞ্চয় করিতে हरेटव । माश्मादिक व्यवसा यक्तरे मन्द्र रूके ना किन क्लान करमहे था। मटइ कर्डवा সাধনে উদাসীন থাকিতে পারিব না। ঈশ্ব-त्र कीवत्नत **उत्म**ना, जन्धत्र कीवत्नत সুখ-নিকেতন, ষতইকাল অভিবাহিত হইবে তত তাঁহারই দিকে অগ্রসর হইব এই আ-মার আশা। তবে কি জন্য তাঁহা হইতে ব-ঞ্চিত রহিয়াছি, তাঁহা হইতে বঞ্চিত থাকিয়া कि धकारत कीवन-जात महा कतित ? এই পৃথিবীর সকল বস্তু চির কাল সমান ৫ছি-বিংশতি মহন্ত বংগর পূর্বে য়াছে। **এখানে যে ক্রপ গোনদর্যা নহকারে সুর্গোর** উদায়ান্ত হইত এখনও দেই ৰূপ হইতেছে, নে ৰূপ শোভা সহকারে বিংশতি সহস্ৰ বংসর পুর্বেচন্ত নক্ষত্র নিংশদ নিশীগ সময়ে ৰাগণ মণ্ডলে বিচরণ করিত এখনও **দেই ৰূপ করিতে**ছে, ঘেৰূপ স্মহের স হিত আমাদিগের পূর্ব্ধ পুরুষগণ জনক জননী ও প্রিয় জনের স্নেহ লাভ করিভেন আমরাও দেই ৰূপ করিতেছি। কিন্ত भेचत जिल्ल এই পৃথিবীর সকলই শূন। শোভা হীন, সকলই অক্সকার ও বিষধ্ন দে-থায়। হা কি প্রকারে উ।হার সহিত পুন-র্ম্মিলন হইবে ? '' একবার যে তাঁহাকে জ্ঞান-চক্ষুতে খীতি-চক্ষুতে দৃষ্টি করি-য়াছে, তাঁহার অদর্শনে ভাহার পক্ষে এই ৰূপ বিলাপ-উক্তি করা নিতান্ত অস্বাভাবিক नदङ्

কিন্ত প্রতি নিরতই কত প্রকারে আমর। তাঁহা হইতে বিজ্ঞা হইডেছি। কত বার জ্ঞানবশতঃ ধর্মা উপাক্তানে বিরত ও বিফল-যত্ন হইডেছি! অনুসন্ধান করিলে

এবজ্ঞকার ভূরকতার কারণ আত্ম-चर्चार विश्व चांत्र किष्ट्ररे येजीक स्त्र ना সকল বস্তুর মূতনতা এবং পুরাতনতা আছে। व्यवत्य स्थानः भाभ-भाष-भाषी मसूरवात मत्न ধর্মের দৌন্দর্যা এবং পাপের কদর্যাতা প্রকাশ পায় তথন সে অতি আগ্রহ পূর্বক भर्मातक व्यवनयन करत, এवः मिरे पर्माक প্রতিপালন করিতে শরীর মনের সমস্ত শক্তিকে নিয়োগ করে। এই জনঃॐ দৃঊ হয় যে ব্রাহ্মধর্ম প্রহণ করিয়া প্রথমতঃ ব্রা-ক্ষের। তাহার আদেশ পালনে যৎপরোনান্তি যত্ন করিয়া থাকেন, এবং পিডা মাতাও গুরুজনের অনুরোধ পর্য্যন্ত পরিত্যাগ ক-রির। কেবল **ঈশ্বরেরই পথে অগ্রসর হও**য়া জীবনের সার কর্মাবিবেচনা করেন। কিন্তু আজ-চিভার বিরহে, এবং আয়ার গৃঢ় অ-ভাব সকলের অজ্ঞানতা জন্য, কিছু দিন পরে **क**े छेटगाह **क**रे **चां थह भी उन रहे** सां सांत, বর্মের শোভা পুরাতন ও বিলুপ্ত হইয়া আ हेटम, এनং नव मोन्प्रया महकादत माश्मा-রিকতা স্বীয় স্থ-সম্পদ্ আমাদিগের হৃদয়-नश्रदनत नमरक ध्वकां करत। मन विरमा-ফিত হইয়া যায়, **ঈশ্বকে বিশৃ**ত হয়, ধর্মের এতি অস্বাহয়, পর লোকের প্রতি गन्मिक्ष इरा, এवং व्यनक्रुहिङ हिट्छ मर्ख-माकी शत्रामश्रदतत ममत्क सर्थक्क्षात्रादत প্রবৃত্ত হয়। অনুশোচনা ও আত্মানি আ-हेटन, छूडन सूडन सूथासूधात्न छेलाटन णाहाता भाता**मिछ ए**स, **এবং क्रमम**ई श्रमस অধোগানী इहेट**७ थाटक। अर्थ-हिन्छ। द्वि**न-कत्र ७ तम्यूना इरेग्ना भटफ, जन्दम क्रांट्स গাভীষ্য পরিত্যক্ত হর, পর-নিন্দার আ-व्यान करम, बानाव्यकात स्कोकूक-त्रश्मा गमानां १ ७ जनात्नांक्यांत भरम व्यविष्ठि হয়, নভোর প্রতি আহা ভিরোহিত হইতে थांदक, अवर वकुमिरशत मानम विस्तानन

**উল্লেখ্যে অনৃত বিভংগ ভাষা প্র্যান্ত সম**য়ে मभटम जानत्नीय स्टेश উट्ट। यानात চরিত্র স্বভাবতঃ যে সকল দোষ-সম্পন काश्रंत कार्या (महे लावश्राम अटक अटक मुक्टि-(गांठत इहेटड शांदक, अवर नक्डा, ভয়, অমুরোধ, ভক্তি, শ্রহ্না, আরত-বদনে একে একে প্রস্থান করে। যে গবিত, थमाजिमादन, विमाजिमादन, कूनाजिमादन ক্ষীত, দে কিছু দিন ধর্মের ভাতৃনে কল্টে ক্লেশে স্থীয় কুমভাবজাত অহকার দনন করিয়া এখন নির্ভয়ে বিক্ষারিত বক্ষে লো-কের পৃতেঠ পদাঘাত করিয়া চলিয়া 🍑য়; य धन लाखी, रम धर्मात व्यक्ति रेनत्राका प्यवन्धन कतिया (क्यम नश्रद्धत प्रसूगकारन हैउछ ७३ खमन करत, धनः स्य हेन्त्रिस क्षिय, নে ইন্দ্রির নেবায় উন্মন্ত ইইয়া মান ম र्या। ना धर्मा व्यर्थ भाक भकत है विमञ्जल पत्र । किन्छ इंश्रीतन्त्र मत्था मक्टलई रव এक कारण **ঈশ্বরের নাম ও ধর্মের উল্লেখ পর্যান্ত পরি-**ভাগি করিয়াছে, কি মবলভায় ও সাধু ব্যবহারে এক কালে জলাগুলি দিয়া কপ-**নিযুক্ত করিয়াতে এনত নহে। উন**িও ও মান श्चादकर्वरवद रय क्षेत्र भाषान चार्छ, शांश ও আন্ন-বিকর্ষণেরও ডক্রেগ্রনোগান লাছে। रियम प्रतिष्ठ । इहेट ज क क दिन जार्जान-ভির শিপর-দেশে উত্থান করিতে পারা যায় नां, तक आयारम करम करम आरहारम করিতে হয়, সেই ৰূপ এক বার উন্নতি লাভ করিয়া এক কালে অধর্ম ছুর্গহির অধস্তন रूप व्यवज्ञन कता यात ना, करम करम নিম্নামী হইতে ২র। বিদ্যাচলত্ত অভুচ্চ অধিতাকা-ভূমির প্রস্তর-মণ্ডিত অগ্রভাগে দণ্ডায়মান হইয়া বছ দুরে নিম্নত্তি প্রান্তরে অধঃপতিত হইয়া চুৰ্বইতে কাহার হৃদয় না ভাষে বিকম্পিত হয়? অদাবিধি যাঁহার।

তুৰ্গতির শাধাকান্তা আপ্ত না হইরাছেন, আদ্যাধি বাঁহাদিগের চিতে ধর্ম লাভ করিনান ইচ্চান লেশ মান অবস্থিতি কবিডেনে:
তাঁহারা অবশ্য স্কুল্য বন্ধু-বাক্য ক্যাচ
অবক্লেন করিবেন না। এবং বেখান হইতে
বর্মোপদেশ লক ইউক না কেন তাহা গ্রহণ
করিয়া মনুষা জীবনের মহত্ব লাভ করিবেন
তাহাতে সন্দেহ নাই।

এই পৃথিবী পরীক্ষার স্থান। এখা-নকার বিশ্ব বিপা**ন্ত ঈশার প্রেরিত। সে**ই বিশ্ব বিপত্তি সত্ত্বে খাঁহার৷ যে পরিমাণে কর্তব্য কর্মনাধন করিতে পারিবেন, সেই পরি-মানে তাঁহারা পর লোকে অতুলা শাশ্বত পুরস্কার আপ্ত ছইবেন। পরমেশ্বর স্বীয় অপরিদাম করুণাগুণে মনুব্যকে ধর্ম দা-ধনের অধিকারী করিয়াছেন। কিন্তু পাছে ভাহার গৌরব ও মহত্ব লঘীয়ান হয়, এই জনা সেই ধর্মকে কট্যাধ্য তুর্লভ ও বছ-প্রলোভনে বেধনীয় করিয়াছেন। সমুষ্যের স্বভাব এৱপে স্ফ হইয়াছে ফে ধর্ম বা অধর্মকে অবলয়ন করা তাঁহার পক্ষে সম্পূৰ্ণ ৰূপে স্বেচ্ছাধীন ৷ মনুষ্য বেমন স-ন্তণ দেখিলে তাহার অন্ত**র্গত** আধ্যাত্মিক भोन्मट्या भूक इटयन, अवश्यक मूत्र माथा ভাহার অনুকরণ করিতে ক্ষণ কালের জনাও উৎস্ক হয়েন, সেই ৰূপ পাপকাৰ্যা ও অপরিশুক্ষ সূথ-ভোগ **সন্দর্শনে তাঁহার পক্ষ**া প্রকৃতি উত্তেজিত হয়, তিনি বিষম মোহে মুধ্ব হইয়া স্বীয় দেবভাবকে উৎসন্ন করিডে সহজেই প্রবৃত্ত হয়েন। বাত্তবিক পাপাচ-वन कविवाद क्रमण चाटक विनदार पर्या-টরণ ভাঁহার সম্ব<del>য়ে</del> বিশে<mark>ব আদরণীয় ও পু-</mark> াকানের উপযুক্ত। ইশ্বর **ধর্মের প্রবর্তক**। মনুষ্যকে কেবল **সাধুর্ভিতে ভূকিত করি**-যাই ক্ষাস্ত না থাকিয়া **তিনি স্বয়ং তাহাকে** সভা ধর্মের পথ প্রদর্শন করিতেছে**ন। সেই** 

भय गर्नन क्रिज्ञा अवर छम्दलदन सनिङ বিশুক্ত আনক্ষতিপতভাগ করিয়াও যদি কেহ মুছতা বশতং ভাহাকে পরিত্যাগ করে তবে তাহার অপরাধ সন্দূর্ণ ববেশ ভাহাকে ভিন্ন আর কাহাকে অর্শিতে শারে? যে সভা ধর্ম অবলয়ন করিয়া তাহাকে সামান্য আয়াস-माथा मरन करत अनः वहिर्वियस्त्र हे निमध हरे য়া আত্মাকে নৈদ্যালিক গড়িতে ঈশ্বরের मि**र्ञ**ामन कतिरङ चारमण रमस्र मिर कनन काश्रुक्तरवत खत्मत नीमा बाहे। 😎 छ ऋष्य পরমেশ্বর মমুষ্য-হাদরে আবিভূতি হইয়া ধর্মসাধনের উপায় ও আনন্দ নির্দেশ করত অভ্রতি হয়েন, এবং স্বেহভরে অলফিড় कदल तम्हे भर्ष छाहात भरवातन मिटी-ক্ষণ করেন, যত বার সে তাঁহার নিকট মাহাঘ্য প্রার্থনা করে ভত বার ভাহা প্রদান करद्रम। किन्छ इच्छा थाडिखा এবং धर्मा সাধনোপ্ৰোগী আত্ম-পরিশুদ্ধি স্মাক্ রূপে মনুষ্যের স্বাধীনতা-সন্তুত। আক্রচিস্ত: ক-রিরা আপনার দোষ সমূহ অবগত হইতে হুইবে, কেবল সজ্জন সঙ্গে ও উপাসনা-গৃহে গমন করিলে ফ্টবেনা। যে **আ**ছচিন্ত:-বিরহিত হইয়া সাধু-সঙ্গে গমন করে, সে ভত্তস্থ বাহ্যিক ক্রীড়া কৌডুকে সংসক্ত থাকে এবং দাধু দঙ্গকে অদাধু দক্ষেতে পরিণত कृद्र। এই व्यक्तात्त्र कोशं कार्त्रा मञ्जून निर्वात চরিত্র পর্যান্ত দূবিত হয়। যদি পরমেশ্বরের मिटक शमन कविवाद हेक्हा शांदक नियुष्ट्रे আত্মচিতা ও আত্মানুসন্ধানে এবৃত্ত হও, আপুনার অভাব-সকল আপুনার ছোব-সকল দর্শন করিয়া অকপট চিত্তে ভাঁহার নিকট आर्थनां कत्, माधुनिरशत छेश्ररमण अर्ग कत, **এবং मन्द्र विद्युत अक्टूबन्दर्ग कड । जीवटन**ह দকল কালই অতি ভয়কর। ৰান অত্যন্ত সাব-थानको পूर्वक मर्वान। व्याचारक ना क्रका क्रज, এবং সর্বাদাই যদি তাহার বর্জনশীল প্রকৃতি- बिहत्तरक **चेत्रु गवानि । ७ जदश**रय निर्द्यां भ না কর, ভাষা হইলে নিক্যই আত্মা গৃঢ় बाल गारमादिक जनका कि सांख कहेरव, वरर **এयड मगदत निष्ण अक्षृत्तिः अनर्गन कतिरद** যথন চরিত্রসংশোধন চেন্টাবহিভূ ত হইরা নিরাছে। কারণ মনুব্য খধন যে অবস্থায় অবস্থিতি করে তথন আপনার প্রবৃত্তিকে সম্পূৰ্ণ ৰূপে তাহারি উপযোগী করিয়া লয়, এবং পরিণত প্রকৃতি পরিশুক্ত কর। তা-काल भरक निकास एःमाधा क्हेना उटिहा অভএব উপযুক্ত সময়ে আক্ষচিন্তা ধারা চরিতা সংশোধন করিবে, এবং মনকে ধ-র্ম্মেকে উন্নত করিবে, আত্মচিন্তা না থাকিলে व्यविक्ट शृर्ट्य नात ऋगरत वह ध्यकात পাপ-তক্ষর প্রবেশ করে, এবং অমূল্য ধর্ম-রত্নকে অচিরে অভ্যতিশারে অপহরণ कदत्र ।

সম্পূৰ্ণৰূপে আত্মচিন্তা **হৃদরে বর্ত্তমান** না থাকিলে, কোন মতেই উপযুক্ত উপা-মনা সন্তাবিত হয় না। আমাদিগের উপস্থিত ভূরবস্থার একটা প্রধান কারণ অনুপযুক্ত भेषादार्थामनः। यनि व्यक्तिन क्नटव्रत अ-ভাব জানিয়া সমান আহ্বা ভক্তি ও বিনয় मङ्काद्य भवरमश्रद्धव निक्षे वार्थना क-রিতে পারি, তাহা হইলে আত্মার উন্নতির मीमा थाटक ना। किन्न छेलामनाभूट भमन করিয়াঁকি অভাবের জন্য প্রার্থনা করিব ভাহা না জানিলে কি প্রকারে প্রার্থনা স-खद्द ? ने बद्दात कान थीं कि मन्नाकाद मा অনুভব করিলে কি একারে ভাঁহার এতি অকাও ক্তজতা উথিত হইতে পারে? অভএব यमि **चे स**द्ध-अভाবে बाक्न इहेत्रा থাক, যদি ভাঁছাকে লাভ করিবার একান্ত वागना हरेता थाटक, उट्ट महल स्नट्स ना-পনার সান্ধাকে অসুসন্ধান কর, রাশি রাশি नीरिशत कम जन्द ए इहेश वियोगिकपूर्व লোচনে ভয় ক্ষরে তাঁহার নিকট প্রাথনা কর, তিনি ভোমার ক্ষরতক ক্তভ্ততাও জ্ঞাতে পরিপূর্ণ করিবেন, তোমার অপরাধ মাজ্জনা করিবেন, তোমার দূষিত চরিত্রকে সংশোধন করিবেন।

গুরু জনের প্রতি শ্রদ্ধা ও রুডজ্ঞতা না থাকা আন্ধ-বিশ্বতির কার্য্য। যে আপনার मिय मा (मदर्श मिह शदत्र दर्भाष अकूमकाम करत। व्यागता निष्म याश गरन केति छोहा অভান্ত নহে। জগতের আর সকলে व्यामानिद्यात मःकण्यासूयासी कार्या कदत না বলিয়া ভাহার। অবিশুদ্ধ চরিত্র নীরে। আমাদিনের স্বীয় অপরাধের সংখ্যা এত দে তৎ সমুদায় পরিশোধন করিতে গেলে আর কাগরও দোবালুসন্ধান বা দোব কীর্তন করিবার অবকাশ থাকে দা,এবং দেই 🗱 ল দোষের প্রতি যথোচিত ঘূণা থাকিলে অপর काहांत्र अपायरक मांच विनाश है स्वाध है। যদি দকল ত্রাক্ষ আত্মচিন্তা-প্রাযণ हरेश वीस सीम तमा ममाक् कल मः हमां बन করত প্রাক্ষধর্মের ১মডি চেকা করিভেন ভাহা হইলে এত দিলে ভাঁহাদিবের আভা: কত দূর সদ্গতি প্রো: হইত এবং ব্রাক্ষর্মের মুখ কতদুর উজ্জ্ব । ইড়া বিনীত ভাবে করযোজে নক্স ত্রাগ ক্রাহাগণের প্রক্তি আ। মাদিগের নিবেদন যে ভাহার। প্রতিনিয়ন্ত যেন আত্মচিস্তা ছারা আপনাদিব্যের রুদ্রের বছ অভাব দুর করেন, এবং যে দমক চরিত্র-গত দোৰ ও অসম্পূর্ণতা জন্য ত্রাকাধর্মের ध्यं क्रेंक महेख् अन्ध-मः । উপवर्षि कतिएक **श**ितिटकटक्त ना, भेश्वत-धागारन जांश इरेटक অচিরে মুক্ত হইতে সাধ্যান্ত্রসারে চেন্টা करता। नकन-चन्त्र भत्राम्बत व्यामानि-পের মধ্য হইতে ছেষ, হিংসা, অহঙ্কার, পর-निमन ७ क्र विज्ञातिक विज्ञातिक क्रम अवर . আমরা বেন পুণোর পবিত্রহা ও অমৃতভু

অবিলয়ে লাভ করিয়া সমস্ত পৃথিবীময় ত্রান্ধ ধর্মকে ব্যাপ্ত করিতে সচেট হই।

# মনোবিজ্ঞান।

মনোবিজ্ঞানের প্রকৃতি, আবশ্যক্ত।, महत्र, कार्य। ७ फिल्मभा-विवदः आमानिरगत সাধারণ মভামত পাঠকবর্গ সমীপে যথা-श्री अक्षिण इंडेल : आंशिंग्रित (हरी) কভ দুর ফলবভী হইয়াছে বলিতে পারি না। মন অতীন্দ্রিয়, দৃষ্টির বহিভূতি প-দার্থ, তৎ সমন্ত্রীর কোন ভাব, কোন গুণ, ব' কোন ঘটনা, শারীরিক শব্দির ক্রিয়া ধারা কিছু মাত্র অনুভূত হর না! কঠোর, একাত্র, এবং অবিজ্ঞান্ত চিম্বা ও পামুদ্র্টি দার্ম তাহার তন্ত্র নির্ণয় করিতে হয়। সেই ৰূপ চিস্তা ও দেই ৰূপ আত্ম দৃটি সহকারে আন্ধার প্রবৃত্তি শক্তি ভাব নিয়ম ও উদ্দেশ্য নির্ণয় করাই মনোবিজ্ঞানের প্রকৃতি। মন বিশ্ব জগতের মধ্যবিন্দু এবং মনোবি-জ্ঞান জ্ঞান-রাজোর রাজধানী-প্রনপ। সমস্ত স্টি-পরিধি প্রদক্ষিণ করিয়া ঈশ্বর প্রতি-ষ্ঠিত নিয়ম কৌশল ও সৌনদ্যা ক্দয়জন করণার্থে মনের মধ্যেই প্রবেশ করিতে হয়, কারণ মনুষ্য রুম্বের এতভাবৎই মনের श्रवृद्धि-मादशक।

অপিচ চিন্তাশক্তির কার্যা একপ অ
ত্ব ত যে যত অধিক পরিমাণে এক বি
যয়ে তাহা পরিচালিত হইবে, তত অধিক
পরিমাণে সর্ববিষয়ক জ্ঞান উপাজ্জন

করিতে মনকে প্রেন্ত প্রস্তুত ও সমর্থ ক
রিবে। মনোবিজ্ঞান আলোচনায় যেমন

চিন্তা-শক্তির পরিচালন হয় এমত আর কিছুতেই নহে, সেই জন্য আত্ম-জ্ঞানই সকল

স্তানের উপায়। বিশেষভঃ যে শাস্ত্রই অমুগাবিত হউক মনের প্রস্তুত্তি ও কার্যা ভিন্ন

কোন ক্রমেই ভাষাকে সুন্ধ্যতি জলে না,
তবে যে বিদ্যা মনের তত্ত্ব নিদর্শন করে
তাহা যে সর্বাদেশকা মহৎ ভাষাতে আর সক্ষেহ কি ? মনোবিজ্ঞানের ঘারা যে অন্যান্য
শাস্ত্রাভ্যাসের সৌকর্য্য হয় ইয়া ভাষার
আপেক্ষিক মহত্ব; আর মনোবিজ্ঞানের ঘারা
যে মনের স্বতন্ত্র উন্নতি জল্মে ইয়া ভাষার
স্বতন্ত্র মহত্ব।

অবিকন্ত ঈশ্বরজ্ঞান যে কপ উচ্ছালতা সহকারে মনোদগতে লক হয় মে থ্রকার অন্য কোথাও হয় না। পৃথিবী মথ্যে জ্ঞান প্রীতি পবিত্রতার সকা শ্রেড প্রতিক্রপ মন্তুষ্যের আলা। যাহারা আপনা দিগের আলার সহন্তাব না ফানিয়া পাপাচ-রণ করে তাহারা পরসেশরের স্থকগেব আ-গৌরব করে, এবং যাহারা আলতল্প অবণ্ড হইয়া নিয়ত জীবনের উদ্দেশ্য সাধন করে তাহার ধর্মের পথ উজ্জ্বল করে এবং স্থার স্থকপের উজ্জ্বল পরিচয় প্রদান করে। অত-এব যে বিদ্যা দ্বারা সেই আল্ল-তল্প ও আ-লান্ত্রার, তাহার মহত্বের কি সীমা আছে ?

দৃষ্ট বিষয়ের কারণ অনুগলান করাই বিজ্ঞানের কার্যা। পৃথিবী জড় ও জীবন-বিহীন
পদার্থ। মনুষোর মনই ভাহার অন্তর্গত
কার্য্য কারণ শৃষ্ণলা অনুভব করে, এবং স্থীয়
স্থভাব অনুগারে কারণের পর কারণ অনুসন্ধান করিতে থাকে। এই প্রকারে উপর্যু
পরি কারণ শৃষ্ণলায় উত্থান করিতে করিতে
পরিশেষে সর্বোপার সেই কারণের কারণ,
সেই আদি কারণ স্থলপ পরনেশরের উজ্জুল
মুখ দেখিতে পায়। বিশ্ব মণ্ডলস্থ ভাবৎ কারণরাশিকে সমাক্ষণে একতীভুত করিয়া তাঁহাকে গ্রহণ করা আপাততঃ মনুষোর পক্ষে
অসাধ্য, কিন্তু ইহাই মনোবিজ্ঞানের উদ্দেশ্য
বলিয়া নিশ্চয় ব্যাপ নির্দিষ্ট হইতে পারে।

ভপরেক্ত বিষয় সকল সহযো আমরা

যাহা কিছু বলিয়াছি ভাষা নিভান্ত অসক্ষু বিভ সামানা সন্দেহ নাই। সকলে সহযোহ ভাহা আয়ন্তীক্ত করিভে সমর্থ হইবেন। কিন্তু আমাদিনের উন্দেশ্য ভৎসমন্ত বর্থা-সাধা আলোচনা করিয়া পাঠকবর্গ ও সকল ব্রাহ্ম জাতুমগুলের হৃদরে মনোবিষয়ক ভিন্তা উদুশ এপ্নিন্দীল করি, যে ভাষারা আমাদিনের নাহাযা অপেকা মহন্তর উ-পায়ে মন্ত্রের প্রকৃতি এবং ভ্রিহিভ ক্ষ-

এ ফণে আমাদিগের গঢ় ৰূপে মনো-বিজ্ঞান শান্ত্রের আলোচনার প্রহৃত হইতে ছটংব। এতাদৃশ আলোচনার পূর্বে বোধ হর আমাদিনের মন শব্দের প্রকৃত অর্থ অব-গত হওয়া, এবং মন-সম্মীয় সর্বাদা ব্যবহার্য্য ক তি পয় শক্ষের ভাৎপর্যা নিরপণ করা একান্ত আবিশ্যক। কারণ সাধারণতঃ বিজ্ঞান শাস্ত্র गत्रदक्ष, विद्यावटः मत्भविष्ठांन मत्रदक्ष, वि-শেষ বিশেষ ভাব-নিদর্শক এঞ্চাদৃশ কভক গুলি শব্দ নিৰূপণ ও তাহাদিনের অদৈধ অর্থ সংগ্রহ করিলে ভবিদ্যালোচনার অ-जिमा दिनोक्या कदम । मफ लहा विक-বিভগু হেতু अमारिबि य कड समात अञा নর্থকর মতামতের উদ্ভাবন ক্ইয়াছে ভাকার সংখ্যা করিয়া শেষ করা যায় না। অধিকন্ত वश्र जायात्र मत्नोविष्ठांन मत्रस्तीतं कान तठ-नामि यमा शर्यास धकामिक इस नाहे, यू-ज्जार **छे उन विषद्ध (य प्रत्ने एव भक्**मि বাবহৃত হইবে, ভাছা মাধারণের বোধগ্য্য कर्नादर्थ अशादन विश्व इंडेट्डिट्ट

मन काशांदक वरण, धर्म विषय गरेशा य कछ सामाञ्चान स्रेगांदस (बाध स्य ध-निटक्रे धरणक बाटसना दक्तमन दक्तमहोत्र, दक्र महीत्रदक मन; दक्त स्य बनदक महीत्र छ मन छेजत्र विद्यमा करतन। दक्त या क्षांदरक कांग्र, स्कर् वा त्यांविक, त्कर वा म-श्रिटकत्र वर्ग यांज विद्वहमा करत्न। এहे क्षकादत मन देव कि अमार्थ है। नहेता हितकाल है विकामविद्मितंत मत्या वन्तु ह-निश्नोट्छ। वित्वहना कंत्रिटन व्यञीयमान চ্ইবে যে কতকগুলি গুণ ও ভাব দেখিবাই আমরা কোন একটা পদার্থের অন্তিত্ব নি-र्फिन করিয়া থাকি। তেন থাকিলেই তা-হার একটি আধার থাকিবে, সেই আধারকে পদার্থ কহা যায়! এই পদার্থকে অবলয়ন করিয়া সকল ভাব সকল গুণ স্থিতি করি-তেছে, এবং ইছা হইতে বিচ্ছিল হইরা গুণনাত্রই অবস্থিতি করিতে পারে না। আহুতি, বিস্তৃতি, গতি, আকর্ষণাদি কডক-গুলি গুণত্রেণী একটা পদার্থকে আশ্রয় করিয়া রহিয়াছে তাহার নাম জড়পদার্থ : জ্ঞান, প্রীভি, ইচ্ছাদি কভকগুলি গুণ-শ্রেণী অপর একটা পদার্থকে আত্রয় করিয়া রহি-য়াছে, তাহার নাম চেতন পদার্থ অথবা মন। এই দিবিধ পদার্থ হইতে বিচ্ছিন হইয়া কি উপরোল্লিখিত গুণ-মণ্ডলীর মধ্যে একটাও অবস্থিতি করিতে পারে? কেহ কি অ-मार्गियथि वञ्च-विशेष चाक्रिक, यो वञ्च-विशेष বর্ণ নয়ন গোচর করিয়াছেন, না মনোবিংীন জ্ঞান, ও হৃদয়-বিহীন শ্রীতি উপলব্ধি করি-পদার্থ হইতে পৃথক্ করিয়া য়াছেন? গুণ-চিন্তা মনুষা-যভাবের পকে অসম্ভব। অভএব কতকগুলি গুণরাশি দেখিলে তাহা मिशरक रकान अकरी छन्नांनी शमार्थत অন্তর্গত বলিয়া নিশ্বর প্রতীতি হয় ; তাহা मा इउता चरशेफिक ७ चत्राचः दिक। এই গুণরাশি যদি সাধারণত সদৃশ হয়, ভাহা **হইলে** তদবলমিত পদাৰ্থত এক স্বভাবাপন হইনে, কেবল তাহানিগের ৰূপান্তর ও অবস্থান্তর নিবন্ধন উক্ত পদার্থের আকুতি ও অবস্থার ভেদ হইবে, এবং তাহা ভিন্ন

ভিন্ন নামে উক্ত হইবে। যথা বায়ু ও थरुत, এवर स्रवर्ग ७ जन हेशिनिद्य (म-चिटल निठान विভिन्न अमोर्थ द्वांथ रहे। किन्न यमिछ ইश्वानिटशत विद्रमय विद्रमय अद्भार अटडन चार्ट. ज्वांशि जड़ शर्मार्थंत मा-ধারণ সমস্ত গুণ উভয়েতেই সমান ৰূপে বিদ্যমান রহিয়াছে ইহা অবভা কীকার্য্য; কারণ আকৃতি বিস্তৃতি বর্ণ ও আকর্মণাদি জড়ীয় গুণ উভয়েতেই সমভাবে স্থিত দৃষ্ট হয়। অভএব তাহারা ভিন্ন জব্য মাত্র, ভিন্ন जिन्न अमोर्थ नरह। किन्न यपि छैन्नि-থিত গুণরাশির মধ্যে একটা শ্রেণী অপর त्यानोगि हहेटड मन्भूनं करण विक्रक ७ **डिग्न**-श्रुजान इहेशा উঠে তাই। इस्टेन छम्दनश्रिक পদাৰ্থদয়ও বিভিন্ন-স্বভাব ও বিরুদ্ধ হইবে তাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই। একাণে जहरकारे दार्थ रहेरल शांत य अ**ए** शंना-র্থের এবং চেতন প্রদার্থের গুণ্মমন্ত যেমন প্রস্পর বিরুদ্ধ ও অসদুশ-শ্বভাব এমত জ-গতে আর কোন বস্তুই নহে। বাস্তবিক একটা লক্ষণ ও উভয় পদার্থের সাধা-द्रश्**मम्भ**ण्डि नहरू! जाइ द**ञ्चत या ममख** গুণ চেতন বস্তুতে তাহার সম্পূর্ণ বিরহ, এবং চেতন বস্তু অর্থবা মনের যে সমস্ত লক্ষণ জড় পদার্থে অথবা বাহ্য জগতে তা-হার সম্পূর্ণ বিরহ। কেবল বিরহ নহে আ-বার বিরোধ। জড়তা এবং টৈতনা কেমন বিরুদ্ধ যেমন অক্ষকরি ও আলোক, যেমন ক্ৰীবন ও মৃত্যু। অতএব বাহাৰস্ত অথবা জড় পদার্গ, এবং চেডন বস্তু অথবা জ্ঞান পদার্থ নস্পূৰ্ণৰূপে অসদৃশ ও বিভিন্নস্থ ভাব। শরীর यादायस ७ कड़भनार्थ, कड़ीय ममल छन्हे क्षारक विमामान मुके इस्र। अवर मन ाञ्चन श्रमार्थ, (ठाञ्चन श्रमार्ट्यत समस्य **छ**न्हे ভাষাতে শঞ্চিত হয়। এই **জন্য "শরীর ও** হন এই ছুই প্রস্<u>পর ভিন্ন বস্ত। যামানা যু-</u>

क्रिटक अवनद्दन कतिहलहे विश्वकृष विश्वाम स्टेटन रच महीतन आहर, मनल आहर, किन मतीत सम महर, समल मतीत नहर, छ-**जात के जब स्ट्रिक किया।** वाहे भारीत छ मरमक विकिश्न विमर्भनार्थ भूतां कालीन এक जन महा পণ্ডিতের বাকা অসুবাদিত হইল। আচার্য্য এবং শিষ্য পরক্ষার কথো-পকধন इहेट्डहा আচার্য। তুমি কাহার সঙ্গেকথা কহি-তেছ ? আমার সঙ্গে নছে ? শিষ্য। হঁ। ভগবন্, আপনার ক্রে আলাপ করিতেছি। আচার্যা। আমিও <mark>ভোমার সক্রে</mark> আলাপ করিতেছি ? शिया। यथार्थ। আচাৰ্য্য। তবে আচাৰ্য্য কথা কহিতেছেন 🖟 भिषा। यथार्थ जगतन्। আচার্য্য। এবং শিষ্য শ্রবণ করিতেছেন 🌣 शिषा। यथार्थ। আচার্য্য। আমি শব্দ ছারা তোমার সংস্থ আলাপ করিতেছি? শিযা। ভগবন, ইহাতে আর সন্দেহ কি? আঁচার্যা। আলাপ করা এবং শব্দ ব্যাব-হার করা এ উভয় একই কার্যা ? मिया। এकरे कार्या। আচার্য্য। ব্যবহার-কর্ত্তা এবং ব্যাবহৃত পদার্থ এউভয় কি ভিন্ন নছে? निया। जगरन। कि वनिदनन छेखन कर्प হৃদয়ঙ্গম করিতে পারিলাম না। 🐇 আচার্য্য। বাদ্যকর স্থীয় বাদ্যক্ত হইতে কি বিভিন্ন নহে? কাষ্ঠ ছেদক স্থীয় কুঠার क्हेर**क कि वि**जिन्न नरह ? শিষা। নিঃসন্দেহ ভগবন্। বিভিন্ন। আভাষ্য। আমি ভোমাকে ইহাই জিজানা ক্রিতেছিলাম, বাবহার কর্ত্তা এবং ব্যবহৃত

বস্তু কি পরস্পর ভিন্ন নহে।

निया। देशांद्र यात गरमर कि। व्यागर्था। किंदु में कार्य एए के कि कर्मन তাহার অন্ত ছারা কাঠ ছেশ্ব করে, না তাহার मद्रक चीत्र स्टब्स महायाउ **र्गकदत्र १** माराज्य । १ १ १ अल्लाहरू व्याप्त । विकास मार् निया। इटला महिया अर्थे केटा व्यानार्था। छटव मि श्रीप्त इंखटक वादहात •করে ? लिया। यथार्थ जनवान्। আচার্যা। সে হচ্ছের ন্যায় স্থীয় চকুকেও ব্যবহার করিয়া থাকে ? শ্যা। ভগবন্! করিয়া থাকে व्याहर्षि। उदय क्षेष्ठिष्ट्रमक अवः वांनाकत ভাহাদিগের হস্ত ও চক্ষ্ হইতে বিভিন্ন ? শিখা। ভগৰন্ ইহাই তো বোধ হয়। আচ্ব্যা। কিন্তু কেব**ল হস্ত ও চকু কেন** ? गकत मञ्चाई इस अप ठक्कू कर्नानि ममस অঙ্গের সমর্চিযে শরীর তাহাকেও তো ব্যব-হার করিয়া থাকে। শিया। ভগবন্ ইহাতে আর সন্দেহ কি। আচার্যা। আমাদিগের ইহাই তে। সিদ্ধান্ত श्रेतारह रच वावश्रंत कर्डी **७वः** वावक्रड বস্তু এউভয়ে বিভিন্ন ? 🧃 निवा। ইशेर आंगानित्रत निकास। আচার্ঘ্য । মনুবা তবে ভাহার শরীর হ-ইতে ভিন্ন ? শিষা। ভগবন্ ইহাই তে। আমার প্রতীতি र्रेट्टिष्ट् । , व्यागर्या। जत्त मनुषा कि ? শিষা। ভগৰন আমি জাভ নহি। আচাৰ্যা। তুমি তে ইহা জ্ঞান্ত আছ যে मञ्जूषा महीत नटर, ता कांश्रंत महीतटक वा-বহার করিয়া থাকে। শिया। देश क्षांठ आहि। वार्गिश मन जिल्ल नहीत्रक कि व्यात (कर वावरांत कतिए बाहरमा

निया। जात (करहे नटर। व्यक्तिया। यमहे उदद क्षकुष्ठ मसूया। ছोछ। दे जनवन्। मनहै अङ्ग्रं मन्या। আচার্যা এবং শিবের উপরোলিখত मस्रोयन इहेटल जाबता दक्वल इहाई मिका করিলাম না যে শরীর এবং মন এ উভয়ে বিভিন্ন পদার্থ, কিন্তু ইহাও স্পার্টকপে অ-वज्**ठ हरेलाम (य ''मॅनहे** शक्क मनूषा'। **এই मछाँगे क्यम महान्! देश** इहेट আমাদিনের হৃদয়ে কত মহস্তাবের উৎপত্তি हरेटल्ट्स, এवः व्यामानिटनत धर्माटक्ये। उ আত্মোহতির আশা কতই সহায় লাভ করি-তেছে। এই বৃঙ্গ দেশের ছীনাবস্থ সন্তান **पिटशत मट्या गोहाता मारमातिक ऋथ इःटथ** उनानीन थाकिया क्वन चौत्र चीत्र वर স্বদেশীয় লোকদিবের মানদিক উর্লাভ সাধন করিবার চেন্টা করিতেছেন, যাহালে এদেশে ধর্মের গৌরব রুদ্ধি হয়, শান্তি কুশল প্রদারিত হয়, ভাছারই জন্য ঘাঁছারদের হৃদর বাকুল, তাঁহারাই এরত মনুযাতার পরিচয় দিতেছেন। ইহলোকে উ।হা-मिरात (य ममन्ड कुन कर्छे इहेर डह. নিষ্ঠুর খত্যাচারী লোকদিলের নিকট ছইতে य बांघांठ य निर्माठन महा कतिएउट्हर, তাহা এক দিন ভাঁহাদিগের জড়ীয় শরীরের गहित ममाश्व हरेता याहेता। उँ। हाता नियां जिन्न कर नियां जोता जी हो पि-গকে বিশ্বত হইবেন, কিন্তু আমৃত্যু প্রাণ-ণত-চেক্টা-মন্তুত বে আছোন্তি ভাহা অনম্ভ কাল সুখ শান্তি ও অন্ত সম্পত্তি বিধান করিবে সন্দেহ নাই। महिक भारोदिक ऋथ छः८थत व्यवसाम इस, किछ घडीर कर्फे भारा मान्मिक माना किहे তিরকাল প্রলোকে মনুবোর সম্বল হট্যা \* विञि करतः नेश्वत क्यून मा माण्डि इहेर्ड यन करूरे किठ्ठाल में इत्यम।

मत्या मन्यारे न स्वत्यकं अवः मन्द्रयात्र मत्या मनदे मस्त्रत्यकं।

# গত ১৫ই জোষ্ঠ কোন্নগর দিতীয় দায়ৎ-দরিক ব্রাহ্মদনাজে নিম লিখিত বজুতাটী পঠিত হয়।

व्यम्। এই সমাজের नशःक्रम এক स्टमत्र शूर्व हरेल! कङ्गामग्र शहरमभरत्व अनुकम्भारिक स्य এতংকাল পর্যান্ত সমাজের কার্য্য নির্মিল্লে সম্পাদিত হইয়াছে ই২াতে কুডজ গ্ৰহণ সেই মঙ্লময় পুরু-বকে বার বরে নমস্কার করি। বদিচ এই সংক্ষেপ-कृति गर्भा कहे आरुगत अधिकमर्थाक स्नाक ব্ৰাক্ষবৰ্শ্বে অনুৱাগ প্ৰকাশ করেন নাই, ভথাচ যে কয়েকটী যুব। ব্ৰংহ্ম-ৰেছণী ভুকু ২ইয়াছেন ভাঁহারদিগের অকপট-ভা্ব ও ধর্মের প্রতি আন্ত-রিক আদ্ধা পাকাতে বিশেষ তৃত্তিকর হইয়াছে। আর ইহাও আফাদিগের মারণকরা উচিত, ভূ-নিতে বীকা ৰপন করিবানাত ফল লাভ করা যাইতে পারে না, প্রত্যুত কালকে প্রভীকাক-तिए हरेतक। काल गहकाद्व मार्च बीज जन्न-तिष्ठ ७ भव्तविष्ठ इष्टेबा द्वामक्तरभ भविष्ठ स्य, পশ্চাং ভাষ্ট। ফল পুল্পে মুশোভিত হইয়া থাকে। অন্তর্র গত বর্ষে আমাদিগের উদ্যোগ যে কিঞ্চিং গ্রিমাণে সফল হইগ্রছে ভজনা সেই স্লেহ্নয় পরম পিতাকে ধন্যবাদ করি।

ব্রাহ্মপর্যা সহলের স্বাভাবিক পর্যা, ইহা কিছু ইতন ধর্ম নহে--অতি প্রাচীন কাল অবধি--সৃষ্টির আরম্ভ অবধি এই ধর্ম মনুষোর হুদ্গত কইরা আনিতেচে, এবং ক্রনে যে ইহা সমুদায় পৃথিবীতে গারিবাপে হইবে তাহা স্পট উপলব্ধি ক্ইভেচে।

এই সনাতন ধর্মের উন্নতি সাধনই ব্রাহ্মন্যাতের প্রধান উদ্দেশ্য। এবং সেই পর্য্যের ফুল পরমেশরে প্রীতি ও ভাঁগর প্রিয় কার্য্য সাধন। এই পর্যা-বীক্সকে লখ্য করিয়া আনারদের সকলের একতা ও হল্প সহকারে কার্য্য করাই কর্ত্তরা। সমাক্ষের লোকের কুল কুল বিশয়ে যতের বিভিন্তা থাকিছে পারে, কিন্ধ ভাহা বর্ত্তরা না করিয়া নানাক্ষর উদ্দেশ্য সাধনের চেন্টা করাই বিশেয়; নান এই অবনী মণ্ডলে কোন ছইটা বস্তু পরক্ষার আভিচলেন যায় না, ছইটা রক্ষরা ছইটা জীব কথান পর্যাংশ ভূলা ছফিলোচর বন্ধ না করিছিত, কর্মন্ত্রের স্থান পাওয়া বায় না। ফলভার পরনেন্দ্রের সৃতি কিয়াই এই প্রকার বিভিত্ত, ইহাতে

সনাজক সকল বাজির নত নকল বিষয়ে বে সম্পূর্মণে একা হইবে ভাষা করাচ প্রভাগা করা ঘাইছে পারে না।

থিত যানসিক তথের বিভিন্তা প্রযুক্ত অনুসারে সভ্যাতুসন্ধান পূর্বক ভদত্ত-योगी कार्या कतिवात समा शहरमध्येत व्यटकाक मनू-यादक वाधीनका ध्यमान क्रियादकन, এই वाधीन ভাব नेके कहा आयानियात कथन छैठिन नटह। কেনু না ভাহা হইলে সভা আবিষ্কৃত ও অব-লম্বিত হইতে পারে না, এবং বে পরিমাণে স্বাধী-\* নতা থর্ম করা হইবেক সেই পরিষাণে সভ্যকে আগ্রায় দেওয়া হইবেক না। পরমেশ্র সন্তাশরূপ, সভাই প্রমেশ্রের জ্যোভি, সেই সভা অৱলয়ন করিলে মঙ্গনের আলমে উপনীত হওয়া ধায়। সভ্য মঙ্গলের ৰীজ, ভাহার একটী বীক রোপণ করিলে রহপ্রকার মঙ্গল ফল প্রাপ্ত হওয়। যায়। অভএব হে ব্ৰাহ্মভাভাগণ! আইম সকলে মিলিয়া মতাকে লক্ষা করিয়া পর্যের উন্নতি কম্পে যত্ত্রদীল হই। আমানের মলো বদি কোন কোন বিখয়ে মতের আংশিক বিভিন্নত। থাকে ভজন্য প্রকানের विद्राप ও विषयाम न। कदिश । प्राथारमञ्ज सकरलव निर्ण्या (व धर्माविक छिविया धेका छारतस्त कति। खेका बाजिद्युदक कान महर काना भन्ना: দিত কইতে পারে না, এবং ছর্মল মন্বোরাড ঐক্য গুণে অভিগুরুত্তর কা্ণ্য সম্পন্ন করিছে সমর্য হয়। অভএর পর্ণের উহ্নতি কল্পে দক*ন* তা-জারই দুঢ় ঐক্য অবলয়ন করা অভান্ত আনুশাক। ষাহাতে বিশুক পর্মা ও জানের মোভি সর্বজ বিকীর্ণ হয়, দেঁশের কুৎসিত আচার ব্যবহার সকল ভিরে'হিভ হুইয়া সদাচার ও সভ্য ব্যবহার সংস্থা-পিত হয় এবং লোকের ছংখ বিদোচন ও সুখ वर्षान इश्र काष्रमदन् विदिका छोडोत ६०चे। कत्रा ध्या-মাদিগের করিবা।

হে পরনায়ন। তোমার সহায়তা ভিন আমরা কোন বিষয়ে কুজনার্থা হইছে পারি না: কেবল ভোমারই কুপার উপর নির্ভর করিয়া আমর। এই শুরুত্তর কার্থো প্রবৃত্ত হইয়াছি। তুমি আমা-দিগকে এরপ ধর্মাবল প্রেরণ কর, যদ্বারা আমরা সংসারে নানাপ্রকার প্রলোভন ও বিশ্ব অভিক্রম করিয়া ভৌমার মঙ্গলমরী ইচ্ছার অনুগামী হই। আমরা বেন দিন দিন ভৌমার প্রতি অধিক্তর প্রীতি হাগন করি, ভোমার নিয়মিত ধর্মা পালনে বজুশীল হই, এবং সকল মনুষোর বিত চিত্তাতে জীবন অবশান করি। এই আমার

**ॐ এकरमवाश्विष्ठीग्न**९

অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা।

বৈং সংখ্যক পত্রিকার ৩১ পৃথার পর।

(ঞাবা )

যাহা হউক মনুবোর ধর্ম তৃষা চিরকালই প্রবল, চিরকালই সে ধর্মের জনা লালায়িত। ু সে যে কোন অবস্থায় কেন নিপতিত হউক না, অতি বিস্তীৰ্ণ নামাজোর নমাট হইয়া সংখ্যাতীত লোকের উপর প্রবন পরাক্রনের সহিত আধিপতা করত, অথবা পর্ণ কুর্মীর নিবাসী হইয়া অলাভাবে ক্রিক শরারে অভিদীন ছংখী প্রজার নাায় সময় ক্ষেপণ করুক, প্রাভৃত পন উপার্জনাশায় ছন্তর জ-প্র সকল পার হইয়া বাবসায় বাণিজ্যেই প্রবুড **উটক, অথবা পরিবার-মুল্জ প্রেছ, মনতা, প্রীতি-**ক্ৰপ কোমল বস্ত্ৰন উৎপন্ন অনিৰ্বাচনীয় মুখ লাল-সায় বাসস্থান গৃহকেই সার করুক, সে যদি কিয়ৎ পরিমাণেও প্রকৃতিক থাকে ভাষা হইলে দকল অবস্থাতেই দে ঈশ্বরের দিকে ভূষ্টি না করিয়া থা-কিতে পাবে না। ফলভঃ ইহা নিঃসংশয়-সভা ্য সকল স্থানের এবং সকল কালের লোকেই ধাপার জনা বাংকুলতা প্রদর্শন করিয়াছে; তবে প্রাপাধিক এই মাত্র।

জ্মার মনুষোর অস্তারে পর্মভাব সকল রোপণ করিয়াছেন বলিয়হি দে কথন পর্মহীন অবস্থায় কাল যাপন করে নাই। ভাহার প্রায় সকল किश'ल्डे धर्माचान गाक स्मा কি স্বকীয় কি পরিবার-সম্পর্কীয়, কি সামাজিক কি রাজনীতি-विषयक ভारांत मकल कार्या है भर्मा मिश्री । গ্রিছদীদিগের ধর্মাভাব ভাষাদের নিজ নিজ আচার ব্যবহারে প্রকাশ পাইয়াছিল, এবং হিস্ফু, মুসল-নান, খ্টীয় সম্পুদায়ের রীতি নীভি প্রভৃতির অভান্তরে প্রবেশ করিয়া দেখিলেও আমরা সেই <sup>\*</sup>সভা উপল্কি করি। ধর্ম মনুষ্যের আত্মাতক এমপ প্রশস্ত ভাবে অধিকার করিয়া রহিয়াছে, যে त्र पूर्वरङ्हें शांकुक, आंत्र ह्रश्यरङ्हे थांकुक, কোন অবস্থাতে কোন কালে নে ধর্মাকে সর্বতো-ভাবে অভিক্রম করিতে পারে না। পাছে সে কোন मिक् मिश्रा शेलाहेश **ने चंद्रत आखेत हेहैं एक** हुद्र গিয়া পড়ে এই জনা ধর্ম ভাহার সকল ভাবের नकन कार्यात्र बातरमध्य व्यवन कतिया व्यवहीत ন্যায় অভি সভক ভাবে চতুর্দিক রকা করেন। অনেক মহাত্মা ব্যক্তি ধর্মকে মনুবেরে জীবন রূপ ठ क्रिया विष्णु विनिया छिक क्रिया एइन । काराज সকল কার্যা পরিধি রূপে সেই মধ্য বিস্ফুকে পরি-বেটিত করিয়া রহিয়াছে।

धरमीत नत्व मनूरवात नत्व वर्गन बक्तभ अवि-

त्यान इहेल, उथन योश्ता मन्त्यात ध्वकृति বিশেষ করিয়া দর্শন করে নাই, জাহারা, ভিন্ন জাব কেহই ভাহাকে আদেশ করিতে পারে না, '' ভূমি श्राशनात्र गरन गरनहे धरमात्र आलाइन। कवित्र, সাৎসারিক বিষয়ে ধর্মাভাব প্রকাশ করিবে ন।। नामांकिक कार्या भरमात अनूबर्जी हरेरत हरेरज পার, কিন্তু আহলাদের কিন্তা শোক ত্রবের সময় কথনই ভাহাকে অন্তরে স্থান দান করিবে না। বে বাজি কিয়া যে ধর্মা মনুষ্যপ্রকৃতির সনাক উন্নতির অর্থ অন্বগত থাকিয়া ভাষাকে স্থানীন ভাবে পরিচালনা করিতে না দেয়, যে বাভি এবং দে ধর্ম অভি অপুশস্ত অনুদার এবং কীণ-प्रभी विलिट्ड हरेरवक । एपनम वालकरक छाहाँ व ইন্ধামতে অঙ্গ প্রভাঙ্গ চাল্যা কাবতে ও সঞ্জ জীড়ানুরত হটতে না দিলা ভাষাৰ প্রকৃতি विक्रम्ब कटोर्शव आएममा अकल श्रीलम कविरुष्ट वाधिक कविद्रल, स्म नि\*ध्युष्टे खेलाम ७ किन्नि विशीम इड्या कारल मकल ध्यकात जिलाम, माठन, बीर्या पूर्वी रहेशा भएए, ध्यावरे कांगत वाता काम महर कार्या भाजिल केनेवाव महोतनी ধাকে না ; সেই রূপ মনুধাকে ভাহাব প্রকৃতি অনুষায়ী কর্মা করিছে না দিলে তাহার উল্লভি ও मह्दू लोटछत्र পথে विषय वर्गाष्ट्र केर्याच्या कर्या. হয়। ব্লক্ষকে উত্থ্রপ্রপ ফল প্রাথণ করিয়াল দেখিবারে मान्य थाकिरल (त्यन अवसाई डाइ) एक धरन खारन (द्वोभग क्रिट्ड क्रेट्ट, अटम नथ। अटम अन की-ভোক্তা হইতে দক্ষিত না থাকে, এবং সামাৰ যে -দিকে ইচ্ছা করে সেই দিকেই শাখা প্রশাসারি खात कतिएक मगर्थ दश, अनुस्थात स्विटक क । भई। ৰূপ স্বভন্ত ভাবে মৰ্কনিকে পাৰিক কৰিছে কেওনা कर्द्धाः शक्ष्य स्थम यन मनी मध्य दश्कातः-শ্যাভিমুখে ধাতা করিলে অত্যুক্ত শিলাম্য রস্থু সমান সূতৃত্ শুপ্রত শ্রাজাও গ্রেজিবাপ করিছে ममर्थ हम मो, राष्ट्रे क्षेत्र मनूना क्नसंख छ त उसार मत প্র**তি সহল্র সহল্য প্রতিবন্ধ** দভাচরণ করিনেও ভাহা কাল সহকায়ে সকল বাপা অভিক্রম কবিয়া, य भटन हिन्दा यहित्वहें गहित्य। মনুৰ্যকে শ্বভাবেৰ ৰিপরীত কার্ণ। কবিতে নিয়োগ করাতে কেবল আমাদের ছনেচনা ও অজ্ঞানভাই প্রকাশ পায় ৷ আখরা কেবল তজাবা সভবোর उम्रिक त्यांकरक धर्याकारत निर्मिष्ठे जात्म लेल-नीछ इटेल्ड मा निर्वात अम, अलावाय जाती

ধন্ম মনুষ্যের মনুষয় জালাকে পরিবাাঞা কবিয়ারহিয়াছে। মনুষ্যের প্রতি কিয়াই বর্গা। নুগত হইতে পাঃ। সকল কাষ্যই ঈশ্বর-প্রাপ্তির উদ্দেশে সমাধা হইতে পারে। সামান

टेरविकक क्रिका अवधि मान्य जीवरमत अकेल्ब कित्रा टेश्यम् भर्गास न्यवत्वदे धर्मात्र मान्यत्व जाना योग । वसन् बहुना जाभनाह कालिकार्या-কেই গর্মের শাসনে শাসিত করেন ভতানই তাঁ-লাকে প্রকৃতিক ৰবিয়া উদ্ধি করা যাইছে পারে। र्थाम जन्नेन भेटक धर्म मधकीय किया माद्रवाहरू আর্ম্ব বুঝায়, ভবে বে রূপ আলোচিত হুইক তাহদেও প্রাক্তীভি হইচে পারে যে যাঁহারা প্রকৃত শাণু ভাঁৰারা হয়ত নিয়তই অনুঠাৰে প্রস্তু হই-· जदध्य। किन्न अमुर्शाः नक्न **वर्षे** वाशिक व्यर्थ নকলে বুঝে না। অনুঠান শকের বাংপক অর্থ নইলে, মুনুযার আখ্যাভ্যিক ও কাত্িক কিয়া বিশ্যের ভাষাকে আধ্যাত্তিক ও বাহিক এই ছুই কেনীকে বিজ্ঞ করা হাইভে পাক্ষে। **স্থাক**-ন্ত্রে ক্ষমা, উদার্ঘা, দরা, উপচিকীর্যা, ভক্তি, প্রীতি াপ্রভৃতির অনুষ্ঠানকে আখ্যাত্মিত অনুষ্ঠান করে, खव<sup>ा</sup> मार्मादिक ७ देत्रक्षिक कार्या **बदर** शहरूक्ष भिक्षिण इत्रेश क्षेत्रहात्मरण अनुष्ठिक क्रियादि-म्बर्यत साम राधिक जानूक्षीन। विशासिक অনুষ্ঠান সকলেরই অনুনোদিভ, কেছই ভাহার বিরোগী হউতে পারে না, বাহ্যিক অনুষ্ঠান বিশেষের প্রভিন্ন আপত্তি চুক্ট হয়। এই সকল আপত্তি কত দুৱ মুক্তি সম্ভত ক্ৰমে আলোচনা चन्ना नामित्य ।

বাজিক অনুঠান ছুই প্রকার লক্ষিত বয়। গ্ল ভাষারা আমাদের আন্তরিক ভার **প্রকাশক**, বখন আনাদের ক্ষমে কোন সর্ব ও সাধ্ভাতের উনয় হয় তথ্য আমরা কাহাৰায়। ভাষা বাহিরে অকাশ করি; নয় ভাষারা আমাদের সংসারের ও অংগার উপতি বাধনের উপায়রবেপ অবলম্বিত ্টগা থাকে। অথবোক্ত বালিক অনুষ্ঠানের প্রতি মবরোগ প্রকাশ করা নিভান্ত অসমত, এ হেডুক ভাষা হইলে মানব আকৃতির আছি বি-কর্মতার প্রকাশ করা হয়। আ**দানের আন্তরিক** গণভাৰ সকল ৰাহিৱে প্ৰকাশ ক্ষিতে দা পাইলে জামানের আছেটিক নিজ্ভেক ও **অকর্মান্য হটুরা** 'भगाम महें । अवद तमहे मक्का काहित्व क्षकामां करा <sup>কি আ</sup>ন'দের পাভাবিক কার্য্য নহে **৭ প্রেই উ**-ভিথিত হটবাছে বের্মিয়বোর অভারকে সীয়পথে भारति उने कि मां मिंख्याकि श्रीमारमञ्ज क्वतंत्र है-প্রেটাট সক্ষ<sub>া</sub>পায়। যাঁছারা মন্ত্রাক্ক নীচ ও মতিন সাৰ প্ৰিকাশ করিয়া **উন্নত ও প্ৰিত্ৰতাৰ**, কুল্লে বিভূদিত দেখিতে অভিলাধ করেন, তাঁহারা এ ছিতীয় জনা। বাহিকে **অনুঠান সকলকে অনু-**িত তেপে হের জান করিবেন **এবিখাসকে** থামি বাধন মনে ভান দান করিছে পারি না। ভবে অনুচান জনেক সময়ে বাহা।ভয়রদার **হইরা** 

উঠে, ভাঁহা আমাধিকের আন্তরিক করেবিও প্রকাশ করে না এবং আত্মার উন্নতি সাধন ও করে না। এরপ অনুষ্ঠান অবশাই প্রতি জনের ঘৃণার বিষয় হওয়া করিব।

अबूबीन रमचे ७ कांब टिए जिन्न जिन्न पृष्टे इसः। यथन सकत् (पंशीय व्यादकत् छाव नाना কারণ ৰাশতঃ ভিন্ন ভিন্ন হইয়া গিয়াছে, যখন এক দেশের অভাবের সহিত অন্য নেশের অভাব সং करवात धेकाणा नाहे, यथन कारमत नहिंद शामा-দের ভাব ও অভাব মকল পরিবর্তিত হইভেছে, **७ धन ८५ थ काल निरमारक अनुक्षीन मकल जिल्** ভিন্ন ক্ৰেণ প্ৰকাশ পাইৰে মন্দেহকি ! ঘথন মনু-त्यात महत्व मध्यामकांका थाछि ও भोत्रव नाटम्ह স্পৃহা অভি ৰাধারণ ও বলবতী চিল, তখন ড: হার আতি অনুঠানেই সংগ্রাম স্পৃহার ভার প্রকা-শিক্ত হইত। গ্রীক ও রোমীয়দিগের বিবরণ পাঠে এ সত্যের সহজ্র সহজ্ঞ উদাহরণ প্রাপ্ত হওয়া যায়। যথন জ্ঞানের রাজ্য অধিকতর নিস্তারিত হইয়াছিল তথনকার অনুঠানের ভাব আর সে-क्रभ किस मा। इस्त छ, क्योंग, छ इस्ति हा-मछ। इंडेट्राशीय थुकीय अमुद्रिशत कासर्गंड दम्म ব্যক্তের প্রতি নিরীক্ষ ক্রিলে সে সত্য বিলাধ্ন রপে প্রতিপদ্ধয়। দেখানে আর দেশের যুদ্ধ मध्यक्षीय ভविषाद सक्तनासक्त कासिवात सिंग व त्म (छल्कि तम्बीम कविमामानीक नारे, अवश द्र त्रम प्रतिवृक्ष प्रमान कथा विवास करते मी। मिथादन मिथाएं शाहे लाकि व्याशिवामि श्री ह বিষ্মুভ হইয়া দিন রাত্রি প্রাকৃতিক বিফান, ম-নোবিজ্ঞান, নাায় ও ধর্মাশাক্ত প্রস্তুতি ছক্লহ স্বক্ষ্ **खत्र विमा।-मकल आद्याप्रनाग्र अखिनिक्छिनन**् হইয়াছে। সৃষ্টির অন্তর্শ্বিত মুকৌশল ও নিয়ন সকল আবিষ্ঠ কৰিয়া লোকে সেই অন্তের षासु छ भविमा प्रकृतिहरू मशीयान् कविराख एक, अवर যাহাতে মনোৰুতি সকল চরিতার্থ হয়, এইরূপ • ष्मरथा **छे**भाग **बास्मा**न कतिएक बाहिनास द्रहि-

( ফ্রন্সঃ জ্ঞাক(স্বা)

मश्वाम

গত বারের পত্তিকাতে জ্রীকোকদিগের নিমিত্ত একটি রক্ষোপারনা সমাজ সংস্থাপনের কথা আমর উল্লেখ করিয়া ছিলান। আমরা একংশ অরগত হই-লান বে কতকণ্ডলি মহক্ষরিত ক্রাজের প্রথমে কোন এক ভার পরিবারে নিয়মিত ক্লপে মহিলাদিপের।
উপাসনা কার্য্য সম্পন্ন হইবে। মতদিন না এই
স্থীসমাজন্তী প্রতিষ্ঠিত হইতেছে, ততদিন ইহার স্ববিশেষ ব্রভান্ত আমরা পাঠক বর্গ সমীপে প্রকাশ
করিতে নিরস্ত থাকিব। কারণ কোন আরম্ভ শুভ
কার্য্য সুসম্পন্ন না হইলে ভল্লিষয় লইয়া অকারণ
গোলবোগ করিলে মঙ্গল না হইয়া বরং অনিট
হইতে পারে।

আমরা অভীব আফ্রাদের সহিত অবগত

হইলাম বে শ্রীঘুক্ত বারু কাঁশীশ্বর মিত্র মহা
শব্বের প্রেষড়ে বহরামপুর নগরে একটা ব্রাহ্ম
সমাজ প্রভিষ্ঠিত ২ইয়াছে।

ৰাগাভড়া গ্ৰামে পাঁচটী ব্ৰাহ্ম বিবাহ সুচাক রূপে নির্নাহিত ইইয়া গিয়াছে। দেখানকার লো-কদিগের ভাতৃতার ও সর্লভার কথা প্রবণ করিলে অভ্যন্ত আনন্দ জন্মে। তত্ত্র লোকদিগের মধ্যে অনেকেই পণা বিজেতা; কুদ্র কুদ্র পণা বীথী সং-ভাপন পুৰ্বক যথা কপঞ্চিত আমে জীবন যাত্ৰা निक्षां क्रिया शास्त्रः अञ्चलात् कार्यावदासीमि-रगत भरता यागता जानावर्ग ठारून ভাগারা কেডাদিকের সভিড বিজেয় দ্রবোর মূলা নিরূপণ প্রথা এককালে পরিস্তাাণ করিয়াছে। কেং কিছু কয় করিতে আসিলে সরল ভাবে এক-क !' व र्वानम् । जैटरे " अ स्टरात अच मुला; हेक्। इस এ২+ কর, না হয় করিওনা ; আমরা ব্রাক্ষ আমরা দর্করিনা।'' দোকানীদিবের দক প্রায় যথ। প্রিমিত রূপে রক্ষিত হয় না, কিন্তু বাগাঁচড়ান্ত ব্রাহ্মরা একক লে এবসিধ অপরিমিত চক পরিবর্ত্ত করিয়া ফেলিয়াছে, এবং সম্পূর্ কুপে ঘ্যার্থ পরিনাণে প্রবাদি বিত্র করে। হাহারা ধকদম। করিলেছিল ভাহারা অসভোর ভয়ে মকদ্দনা পরি-ভ্যাগ করিয়াছে, এবং যাহারা কোন কারণ বশভঃ প্রতিবাদী বা গ্রামস্ত লোকদিগের সহিত বিষয় ঘটিত কোন বিবাদ করিতেছিল, ভাহার৷ আঞ্চ भटमात छे भटन में कटन विवास विश्व में हरेट छ । १३-काटन नितंत्र हरेशांद्य। विमा विदीन व्लाकमिरशंत्र পক্ষে কেবল বিশুদ্ধ ধর্মের বলে এত দুর করিয়া উঠা সহজ নহে। সামান্য লোকলিগের মধ্যে যাঁহারা कान जनस धर्मा ध्याना कतिएक शिवाद्वन छै। हा-রাই স্পান্ত প্রতাক্ষ করিয়াছেন ভাহাদিশকে অব-লম্বিত প্রথা পরিত্যাগ করাইতে রত করা কেমন क्तिन। याँशांता शक्तिक वहरन नक्तिन विनिधा थाटकन य माधार्व लाकमिटगंद महल अक्षेत्र है क्षमं आकारनीत जाशाश्चिक जाद नकल शह्भ ৰা পালন করিতে পারে না, তাঁহারা এইক্লে वागांवका जामक इस्थी, विमानिकीन-जामनिकान जवहा जवःवाकम करून, जाहा इहेटल दूतिहरू

পারিবেন যে ভাঁছাদিপের বিবেচন। জন মূলক কিলা।

अक्रकार्थक थुंकीय धर्म अकात्रक विमनती यक्षेत्रविद्यात मध्या वर्जमान, नमटक विकासात पन नित्रीकिक हा। अहे इहें के कालबूटे द्वाफ नमः জের অনিট নাধন করা নমান অভিসন্ধি। কিন্তু अञ्मादमत भरभा अनिमन विनय क जाकृषादि. সত্তোর অনুবেজির জনা শীয় সংকল্প লাখন ক-রিতে চেটাবান হইয়াছেন, অপ্রাটী নিভান্ত অস-**पृथ्य देवत् छाव ज्ञवसम्ब शूर्वक बाइस्टल ७ वाका** যন্ত্রণায় সমাজকে ছিন্ন ভিন্ন করিছে হোর প্রেভিজ হইয়াছেন। কেই সহক্তা পাঠ করিয়াও ভদ नामित्रोच्र वेच वर्गाहात्रामि व्यहात कतिया गर्भा भिति-মিভ রূপে ব্রাহ্মপর্যোর প্রেভিনাদ্ করিভেছেন, কেছ ৰা মুণা ও ভানুয়াপূৰ্ণ বাকা প্ৰয়োগ করিয়া, এবং স্কৃতিগত দোষ ধানি আরোগ করিয়া ভাগেনা-দিগের পদানত সমাদ পত্রে প্রাকৃতিত কলিতে।৯ন, শেবেভি মহশিয়দিগের ব্যবস্বেশদিও আমর্ সময়ে সময়ে বিরক্ত হই বটে কিন্তু বিশুদ্ধ ঘুক্তি ज्यवन्यस्य कतिया विध्यप्रमा इयः ए। व्यवध्याकः महा-শর্মাদেগের স্বীয়:ভিস্থি সাধন ভেটা অধিকভঞ কার্যাকর হইৰে স্থলিকিন্ত ধর্মা প্রায়ণ লোকভুত তাঁহাদিগের ভদ্র ও সাধু চেন্টাম উত্তেজিত হইয়া वत् थ्छीय पर्धात ख्लानुमक्तान कांत्रस्त प्रमृत्यूक হইলেও হইতে পারেন কিন্তু অপর জোনীভুক वियम खेषमाही अर्खनीड संदर्गमग्रामिटनंत्र काला-ষিত ও অসদ্ধার সংযুক্ত আচরণে মকলে নিভাস্ত কৌতৃহলাবিউ হয়েন বটে, প্রস্তু জলুরি। কেচই থূটীরধর্মের প্রভি একাদিভ বা অনুরক্ত হইদে नो, कांत्रभ मलामक', बिन्य मानुसका वित्वधना कतिएक बाकि बाहतरे मक्य। मिमनदी कोडानिएवंद अंजि जामानित्तव बल्वा ८६ छै। हात्। याद्यादक मला बिरवहन। कविरक्तकत छाहा हेन्छ। दश अहात करून, किन्नु निकाकीय डेंबगार्ट डिक्ट इडेया खांड ও প্রতিবাসী দিগের প্রতি জনায় অভ্যাচার ন। करतमे, जार। इहेटल जीहाया मूर्ग स्ट्रमात निकार न। नेश्रद्धत निकडे, काङावत निक व्यक्तिश लास করিছে পারিবেন না। আদয়া কোন দলের বিশেষ নামোজেশ করিতে চাফি না, বােগা করি উহারা স্বীয় স্বীয় গোষ গুল বিচাৰ করিছে সক্ষম হট-दबस ।

বঙ্গদেশে যত যত গ্রাহ্মসনাজ আছে তৎসমুদ্রায়ের কার্য, প্রথালী যতদিন না একটা বিশেষ
শৃষ্ণলা বছা হয় ভতদিন প্রাক্ষধর্মের প্রকৃতভাব
সাধারণ সমক্ষে উজ্জুলকপে প্রকাশিত চইবে না।
যেমন প্রাক্ষ হইয়া অসদাচরণ ক্রণপেকা প্রাহ্ম না
হওয়া ভাল, সেইকপ প্রাহ্মসনাজ সংস্থাপিত হ

ইয়া ব্রাক্ষ ধর্মানমুনোদিত কার্য্যে প্রস্তুত্ত ইওয়া সালক না প্রতিন্তিত ইওয়া ভাল। বেমন ক্ষায় সমকে পৃথিবীতে একটী ধর্মাশাসন আছে সেইরপ মনুষ্য সমকে একটী ধর্মাশাসনের প্রণালী প্রাক্তিত ইওয়া উচিত। যথন আমরা গর্মাকে প্রজ্যোতিত ইওয়া উচিত। যথন আমরা গর্মাকে প্রজ্যোতির কানের কান্য কোটারে আবদ্ধ না রাখিয়া সমাজের মধ্যে প্রেবিন্ট করিয়াতি, পর্তুমান সময়ে ধথন ব্রাক্ষাবর্ম জনসমাজের ধর্মার্থ জনসমাজের ধর্মার্থ জনসমাজের ধর্মার্থ জনসমাজের ধর্মার্থ জনসমাজের ধর্মার জলসাথন করিছে আম্বানিকের উল্লেখ্য করান ক্রেই আম্বানিকের উল্লেখ্য করান ক্রেই আম্বানিকের সাল্যা করান করান ক্রেই আম্বানিকে প্রার্থ সমাজকের সাল্যা জনসমাজ করাকের বোধ ইইলেও ইইজে পারে। নাহাতে কর্মদেশস্থ প্রকল ব্রোক্ষাম্যাল বিশ্বজ্ব প্রেক্টা অবলয়ন করে ভাহার জন্য আ্যানিকের সমূহ করিতে ইইবে।

আগানী ভালমানের মানিক সমাকে ব্রাক্ষানমাজের জন, ছই জন উপাচানা অভিনিক্ত ইইবেন।
সমাজের নিয়মিক কান্যানের ইছার। প্রদান আচার্যা মহালারের সমাকে নভারমান ইইয়া উপায়ুক্ত
উপাদেশ লাভ করিবেন। এই কার্যানী অভি
মহালারা, আমরা প্রত্যেক ব্রাহ্ম লাভাকেই
এডদর্শনে নিমন্ত্রণ করিতেচি; বোধ করি নীহার।
উপান্ধিত ইবেন স্কলেই আন্দিন ও উল্লভ
হারে গ্রহে প্রত্যাক্ষ্ম করিকে পারিবেন।

সম্পতি ফে্ডুজফ ইডিয়ানামক সংবাদপতে "जाक्षमभाक्ष" विषया जक्षी खन्डार जिथित दरा। 'लयन कोम्मल ख खादामि मर्नरम प्राप्त दश व লেখক মহাশয় একজন প্রশাস্তাতি ও উদার b-হিত্র বৃষ্টীয়ান ইইবেন। যদাপি আমাদিণের উ क्रिमा मक्क दहेख" खाद। हेटेल "बागरी উলिथिख প্রস্তাবের কোন কোন অংশ উদ্ধ ত বা অনুবাদিত করত প্রকাশ করিয়। পাঠকবর্গকে প্রীত করিতাম। মাহা ছউক প্রস্তাৰ লেখক বিগত আছিল মানীয় ভদ্ৰোধিনী পত্তিকায় একটী বিজ্ঞাপন অবলয়ন করিয়া গবণ্যেন্টের ধর্মবিবয়ক নির্পেক্ষভার শ্রুভি দোষাহোপ করিয়াচেন! বিজ্ঞাপনে লি-পিত আছে বে "Defence of Brahmeism and the Brahmo Somaj." शुक्तक स्मिन्नीशृद्ध अवर्ष-त्यने तिमानस्य व्याश्च १७३१ गरा। स्कल्पमम् है ধিয়া লেখক এই বিজ্ঞাপন ভাবলয়ন করিয়া ব<sub>ল</sub> ालग्राट्य**न व्य शदर्वस्मात्वेत्र भग्ने विषयक निद्यालक**ि नरद्व जांशारमञ्जू विमानिक जान्यभया अवसीत श्र-खक्ष विक्रीं क्रिकार । अवस्थित हे इंडेक र। कार्शक डिएड बलाइ इंडेक, मिनिश्रेय कियात्र ইন্যাপক্টাৰ নহালং নিদ্যালয়ের গুলান লিক্ষক महानंबरक लिणिशारक्षम य शेवर्गस्यकी मध्कांस বিদ্যালয়ে প্রাপুল্ডক বিক্রয় করা বিধি অসকভ

কার্যা হইয়াছে। আমরা সর্ক্রসাধারণকে অবগল করিতেছি নে নে বিজ্ঞাপন অমুসারে উলিখিজ দোষারোপ কৃত হুইয়াছে তাহা জনাত্মক, ভাহা আনাদিগের এক জন পূর্ব কর্মচারির অনবধানতা জনা নংঘটিত হইয়াছে।

## বিজ্ঞাপন।

আগানী ৬ই ভাত রবিবার প্রাভঃকালে ব্রক্ষনিষ্ঠ প্রীযুক্ত বিজয়রুঞ্ধ গোসানী ও প্রীযুক্ত অমলপ্রিসাদ চট্টোপাধায়, মহাশয়গণ ব্রাহ্ম সমাজের উপাচার্য্য পদে অভিয়িক্ত হই বেন। ব্রাহ্ম নহাশয়দিগের প্রতি নিবেদন উক্ত দিব্দ সমাজে উপস্থিত হইয়া আয়ার উন্নতি সাধন করেন ইতি।

> শ্রীপ্রভাপচন্দ্র সঞ্চল্য। সহকারী সংস্থানক।

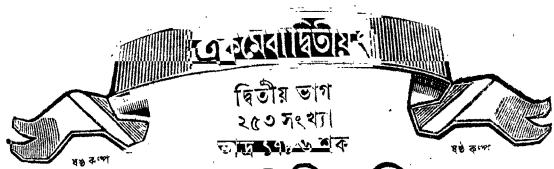
#### নিঘ'ণ্ট পত্ৰ।

	261
द्राक्षपटक्षंत्र साथान	82
ভার চিন্তা	£ 1,
मानाविकान	4 4
কে মগর ব্রাহ্মসমাজের বক্ত তা	७०
व्यक्तित वानगाकडा	W.
मश्रीम	ঠত
the state of the s	

### फब्दराधिनी পতिकात मुना निक्रप्र।

অগ্রিম মূলা (কলিকাডার জনা)	৩
( भकः वात्र क्या )	তদ্ধ ণ
गिक भूवा	10/0
<b>a</b> * 40	ولوا

্তিক্রী এই তন্ত্রেধিনী পরিকা কলিকাতা নগরে যোড়া-দানেক্রিড রাজসমাজের কার্যালয় হইতে প্রতি নাদে প্রকাশিত হয়। ১৭ই জাবণ রবিবার সম্ব ১৯২১ কলিগড়াক ১৯৬৫।



# তত্রবোধনীপ্রতিকা

इक्षतां कि कि मध्यतां शिष्ठां मध्य विक्षणां मध्य भिष्ठ मध्य मध्य । তাদের শিতং জ্ञानसमञ्जर सिष्ठ व्यव्य स्थित । इसराहिकी प्रश्न भव्यतां शिष्ठ मध्यां भव्यां भव्यां

# কলিকাতা ব্রান্ধ-সমাজের বক্তৃতা।

২ কাশ্বন ১৭৮৩ শক। বুধবার :

· उक्र उसक्र (मुझाट व ! ''

मेश्व मसुघाटक मकल कीव अटशका খেঠ করিয়া বিচিত্র কামনা ও বিচিত্র ভাবে পূর্ণ করিয়াছেন, এবং বাহিরেও ভত্পযোগী বিষয়-সকল স্থান করিরাছেন ৮ তাহার স্থা, তাহার জ্ঞান ধর্ম প্রীতি, চরিভার্থ कतिवात अना त्य त्य विषद्यत व्यद्तीकन, क्रेश्वत जांश मकनरे अंगरंड विस्तृष्ट कतिशा রাখিয়াছেন। **অন্তরে বাহিরে ঈশ**রের ক্-রুণার টিহ্ন প্রকটিত রহিয়াছে। আমারদের অস্তরে যত যত কামনা, বাহিরেও তত কা-মনার বিষয়; দেই কামা বিষয়-সকল উ-পভোগ করিয়া **সর্বস্থেদাভা**র **এতি ক্ত**-জ্ঞতা উচ্চুদিত হইয়া উঠে। মধুময় ধ-র্মাকে অবলম্বন করিয়া ভাঁহার এই উদার দদাত্রতে ভাঁহার প্রদন্ত বিষয়-মকল উপ-**जिंग कतिरन समित्रा शांदश निश्च हुई** नाँ।

''श्यांनि हाः अभागायां कार्यात्यां शत्रः मा।। নাধর্মে কুরুতে বৃদ্ধিং ন'চ পাপে প্রবর্ত। ' ''যে প্রশান্তাত্মা ধর্মকে নিতা আশ্রয় কবিয়া কার্যোপায়ে মদা তৎপর থাকেন, তিনি অধর্মের আলোচনাকরেন না এবং পাপে তেও প্রবৃত্ত হন না।" যিনি কাছারে। প্রতি অনায়িচরণ না কবিয়া, কাছারো অ-পকার না করিয়া, অনৃত বাক্য না কহিয়া, সকলেরই এতি সাধু বাবহার করিয়া, পি ভাষাতাকে উক্তি করিয়া, ঈশ্বরের প্রতি कुडक इन्हेंगो, कार्रगाशास उरशत थार्टकन ্রুত্ত 🖺 সম্পত্তি লাভ করেন; তিনি ধর্মকে तका करतान, वर्भ ३ छोहोटक तका करता-कीहोत मतीत भूके हत, यन गवन हत, জ্ঞান বীঘাবান্ হয়, প্ৰীতি নিৰ্মাণ হয়, আত্মা উন্নত হয়। কুদ্র বিষয় অজ্জ নের উপরে लग्ना कরিয়া ধর্মকে । হারা রক্ষা করিতে চান, তাঁহারদের বর্ম-দাধনের অভি होन लका। अटमांत्र भूतकांत कथरन। विषय নহে: ধর্মের পুরস্কার ঈশ্বর। অতএব এই হীন লক্ষ্য পরিত্যাগ করিয়া ঈশরকে লক্ষ্য কর; ঈশ্বরকে লাভ করিবার জন্য ধর্মকে সাধনু কর। বিষয় তেমেরি শেষ

গতিনছে। ভোমার শেষ গতি, ভোমার পরম গতি, সেই অনস্ত-মঙ্গল-স্বরূপ ঈশ্বর। ভাঁহাকে লাভ করিলে আর আর লাভকে লাভ জান হয় না, জাহার সহিত যুক্ত থা-কিলে ওর বিপদেও মন বিচলিত হয় না। "ব্রজনিটোগৃহত্বঃ স্যাৎ তত্ত্বজানপরায়ণঃ যদাৎ কৰ্ম প্ৰকুৰ্ম্বীত্ তদ্বন্ধি সমৰ্পয়েৎ।" ''গৃহত্ত ব্যক্তি ব্ৰহ্মনিষ্ঠ ও তত্ত্বজ্ঞান-প্রায়ণ হইবেন : যে কোন কর্মা করুন তাহা পরত্র-লেতে সমর্পণ করিবেন। " গৃহস্থ যে কোন কর্ম করিবেক, ভাষা এক্ষেতে সম-পं । कतिरवक, मकन धर्मकोगा स्थादत छ-দেশে করিবেক। ভত্তজান-পরায়ণ সভ্য-শ্রিয় ত্রন্দিউ ত্রাক্ষ স্বাণপর ২ইয়া বিষয়-স্থার উদ্দেশে বর্শা-কার্য্য করেন না। কিছ ঈশ্বরকে লাভ করিবাব নিমিত্তে ভাঁহার মঙ্গল-ভাবের অনুকরণ করিয়। নিদ্ধাম এী-তির সহিত অহরহ নিংস্থার্থ ধর্ম সাধন ক-द्या (य किंडू कर्मा करान, या किंडू क-र्गाकल लाज करत्न, जाश मकलरे मेथ-রেতে সমর্পণ করেন। জাঁহার হৃদয় মন খন প্রাণ সকলই তাঁহার জন্য, আপনার জন্য তিনি কিছুই রাখেন না। আপনার জন্য কেবল ঈশ্বর, আর ঈশ্বরের কার্য্য-মা-ধন জন্য এই সংগার-ক্ষেত্র। যে অন্ধারান্ বিবৃত-চকু ভট্য়া ঈশ্বরের এতি আপনার লক্ষ্য স্থির করেন, তিনি ধর্মের সাহায্যে স-ব্যাসলের মঙ্গল-মূর্তি দর্শন করেন, ভীহার প্রতি ঈশ্বরেতে উর্ন্নতি হয়, তাঁহার সকল অংমেদি, সকল স্পৃহা, সকল ভোগ উছি-তেই যায়। তথানো ধর্ম তাঁধার আশ্রয়, কিন্তু তথ্য বিষয়-স্থাংখন লোভে ধর্ম সাধন করেন না, তখন ভিনি ভাঁহার প্রিয় কার্য্য দাধন করিবার জন্য ধর্ম পথ আ**শ্র**য় **করেন।** 

হে অমৃত-নিকেতনের বাত্রী-সকল ! ভোনারদের লক্ষা ভির রাখিয়, অমৃতধানে व्यागत रुख। विश्वतिक लांच कतियात काना निःश्वार्थ धर्मा व्यवस्थन कतं। भाराका रु-रेसा विषय-स्थादक धर्मात भूतकात मन्न क-तिख ना। धन मन्म कि कमाणि धर्मात भूत-कांत नरर—मञ्चल कीवन शिक्षणम कित्रश तांगि तांगि धन मध्यम कितरण, जांश मूट्-र्खित मर्था हिला यारित। धर्मात भूत-कांत क्वल विश्वत, जिन्हे क्वल क्ष्मारक भूत कितर् शांदत।

হে পরমাজন্। তুমি সহার না হইলে তোমার পথে অএসর হইতে পারি না।
তুমি আমারদের সহায় হও, তুমি আমারদের ধর্মকে পোষণ কর, সংসারের মোহ-কোলাহল হইতে মুক্ত করিয়া তোমার কোড়েল ইয়া আমারদিগকে শীতল কর।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং

## উপাসনা!

महिल मनुस्यात (य मध्य আছে—'' দেই আশ্র আশ্রিত সময় ''— নেই প্রভু ভৃত্য সম্বন্ধ—সেই পিত। পুত্র স-यक्य--- (महे मप्तक कान्टकरे शक् ७ वर्षा वनः যায়। পরমেশ্বর ঈদুশ আশ্রুয় রূপে **এই জ্ঞানাবোককে मञ्**रयात क्रमप्त-मरधा নিহিত করিয়া দিয়াছেন যে বয়োরুদ্ধি সহ-কারে তাহা উক্ষ্যুলিত ও প্রকাশিত হই-বেই হইবে। ঈশ্বর-জ্ঞান কেমন স্বাভা-বিক, যেমন বাছ জগতের অন্তিত্ব জ্ঞান। বাছ জগৎ আছে কি না এ বিষয়ে যেমন কোন জাতীয় মন্ত্র্বাকেই সন্দিহান দৃষ্ট हरा मां, रगहे क्या जिस्ता आहिहन कि ना अ-বিষয়েও মনুষ্য জাতির কোন অংশ মধ্যেই অবিশ্বাস দৃষ্ট হয় না,ছেৱে মালসিক উৎকৰ্ষণ অভাবে সে বিশ্বাস ভিন্ন ভিন্ন জুবস্থাপন হইতে পারে এই মাত্র। স্বাহ্নএব ধর্ম মন্ত্রহার

স্বাভাবিক ভাব ও সাধারণ সক্ষাতি। এই যে স্বভাব-নিহিত ধর্ম,ইহার পরিচয় কো-থায়? উপাসনাই ইছার পরিচয়। পৃথিবীর এक नीमा इरेट्ड मीमांखत भर्याख या या দেশ, যত নৃত্য নৃত্য মনুষ্য জাতি স্নাবিষ্ হইয়াছে, তাহার মধ্যে অদ্যাব্ধি কোন স্থান ও কোন জাতিই এৰপ দৃষ্ট হয় নাই যথায় याहामिटशत मत्या धर्माख्यादमत मण्यूर्ग विद्रह এবং ঈশ্বর উপাদনা প্রচলিত নছে। ছন্তর खग्नावर, मानव-वटक (य छे भन्नी भ, या राज्य व পোতের অগম্য, বথায় গমন করিতে দ-হিফু সাহসিক পরিব্রাজকের হৃদয়ও ভয়ে কম্পিত হয়, সেখানে নিবিড় অরণ্য নি-वांगी वना পशु मनृग मनुरयातां अ मिनां एख একবার ঈশ্বরের নামোচ্চারণ করিয়া থাকে, এবং অপরিস্ফুট ভাষায় তাঁহার নিকট আপনাদিগের দরল ক্তজ্ঞতা ও সরল প্রা-র্থনা নিবেদন করিয়া থাকে। উপাদনাই भटकात महजु छेशामनाहे भटकात कीवन। যাঁহার সহিত সময় জ্ঞানে ধর্মের উৎপত্তি হয়, ঠাহার সহিত সন্মিলনকেই উপাদনা এই সন্মিলনে সেই সম্বন্ধ উজ্জুল জীবস্ত ও মধুময় হয়; ইহার বিরহে তাহা মলিন, হীন-বল, মৃতবৎ ও রস-খুনা হইয়া পড়ে। সমিলন না इहेटन সহস্ত নিশ্ফল। যদি কেহ আঞ্চম পরকর্ত্ত্বি দূর দেশে নীত হইয়া চির কাল পিতা মাতার মুখ না দেখিতে পায়, এবং ক্রমাগত অন্যের ছারা লালিত পালিত হয়, ভাছা হইলে পিতা মা-তার সহিত সক্ষম অবগত হইয়াও মে তাঁ-शिमिशतक व्याधि कृतिएक ममर्थ एवं मा धवर ভাঁহাদিগকে অবশাদের আকাত্রাগ নিশ্চ-রই পরের প্রতি সমর্পণ করে। সেই ৰূপ পরম পিতা পরম মাতার সাহত ক্ষমপুর সমস্ত কেবল ভাৰণত হইলা যদি ভামরা ভোন কালে তাঁহার সহিত স্থিনিত হইতে সা

পারিতাম,তাঁহার সহখাস-স্থানা জানিতাম, উপাসনা না করিতাম, ভবে নিশ্চয়ই ভাঁ-शांक विष्युष्ठ इहेन्न। ऋथ-मदन्त्राव-मान्नक সংসারের প্রতি, অনিতা বন্ধু বাধাব ধন -মানের এতি নিতান্ত অনুরক্ত হইয়া পড়ি-তাম, এবং বিষম অধর্মে নিম্ম হইতাম। অভএব ঈশ্বরের সহিত সম্বন্ধ নিবন্ধ করা যদি ধর্মা হয়, আর এই সম্বন্ধা হইতে বিচ্ছিল इहेश मश्मादत अञ्चतक इउस यनि व्यक्ती হয়, তবে উপাসনা ব্যতীত কথনই ধর্ম স-खन नटह। कठिन-इनम क्रम कुडोर्किटकद्र। ঈশ্বর-বিবর্জিত হইয়া উপাসনার অযৌক্তি-কতা ও ধর্মের অনাবশ্যকতা कहिट्ड हाट्ड क्क़्ब, किन्छ आमामिरधत বিশ্বাস অন্য প্রকার। ঈশ্বর আমাদিগের যাহার দারা তাঁহার সহিত পিতা মাতা। আমাদিগের এই পবিত্র সম্বন্ধ জানিতে ও পালন করিতে পারি তাহার নাম ধর্ম, অতএব ধর্মে আমাদিগের স্বাভাবিক সত্ত ও তাহ। আমাদের চিরস্তন সম্পত্তি। উপাসনা षांता (महे मद्यक्षः, (महे धर्म छेड्यू व इत्, क्रेश्व-রের সহিত আমরা সন্মিলিত হইতে পারি, তাঁহার দৌন্দর্য্য তাঁহার মহন্তাব উপলব্ধি ক-রিভে পারি, আ্মাদিগের ইহু লোকের ও পর লোকের পথ পরিষ্কারহয় অতএব উপাসনা ধর্মের জীবন ও মন্তুব্যের মহত্ত্ব; তাহা অং মাদিগের অতি প্রিয়ত**ম ও মঙ্গল**তম কার্য্য।

উপাদনা দিপ্রকার, ভাব বাচক ও শভাব বাচক। পরম পিতার বিচিত্র বিশ্ব-কৌশল দর্শন করিয়া এবং মনুযোর প্রতি ভাঁহার অলৌকিক অসদৃশ করুণা হ্ন-দয়ক্ষম করিয়া মনে যে প্রীতি ভক্তি কুত-ক্রতাদি ভাবের উদর হয়, দেই সমুদায় ভাব ভাঁহার নিকট ব্যক্ত করার নাম ভাব বাচক উপাদনা এবং আ্থার মলিক্তা, বিষাদ ও পাপাদি অভাব অনুভব করিয়া তুর্গতি প- রিচ্রণের নিমিত্ত তাঁহার প্রদাদ প্রার্থনা করার নাম অভাববাচক উপাদনা।

প্রথমোক্ত প্রকার উপাদনা দ্বারা পর-মেশ্বরের মহিমা-স্তুচক ভাব সমস্ত ব্যক্ত হয়; দিজীয় প্রকার উপাসনা মারা আত্মার গভীর অভাব সকল মুক্ত হয়। প্রথমোক্ত প্রকার উপাদনায় আনন্দ উল্লাদ প্রভৃতি বিবিধ হাল্য-প্রাফাটিত কুস্তম-রাজি ভাঁহার চরণে প্রদত্ত হয়: দিতীয় প্রকার উপাদনায় কভিরত। অনুতাপ বিধাদ এবং অঞ্জল উপহারে জাঁহার পিতৃ-মাহায্য লব্ধ হয় এবং হৃদয়ের অভাব অপবিত্রতা প্রকালিত হয়। পারস্ক বিচার-দৌকর্যাংকে উপাদনাকে ছুই ভাগে বিভক্ত করা গেল বলিয়া কি বাক্ বিকই ভাহাবিভিন্ন ই ইশ্বরের প্রতি ভক্তি শ্রহ্মা ঐতি করিব অথচ ভাঁহার নিকট আ হার অভাব ভাপক কোন প্রকার প্রার্থন। कदित मा देश कि भग्नत ; मा (करल छीहात নিকট নিয়ত প্রার্থনা করিব কিন্তু ভাঁচার মহিমাদি বৰ্না 🗤 ভাঁহাল একি শ্ৰন্ধা ভক্তি व्यकाम क्रिन म। रेहाई मसुन १ ७इ व्यन किन्छामः भारताहे हेहात जानशंक छ। अधीय মান হইতেছে। ঈশ্বরের নিক্ট প্রার্থনা করিব অথচ ভাঁঃকে শ্রদ্ধা ভক্তি প্রীতি किंदित सा, केटा वनी स्वयम व्यमञ्जद १८ व्यस्यो-ফিক, ঈশরের শতি প্রীতি ক্রভক্তত। প্রকাশ করিব, অথচ উছোর নিক্ট মনের পাপ ও বিষাদ প্রকাশ করিব না, আপনার সহস্র অভাব মোচনার্থে তাঁহার সাহায়া ভাঁহার ा हु अमान आर्थन। कतिव ना हेश वनां ह বেমনি অবেটিকেক। কিন্তু মৃত্যুন্ত চুংথের विषय अहे भ ज्माविधि किह किह विलक्ष কৃত্ৰিদা এবং স্থিৱেচক **হ্ইয়াও সামান্য** রন্ধি পরিহার পূর্বক **ঈদৃশ অসঃন্ধ অর্থ**-दीन कलांश राका दलिया थाटकन । क्रशकी उत्त शहरमधारत छान ७ महिमात हिस्

দেশ, অসংখ্য জীবের প্রতি তাঁহার অনন্ত করণার পরিচয় আহণ কর, আয়ার রতি ও রচনা কৌশল হৃদয়ঙ্গম কর এবং তাঁহার অসীম ছরবগায় সত্ত্বতে নিবিফ হইরা তাঁহার মুরিনা কীর্ত্তন কর, তাঁহার আরাধনা কর, করিও না, প্রার্থনা করিলে তাঁহার অবমাননা করা হয়, তাঁহার নিয়ম ভঙ্গ করা হয়, তাঁহার সবস্তহার প্রতি দোঘারোপ করা হয়। এপ্রকার নীরস যুক্তি কত দূর ন্যায়সঙ্গত তাহা আমাদিগকে বিবেচনা করিতে হইবে।

প্রার্থনার বিপরীতে সব্বদ। খাল কিছ ক্ষিত হইয়া থাকে ভাষা তিন্টা প্রধান আপত্তিতে পরিণত হইতে পাবে। : শ. ই-শ্ব আমাদিগের সকল অভাব জানিতেছেন। यनि जामानिरात मञ्चरतत कना कि छु जात শ্যক হয় তবে তিনি অবশাই তাহা বিধান कतिर्दम, मञ्जा छोहात अमग्र क्यारनत ७ ध्यनम् ककृषात्र (माय न्न्नार्गः। घर धन धः र्थमा भारत्यक महरू। २४, क्रियदाद ए-টির সকল নিয়ুমই চিরস্থায়ী ও অপরিকর্তন শীল। জীবদিগের জীবন ও স্থথের জন্য याह। किंछु आरम्राज्य एवं मकन हे अहे ममू দর নিরমের বশবর্তী ও অনুকূল। প্রার্থনা ছারা যে সেই নিয়ম পরিবর্ত্তি হইবে ইহা প্রত্যাশা করা মূর্গত। মাত্র। প্রার্থনা করি-লেও যাহা হটবে, না করিলেও ,ডাহাই হ্ইবে। তবে প্রার্থনা নিতান্ত নিক্ষণ স-ন্দেহ নাই। ৩য়, প্রার্থনা করিয়া আমর: যে উন্নতি লাভ করিয়াছি মনে করি, তাহা আমাদিগের কম্পনা মাত্র। আপনাদিগের দাধু চেফী ও সাধু কামনা জনিত যে সময় পবিত্র ভাব হৃদয় মধ্যে উপিচ হয়, তাহা-একটা মনঃক্পিত এীভি-স্থতে **मिगटक** আৰদ্ধ করিয়া উপাদনা কালীন আ-

প্রতিষ্ঠিত করি। এবং বন্ধ ক্ষকারে নেই মুনস্তা ভাবকে সাম্প্রিক করিনত ক্ষ রিল প্রক করি বুকি ইম্বের নিকট প্রার্থনা করিছাত বলিয়া আমাধায়া এই প্রকা সাধু কর্মি সম্পন্ন হইল। অভ্যাব আর্থনা করা নিভাপ্ত ভ্রম; তৎপরিবর্জে জগতের হিতকর কার্যের অসুষ্ঠানে নিযুক্ত হওয়া ভাল।

এই ত্রিবিধ কারণ ছারা কেই কেই স্ক-খবের নিকট আর্থনা কার্য্যের অনাবশ্যকভা. নিক্ষরতা ও অধ্যোক্তিকত। প্রতিপন্ন করিতে ट्रिकी कतियां शाटकम। ' शृटखं हे खेळ हहे-द्राष्ट्र य উপাদন। मण्युर्व ब्राप्ट मयुरवात পক্ষে স্বাভাবিক, কিন্তু উপাদনার সহিত गत्रका विष्क्रित्र कतिशा मिथिएन धर्मार्थनाटक সম্পূৰ্ণ কপে স্বাভীবিক বলিয়া বোধ হয়। কোন বস্তু আবশাক হইলেই আমরা লো-কের নিকট প্রার্থনা করিয়া খাকি, এবং প্রার্থিত বস্তুর মর্যাদা ভেদে অপুস বা অ-পিক সময় প্রার্থনা কার্যো ক্ষেপণ করি। যদি উক্ত বস্তু নিতান্ত আবশ্যক ও স্পৃত্নীয় হয় তবে বার্থার হতাখাস এবং নিখ্নল হইয়া তথাপিও তাহার নিমিত্ত প্রার্থনা করিতে কান্ত ই না। বান্তবিক এৰপ ব্যবহার मण्यानं कर्ण आमामिरगद्र च जावनिक। कि भटमात बना कि माश्मातिक व्यक्तातत कना शटकाक मसूचादक किन नमदा नै। कान मनदेश व्यक्ति कतिए है इटेटर। विनि अकार्य देश इंहेट नेताब न रटवन, जिक्टिकान ना टकान खकाटत चीत्र व अविक विक्रण क्षित्री क्लिसिट्स। त्व वंगिक समाचारत जीन करनवन स बम्ब ररेश किया नवा यह पृष्टि क्या मार्थ रञ राज राक्षक स्रेजाटस, मक्ष्य रम साज पर्ववस्त्रिक के क्लाक्क कर्नाक्ष्य हमा वि THE WATER WATER STORY

मञ्ज्ञीत उट्टा, गकन अस्य याश्रत अटक অক্তাকর হইরাছে সে বার্যাব অক্রপুণ वाष्ट्रक हिक्श्मटकंत्र निक्छ मान्त्रि आर्थना क्तिटङ अवस्थि इंडर ? क्रेम्न व्यवकार जनः विविध अमान्त व्यवस्थि यपि व्यार्थन। मञ्च-र्यात भटक आधारिक इहेन, उटन कि क বল ভাহ খিন্দ্ৰ সৰজো অস্বাভাবিক ? পাপ বশবর্জা হতভাগ্য ব্যক্তি কি ঈশ্বর প্রসাদে ধর্ম স্পৃহ হইয়া চির দিন অনুতাপিত হৃদয়ের অস্থারি হৃদ্যেই বিলীন করিবে ১ তা-হার বিষম শোক ভুকার যে শাস্তি বারি প্রা-র্থনা তাহা কি কেবল মুর্গতা ও অরণা-রোদন माळ ? रम तमहीन এवः क्षार्क रम मनुस्यात बिक्षे व्यार्थमा कतिहा चांशतीय वज्र ना न করত তুপ্ত হইতেছে; গে শুদ্ধ কঠ ভ্রন্থ র म दिन्छो ७ व्यर्थना महकाद्व द्वादिकत इन য়কে দয়াত্র করত জাল ধারা ভূফা নিবারণ করিতেছে; রোগী প্রার্থনা দারা স্বাস্থ্য লাভ করিতেছে, হা। কেবল অন্থে পাপীই कि পরমেশ্বরের রাজ্যে उक् विहीन, महास-বিহীন থাকিবে: ভাহার প্রার্থনা বাক্যে কি মনুষ্য কর্ণপাত করিবে না; অসীম বাঁছার करून। मिहे स्त्रहर्म भत्रस्थत अविविक् তাহাকে এক মৃক্টি ভিক্ষা দান করিবেন না ? ভাঁহার মনের অভাব ননের জেশ কি সে चर्चात विकारक मरमटङ्के निहिन्न कति हत् ? धमन कथन इट्टेंड भौति मा। नतः धानाः रातीं छ्कंन कटनवंद्र मतिराज्य मक्तां व स्वत বারদার আবন করা যায়, বরং ক্র্টচেত্ত মলিন-মূর্ত্তি ভ্যগাহুর ব্যক্তির হাহাকার গনি व्यंत्र कता यात्र, वतः श्लाष्टिक्माविभक्ते বিক্তকার মুষ্ধ রোগীর অক্রপুর্ণ তাপোজি কর্ণ গোচর করা যার, কিন্তু ইশার বিশ্বহিত, भोनियुक, त्माक-मीर्ग भाभीत दियाहिक বৰ্ম ও অনুভাপাত্ৰ দেখিলৈ জ্বয় বে। नम कितिहा छ। ठे। यत्रक सबस शहर

পিতা কি তাহার স্থভাব নিংক্ত প্রার্থনায়-ব্যির হইবেন, ও প্রতি দিন তাহাকে তাহার ঘার হইতে দূরীকৃত করিবেন ? হৈ দরল হাদয় মনুষ্য ভূমিই ইহার বিচার কর।

কিন্তু প্রার্থনা স্বাভাবিক হইন ভাহাতে
কি ? যুক্তি পর তত্র ভাকিকের। বলেন যে
ভোমার ভাব-পূর্ণ ভাষার মর্মা গ্রহণ করিতে
গারিলাম না। প্রার্থনা যদি আবশাক না
হয়, তাহা যদি সমাক্ রূপে নিম্ফল যুক্তি
বিরুদ্ধ, কণ্পনা মাত্র হয় তবে ভাহা স্থাভাবিক হইন ভাহাতে কি ? পূর্বে প্রার্থনার
আবশাকভা প্রমাণ কর।

ভাল, ঈপর আমাদিগের সমস্ত অভাব জানিতেছেন এবং সেই অভাবের উপযোগী সকল বস্তু বিধান করিভেছেন; কেবল বিধান করিতেছেন এমত নহে কিন্তু যাহাতে প্রদত্ত বস্তুর ছারা আমাদিগের সমাক্ মঞ্লের উৎ-পাত হয় তাহারও অভ্যন্তউপায় অবলয়ন করিতেতের। ইয়ত ভাষবশতঃ আমরা সময়ে সময়ে এমন কভ আছাব বোধ করি. कछ विषयात क्षता थार्थनः कतिसः भाकि, যাহা আমাদিগের প্রফে ভরানক অমঞ্জল-তিনি এবস্প্রকার অভাব ও এবস্থা-কার প্রার্থনা অপ্রাহ্য করেন, এবং ভারাই রিখান করেন ঘালা পরিণামে আমাদি**গের** সর্বাধিক মঙ্গলদায়ক হইবে। তবেকেবল মসুষোর অভাব অবগত হইয়া তাকা মোচন ক্রাই ঈশ্বরের উদ্দেশ্য নচে, কিন্তু তাহার গৰাক্ মঙ্গদের জন্য উপযুক্ত অভাব মোচন করাই ভাঁহার উদ্দেশ্য। একবে আনাদিশের पिथिएक एहेर है वि किएमें क्रियों किए में ভাবের জনা উহোর নিকট পার্যাদিরের প্রা-र्थना करी छिष्ठि। जो महा धन बादनद्व कना डै। रात्र निक्र वार्थमा कति मी जिम्हा मारमातिक विश्व विशेष शहे एउ उद्यात स्रो रात्र जनाव डीशंत निका श्रीका कति है।

अगरण विशेष गराब काराब अगर कार्य थि जीवता गण्य न बद्द विषय कि स्रोत **७९ मधुनाङ्ग (मन् क्यु कि कि कावना (मटवर) कार्यक्र** रत कथनरे निट्यम मा किन्द्र आहा निट्या रंग मनल स्टर्मत अभाव अविविश्वह देशांत নিকট প্রার্থনা করিয়া থাকি। প্রত্যুক্তিত हरेबा**टक एर केपन এकक**टन मसूरकात শভাব সকল মুক্ত করেন যখার। ভারার मर्स्याःकृषे अञ्चल मः चिक इहेता था एक। অতএৰ বিচার করিতে হইবে যে যে ধর্ম-ভাবের জনা আমরা তাঁহার নিকট প্রার্থনা করি, তাহা প্রাথনা ব্যক্তীত পরিতৃগু হইলে मनुर्यात अधिक मल्ला इस, कि धारीना मर মুক্ত হইয়া মুক্ত হইলে ভাহার অধিক নশ্বল সংসাধিত হয়। ইহা একটা সাধারণ সভ্য रय यपि कोन वज्र धार्थना नाडीज लक्ष इध, তবে তাহা কুভজত। বাতীত গৃহীত হয়। যে রাজভনয় জন্মাবধি সাংসারিক কোন প্র-কার অভাব অমুভব করে নাই, চিরকাল সম্পত্তি ও সচ্চলতার ক্রোড়ে ক্রীড়া করিয়া আসিতেছে, সে ধনি আবশাক কালে উ-পযুক্ত গাছের বা উপযুক্ত আহার প্রাপ্ত হয় তাহা ফটলে সে স্বীয় অনুদান্তা পিতা মাতার প্রতি কিছুমাত্র রুভদ্রহার কি শ্রীডির আধিকা অনুভব করে না, বরং ইচ্ছামত দ্রবা না পাইলে জাঁহাদিলের क्षिक दिलकन असे हरेशा उठि 🏋 किन्छ যদি কোন চুংখী সন্তান চির্দিন অঞ্চলতের व्यक्तात्व वह कके भारता भारतात्व श्रीप्र পিতার পরিশ্রম-লক্ষ্ম হইতে কিঞ্ছি স-क्वठा भा । करत छट्ट स्मर निकास তাহার কুভজভা ও প্রীতি কেমন উল্লেখ रहेट बाद्य । दन विजयी बहुनव निविद्या यखना अकरात विभाव का अने आविष्टा PISTA BALLA MANAGE CANA TAN WA-विधि करते । की निर्माण निर्माण

SECTION MINISTERS WINES MEDIA WEST ट्याच्य कविटाब्स, केलाव विक्रिक दर्कास अ-जारदर जना वार्थना कहिएक स स्केंड: क्षेत्रमध्यातम । श्रीव्याक जिल्हात मार्ग यनि ধৰ্মতাৰ পূৰ্ব হওয়া স্বভাবসিদ্ধ হইভ ভাহা •हरेल कि धर्मनार्ज्य जामून मर्गाना छ আদর থাকিও, না তল্লাভ জনিত উপযুক্ত ভক্তি প্রদা কৃতজ্ঞতা আমাদিগের দূবিত अनास ममुर्थिक इहेठ ? छोड़। इहेटन कि व्यामता : त्लम-महिस्यू हुःथी मखात्मत नाति অমুলা ধর্মরত্ব লাভের জনা পরন পিতার নিকট চিরক্তজ্ঞ ও চিরামুগত ভৃত্য হইয়া থাকিতাম, না সমাদৃত উদ্ধত-স্নভাব রাজ-তনয়ের ন্যায় তাঁহার অপার করণাকে কর-ণাজ্ঞান না করিয়া অক্তপুণা, ক্তম ও পা-পাচারী হইতান ? ইতাতে কি আমাদিগের সব্যাধিক মঙ্গল ও উম্বতির উৎপত্তি ইইত ? এकारन आमता वह क्रांस, वह शतिकारम, বহু প্রার্থনার হারা যাহা কিছু লাভ করি-ভেছি ভাষতে কুতার্থ ইইভেছি। তই ধৰ্মের অভাব নিগ্ডুতরকপে অনু-ভব করি, সেই অভাব পূর্ণ করিখার জন্য যতই কঠোরতর পরিজান করিয়া থাকি, আ-পনার চেক্টাকে বিফল ও নিরর্থক দেখিয়া यर्ड विश्वामुपूर्व झन्दन्न मेश्वदन्न निक्षे व्यार्थना कर्ति, जनर महे व्यार्थनात्र माकार कार्यका रक्टे यामानिटनंद नाधुतरकण्य निक्र ते, जर्जे जामानित्त्रत्र सम्द्रा धर्मात टर्गावर ७ मध्रतका प्रामुख्य हरा, धर्म-दल नक हर, ने बदरद अधि इच्छारी क विचान गरवा, बीहि करका। त्य विश्वतात क्रमा यह द्वारी कति तरे विक माच क्रीका कर बीट तुरंत, कर लांका भागत हरेत्र, ध्वर गा-THE PORTON CO PROPERTY OF FARE FOR THE PART SINGLE NAME OF THE

করি তবে ধর্ম আমাদিগের নিকট অতিশর করি তবে ধর্ম আমাদিগের নিকট অতিশর করি তবে ধর্ম আমাদিগের নিকট অতিশর ক্রির নার্রানো তাহা লক্ত হয় তবে তাঁহার অতি প্রতি ও প্রকা উপিত হইবে। এ-ক্ষণে হে সরল হাণয় মনুযা বিবেচনা কর প্রার্থনা আক্ষাক কি না। যদি ধর্মেতে প্রিতভাতে, ঈশ্বরের প্রতি প্রতি প্রকাও ক্তভাতাতে আবশাক থাকে, তবে প্রার্থনা-তেও আবশাক আছে, যদি সেই সমস্ত অ-নাবশাক হয়, তবে প্রার্থনাও খনাবশাক।

কিন্ত যুক্তি প্রিয় তার্কিক মহাশয় ইহা-তেও নিরস্ত নাইইয়া শিজ্ঞানা করেন যে বলি প্রার্থনা পরদেশ্বর প্রতিষ্ঠিত নিয়মাবলীর বি-রোষী হইল তবে তাহা কি প্রকারে কলবান্ হইতে পারে? যখন নমুদ্র মধ্যে তোমার ত-রণী জলমগ্র ইয়াছে তখন কি প্রার্থনা ছারঃ তুমি জীবন লাভ করিতে পার, নায়দি রাজ্রি তোমাকে আক্রমণ করে তবে প্রার্থনা ছারা তাহার কবল হইতে নিফ্তি পাও? কদাত নহে। যাহা অপরিব্রনশীল ঈশ্বরের নিয়-দের অদক্ষত তাহা তোমার প্রার্থনা ছারা কি

কিন্ত তার্কিক মহাশয় আমাদিলের প্রাথনার উদ্দেশ্য বিচার করিতেছেন না। তা

মার উন্নতির জন্য প্রার্থনা যে প্রমেশ্বরের
নিরম বিরুদ্ধ তাহা কি কপে নিশ্চিত হইলঃ
যে প্রার্থনা শারীরিক ও বাহ্নিক অভাব
নোচনার্থে কড় বিশের প্রচলিত প্রথাকে
বিপর্যান্ত করিতে চালে; যে প্রার্থনা জনদীশবের জগৎ সম্প্রীয়,গৃড় তুজেয় কাশ্বী
বাহ্নিক অভাবে অন্থির চিত্ত হইরা তাঁহার
অগরিবর্তনশীল পরিশুদ্ধ শুভাবকে স্থীয়
অগরিবর্তনশীল পরিশুদ্ধ শুভাবকে স্থীয়
অথপরভায় নীয়নান করিতে চাহে, তাহা

ক্রেয়ান্ত বিশ্বনা সন্দেহ নাই। জল-

मध रहेबाई ममझ ब्रह्म अंदार्थ की जिल्ला मानव कूटल उभनीत इरेबाई जना विश्वतद प्यक्रद्रशंव कटतम मा, खंबर अंद्रशंतक हिर अन জন্ত কবলে নিপতিত হইয়াও তিনি ঈশ্বর महरन हेरांत मुका कामना करतन नी, किन्ह गकल श्रकांत मारमातिक व्यवस्थात्र, कीवटन जवर मृबुद्ध नित्रप्रका शक्ति अकंपरे हिटल তিনি নিয়ত ভাঁহারি মঙ্গল সংকল্প সিদ্ধির का आर्थनां करतन। जित्रतित याहा देखा তাহাই ভাঁহার প্রার্থন ; সে ইচ্ছায় যদি মৃত্যু হয় ভাষাও তাই।র শিরোধার্যা, মে ইচ্ছায় যদি জীবন সংরক্ষিত হয় তাহাও ষ্টাহার শিরোধার্য। কিন্তু আত্মার উন-ভির জনা প্রার্থনা অনা একার। আত্মার উন্নতি এবং ধর্ম লাভ যে ঈশ্বরের অভিল-ঘিত তাহার আর কোন সন্দেহ নাই। তাঁ-হার প্রেরিত ও প্রতিৰূপ মনুণ্য ই দয়স্থিত (य भग्र तुष्कि जांहाई हेहांत माका निटल्ट । পরন্ত এই উন্তি এই ধর্ম লাভ কিবলে হুখতে পারে? ধর্মের জন্য একটী গঢ় আন্তরিক ভাব বোগ হওয়াই ধর্মের মূল। যাহার ধর্মের ভাভাব বোধ হয় নাই সে কথনই ধার্মিক হইতে পারেনা, যে ব্যক্তি আপ্রার পাপ মালনতাতেই সম্ভাইচিত্তে जदन्हिक करत. जेश्वरत्त्र कमा ग्राहात इन्छ वसकुनिष्ठ इस नाहे, मि धर्म नहेशा कि শরিবে, ঈশ্বর: लहेश कि করিবে? धर्मी কি বন্ধ সমার কি বন্ধ যে ভাষার পরিচয় ায় নাই ঈশার ভোষাকে দশন শেন না, কারণ ভাঁহার প্রতি ভাহার কিছু মাত্র আকর भार यमि त्म व्यमाद्यादम जिल्लाक व्याख रहा তৰে অন্যাদে তাহাকে পরিত্যাক্ত করিবে। गार आर्थना कति जीशे था थ रहे, देशहे a कगट छेलीक रनत निवस किमानीत शि उठ भन चारक बरन कानि करत साम सरनक তন্য কেন চেডা করিব, মেন পরের শীর্ষ

elec: all mans an arter calance यवा अंदर रहि क्या पात्राव अवर क्रामान পরিবারের জীবন সক্ষীপর ইইয়া উঠিতে रेश निक्य सर्वक योकि छ। इंडरबर्ड पामि पर्वत राजे। स्वी, क्रीहा वहरू ह আমি সমুদ্য শরীর মন ক্ষা করিয়া ভাষার জন্য পরিশ্রম করি, লজ্ঞা ভয় ভয়ার করিয়া भर्य भर्य चारत चारत जिका कतिए क-ঠিত হই না। कें मून कार दात्र धन ना छ করিলেই আমার কার্য্যে আইনে, আমার উপকার হয়, ঈদৃশ अवश्वाय मसूबादक धर्म मांन क्रिटल हे व्यामामिटशंद्र भूगा ह्य । श्रति অম ও প্রার্থনা উপাক্ষানের নিয়ম, অভাব উপাক্ত নের ভূমি। ইহাই এই পৃথিবীয় অগওনীর বাবস্থা। যদি ধর্মোপাজ্জন ক-রিতে অভিনাষ থাকে, তাহার জন্য যদি নিভান্ত দীন হীন হইয়া থাক, তবে চেটা ও পরিশ্রম করিতে হইবে, এবং সেই স্থানে ভাঁহার নিকট প্রার্থনা করিতে হইবে যে ভানে, যাঁহার নিকট ভাহ। প্রাপ্ত হওয়া যার। চেক্টানা করিয়া, প্রার্থনা না করিয়া উপাক্তন করা ছংখী লোকদিগের পক্তে অসম্ভব, তাহা পুথিবীতে অবৈধ, ঈশ্বরের নিয়ম বিরুদ্ধ, কুতাপি কোন বিষয় ভাহার मुक्तील मुक्ते इस ना। यादामित्मत धर्मीत অভাব নাই, প্রয়োজন নাই, ভাছারাই প্রা-র্থনা না করিয়া তাহার অযৌত্তিকভা অনু-সন্ধান করে,কিন্তু ভাহার অভাবে যে নিভাঠ मीन हीन महिल समान हहेब्रोटह, **महिल**े ভারে তাহার জন্য ভিক্ষা পর্যান্ত করিতে यारात मत्कार ना र्यः भारे नियदात नि कटि धर्म-िका आश्च इम्र जदः मिने একার আত্মাতী যুক্তিভকে বিধিয় হইরা मिक्क दम कीवटनत्र मार्चक्की 'महत्वान 'कर्डा' चक्कर व्यार्थमाः कोई। है करवव मिश्रक रि i are, Venille se est l'arie

मा केतिका केतित मित्रम क्रण कर्म हरा

आर्थना विवयक जुजीय आंशिव अहे दत रेहा (करत मटनत कण्णना । हेहा चात्रा বে উন্নতি হয় তাহা অকৃত উন্নতি নছে, কোরল মসুযোর মনের ভবিমাত। সমুদ্যার স্বীয় চেটা ছার। যে পবিত্রতা লবা হয় সে ভাছাকে থাৰ্থনা জনিত পৰিত্ৰতা মনে করে। অতএব এই ভ্ৰমাখক প্ৰাৰ্থনার ভাব যত শীঘ্ৰ মনুষাদিলের মধা হইতে নিরাক্ত হয় তত্তই মঙ্গ। উলিখিত প্রকার আপত্তি তাঁহাদিনের ছারাই কৃত হয় যাঁহারা নিজে প্রার্থন। কার্য্যের অনুষ্ঠান না করিয়া কেবল ভাহার অযৌক্তিকতা প্রতিপন্ন করিকে ক্ল-**उगःकण्ण इहेग्नाइन। व्यर्थना काहा**क বলে, ভাহার কি ফলাফল ভাহা ভাঁহারা জ্ঞাত নফেন, হইতে ইচ্ছাও করেন না, কেবল कैं। इंटिन्द "(वांध इस") हेहा मन्भ नंबट भ म-কলের পক্ষে অকার্যা-কর, অন্তএর তাঁহারা কোন প্রকারেই তাহার যুক্তিযুক্তা উপ-লবি করিতে সমর্থ হয়েন না। ক্রিন্ত এত-দবস্থায় তাঁহাদিগের প্রতি বক্তব্য এই যে আর্থনা কার্যোর প্রতি দোষারোপ করিবার পুর্বের ভাষা একবার পরীক্ষা করিয়া দেখুন, শক্ত প্রার্থনার যাহ। যাহা নিয়ম ভাহা পা-तम क्रम्म, उरमार्खु उ यनि थार्थमात्र कतात्क ভাষাদের কম্পনা মাত্র বোধ হয় ভবে খেন ভাষারা ইয়ার অপবাদ রটনা করিতে প্রবৃত্ত स्ट्यम, मञ्चा डीस्मिटलेड आशि थाहा र-रेटि शादि ना। कथिर चाट्य कक्न मिड कमान वाकि कान वस् कईक किछानिङ महेत्राहिम त्य त्लाहिङ वर्ग किवाभ ? त्य क्षित्रां काल दिनार मा कतिया वितन त्य ता-विषेत्र मानि जिल्हा स्थानः ज्यानात् ''दराय रक है। बोब बिक नाह याँ स्वाच स्थाप रमार्थः व्यापानिकासीयस्य प्रेक्टिस्स

ৰূপ। তাঁছাদিনের 'বোধ হয়' প্রার্থনা কণ্পন। মাত্র অধ্ব প্রার্থনা যে কি মূপ কার্য্য তাহার दर्भन काटन छोड़ा श्रद्धि अवगंज नत्हन। ছাঁহাদিনের 'বোধণ প্রকৃত জানীদিগের নি-क्षे क्वन श्रविद्यहम्। अ इबिन सात श्रविहर মাত্র। পরীকার ফল কেবল পরীকার ছা-রাই অনুভূত হইতে পারে। সাধ্দিগের অমুথাৎ প্রত হইয়াছি যে ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করিলে ধর্ম লাভ হয়। ইহা ভাঁহা-निर्णत जीवन-कांड श्रीका-कांड मण, আমারাও মানানা জীবনে ইহার নিশ্য প্র-মাণ প্রাপ্ত হইরাছি। যৎকালে আমি মাতৃ-বিয়োগ-শোকে মৃতকম্প হ্ইয়া ঈশ্রের শর-ণাপন্ন হইরাছিলাম,একান্ত মনে যথন ভাঁহা হ-ইতে শান্তুনাও বৈষ্যা প্রার্থনা করিয়াছিলাম, তথন আনার আয়া পুনর্জীবিত হইয়াছিল, আমার অপহৃত শান্তি প্রত্যাগত হইয়াছিল : নেই অবধি আমি মহত্তর কোমলভর জননী व्यांख इहेग्रांकि, यिनि व्यामात्र अननी अवः জগতের জননী—ইহা কি আমার ভ্রম ? যথন পাপে গুৰুভাৱাকান্ত হইয়া একপাৰও গমন করিতে পারি নাই, সংদার ধখন অ-রণাবং বোধ হইয়াছিল তথন তাঁহার নিকট ক্ষমা ও প্রদাদ ভিক্ষা করিয়াছিলাম ; আ-মার আখা মুহন ক্রি রুতন সাহ্য সূত্র ভাব লাভ করিয়াছিল, সেই অববি আমি অম্পে অম্পে তাঁহার পথে অগ্রাসর হই-তেছি, हेहा कि जामात अम ? छुर्चनहात म-मत व्यार्थनो कतियो बन शाहेशांछि, पछान उ गःगतिकाकातं मरधा, यहकारण आंगात आहा ক্ষিপ্ত অন্ধ-প্রায় रहेशाहिल, ज्यन उ প্রার্থনা করিয়া বিশুদ্ধ সত্য ও জ্ঞান প্রদীপ लां कतिशाहि, देश कि जामांत लम ? এই সরুল যদি ভাষ হয়, তবে সভা কি ? এক वात मग्न, प्रे बात नम्न, यन वात्रे विमीच वि-योग भून मत्ना काशत निक्षे आर्थना कति,

ज्ञ वादरे भून इन्ट्र किविया पानि, क्र বারই ভাহার করণা, তাঁহার পবিত্রভা, তাঁ-হার নজলভাব, গাঢ়তর বাপে আমার জীবন भुखदक मुचिक रहा। हो। देश यनि विशा इस उद्ध आंग्रीत कीरन गिथा। क्रम निथा, क्रभ्रष्ट मिथा। मकन हे भिथा। क्रवन व्यक्त র্ঘাই সভা। সূর্যা কিরণে যেমন অঞ্চকার श्रट्त रक करा है जियु छ श्हेरन स्त्रीक त्रिया ভাষার সকল নিভূত স্থানকে আলোকিত करत, आंभात खक रुपग्न मारे क्रम और्थना দারা উদ্যাটিত হইলেই ভাঁহার স্বেহ রাশ্ম ভাহার দকল প্রদেশকে উজ্জুল করে। এই সালোক এই উজ্জুলতা আমার আশা এবং क्रिकोत वश्किक, व्याप मत्म कतित्व है-शांटक निवातन कतिएक शांति मा। সময় আমার ত্রবিত্ত হৃদয়ের ঘোর অহাকার এবং লৌহ কৰাট ভেদ করিয়াও যে জ্যোভি क्षकांन भारेबाह्य। ज्ञान्य रह मतल अन्य সভ্য জিজামু মন্তব্য ! প্রার্থনা কম্পনা নহে, জন নহে, মানের ভাব মাত নহে। ইহা প-র্মাতার সহিত আত্মার সমিলন, ইল ড্-ত্যের জিক্ষা, প্রভুর দান; ইহা ধর্ম্যের, পর-ट्यादकत, भांखित मध्या। दहं सत्त मसूया প্রাণাম্ভে কথন ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা ক-तिएक बित्रक श्रेष्ठ ना।

উপরে যাহা কিছু উলিখিত হইল, প্রা-র্থনা কার্য্যের নিষেধ থণ্ডনই তাহার উদ্দেশ্য, ভবিষ্যতে এ বিষয়ের বিধি সংস্থাপন করি-ভে চেন্টা করা যাইবে।

## गटना विख्वान।

সন। মন শক্তের প্রকৃত অর্থ নির্দ্ধারিত ইইল। মনের প্রকৃত অর্থই মদাপি মনুবা হয় তবে "আমি" "আল্লন" বা "আ্লাইশক্তে মনক্রেই বুকার, শরীরের কিকিমান অনুকৃত হয় না।

चारनकिक, क्षत्रवानिक, विदारन किर । गटमत्र कान कित्रभ ? कान हिर्दिश पारण कर अ बिहार शक्र के बहुत। बनमा-পিক। স্ট সীবের প্রকৃতি সম্বল্ধে বিশ্ব मःगात्र विविध भगार्यंत त्य कान कर्म ভাহাকে অপেক্ষিক জ্ঞান কহে। আগু স্থ প্রতির বহিভূতি বিশ্ব কার্য্যের স্বৰুদ্র আদ্যন্ত জ্ঞানকে অসমাপিক জ্ঞান কৰে। পূর্বেই কথিত হইয়াছে যে মনুধ্যের তাবং জ্ঞানই তাহার অর্তি সাপেক্ষ। ''যে পরি-মাণে মনুষোর শারীরিক বা মানসিক হৃতি সেই পরিমাণে তাহার জ্ঞান। হয়ত এমত কত প্রকার জ্ঞান আছে যাহা উপযুক্ত রুত্তির অভাবেদে জানিতে পারিতেছে না, স্বতরাং তাহার জ্ঞান আপেফিক। কেবল ঈশ্বরের छानरे धममाभिक ও नित्रभक्त। जिनि আমাদিগের ন্যায় স্বাভাবিক ইন্দ্রিয় হারা, इंखि बाता,मौभावक उममाख नरहन। ममन्द्र বিশ্ব হইতে ভাঁহরি মন অনতভাণে শ্রেষ্ঠ, তিনি তাহার আদাও সাভাবিক ক্ষান-ক্রিয়। দারা এককালে জানিভেছেন। তাঁহার জ্ঞান নিরাপেক্ষিক ও অসমাপিক।

পরস্ক আপেকিক ও অসমাপিক বা
নিরাপেকিক শক্তরের মধ্যে যে ইড়রেছর
সম্বন্ধ আছে ভাহা যে কেবল জ্ঞান-কার্য্য
উল্লেখে সংলগ্ন হয় এমত নহে। ভাহাদিগের অর্থ বোধক আবশ্যকতা বিবিধ অন্য
দৃশ বিষয়ে কিরপ উপলক্ষ হয়, মনোকি
ভ্রানের ভবিষ্যদালোচনার ভাহা শাত্রই
প্রতীয়মান হইবে।

গুণ, ভাব, এবং মূল-বন্ধ। পুর্বেই কথিত হইয়াছে যে কতকগুলী গুণ লেখিয়া
আমরা কোন একটা পদার্থের আইখনির্দেশ করি। আফডি বিজ্ঞ জনবর্ধান
গুণ উপলন্ধি করিয়া সাম্যা আড়েই ব্যক্তিস্থান

चलात कठकराजी खनवाडा जामता महनत बार्ड कानिटक शाहि। अप्रकाम वा बन कान वर हिविष अकात अवकाटना जनवि माज । ऋण्यस मर्मन कविरम भागता छ।-হার আকৃতি বিস্তৃতি বর্ণাদি ভিন্ন সার কি-ছুই দেখিতে পাই নাও জানিতে পারি না; এবং চেতন বস্তু উপলাক্তি করিলেও তাহার জ্ঞান প্রীতি ইচ্ছাদি ভিন্ন আর কিছুই জা-নিতে পারি না। কিন্তু এই দ্বিপ্রকার গুণ-শ্রেণীর অন্তর্গত বিভিন্ন বভাব ছুইটি পদার্থ षांट्य। এই इंटी भनार्थ यनि ३ षामता চকুষারা দেখিতে না পাই, তত্রাপি ভাহাদি-গের প্রতি আমাদিলের অগণ্ডনীয় বিস্থান আছে,কারণ ভাষ। হইতে বিচ্ছিন হট্য়া গুণ মাত্র অবস্থিতি করিতে পারে মা। এই ছইটী भाषार्थ वे बढ़त भून-मञ्ज (Substance)। ইहा আমাদিলের জ্ঞানের বিষয় নহে কিন্তু বিশ্বা-মের বিষয়। কেবল উপরোলিখিত গুণ (Property) আমাদিগের প্রত্যক্ষ দর্শনও स्ভানের বিষয়।

যে পদর্থে যাহা কিছু লক্ষিত হয় ভাহাই ভাহার ভাব। প্রতি দিন মনের মধ্যে দহস্র চিন্তা, এবং দহস্র ইচ্ছা উদয় হই-তেছে, এই ৰূপ প্রত্যেক চিন্তা ও প্রত্যেক ইচ্ছাই মনের এক একটা স্বতন্ত্র ভাব (Phenomenon)।

শক্তি ও রুত্তি। এক অবস্থা হইতে অবস্থান্তর হইতে পারিবার ক্ষমতার নাম শক্তি; এবং বে যে তিল্ল শারীরিক বা মানসিক উপালে এই শক্তি সাধন করা যায় ভালার নাম রুত্তি। মন্ত্র্যা আত্রাণ লইতে পারে। আত্রাণ একটি শক্তি; কারণ মন্ত্রবেরে স্বাভাবিক স্বব্ধা হইতে নে আপ্রন্ধ সাজ্রাণ গ্রহণাবস্থার আনিত্তে পারে।
একটি বিশেষ ইতিয়াকে উপায়ন্ত্রেপ অব

वर्षे इंग्. अञ्चर जारनिस्तर मसूरवात क কটা শারীরিক হৃত্তি। বৃত্তি বিপ্রকার উদ্যো-निमी । निस्तानिमी। উरमानिमी दृष्टि बाता আমরা একটা কার্যা জেছা সহকারে সাধন করিতে পারে; নিয়োগিনী রুদ্ভি ঘার। আ-প্ৰায় উপত্ৰ অপুৱের কাৰ্য্য সহন করিতে পারি। আমার স্থীয় চেন্টার ছারা স্তি শক্তিকে পরিচালনা করিয়া জ্ঞানের বিষয় স-কলকে চিরকাল মনোমধ্যে আবন্ধ রাধিতে পারি; এবং কোন প্রিয় ব্যক্তিকে অবলো-কন করিলে স্থাভাবতই স্বেহে অভিভূত হইয়া পড়ি। স্মৃতি রুত্তি আমার সেক্টাধীন ও কার্যাধীন, কিন্তু স্নেহ-রুত্তির দারা আমি স্বভাৰতই নীয়মান হই। অভএৰ স্থৃতি শক্তি वामानित्यत अक्षा উদ্যোগিনী প্রবৃত্তি, এবং **स्त्रक्-त्वाध अक्षी निर्धाणिनी अवृद्धि मांज** ।

গুঢ়, ও বিদামান! মান্সিক ভাৰ এবং রম্ভি ছুই একার অবস্থার অবস্থিতি করিতে পারে! এই তুই অবস্থার নাম গঢ় অবস্থা এবং বিদ্যমান অবস্থা। সনের মধ্যে এঞ্জ স্মনেক সভা, অনেক ভাব, অনেক রক্তি আছে বাহারা দকল দময়ে জ্ঞানের গোচর থাকে না, কেবল কার্যোর সময় তাহাদিলের পরিচয় এতি हुए हा यात्र। यथा, धर्माध-র্শ্মের স্বভারতাজ্ঞান সকলের মনেই নিছিত भ्रदकार**ल भन्न**्या **क्लांगारल**ांहनांग्र আছে: বা দাংদারিক কার্য্যে নিযুক্ত খাকে তথ-কালে এই জ্ঞান বোধ-গোচর হয় না; কিন্তু যথনই সে কোন একটা ধর্মা কাম্য বা অপর্শা कार्या नितीका करत अधनरे छारात मतन हेर् कानक रहेन्। उत्तर स्पेत्र है-শ্বর সকলকেই দিয়াছেন। কিন্তু পাপ ছারা বা কুতর্ক ছারা ননকে পাষাণবং কঠিন ও নিডান্ত অধার্ত কেরিরী ফেলিলে ভাছা महरक अनुकुष इंग्रनी। यथनरे श्रतिन ্রার শণজ সাধু অহতির আদেশানুযায়িক ষমুষা কাষ্য করে, তথনই এই শ্রেছি জাগৰক হয়। উল্লিখিত প্রকার মানসিক ভার ও রুত্তির নিহিভাবস্থাকে গঢ়তা কহে, এবং ভাহাদিগের জাগৰক অবস্থাকে বিদামান নভা কহে।

আ্তাপ্রভায় । যড প্রকার বিজ্ঞান শাক্র আছে তৎমমুদায়ের মধ্যেই কতক थिनि मून-स्व पृष्टे रहा। এই হুত্র চয় কোন মতেই বিচার সাপেক নহে, তাহারা স্বাভাবিক বিশ্বাস সিন্ধ, তাংহাদিগকে আত্ম-প্রসায় ক**ে**ছ। কোন বিষয় বিচার করিতে হইলে, মূলে উদুশ কতকগুলী সহা স্থী-কার করিয়া লইতে হয় যাহারা বিচার नाटलक नटर, मलुया गांटजत्र रे यांशांनटनत श्राक्त मण्यानं विश्वाम चाराह, এবং बाहांपि-গোর প্রতিবিশ্বাস না থাকিলে সকল প্রকার मुख्नि,विष्टान ও विषात अमस्य बहेश छैठि। ৰথা আনি আছি, বাজ জগৎ আছে, ঈশ্বর 'লাছেন,এ সকল বিষয়কে সপ্রমাণ করিতে হ-ইলে মনুযোর স্বাভাবিক বিখাদকে জিজ্ঞানা कतिए इस । यसुरमात यन यनि इहीनिशटक অস্থীকার করে ভাষা হইলে কোন প্রকার विठात्रहे मछव नत्ह, कांत्रण यणि आमिना वार्ति, जन्न ना शांति, अभन्न ना शांतिन, ভবে কে বিচার করিবে, কিসের বিষয় বিচারিত হইবে, কাছার প্রণীত বস্তু এবং কিলের কৌশলকে বিচার করা যাইবে। অভএব ঈদৃশ প্রকার সকল বিষয় এককার্টন স্বাভাবিক বিশ্বান শিক্ষ, ভাহাদিনের নামই মান্ত্রহাত্য ।

আতা চৈতনা। মনে যে সমস্ত ভাব উদ্যু হ ইতেছে তাহার জানকৈ আতাচৈতনা কহে। আতা চৈতনা না হইলে কোন ভা-বই সম্ভবেনা। আমার মনে জানের উদয় হইতেছে, কিন্তু আনি যদি মেই জানকে না জানিতে পারি ভবে তাহা উদয় হওয়া আরু না হওয়া ন্তান, কাজনিক ছারা জিলা হয়

দাই। আমার দনে প্রীতিভাবের উদয়

হইতেছে, কিছ যদি আমি দেই প্রীতিকে

না জানিতে পারি, ছবে আমি কি প্রকারে

বিশ্বাস করিব বে ভাহা কোন কালে

ভামি বোধ করিয়াছিলাম ? অভএব আত্ম

চৈতন্যই মনের অভিত্রের নিয়ম। বে নায়য়
আত্ম-চৈতন্য নাই সে নায়য় মনও নাই,

কারণ ভাব-বিরহিত মনের অভিত্র আমরা

বুক্তি ছারা উপলব্জি করিতে পারি না।

অতএব মনের জীবদ্দশার নামই আত্ম
চৈতন্য।

একাগ্রতা। আত্ম-চৈতনোর, নিগৃচভার নাম একাগ্রতা। বিবিধ ভাব মনোমধ্যে উদয় হইতেছে, এবং আত্মজান
ভারা অনুভূত হইতেছে। যদি ইহার
একটা ভাবের প্রতি গাচরূপ মনঃসংখােগ
করত কাণেকের নিমিন্ত অপরাপর ভাবচযকে মন হইতে অপসারিত করি ভাহ। হইলে মন একাগ্রতার অবস্থা অবল্যন করে।
অত্যব স্থাভাবিক আত্ম-চৈতনাের প্রতি গাঢ়
কাপে মনঃসংখােগের নাম একাগ্রতা। মনােবিজ্ঞান আলােচনার পজে এই কপ
একাগ্রতা একাস্ত আবশাক।

উলিখিত প্রকারে মনোবিজ্ঞান শাস্ত্রে সর্বনা ব্যবহার্যা ক্রকগুলী শব্দ বির্ভ হইল। এতৎশাসের ভবিষ্যালালোচনায় এবসিধ অপর অনেক শব্দ সংঘটিত হইবে, যাহাদিগের বিষয় অদ্য কিছুই উল্লেখ ফ্রা গোল না, কিছু দেই সেই শব্দের মর্ম্ম তত্তৎ-কালে প্রদান কলিতে চেক্টা করা মাইবে।

#### अञ्चीत्रक पात्रगाक्का।

२०२ मरथाक शक्तिकात थर मुख्येक महा

ं व्यामादम्ब जावज्यर्थ क विषद्यव अक्की सून्मव দুটান্তস্থা এখানে ষেরপ ভাবের প্রীচ্ভাব চুট হয় একপ আরু কোন দেশেই দেখা ষায় না। এদেশ যদিও অজ্ঞানতা ও কুদংকার-তিমিরে ভয়ানককপে আছের রহিয়াছে, ভথাপি এখানকার পিতা মাভারা যেনন সন্তানের প্রতি অন্তরক, এখানকার ভাজা ভগ্নী যেকপ কোমল মেহ-ভত্ত আবদ্ধ, পুদ্র কন্যাদিগের বেরূপ খাতু ভক্তি ও পিতৃ প্রান্ধা, জাহা মনে করিভেগেলে চমৎকৃত হইতে হয়। অন্যান্য নেশের অপেকা এদেশে ভাব क्षरत शाकारङ हेरात खतुरीच मकन ७ जनन्यां **१ है शहर । जा कृषि कोशा, जामाज्य है, आकि।** मि অব্রান, সকল স্পট্রপে তারার মালা দিভেছে। धमित आयारमञ्जलम् मञारम्भ मगरस्थ जुननाष স্তি দাণানা দলিয়া প্রিগণিত হয়, দদিও অ-नाना मकत मध्यम है। यां निकृष्ठे अदि व्यव-খিতি করে, ভগাপি অন্যান্য দেশ অপেক। যে हेरा छोद्रदल (बार्स्ट को तर्ग क्रिक्ट बामता गथनहे मक्षुष्टिङ हहेत न। स्वामारमत प्रत्यात এই ভারকপ মুন্দর কুলুম-পরিশেভিত মনোহরদ-ৰ্শনে বিষুধাচিত না হইয়া যে ভালাকে অবজ্ঞাসূচক ष्ट्रचिंदण पर्नम् करव, म। आमि स्मिक कर्राव क्रमग्र ! এই ভাবরূপ মনোর্য প্রস্ন-নিচয়ের শোভা ন দৰ্শনে পুলকিত-ছন্ম হইয়া ভন্মধান্ত বিশৃদ্ধানত। দুর করত উত্তর্মরূপ কর্মণদ্বারা ভাষাদিপের জানিক-তর শোভা मन्त्रीमन कविदयन क्लिग्राष्ट्र डाटकता क्छक्छनि कार्या विस्त्रां श्राह्य इंदेशास्त्र । এहे কাৰ্যান্তানা নিজের ভাৰসকলও প্রকাশ करतम, धार कामारमत्र एम्टब्स् क्षांक नकटलत १ উৎकर्य माधन कति: । शांतिहत्वन । जांकाधदपीत प्रमुश्रीन विवया यादा अनिष हरेबाहरू ७ महा सहसा **এड भागतवान उनहिङ हेरैग्राट्ड, बहे. कार्याश्चल** जिश्विद अवर्गेल । भीति कृष्टिक विकास

বশান্তান করা যে নহুযোর রাজ্যুরিক ভাষা
এক প্রকার প্রদর্শিক হইবাতে, সুভরাং ব্রাক্ষের।
বিদ্যালয় করেন ভবে এই ব্রাক্ষ্যা উন্থালিগকে
লোযারোপ করা নাইতে পারে বৈ উল্লেখ্য ক্রাক্ষ্যা নাইখাক,
— স্বর্ধাং কর ভাষার ক্রাক্ষ্যালয়ের ক্রাক্ত্রিক ভার প্রাক্ষা ক্রাক্ষ্যালয়ের ক্রাক্ত্রিক ভার প্রাক্ষা ক্রাক্ষ্যালয়ের ক্রাক্ত্রিক ভার প্রাক্ষা ক্রাক্ষ্যালয়ের ক্রাক্যালয়ের ক্রাক্ষ্যালয়ের ক্রাক্ষ্য

ঠানের ব্যাপক অর্থ প্রতণ করিলে বালিক অন্ঠানের সংখ্যা অর্থা হইলা উঠে। ব্রাহন্দর প্রতিবাছা কিয়াই ভাষা হইলে অনুঠান লাদেব বাচা
হয়। আমরা একণে অনুঠানের তান কি কি
সক্ষাতিত করিয়া লাইব। অর্থাং ব্রাহ্ম দিলের নথে।
প্রচলিত বিশেষ অনুঠান সকলকেই একণে মন্
ঠান অভিযান প্রদান করিব। যথা অভ্যান ব্রাহ্ম করিব। যথা অভ্যান প্রদান করিব। যথা অভ্যান নামকরণ, উপান্যনন, গর্মানীকা, বিবাহ অংকাটি
ক্রিয়া এবং প্রান্ধ। কেন না এইগুলি লাইয়া তব্র বিতর্ক উপান্তিত ইইয়াছে।

যে সপ্তানুষ্ঠানের নাম উল্লিখিত হউল, বে.প করি মাধারণে ভাহাদের প্রেচ্ছ অর্থ ভারগত না शांकिएक शास्त्रम, এই जना मारकाल छाई।सित অর্থ প্রকাশ করিতেডি। ১৭ জাতকর্ম-নম্মান জ্যালে সকল পিছা ন:ডারই মনে অনবভূজ আহ্বাদের সকার হয়, এবং দেই ক'লাবপি উটার' क्षकृष्ठ मध्यक्षि इक्षयात्व व्यमः या व्यमध्या कर्वत्यात ওক ভার তাঁহোনের ক্ষেক্ষ আদিয়া পঞ্চ; দেই এ-পুর্বা আফলাদের নিমিত্ব তং প্রদাত। করণাময় পি ভাকে কুজন্মতা উপহার প্রদান করা, এবং উপস্থিত কর্ত্তরা প্রতিপালনে সম্পূর্ণ সক্ষম হটবরে জনা ভাঁছার নিকট বল জাখন। কবাই এই অনুষ্ঠানের উक्तिमा । १श म्यान्तर्ग--त्रकःत विविश्वाः स्थित्तर উপাসনা করতঃ সজানের নাম প্রদান করিবার कनाई बरे अवृक्षांन । ७१ फेलन्यन--रयन दनर्थः যায় সম্ভানের বুদ্ধ এবং বর্ম্মপ্রান কিনং প রিমাণে পরিপক হইয়া আদিয়াছে, লে ধন্ম। ণদেশ গ্রহণ সক্ষম চইয়াছে, তথন পিলে হ'ছে! क्षेत्रे अनुक्रीनदारा महान्द्र उपदक्त निक्दकर इट्ड मगर्भ करतना हर्ष भर्मातीका + मधान সদ্যাহরী এক্টনিও শিক্ষকের নিকট ঘ্রাধিগি শিকা পাইয়া ধ্যন ধ্যা কি ভাহা বুঝিছে পারেন, এবং ভার্থহণে সমুৎস্কুক হন, ভার্ম জিলি चित्रहर्क म<sub>िक</sub>ि केहल है माश्रहन नगरक ४८-छ। মুখনতে বিশ্বাস প্রকাশ করিয়া ভংগাওপাল-सार्थ प्रष्ठ व्यक्तिक। कट्यम,--- ध्रे गरभ तरस्य भर्म न्त्रीका बदन। ৫ম विवाह—हेश मनुषः श्रीयः मत्र अ কটি উভি উৎকৃষ্ট ও প্রিক্ত শ্রুপ্টান । সকল সভ্য জ্ঞাতিই ইহার প্রকৃত স্থাদর ও সম্মাননা করিছে- 🔻 (छन्। जेवत् क्वी ७ पुक्रस्यत् नःभाग सम्भविक नवकः সংস্থাপন করেয়াডেন, ভাহাতে রক্ষণ ও পালন ক-हिरात कराई वह विश्वक कर्शियत प्रशि । ७० छ रखास्मिद्धा—बहे अपूर्शने असं स्वर्भ अधीनकः याँ हारमञ्जू का मुख वा क्लिक अधि दकान ना हैकान महारवह जैपम हम, जैरहाहा कवन के केहारक विद्याने क्षिट्ड शास्त्र मा। नगान विषय सन्-क्षेष्ट्रन, आका । देव भिका माला आमारमह अना प'-

वक्तीवन जगर्था जगर्था क्रिम् महा क्रिगटिकन বাঁহারা আমাদিণের নিমিত কুথার সময়ে আহার, বিরাম সময়ে বিশ্রাম করিতে পারেন নাই; আমা-त्मत किरम मझल इहेर्ट स्माहे छेलीय छेलावस করিতে যাঁহারা চিরকাল চিস্তারপ অগ্নিতে দঝ-হাদয় হইয়াছেন, যঁকারা দর্ম প্রতিপালক প্র-যেশবের প্রতিনিধি স্কপ হইয়া সর্ক্ষণা আমাদের লালনপালন ও নজল সাধন করিয়াছেন, মৃত্যু জানত দেই পিভামান্তার সহিত দীর্ঘ কালের निमिन्छ विष्कृत इटेटल उँ। हानिरशत कना आमता ধে কুছজভা, ভক্তি ও গ্রন্থা সক্ষয় করিয়াছিলাম, ভাষার পরিচালনা ও পরিচ্যট এই অনুষ্ঠানের শুদ্ধ পিভাগাড়ার বিয়োগে কেন্? लका। যে আমাদের সমধিক কুতদ্বতা, জীভি, ভক্তি <u>७२९ आफ्रोर পাত, उँ। शहरे ममस्य धरे जनू-</u> ষ্ঠান অনুষ্ঠিত হইতে পারে।

अकड़े अनुधावन कविशा দেখিলেই व्यक्ति मक्तिए ক্ষীৰে যে বাহ্যিক অনুষ্ঠানের যে ছুই বিশেষ শুণ থাকা আবশাক এই সকল অনুষ্ঠান ভাষা হইতে विभिन्न महर, बहुर हैं हा प्रियंत महत्र ममिलक **खाउरे ७।३। ५७ ३३ । हेहाता आयादमय आर**हिक ভাবে একাশক কি না, জাতদৰ্ম, অস্তোটিনিয়া, ও শ্রাম্বের প্রতি দৃষ্টি করিলেই ভাষ্| জানা যাইতে পারে। অপিচ ইহারা আমাদের আছার উ শ্রতি সাপনের প্রেলও মহত্বপকারী। 'সভ্টা ভাষর। আমাদের আহেবিক ভাষ সকল বাধীনকাপে প্র-কাশ করিছে পারি, ভড়ই আনাদের আলা উন্নত ७ दलिले हरा, । अ तिस्र ग्ला इहेटल, स्नास्कर्या, অন্তোষি ভিয়া ও প্রাদ্ধ দ্বারা আমরা মহত্বপকৃত एके भटनक मात्रे। धर्मामीका ७ विवादक अनुक्रीम ষে মনুষা নগ'জের পক্ষে কভ দুর উপকারী ভাহ। লিখিয়া বাক্ত করা যায় না। যাহারা প্রকৃত ধর্মার্থী ছটয়া সংখ্য ওলী মধো **দ ওায়মান ছওত ঈশবের** अर्थभिक्षिक् चायुर्व चानुष्ठत क्विशास्त्र, धार्यः পর্যাত্রক পালনে দৃত প্রতিকারত হইয়াছেন, উ-হারাই ধর্মদীকা রূপ অনুষ্ঠানের উপকার ক্রুণত क्तिग्राटकन,--- निक्ठग्रहे खनाटक, हेरा तूर्यान छात्। लर्मानेकात अञाद मन्दरात कीवन ममाक निम-হ'বড় হট্যা ন্ধকীবনের আবিষ্ঠাৰ হইয়া থাকে, कार्य अर्थानीकात व्यक्तारय मनूषा मार मात्रिक म्हिन ीयन हरेए डेजीन हरेगा भवित सभीत सीवन পাৰে গমন করিছে সক্ষম হয়। বিবাহ ক্লপ অসুঠান দারা কি উপকার হুইজে পারে পরে ইণিভাইন रेटन। अभिक्ष अनुर्काम **बाद्रा क्षांक मनूरवादरे** নেমন উপাকার সাধিত হয়, তেখানি আপর একটী শ্রেষ্টিতর কলাপ নিক্ষাদিত হছিল বাকি। रेश मनुवादक खाळुकाव स्टब क्यान कविवाह काल

मर्छ्भागा भरे अपूर्धान मन्त जान बार्जान-शर्क मरशा मरशा अकटक मध्यमिष करत, वदश বিশুদ্ধ কথোপকখন ও উপাননা ভারা সেই প্রেম সরপের সরিধানে উপনীত করে, ভাষা-তে ভাঁহাদের পরস্পারেশ্ব ভাগ আপনাপনিই উদারতা গ্রহণ করে! নিজে তুর্মল হইলেও উংকৃষ্টভর্গ প্রিফ্ডর ব্রাহ্মদিগের আন্তরিক ক্ষত্তি ও বল দর্শন করিয়া আমরা আধাত্মিক वाल वलीयांन एवं, मन मरनाद्र कादी इटेला ভাঁহাদের প্রীভি বিস্ফারিড উক্ষুণ নয়ন বিলো-কন করিয়া বিগলিজ হয়৷ বস্তুতঃ নিয়ত শাধু গল করিয়া যে অমৃত কল লাভ করি, অনুষ্ঠান ए। द्वा ६४ मकल हे लक्ष हहेबाद महारना। अनुश्रीन-সকল যে আরু কত অগণা কল্যাণ সাধন করে, সময় থাকিলে ভাষা বর্ণনা করিভাম। এক্তেণ এই ধ্রুপ সামান্য বিবরণ ছারাই সম্ভুক্ত থাকিছে इ.हे. दि ।

পর্যাদীকাই কাজি মাতের প্রথম অনুষ্ঠেয় ক্রিয়া, অভএব ভাষা ইউতে আরম্ভ করিয়া পরি শেষে প্রাভের বিষয়ে বক্তবা বিষয়সূচল কাজে করিব।

( ক্ৰমণঃ প্ৰকাশা )

- or company to -

#### मःवाम ।

বিগত ৬ই ভাতে প্ৰস্তাম্পদ প্ৰযুক্ত বিজয়কুষা त्ताचामी अतर जीगुक लाभमा अनाम एटजे, लापाध महाभेटराता जाकामभाटकत উপाठायां शटन प्यास्त्रिक এই ব্রাক্ষরে দেরপ উৎসাহ ও হইয়াছেন ৷ নিঠা সহকারে এতংকাল পর্যান্ত ব্রাহ্মধর্মের উ-প্রদেশ পালন করিয়াছেন ভাষা আলোচনা ক-রিলে তাঁহাদিগকেই উক্ত পদের বিশেষ উপযুক্ত বোধ হয়। কাহারও অকারণ প্রশংসা করা ত-खुटवाभिनी পजिकांत পटक मद्यद्य ना, किन्छ । धरे ছুই ব্যক্তি পর্মের জন্য যেরূপ ক্লেশ, যভদুর অভ্যা-চার মহা করিয়াছেন ভাষা সর্বসাধারণ সকল ত্রা-ক্ষের অবগত হইয়া উহোদিগকে দৃতীভ অরপ জ্ঞান করা উভিত। তাঁহাদিলের বভ এক শভ आका आश इहेटन छात्रकर्दित स्य व्यापन मझन 1.9 হয় ভাষার আর সন্দেহ নাই।।

ভাষাদিশের অভিধেক কাকে অধান আচার্থ্য মহাখয় যে নিয়োগ পত্র অদান করিয়াছেন ভাষা নিমে অক্টিক ছইল।

yfa wai den dingen Umirisheren avface eden i yskedd algeneausisiest

वरम अहित्त । अभावात अप कर्डवाकांच जेती-क दन महाना यह जीत वाक्टिय, अरह जर्मना वाहर मत्था छ। श विकत्त क्रिया अधारम जभागित **७ ग्रह्म में बाबदन निवंजन इंट्रेंट । निवंज प्रमी**न कुर्वादम् अविक स्टेग्ना अविक-यत्तरशत मस्यादम स्वा-सम्म हिलाएक के किएन करिय करें महलेटमाने अ माधु मु-के व वाता ने बादत भारत मनदलत मनदेक जो कर्रन कंत्रिया। अक्रम्मारक छल्कि कतिरव, द्वाप्तिनिरक मयोगन कतिरा, ও मकलंटक राष्ट्रीपेयुक्त गन्मान मिट्ट। श्राधीन इटेग्रा दिनशी इटेट्ट। श्रद्धत ष्यजािक मकन महा कतिरन, काशास्त्रां श्रीक स्वय করিবে না। অনো যদি ভোমার প্রভি অসাধু বাবহার করে, তুমি শাধুভাব অবলম্ব করিয়া ডা-হাকে শিক্ষা দিবে। "পাপাচারী বাজির প্রতি आशाहाद कदिरन मां, किन्ह मर्सना माध्ये थाकिरन।"? সম্পদে বিপদে, স্তুভি-নিন্দাতে, মান-অপমানে অবিচলিত থাকিয়া ব্রাহ্মপর্মা প্রচার করিবে। ঈখর তোমাকে রখা করান, ভোমার জ্ঞান ধর্মা পোষণ করুন---ভোমার শরীর বলিষ্ঠ হউক, মন বীৰ্যাবান হউক, জ্ঞান উজ্ল হউক, অভিপ্ৰায় মহান্হউক, ধর্মা নিঃসার্থ হউক, জ্নয় পবিত্র ছউক, জিহবা মধুময় হউক। ভোষার চকু ভদ্র রূপ मर्भन करूक, कर्ष छात्र कथा खाउन करूक।

ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরিঃ 💍।

কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজ } ক্রীদেবেক্সনাথ ঠাকুর।

ব্ৰাহ্ম-সমাজ-প্ৰভ

΄3

প্রধান আচার্যা।

উপাচার্যাপদে উক্ত মহাত্মাত্মমকে অভিবিক্ত করিবার উদ্দেশ্য এই যে ত্রাহ্মসমাজের উপাসনার কার্ণ্যের নিমিত্ত একাল অবধি নিজারিত কর্মচারি तक्किल स्टेर्टर। উপामना कानीन उभागार्यात অনুসন্ধান করিয়া বাহাকে ইন্ধা ভাহাকে বেদীর উপর উপবিষ্ট করিলে ব্রাহ্মসমাজের অগৌরব করা হয়। কিন্তু উপাচার্যা হিরীকরণ কার্যাহীও অতি সুক্টিন। যাঁহারা ব্রাক্সধর্মের প্রতি বিলেষ অন্তাবিউ ও অসুরক্ত, বাহারা কি বাহাক কি আ-धाकिक नकत अकात अनुक्रीरन है जाना स्थानी चामनं करले मधायमान वहेटल लाखनः व विवि विकारन, कि शीखरण, कि शासका निकार मग्र जिंदेन कारन धर्म बार्ड लालन करतन है। होते हैं · छेलावार्यः लटम्ब खेलाबुकः । खानामानाम बन्ता में देश के अपायिक हरेगा थक हिन की के लेग wasters to be distant afficer the 11 (78 TPR 1/80 PLOTINE - 18 1 BOA

কারণ বর্ত্তমান সময়ে জান এবং প্রীতি, অনুচান এ ডিনাই না থাকিলে লোকের চিড়াকর্যণ বা আদা প্রহণ কর বার না।

ं क्षेत्र ५५ स्म ब्योवन मन्ननवाद्य श्रीगुङ भार्स-জীচরণ শুপ্ত মহাশহের শুড় বিবাহ সন্পান হইয়া भिग्नाइ। शतिशीका नामिकामी विधना कान अ-कर्री अकामा श्वीविमानिया पूर्णिकिला, धर° गाउ সক্ষরিতা। শ্রীযুক্ত পার্মভীচরণ প্রোসডেন্সী কামে-জের ছাত্র, ভিনি ত্রায়ই বিদ্যালয় হইতে উত্তীর্ণ হইবেন। দম্পতি প্রচলিত সমাজে একজাতি ভুক্ত নহেন : জীযুক্ত পার্বজীচরণের বয়ঃক্রম বোধ হয় ध्यात्र २७ वरमञ्ज, वानिकांत्रीतः वश्यक्रम असूगाम ১৫ বংশর। এই কার্যাটী অভিশয় নহৎ ইহা সীকার করিজেই হইবে: এভদারা ব্রাসবিবাহের আর একটী দৃটাস্ত প্রদর্শিত হইল, উপযুক্ত বয়সে বি-বাহের প্রথা প্রধর্ত্তিড ও ছটিট চ্ইল, এবং শঙ্কর বিৰাহ অথবা জাতিবিভিনে পরিণয়ের প্রথাও সারম্ভ হইল। ত্রাহ্মদিগের গন্যাবল ও সাহদ কত দুর ভাষা এই ব্যাপারটীর দ্বারা সকস সুভ্রদ্ম বা-क्षिपिरभन्न निक्षे अजीयमान इटेरत।

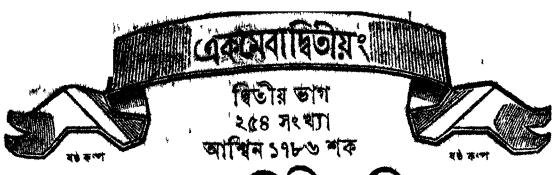
শীযুক্ত রাজা রাথাকান্ত দেব মহাশয়ের পৌন শীযুক্ত ব্রক্তেনারায়ণ দেব মহাশয়ের পুতের জাতকর্ম সম্পুতি ব্রাহ্মপর্ম মতে সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। রাজা রাপাকান্ত দেব মহাশয়ের পৌ-ভলিক ধর্মের প্রতি বেরপে অনুরাগ ভাহাতে তাঁ-হার পরিবার মধ্যে ব্রাহ্মধন্মের এত দ্ব উন্নতি দেখিলে মনে অভান্ত আহলাদ জন্মে:

গভবারের পতিকাতে বহরম পুর সমান্ধ উ-লেখে কথিত হইয়াছিল যে শ্রীযুক্ত কাশীশার দিত্র মহাশায়ের দারা উক্ত সমান্ত প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে; একণে অবগত হওয়া গোল যে উছোরে সে সমাজের সহিত কোন সংআ্যা নাই, তাহা বস্কুরমপুরস্থ আর কতকণ্ডলি ভদ্লোক দারা প্রতিষ্ঠিত হই-য়াছে।

#### বিজ্ঞাপন !

পর্যশিকা-নামক পুত্তক থানি পুনবার সংশোধিত হইয়া ত্রাহ্মসমাজের যন্ত্রাসয়ে মুক্তিত হইতেছে শীঘ্রই প্রকাশিত হইবে।

कशिवार। अधिममाद्रमाद्रमा ३१०७ गुटको 🖔	A PRINTER NO.
অ্যাত ও প্ৰাৰণ সান্দের আয় বার	15
at depote the same	
্ৰান্ত বি <b>ৰৱণ ৷</b>	**************************************
יין אומנים אויין אין אין אין אין אין אין אין אין אין	उ। जरम बहु स्वा मारा
अर्थात जिल्ला	अपूक्त थाजाश्रदस्य मध्यम्बात
The second secon	শি ভাগলপুর ত্রাক্ষান্দাল্ডের স্পানী বিভিন্ন
50 x 8 2 e	কোন প্ৰাম্ম ভাষা > ০
જા <u>ર</u>	े ' क्यार्थन स्वास हैं।'
	" विकाक्य रनावामी c
সম্পাতিকের হলের - তথ্যা/০	" প্রসন্ধতন সেন শুপ্ত ব
वांक्षांन वराटक	" क्यांबहस्य राम ।
त्वार्काशक	" विद्रक्षस्रमाथ ठाकूद «
and Comme	ं देवकूर्णनाथ त्यम
is disserting the particular and the second of the second	' হালিসহর ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদক 😕
ভ্ৰাক্ষদিরের প্রতিজ্ঞাত নাম্বংসরিক দান।	'' कुछविष्युद्धी स्त्रम े ं २
শ্রীযুক্ত হরচনে ও ১২	'' दकमाहन्यि वटमार्शिशास ः
े के कुक्क का का का का अप	" (मारान्सभाय ठाकूत्र ( शायुद्दशाहा ) :
र <sup>१९</sup> - प्रसम्बद्धाः सम्	'' গোপালচন্দ্ৰ মলিক 🥠 👵
ं कालका १८०२ बुट्यामामाघ व	" রাজকুমার মলিক ১
कुळ निकानी हक वर्शी २.४०	<ul> <li>भीननाथ मङ्यमात &gt;</li> </ul>
ं भ जीव शंधव भिक्र २	" गांधवहत्त्व मिश्ह
ध दर्शकुलकुम शिर्क २	" অভয়াচরণ হস্ত ৮০
' राष्ट्रिकेम गूटधानाखाम २	" ভাগৰভীগ্ৰন ঘোষ ়
ं सभः १४१वर भिष्के	" दकमञ्जूनाथ तथा ।। ।।
<sup>१६</sup> 'धुनांच रम २	2000
· হরচঞ্ ফজুমদ্বি	
ः " विश्वतोष्ट्रतमे वरन्तर्गान्यसम् ১ 🖰	ৰিঘুণী পূত্ৰ।
84./0	भुष्ठे !
भागिक नामा	কলিকাতা ব্ৰাহ্মসমাচেম্ব নক্ত 🔆 🕠 ৬৫
•	छेशामना ७७
প্রিক্তি দিশানচন্দ্র বহু ২৫	मदनाविकान
entistication of a	अपूर्शित्व आविभाक्जा
्र इस्टरक्स साथ क्रांक्स १ अस्तरक्स साथ क्रांक्स	मश्रीम
Making Late of Strategies and Strate	আয় ব্যক্তিবৰৰণ ৮০
গ ছারিকানাথ বজেলাগাধায় ১	The state of the s
अभिनेत्रिक्ट्य (यम्। १९११) राज्य । १००० ४० ४	מאר אינוער אינער אינוער אינוער אינוער איינער אינער אי
श्रीमञ्जा स्वीतीय भगा भेगा है।	তত্ত্বোধিনী পত্তিকার মুল্য নিরূপণ
ना गर्यका कि भू छ	अधिम प्रसा ( क्लिक्स्डाम क्रमा )
नीलकम्ब वटकार्यश्रामा	'' (यकाश्रालद्भ क्रमा) ७७०
	मानिक सूनक
अक्टबर मान	The same of the sa
	the state of the s
विपुक्त कानीवांचं दक	A de unter felt ellen ellen ante celle
The second secon	প্রত্ত এই তথ্যবাহিনী পরিকা ক্ষিক্তা করাবে যে। ক্রাক্ষেত্র প্রাক্ষর চাক্ষর ক্রিয়ালয় ক্রিয়ালয় বা অঞ্চালিত ব্যাস্থ্য সংগ্রাম্থ্য বিশ্বস্থা সম্প্রত



# তত্ত রোধিনীপ ণিকা

রশবারক্ষিদমগ্রশাদীশ্বান্ত কিঞ্নাদান্তি দিলং সর্ক্ষেত্রণ ও তেবে নিডাং জ্ঞানমনস্থং লিবং শ্বতক্ষরিরবয়র মেক-মেবারিডীয়া সর্ক্ষরাপি সর্ক্ষমিয়ান্ত্র সংক্ষাভায়স্থাবিৎসর্কাল্ডিমন্ত্র শেলুর্বমন্ত্রিক বিভাগের শ্বতক্ষিত্র প্রতিষ্ঠিত স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্র প্রতিষ্ঠিত প্রতিষ্ঠিত স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্রন্ত্র স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্রন্ত্র প্রতিষ্ঠিত স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্রন্ত্র স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্রন্ত্রিক প্রতিষ্ঠিত স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্রন্ত্র স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্রন্ত্রিক স্থাতি স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্রন্ত্র স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্রন্ত্র স্থাতি স্থাতি স্থাতি জন্ম বিশেষ্ট্রন্ত্র স্থাতি স্থাতি

### বিপদ্কালে ব্ৰহ্ম স্তোত্ত।

হে প্রমান্মন্! যে দিবস হইতে আমি এই পৃথিবীর আলোক দর্শন করিয়াছি সেই দিন হইতেই ভোমার করণামৃত আ-মার প্রতি নিয়ত বর্ষিত হইতেছে। তুমি क्छ स्थ मन्त्राप्त जागादक उदमुल कतिशाह; ভোমার বাহু প্রসারিত হইয়া কত উদাত বিপদের গ্রাস হইতে আমাকে রক্ষা করি-রাছে-কিন্ত তোমার কুপা-বলে অদ্যকার কটিন পরীক্ষাতে যেন উত্তীর্ণ হইতে পারি। এই নম্বট সময়ে যদি ভোমার দর্শন পাই তবে আমি ছ্বালু হইরাও ভোমার বলে, কুটিলতম ছরবছাকে প্রাপ্ত করিতে পারিব। नाष । जानि विशेषक विकृष्ट पृष्टि प्रिश **जी**ण हरेब्रोहि, छःटथेत क्यांचादण खरमन रहेन्नाहि पूर्व काति पूर्व कातिश्व मा। भागादक विश्वम अ मान होन मानमा नहळ नान-वामान्य निव्यक्ति कहिरकाह प्रति गरियात कर, विशव श्वादक, धनारी After Cents After 20 Att. Carlin 

বিকল্পিত হইতেছে, তুমি আমার হস্ত ধা-রণ কর। চিন্তার পর চিন্তাতে ভয়ের পর ভয়েতে আমার আনা ছিয় ভিন হইল. षािय थामा-विशेष लका-शेष ७ शकि-शेष হইলাম, এখন ভোমার শীতল হল্ডে আমার মলিন মনকে স্পর্শ কর যে আমার সকল যাতনা বিদুরিত হউক। এই কঞ্চা রুটি বজ বিত্যুৎ আমার হৃদয়াকাশকে অন্ধকারে আন চ্ছনকরিয়াছে ভূমি আমার নয়নের আলোক, আত্মার আশা, চির দিনের সঙ্গল, ভূমি আমার कीतरनद कीवन, आमारक मर्भन मिन्न क्र-ভার্থ কর, আমি ভোমাকে দেখিবার জন্য ৰড় আকুল হইয়াছি৷ হে নাগ্ ভুলিই মেই সুষ্য যাহার আলোকে অনন্ত আ কাশের নক্ষত্র-পুঞ্জ শুভা ক্রিণে অনুরঞ্জিত র্ছিয়াছে।

নাগ! অতীত কালে কত বার আমি
বিপদ্ জলধিজনে ভাসিতে ভাসিতে ভোমাকে ভাকিয়াছি তুমি আপনি ভেলক
হইয়া আমাকে কুলে উপনীত করিয়াছ।
কভবার শোকের রিষমতর আঘাতে আমার
মান্য তরণী চূর্ণ হইবার উপক্রম হইয়াছে
পুন্ধীর ভোমার আদেশে নিমেনে সক্লি

निक्क श्रीमाण क्षेत्रात्व, कृतिश्रावात कवि भाषां (सके करूपा अर्थान करें।

ে শেষত শাৰ্ক নিকেতন প্ৰায়ে क्षामात्र शुक्क स्वता स्थितः महिल गाम् **य** पूर्व बहुक हरेरिक कीठ हरेर नी, कामि অয় সমাৰ্থ্যের অতি লক্ষ্য না রাথিয়া তোল মার আদেশ প্রতিপালন করিব। এই मभरत তোমার নিকট কেবল आর্থনা যে শোকাতুর ক্লায়ে অঞ্চ পূর্ণ নয়নে ভোষার করুণার উপর নির্ভর করিতে যেন কথ্ন লজ্জিত বা বিশ্নত না হই এবং তোমার আক-পট পিতৃ-ক্ষেহের অতি আমাদের বেন-কোন সংশাস না থাকে। কত লোকে তো-মার নত্য প্রতিপালন করিবার জন্য প্রস্থ निष्क व्यक्ति-नियोग अहे वह यद्भार भंडीत নিক্ষেপ করিতে ভিলার্দ্ধ সমুচিত হন নাই। জোমার আতিই ভাঁঘাদের এক মাত্র লক্ষ্য. দেই শ্রীভি অবলয়ন করিয়াই তাঁছারা পুথি-ৰীর কঠোর নিষ্ঠুরতা সন্থ করিয়াছিলেন, এবং এখন ভাঁছারা ভোমার প্রীভিতেই নিময় হইয়া সকল জেশের পুরস্কার লাভ করিতেছেন। আমার তুর্বলতা ভোমার নি-কট অৰিদিত নাই, আমি তোমারই মারের चिक्कुक इरेन्ना এकान्छ विश्वन्छ स्पटन व्यार्थना করিতেছি আর যেন তোমা ছাড়া ইইয়া নিশাএল্ড ব্যক্তির নাায়, এই ভয়াবহ নংসারে বিচরণ না করি, ভুমি আমার মৃতপ্রায় আত্মাতে জীবনের সঞ্চার কর। ছংখ বিপদ্এ পৃথিবীতে নহা করিভেই ≑ংবে, ভাহা ভোমারইং মেরিড, ভাহা <del>খ</del>-র্ঘের পরীক্ষা, পর লোকের নোপানা বেছি ছঃথ বিপদ্ ভার জোমার ভরম্ম হিন্ন জীক नरे नाथा मटक मखटक तस्य कतिय, किक यथेन क्षणकात्र एक भन्नीत व्यवनात्र भाषा শরিমাত হইবে, ভ্রম যেন ভোমার চর্ঞ-ছারার বিশ্বাস পাই।

## উপাসনা।

গতবারের পতিকাতে প্রার্থনা কার্যার নিষেধ্বর নিরাকৃত হইয়াছে। প্রার্থনা যে স্বাভাবিক, প্রার্থনা যে অর্চেন্টাসম্পন্ন, প্রার্থনা যে ঈশ্বরের আদিই ও নিয়মিত কার্যা, প্রার্থনা বার্তাত যে আত্মার উন্নতি সন্ত্রাবিত নহে বোধ হয় তাহা এক্ষণে অনে-কেরই প্রতীতি হইয়া থাকিবে। অতএব মুমুক্ষু হইয়া ঘাঁহারা এত কাল একান্থ-তালাত ভিত্তে ঈশ্বরের অনোঘ সাহায্য প্রার্থনা করিয়াছেন অবশাই ভাঁহাদিনের প্রিক্র সংকল্প সিদ্ধ হইয়াছে, অবশাই ভাঁহালা যথা-পরিমানে আত্মার উন্নতি কার্য করি-রাছেন।

কিন্ত বৰাইই কি আমাদিনের কাৰা
উপযুক্ত উল্লিড লাভ করিবাছে? যথাৰ্থই
কি পাৰ্থনা হালা আম্রা উল্লেখ্য হরন-ছালা
লাভ করত আহোদভিত নেম প্রমান
প্রান্ত কর্মনান্তির নেম প্রমান
প্রান্ত কর্মনান্তির ক্রেন্ত বৈশ্বনান্ত্র
নাম করে উল্লেখ্য ক্রিয়ের ইংশ্বনান্ত্র
ক্রিয়ের ক্রেয়ের ক্রিয়ের ক্রেয়ের ক্রেয়াল

ক্রই ৰূপ বিবেচনায় কন্ত কন্ত নির্কোধ ব্যক্তি আত্মায় ও প্রার্থনার প্রকৃত তন্ত্ব না অব-গত হইয়া উভয়ের প্রতিই উদাসীন হয়,এবং পরিণামে উভয়েরই অগোরব সাধনে প্রবৃত্ত হয়। প্রার্থনার সফলতার জন্য যে যে বিধি পালন করা উচিত তাহা না পালন করিলে ভাহাদিগের চেটা যে অকৃতকার্যা হইবে ভাহাতে আর সন্দেহ কি ? অভএব প্রার্থনা-বিপক্ষ এবং প্রার্থনা-সাপক্ষ উভয় পক্ষের বিবেচনার নিমিন্তই আমরা প্রার্থনা সম্জীয় নিশ্ব-লিখিত কভিপয় বিধি নিদর্শনে নি-

দ্রী সামর প্রার্থনা করিছেছি মান रमेत जीतर्ग किने हुन छात लाक्छ रहेत्रहर १ स्थार्थना कानीन कि बारानि-(श्रेष्ठ अटन जिल्ला महारा विक चीव **च**ार अंदर्गाय क्रांसिक बहेबारक, ध्वर ज्लाहा नियां हिली फिक स्रेश कि शक्तिवादश्त करा আসর। ভাষার প্রসাধ অকাজন। করিয়াছি ? व्यामानियमंत्र व्याच-विश्व किलाना ? मनल निम मानाविथे नारमातिक कार्या दनक मनदक নিযুক্ত করিয়া অবকাশ কালে আরামাও স্থাবের অত্থেদণ করি; বন্নসাদিশোর নিমা মং-দর্গ, জ্রী পরিবারের মধুরালাপ, আহার বিহার ইত্যাদিতে নিমগ্রহর আখানুদ্ কান ও আত্মার অভাব সকল বিশৃত হই, এবং অৰশ্য-কৰ্ত্তৰ্য কৰ্মায়ে উপাসনা তা-হাকে নিতান্ত ভারবহ জ্ঞান করিয়া ক্ষণ কাল শুনা-ছদরে শুনা বাক্য ছারা কপট প্রার্থনা দাঙ্গ করি। পরমেশ্বর অন্তর্যানী।কে কি ভাবে ভাঁহার সমীপে উপনীত হইভেছে, कि मदम काँहात माहाया आर्थना कतिएक ह िंकि विष्य किए छ्रुमाछ हे कानिएक খদাপি হৃদয়ে ধর্মাভাব না বেধি क्रिया क्विन सोथिक आर्थन बाहा कर्डवा জ্ঞানকে পরিভৃপ্ত করিয়। থাকি, তবে ফি আসরা ধর্ম লাভ করিবার উপযুক্ত যে **ই**-শ্বর আমাদিগের সেই প্রার্থনা পূর্ণ করিবেন ? विश्वरतत व्यक्तांदर, धटर्मात व्यक्तांटर रच वार् কুল হইয়া জগৎকে অন্ধকার দেখে ঈশ্বর डार्शात थार्थना पूर्व करवन, व डाहारक দেখিখার অভাব বোগ করিতে শিবেং দী তাঁহাকে লাভ করিবার তাহার অধিকার নাই। অতএব এত কাল প্রার্থনা করিয়া বে আমরা ভাদৃশ আআর উরভি লাভ ক-तिरु शांति नाई हेश (रादन जामानिद्योतहे অপরাধ, বাত্তবিক একাল পর্যান্ত অমিরা बङ्गान्य मार्थनारे कति नारे। यक मिन

and banes of the particles of THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE YEAR विश्वीपक बदल अवस्थित विमान क्रमदक्की श्रा निकटे व्यक्ति। कतिएक मानिकामः जिल् **एके जाबा**त जाबादन जाबात कारणा ব্যাকুল চিক্ত হইয়া উচ্চার অসাৰ জিকা क्रिकांब कहा हरेटन का पिटन व्यामानि-বের হানর কেম্ম পবিত্র হইড, জীতি কে-থন ধাৰত হইত, জ্ঞান কেমন স্থমান্তিত হইত ৷ াকিন্ত উপাসনা কালীন অবাৰস্থিত विकास अ जमानीन किस थाकि विनग्नाई অন্য পর্যান্ত আমাদিণের এরপ আন্তরিক प्रतिकाताः व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्ति विवि আন্ত্ৰানু সন্ধান । এবং আত্মন্ত ন । । যাঁহা-क्रिटशत व्यार्थामात मकन्छ। मन्मर्भन कतियात অভিনাদ আছে, প্রার্থনা যে কি গুরুতর कार्या र प्रश्नीता य श्रीत मसुर्यातहे कछ মঞ্জ সাধ্য, ভাষা ইাছাদিগের জীবনে প্ৰ-রীকা করিবার ইচ্ছা আছে তাঁহারা চেকা कतिया व्यापनामिटलत गृह व्याভीव महन জ্ঞাত হউন এবং অকণট ভক্তিভাবে পরম প্রিভার নিকট প্রার্থনা করুন, এই আমাদি-গের অনুরোধ। এই প্রকারে কড লোক পাপাক্ষকার হইতে মুক্ত হইয়া মঞ্ল-অৰূপ পরমেশ্বরের মুখ জ্যোতি দেখিয়াছে; এইং চিরকাল দেখিবে তাহার আর সংখ্যা নাই।

কিন্ত কেবল অভাব জানিলেই হইবে
না তাহার নিমিত্ত ব্যাকৃল হইয়া ভলিবারণ
চেন্টা পাইতে হইবে। অনেক ভ্রম্কারী
ব্যক্তি আপনাদিগের ধর্মাভাবের বিষয় বিলকণ অবগত আছে, এবং তফানা সময়ে সময়ে
অন্তরে ক্লেণ্ড পার, কিন্তু কিন্তুল ভ্রম্ভার
নিনিত তাহাদিগের মনে কিছুমাত্র ব্যক্তিতা
বা চেন্টা জন্মে না ভাহার পালেক্সাত্র
আজ্ঞানি সত্ত্বত চির্কাল পালে কিন্তুল
আজ্ঞানি সত্ত্বত চির্কাল পালে কিন্তুল
আজ্ঞানি সত্ত্বত চির্কাল পালে কিন্তুল

THE WAS DESIGNATED AND WAS eta, are stant at feath attach THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF wit that the transmit of the first to the CWINIS ACA NAMES OF MEN MEN WEST बद्ध नाम निकास नामाना किया कहा क्षरं रजागांक जार्यना गूर्न रहेरन, काइन रव टीरात बना धकार मेंब रीन रत कारादकर তিনি শাক্স দান করেন, তিনি অভি বটতুর धन, निजास चाकिकन ना कतित्व सार्वादक থাপ্ত হওরা যায় না। অতএব প্রার্থনার विजीव विवि वार्क्नजा। यमन व्यक्तित्वेत অন্তরন্থিত পাপ-সমূহ অবগত হইতে চেকী করিতে হইবে, ভেমনি ভলিমিত ব্যাকুলভা ও কাতরভাকে অবশয়ন করিতে হইবে। অভাব জানিয়া কাতরত। সহকারে যে তাঁ-হার নিকট প্রার্থনা করে তিনি ভাহার প্রা-र्थमा मकल करत्न।

কিন্ত কেবল ব্যাকুনতাতেও সকল কাৰ্য্য শেষ হয় না। আপনার পাপের জন্য যেমন বাাকুল হইতে হইবে তেমনি প্রার্থনা কা-লীন ঈশ্বরের মঞ্জ ভাবের প্রতি বিশ্বাস রাখিতে হইবে। পাপ-ভারে ভগ্ন হইয়া শোকাকুল হৃদয়ে বৎকালে পরম পিতার নিকট আর্থনা করিবে তথ্ন যেন তাঁহরি প্রতি একান্ত নির্ভন্ন ও তাহার মাতৃ ভাবের প্রতি একান্ত বিশ্বাস থাকে। আমার আ-থনা-বাক্য, আমার কাতরোক্তি পরম পিড়া अनिर्वम ना, यं किन देखी कहिना रक्ति कारणहे शार्किक स्टेट्ड शाहित मा, खेळाकांच जार रहेट गर्सनार बाबादन प्रकार तिरय । यश्रन (य व्यार्थन **मध्रम जाट्य के श्र** CBS निक्छ निट्यक कड़िट्द विषय हिंदन र्शशाह राक्षण अक्षण केतिर । १ प्रकार TABLE IN CONTRACT OF FULL PARTY

विकास कटरम नो अनि त्यामा समया क्षामांकड ताथु छात्र भाटक, यति कक सार्वे সরল চিত্রে তাঁহার নিক্ট স্বীয় শভাব ध्यक्षण क त्रिष्ठा बीजन हहेट ज जान, भारताहे তিনি ভোষাকে ব্ৰহ্মা করিবেন। হা। তা-হার অবস্থা কি শোচনীয় যে শোকভারভয় श्रुनदत्र प्रश्निमि नेश्वरतत्र मिक्छे व्यक्ति। করিয়াও মনে করে শুনো রোদন করিলান, কেহ আমার যন্ত্রণায় কর্নপাৎ করিল না, ঈশ্বর আমাকে দর্শন দিবেন না, আমি ভাঁ-হার তাজা সম্ভান, চিরদিনই আমি চুংখ-मार्वाधिदक मक्ष रुश्व ! रा : तारे वा कि मोडागाभीन, त्र द्वःश विश्वतः मुक्तना পরম পিতাকে নিকটে দেখিতে পায়, এবং তাঁহা হইতে নিজ প্রার্থনার সায় পাইয়া, ভক্তি কৃতজ্ঞ। বিশ্বাদে পূর্ব হয়। তখন ा मदन करत स्य यनि अवामि नीन छुःशी, যদিও পাণে অপবিত্রভায় নিতাম মলিন, ততাচ অনাথ নাথ প্রমেশ্বর আমার প্রার্থনা ार्ग कतित्वन, जागात्क छत्रा श्राम मि-লেন, আমি চিরকাণ তাঁহার প্রতি ক্রতজ্ঞ থাকিব, চিরকাল ভাঁহার পদানত থাকিয়া कीवनदक मार्थक कतिव।

যাহার। ভ্রম ও কুসংকার বশতঃ তাঁহার
মঞ্জল তাবের প্রক্তি নির্ভর্তনা করিতে পারে,
এবং টাঁহাকে ত্রস্ত-রাক্ষম-সমান রোশপরবশ, বা অভিনান-যুক্ত মনে করে, তাহার।
দেবাক্তর কংপনা করিয়া কল্পিত উপারে
তাঁহার নিকট অনুগৃহীত হইনার অভিনন্ধি
করে। অথবা এতালে কুনংকার বিব্যক্তিত
হইয়াও যাহালিকের আখনার প্রক্তি একান্ত
হুখা নির্ভন্তনান করেই কার আখার
ট্রানিক্ষন ননেকরে কর্মাই কার আখার
ট্রানিক্ষন ননেকরে ক্রমই কার আখার
ট্রানিক্ষন নাকরে ক্রমই কার আখার
ভ্রমীন ক্রম্বার ক্রমই ক্রমীর আখার
ভ্রমীন ক্রমীন ক্রমীর আখার

প্রদর্শিক করে। কিন্তু তাঁহারাই তাক্ষ ঘাঁ-হার আপুনাদিগের ছুরবাছা ও মলিনতা দেবিয়াও পঞ্জিত্ত বিশ্বাদে প্রতিত-পাৰনের পবিজ্ঞার প্রতি নির্ভন্ন করত দিবা নিশি কাতর-স্বরে তাঁছার নিকট প্রার্থন। करवन, এবং निश्मश्मद्य किटख (सहे धार्यनात्र সকলতা প্রত্যাশা করেম। 🤻 দীশ্বরের ক্রোধ পরিতোষণের জন্য **ঈশ্বরারভার** चनृक्ते-शूख गानरवत चाताधना कता छाँ।-मिटनंत्र शत्क व्यावभाक नटर, कांत्र**ा नेश्रंत** নর-দেহ গ্রহণ না করিয়াও দীন ছঃখীর হৃদয় কুটারে নিয়ত অবতীর্ণ রহিয়াচেন,এবং কা-হার দার। অনুরুদ্ধ না হইয়াও তাহার রোগ শোক মুক্ত করিতেছেন। অতএব বিশ্বাস, প্রার্থনার দক্ষকার প্রতি বিশাদই প্রার্থনার ज्जीप्र विधि। यथन त्य विवद्यंत्र स्नान श्री-র্থনা করিবে তথ্য ঈশ্বরের সাহায্যে সেই বিষয় দিছা ইণ্ট্রে এনত বিশ্বাস করিবে; विश्वाम ना कतिहरू व्यर्थिना त्रथा।

কিন্তু অভবের অভাব অবগত হইয়া वाक्ति ऋगटस् विश्वन्द-सद्य आर्थस् कतिहरू छ কার্য্য কালীন চেটা আবশ্যক। আমি यिन छिलाननाइ ममञ् आधार, नहांकूलठा छ বিশ্বাস প্রদর্শন করি, অথচ কার্যাকালে অভানগত পাপে ইছ: পূর্বক লিপ্ত হই, তবে আমার প্রার্থনার বিশ্বাদে ব। প্রীতিতে ।ক কল । সাপ ২২তে মুক্ত না হহবার হচ্ছ। সম্পূৰ্ণৰূপে আনায় চরিত্র ছারা প্রকাশিত **হইতেছে। যথন আমা**র গৃঢ় ইচ্ছা পা-পেতেই ধাবিত इहेल, जेखत कि धामान মৌখিক অর্থনা ভাবণ করিয়া আমাকে পবিত করিবেন? কথনই না। निवाकतरणत कांत्रण लेखरतत निकंछ था-র্থনা করিবে, সেই পাপের প্রলোভন উপ্ন व्हिष्ठ इरेटन श्रोत किको हाता आगमर व सा-মাকে রক্ষা করিবে, এবং তাঁহার সাহাত্য

भूनः अर्थनः कतिरव। जिनि ममरत ममरत है। इत उक्त प्रशास थाली जात मार्था নিক্ষেপ করিয়া তাহাদিপের সরলত। শ্রহ্ণা ও ধর্মান্তুরাগ পরীক্ষা করেন,এবং ভত্নভীর্ণ হই-বার জন্য যে একগুণ তেন্টা করে তাহাকে ভিনি সহ্স্রভূণ হল বিধান করেন, যে এক-श्चन भारत्या व्यार्थन कटत छ। हाटक मध्य ११ সাহায়া প্রদান কংলে। প্রার্থনাও করিব অবচ পাপানুষ্ঠানত বারিক এ উভয় এককালে म अंदर मा। आर्थनः चादात ८७ निगृष्ठ कार्य। গে উপরে সমীলে এফবার ভাছা উচ্চারণ করিকে পাণারুলার করেতে ভবে হুৎকল্প इब्र, कथनरे ७ ाडि व्यक्ति योग मा, অক্ত-ৰূপে প্ৰাৰ্থনা করিলে জীবন ক্ষেত্ৰে ভাষার চিত প্রাশত হইবেই হইবে, গা-পের বিশ্বীশন কটো ঘাইবেই মার্টের সে-ৰল লাগনা জনজনত অনিজ্নেমন্ত হলনে এই ভাৰে লক্ষিত হয় ন) : চেন্টা প্ৰাৰ্থনয়ে চত্য এবং শেষ বিবি । যে পরি**মাণে** প্রভ গ্ৰা গাহিত্যৰ প্ৰকৃত ও আন্তাহিত সেই প্ৰ विशाहन क्षीवन लावेज, मारे लेडिमाएं। পালের বিপরীকে চেন্টা বাবিছ হয় हेश निश्चारमहरू मङ्गा ४८भीत खमन शृहसाव প্রেরও দেইরপ। পাগ-শর্ভি একবার क्रमा:क व्यधिकांत्र किंद्रिश भीष उत्राक्त হওয়। অভাত ক্তিন। ঈশ্বরের প্রতিব্যা কথফিৎ ভক্তি ব'কিলেও পাপের প্রতি অ-विक उत्त छ कि ए किएड शास्त्र, खुकर १ व्या-र्गमान स्थान्त कहेर्ड शहित्र। हिनेहि कार्यमाह कठिन्डम विधि। इं**शेटडरे प्या**-খান বস্থা ও নিপ্রহাতিশর হয়, কিন্তু ইহা ৮৪ম্৪ ক্থন **আত্মার প্রকৃত** উন্তি সম্ভা**বিত** ८८६। अतुम नात्तिवान **अतुरमध्यत्क दक्वन** অবাদ উপহার বা তাকা **উপহার দিলেই ছ-**हेटब ना, किन भीवदमार्शभात विद**ङ हहेटच**, জুমি গে পাপকে খুণা কর,এবং ভাঁখার পাথে

গমন করিতে প্রতিক্ত হইয়াছ কার্যাধারা তাহা প্রদর্শন করিতে হইবে। তবে তিনি তোমার হন্ত ধারণ করিয়া ধর্মামূত-ধামে লইয়া ঘাইবেন, তবে তিনি তোমার ক্ষুদ্র হৃদয়কে প্রশস্ত করিবেন, এবং তোমার ম-নোবাঞ্জা পূর্ণ করিবেন। অতএব কেবল প্রার্থনা করিয়া কার্যাকালে উদাদীন থাকিও না, কিন্ত প্রাণগত চেকা ঘারা স্বীয় প্রার্থনা কে সম্পূর্ণ করিও। এই প্রকারে হৃদয় ঘারা, বাকা-ঘারা, কার্যা-ঘারা এবং চেকা-ঘারা প্রার্থনা করিলেই পরম-পিতার নিকট প্রার্থনা করিলেই পরম-পিতার নিকট প্রার্থনা গ্রাহ্য হয়, নতুবা তাহা অকার্যা-

প্রাথনা কার্যের বিধি চতুঠর নির্দারিক স্টল। প্রথমতঃ আত্মচিতা তারা ক্লনের অভাব এবং পাপ দকল পরিষ্কার কলো জালি নিতে হুইবে, ডিতীয়তঃ সরলভা,কাভরভা ও আগ্রেছাভিশয় দহকারে ঈশ্বরের নিন্দুট দেই মকল অভাব নিবেদন করিছে হুইবে, প্রত্যাপর অভি বিশ্বস্থ বিনীত চিত্তে ভাঁছার দা হায়া প্রাথনা করিতে হুইবে, এবং প্রবিশ্বের চেন্দ্রী ও কার্যা ভারা নির্দিন্ট পাপ্তে বর্থা সাবা পরিভাগে করিতে হুইবে।

এই প্রার্থনা অতি কঠিন কার্মা, ইহারই
প্রতি আমাদের ধর্মা, ইহারই প্রতি আমাদের করিছেছে। সমরে সময়ে
এই প্রার্থনাকে পূনা ও বিফল দেখিয়া
আমরা প্রার্থনিক পূনা দেখি এবং অম
হায়-প্রার হইয়া পরি। প্রকৃত প্রার্থনা
করিবার সামর্থ পুনর্বার ইম্বরই প্রেরণ করেন। এককালেই যে প্রার্থনার মকল ভাব
সমাক কপে সকলের ক্লরে প্রস্কৃতিত হইয়া
উঠিবে এমত আমরা প্রত্যালা করি না,
কিন্তু কালে ভবিষরে সকলেরই উম্বিত ও
উংকর্মভা লাভ হইবে, এবং ভদ্বার্থী সকলের জীবন পরিশুদ্ধ হইবে আমান

দিণের বিশ্বাদ। প্রার্থনী মৃতি ছুবহ ব্রচ, আমরা ইশ্বরের দাক্ষাতে ব্রাক্ষধর্মের দক্ষে দক্ষে দেই ব্রত গ্রহণ করিয়াছি, তাঁ-হাকেই দাক্ষী করিয়া মৃত্যু পর্যান্ত দেই ব্রত পালন করিব। প্রাণ সত্রে তাহার ক্রাটি করিব না। বার্যার বিকল যত্ন ও হত-চেই হইলেও প্রাথনা করিতে বিমুপ হইব না; একবার নাপারি শতবার, শতবার না পারি দহস্রবার তাহার প্রদাদ ভিক্ষা করিব, করেণ আমরা বিশ্বাদ করি যে তিনি দাধু ইচ্ছার সিদ্ধি বিধান করিবেনই করিবেন। তাকিক্দিগের কুমন্ত্রণায়, নাস্তিক্দিণের প্রশাভনে আমরা ভুলিবার নাহ, করিণ তাহা হইলে আমাদিলের আল্লাহত্যার

থতএব হে নির্মাণ চিত্ত সাপু বাজি:
গদি ভৌনার এই সংসার-মোহ-কোলাহলে
নির্মার পাইবার অভিলাধ থাকে তবে অলা
বাধ দিখনকৈ প্রার্থন। করিতে আবস্ত কর;
সংলারের অনিতা বস্তু হুইতে সময়ে ননয়ে
বিত্ত হুইয়া আমানুদকান কর। আমা দোষ
জনা কাতর হুইয়া শীর্ণ হুদুয়ে জিকুকের
নায় প্রতি দিন তাঁহার ছারে উপনীত হও,
এবং সকল আমোদ সকল সম্পদে জলাপ্রাণ
দিয়া কেবল সংকর্ম সাধনেই যান্ন কর,
ভোমার আ্রা পূর্ণ হুইবে।

## কলিকাতা-ব্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা।

भवारित १५৮8 **म्ह**।

माजतः भिष्णदेशेत मांकार क्षाणुकत्वरणाः । मञ्जा धृशे निरंदरतेल गता मुक्त क्षाणुकः ॥

গৃহী বাজি পিতা মাতাকে সাক্ষাৎ প্র-তাক্ষ দেবতা স্বৰূপ জানিয়া স্থা-প্রয়ত্ত্ব স্কান্য তাঁহারদের সেবা করিবেন।

शत्रदमश्रदत्रवरे भन्ने तस्ताव, जिन देशत

भव्य भिन्न। डीशंब मर्खानन्दन्द मर्पा किनि এক এক পরিবারে এক এক পিডাকে আ-পনার প্রতিনিধি-রপে নিযুক্ত করিয়া স্থতি-भूव ध्ववांनी शामन कत्रितनमः अवः निरकत मक्रन-जादित श्राज्यित ए एकर मम्हः তাহা জনক-জননীর বিকশিত ক্রম্যে অর্পন क्तित्वन! धरे बत्य जिनि अ जि श्रीवरात আপন প্রতিনিধির প্রতিষ্ঠা করিয়া তাঁহার এই বিশাল বিশ্ব-সংসার পালন করিতেছেন। ষেমন নভেমেওলে এক এক স্থ্যাকে অব-লগ্ন করিয়া এছ্ উপএছ-সকল প্রজ্ঞলিত तिहराटक, मिरे बल এই गःगात-क्कारक এক এক পিতার অধীনে থাকিয়া পুত্র কন্যার। জীবন ও সম্পাদ্ লাভ করিছেছে। সকলা গুরুর মধ্যে মাতা প্রম গুরু, মাতার স্নেচ ও ছজে প্রথমেই বালক পরিপোষিত হয়। ইশ্বরেই মঞ্ল-ভাব মৃত্রি ক্দলে সেক্-ৰূপে, স্থান জ্ঞাৰণে প্রিণ্ড ছ্ট্য়াছে। मकदनत बनभी मकदनत शांतिकी व्य अहे शु-चिनी, मांका अहे शृचिनी अप्लक्षा अती-য়দী; আবার পিত। তাঁহা হইতেও ওক্তর। অভ্ৰে গৃহী বাজি পিতানতাকে সাকাং দেবতা-স্বৰূপ কানিয়া, ঈশ্বরের একিনিধি-অৰপ জানিয়া, সৰ্ব প্ৰদত্মে উছোৱদেব সেৱা করিবেক। কুগ-পারন মৎপুত্র জীছারদি-থের গাটি রত্ন বাকা ক্রিকেক, ভাঁহারদের শিষ কার্যা করিবেক ও মারণে আজাবস্ धाकिट्यक: मत्माद्वस एक विश्वतंत्री, (बर्-जाकारक रक्षण मक्रम मन्राप्ते करार i ভক্তি কিন্তু দেব-ভাব, তাহা নির চিনী সহে। পশ্চির মধ্যে দেখা স্থেন-চুড়ি কেলন শ্রকা, माविक मिनंदरः श्रीशृही एक मह स्वट्ह एक मन বঙ্গে গালন করে, কিন্তু পিতা মাতার প্রতি নেই পশু শাবকদিলের জ্বান্তাক্তি কোথায় ১ ভাক্তর ভার কেবল মনুসো। ভক্তির ভাব পশুতে নাই , ইহা অভি উৎকৃষ্ট ভাষ, স্থ-

ভরাং অভি বিরুল ৷ পিতামাতা সহজেই পুত্রবিগবে অহ করেন; কিন্ত যহির। সৎ-পুল-কুলপাবন সৎপুত্র, তাহারাই কেবল াপতামাতাকে কর্মব্যান্ত্রযায়ী ভক্তি করে। ঘে পরিসাবে ক্লেহ, দে পরিষাবে এখানে ভক্তি মাই। একটি যে মিউটের ভাব, দেই নিউরের ভারটি ভতি ভাষতে উত্তে-জিভ করে, মেই জনা বালকের বভাগিন পিতার উপরে নিংস থাকে, ৩৩ দিন তার गद्भभद्भ एक एक्टिंड थ्रिका किन्द्र (व या-तक युना इकार्य, कथाकम ७ खायाँम रहेगा। ध्वात हम शिष्टणोष्टारक श्रंक सर्वात रमया करत. रमस् ७ वि निकास स्थल । रेडि- भ भूतदिएउ ०० दर्खभाग गापुमिद्धतः জীবন-চরিতে এখন বাড লাভ দুল্টান্ত আছে মে পিত্রি এন ুমার। অর্থনা কর্মীকার। क्वियार्ग, निराह । कनने कार्यान महात पांडिमिक्। कारो पंजियान हेराह अकर्णि স্থান বিভার প্রাচ্ছ । প্রাম পিতা নটি-क्किन विकि अनुक व्येषा विवरणन स्य ''एड सिंह के यदमहरू निसाम अधन डाका विके ৰ্চিকেতা চিন্তা করিছে লাগিলেন যে পি গ यमि जकीकात करिशेष ध्यस्कुरबाद्य याः बारक रमख्दरन शार्शकेश ना रनन, छाउ উহির কথা দিখ্যা চইয়া উহির সাংঘাতিক অনিট হট্রেক: অভএব তাঁছাকে তিনি विषे (वन-वातः भावत क्रिया निटलन । "भ-भुशका म्या. शृहकी व्यक्तिशका ख्या **शहा। शहा।** শ্বন্মির মার্ডাঃ প্রচাতে শ্যামিরাজায়তে भुगः। 🖰 "भूतं भूतं भुक्रस्यतः गोहः। कतिश লিলাছেন, তারা অনুসাবন করিয়া দেখা; গাও এখনকার সাধু**নজ্জনেরাবে প্রকার** অভিবৰ কবিত চডেন, হাহাও দেখা শাসের नः व मन्या कीवं करेश भारत, व्यद्धि शासात साग नुस्यात जग हार्व करहा। अभन भ-निटा शामादा भिष्या कहितात धालाकन

কি? শতএব হৈ পিডঃ। তুমি আপনার
প্রতিক্ষা পালন কর, আমানে যম-সদনে
প্রেরণ কর।" দেখা তার কেমন পিতৃ-ভক্তি।
আপনাকে যমেরে দিয়াও পিতার ইন্ট-সাধনে তিনি তৃৎপর হইয়াছিলেন। আবার
যম ধখন তাঁহার প্রতি সন্তুন্ট হইয়া তাঁহাকে
বর দিতে অভিলাধ করিলেন, তথন সর্বা
প্রথমেই তিনি বর চাহিলেন যে "শাস্তসংকংশঃ প্রথমা যথা সাহি" "আমাকে
তোমার নিফটে পাঠাইয়া পিতা অভিশন্ন
শোকাক্ষা হর্মাছেন; অভএব সাহাতে
তিনি শান্ত-চিল্ল প্রমনা হন, তাহাই বিধান
কর।" কটেগনিমদের আখ্যাম্বিক্তে সংপুলা ল'চকেহার পিতার প্রতি মনের ভক্তিন
ভাব কেমন প্রকাশ পাইতেছে।

শ্ৰেফ লেড জন্ধ গ্ৰাণণ ভইরা **ঈশ্ব**রের অধিনি দ্বৰণ পিতামা থাকে ভক্তি কয়াই অ'লাধ্যের প্রথম উপদেশ। আম্বানিগের ৰল-ৰীয়া যাহা **কিছু সকলি পিতামাত। ২**-বৈতে পাটয়াছি, পিতা মাতারই প্রতি ভক্তি হক্তি সৰ্ব্ধ প্ৰথমে উপ্থিত ছউক। কুল-পাংন দংপুত্র মর্ক-প্রথতে যেন পিতা মাতাকে মেবা করেন, সর্বন্ধ ভাঁছারদের ব্রিয় কার্যা করেন अ आफ्लावर् थारकन । अचित्रदर्भ मीश्रादम्तः প্রদানাই, যাঁহারা ত্রাক্ষরের শাসন ও উপদেশ অবহেলা করেন, তাঁহার৷ হয়তো বিলার গৌরবে পিতা মাতাকে লঘু জ্ঞান करतन, व्यथन। धन मरम मञ्ज इरेन्ना औहात-দিগকে অবহেলা করেন। হে প্রিয় ত্রান্ধ-সকল। ভোমরা কদাপি এমন গহিত কর্ম করিও না—তোমরা বিদ্যা-মদে বা ধন-মদে উমত্ত হইয়া পিভূ-ছেলন করিও না। ভো-মরা পিভামাভার আত্মরে থাকিয়াই বল ৰীৰ্যা, বিদ্যা বুদ্ধি, উপাক্ষণি করিরাছ এবং ভাঁহারণের প্রমাদেই ধন মান প্রতিপত্তি যাহা কিছু লাভ করিয়াহ; অভএব ভাঁহার: দিগকে অবহেলা বা পরিতাগি করিও না।
তোমরা রুদ্ধ পিতামাতার যতি-অবপ হইরা
আমৃত্য তাঁহারদিগকে রক্ষা করিবে; এই
মনাতন রাজধর্মের আদেশ। যদিও জোমাবদের প্রতি তাঁহারা বিরক্ত হন, ও তাঁহাদের সেহ অল্প হয়, তথাপি ভোমরা তাঁহার
প্রিণ আচরণ করিবে, তাঁহাকে সম্বিক্
ভালি করিবে। 'খং মাতাপিতরো লেশং
দহতে সন্তবে নৃণাং। ম তদ্য নিস্তি
তাকা করিবে। গলমা হল করেন, শত বল্দা
থেও তাহার পরিবেশির করিতে কেই শক্ত

খল হইতে পরিভাবেপর বিষয় আরি কি াণেড ে ছ:গীল ও স্থার্থপর পিতার দোবে भारतक भाग मध्भण करेटच छाछे दहेसाट्ड, , এবং তাঁহার জামনে ও দুব্রীতে তাহার। वर्षात्राञ्च परिचयन कतित्व योवित्र बहेन খাব্র ৷ কার্যে প্র বৃদ্ধি ভাগ্য জন্ম সর্ব रहेल, महावानी उनगवतान् इ उचाधतात्। ব্ৰাফা হুইল, ভবে ভাঁহার গুলের ও কো-দের আর পরিংশ্য পারেক না । ভিনি সেই অসংখ্য নিজপায় ্বলিককে দেব-মেবা ধর্ম-পথ হইতে অন্তম কুটিশ্বতম পথে আনি-ধার জন্য তাঁগার আহতি নিরবধি নির্যাতন कतिएक किष्ट्रमाल क्विंगि करतन न।। পিতা কণাপি পিতাই নাহেন, তিনি মঞ্ল-নিকেতন ঈশ্বরের প্রতিনিধি-পদ ধারণ ক-রিবার উপর্কু নহেন। যে পিত। সংমারে প্রতিপত্তি ছানের ভয়ে তাঁহার পুত্রের ধর্ম-পথে কণ্টক আরোপ করেন ও অধর্মা-চরণ করিতে শিক্ষা দেন, তিনি তাহার ভক্তি-ट्यांडिक अरक वांद्र गम्दल खुक कदतन। পর্জব্যাপহারী, নান্তিক, শঠ, মিথাটোরী, প্রবঞ্ক,বিশ্বাদ-ঘাতক, রুভদ্ন পুজের নিকট रहेट निजा कि कर्नानि वार्थहीन व्यक्त

ভক্তি অত্যাশা করিতে পারেন? সে যদি কামোপভোগে মত্ত হইয়া তাঁহায় শিরণ্ডে-मन मां कटत. उटत डिनि कीवन প्रशिश आख्वारिक ज्ञा कत्मन। मत्या मत्या कि এমন প্রবাদ ক্রান্ত হয় না যে কোন পুতা নদ্য পানে উন্মন্ত হইয়া ভাহার পিতাকে গদি 🗓 जित ममत्य वाणि इंड्रेट वश्किक कतियाहिः কোন পুত্র বা ধন-গোলে ভয়কর পিতৃ-হত্যা-পাণে নিপতিত হ্ইয়া সকাছোভাবে বিন্ট इज्यादिकः। भूछ वर्गभीन इज्देश शिकात वृक्त तम्रागत वर्ष म। इतेवा माक्रमे स्ता। धा-ভেত্র পিতা বলি ভোৱা আভিবায় করেন, **उत्त वर्ष-मा बरमहरू धमा श**ावहवायो करे-रवम भा, चेति कर्नरकात खाँछ । एत-कृषि हाथितः छेपदन्य ७ कृष्णेष्य घोतः अस-ध-গতের ভাষ্ত্রক জ্ঞান ধর্মের শিক্ষা দিবেন এবং ভাষার সন্ধান-দক্ষা উদ্দাপ্তা করিবেন। ভনেই পিডার গুলের প্রতি কর্টনা কথা सम्भन्न कः। स्थेतः, ७७९ श्रुः ७ आग भटमा सुभिक्किक क्षेत्रा, कीहात धक्ति महत्वर् যথোচিত ভতি ও অমুরাণ প্রকাশ ক্রিন্।

स्कृति शहरा निवक कति है। भित्राल, उन् स्कृति शहरा निवक कति है। भिन्नाल, उन् छि असरे भिन्न मान्यात हरेगा प्रकृत करतन, छे-इस्परे एक मन्यात हरेगा प्रकृत करता मन्द्र वर्ति-करता मन्द्र ति स्वात इस्ति मन्द्र वर्ति-वृति मन्द्र वर्षात छात्र घनस्य करा। वर्ष-एएका मञ्जा श्रीतन स्वति करा एका मन्द्र वर्षात इस्ति श्री इस्ति मन्द्र विकास करा एका प्रति करा भूषा करिया हो सादक बसानान भिन्ना क्रांच्य इस्ति।

ও একমেবাদিতীয়ং

---

#### মনো বিজ্ঞান।

মনের অন্তর্কেশে প্রাংশন করিল আজি-জ্ঞান সহকারে অনুসন্ধান করিলে তিন विकास जाव अञ्चल इह, क्लार्टरीक, হর্ষকোভবোধক এবং পেছে। বাধক। भरमन यह अकात अवदा मध्यक्ति च इत्री चारक उरमधुना एके अञ्चलका एकान मार्कान ८वानीत अञ्चल ४ ४३ हम् ३ ४४ ह्या । ক্ষান, ভাহপারে ক্যান্দেশ্যন, চ্রিনোর্য স্থেকা। कि अकार जाकिया (कोनल मध्यादा िश বিষয়ন্ত। মানবের সংগ্রিন্থনারে সংগঠন ক বিল্লাডের ভাষে মালবের পরেক্ষ সমাক্ষাপে 'मसुधारम केलिए हैंगे। कुश्माधा । निष्क्रम क्षेत्रक्षकोत्र भटना, (क्ष्णोटन कार्बाद ०द्व ভিন্ন এব কাটার ৮৮ প্রেশে ক্রিজে পাচর मा, अपने भूधेर स्थान कि करानी अनुपाहिक शक्त और के बन्दर्व ८० सभू ताक भव्यक्तिक कति। েন জ্ঞাকে আলোচনা কাব্যা উঠিছে শাবে। সেন অনু শতে পালানেশ মান্তীয ५६,स-७% हेर्ने । है। श्री अन्ध्य मा ५-८०% ্রকে আরু হ ক্রিবর জন্ত নিজ্ভাত নিলায় জগৰাং বিষয় কাৰ্যনোলা সংভাগন নবিয়ালে নানাবং পরার সংক্ষার বৃদ্ধির আন-জে নাম, নি শহরের রচনা কৌশল এক কালে मभाक कार ( १३३ (८८ '८) । वीक स्टेर्ड (धमन সুৰুল উহপুর ভার, ভুলার **হইতে যেমন ব**ারি উৎপন্ন হয়,ফ(চনাপুর্ন শরীর মেইব্রুপে উৎ-পন হইয়াছে, এবং বৃষ্ণাদি ঋৰিতা প-দাথের মত এক দিন ভূমিদাৎ হইবে। কিন্তু জ্ঞান প্ৰীতি পৰি দকা, হৰ্ম ক্ষোভ স্বাধীনতা, চদত্ত্রত মহান্ অবিনশ্ব জীবাতা, এবং ভাষার ডেজ্বপুঞ্চ চেড্নানর নিয়মাদি কি প্র-কণ্ডে কাছার ছার' কোনু সময়ে সংরচিত হুট্ড ৷ যুদাপি ঈপুর সেরাপ ক্ষর দি**তেন** ভবে সদাঃ অস্ত শিশুর অন্তরে অবেশ ক-

রত বিজ্ঞানবিং মহান্তারা মনের রচনা প্রণালীকে হালাত করিয়া জাগতের জ্ঞানকে উজ্জ্বল করিছেন। কিন্তু ভাঁহার ইচ্ছা অন্য প্রকার ভিনিরারত শিশু-হাণয়ে অলক্ষা ভাবে পর্মাণালা স্থীর প্রতিকৃতি মুদ্রিত করিয়া চলিয়া যান,উণায়ুক্ত সময়ে ভাগা জ্ঞান প্রীতি ইচ্ছা দশ্যন জীবালা ক্রপে প্রকাশিত হয়, এবং খাদর্শাক্ষত স্থমহান্ কীর্তি নংস্থাপন পুর্বাক্ষ জ্যোর ভেয়ের গ্রের ।

আমাদিবের বিজ্ঞান ঈদুশ মান্দিক প্রিপ্রকারতা ভিন্ন আর কিছুই এছণ ক েতে পারে না। এবং কদস্তুষায়িকই আমর। বিচার করি যে মধ্যবের মন সংস্কীর দকল ভাৰত ভাৰ, গ্ৰাকোল এবা গেছা, এই लिलिवन्द्रमा विकास । केस निद्यंत माधा % ५३ मद्र ध्यंत्र ख्याद्र इस- क्यां ७, ध्यः প্রিশেষে থেছে।। যে কোন বিষয় সময়ে इंडिक .कां 🤊 यः व्यास्तान गरेताः। भूदस्य ८म हे विक्तारकु प्रविश्व वः सन्य एति। ज्वान-दर्भाएत कतः আন্ত্র , এবং ভাছা অহণ বা পরিচাপে ক্রিবার ইজা হই গার পুরেষ ভদ্দানে ধর্ম ন কোভ বত্তা অনুশাক: মনে কৰ আমি একটা অভি স্থান্তর পাণার্থ ধারকোকন করি লাম, দেপিবাঁড় ভাষা আমার জ্ঞান-গোচ্ছ হট্ল, এবং ভার-গোচর হট্রা**মাত্র ভারার** গৌন্দ্য জনিত আশার মনে হর্ষের উদ্রেক ছাংল, এর॰ অভঃপর মুক্তা **ছা**রা **জন্ম বা অপর** কোন উপায়ে তাহা এ*ছ*ণ ক**রিতে ইচ্ছা হইল।** পদ্ধর বস্তু মঙ্গল্ধে যে ৰূপ কুংসিত পদার্থ तप्रदक्ष व सूर्विक (महेब्रामा वाह **बर क्लान**-বিষয়ক ভাষ্টয় মনুব্যাল আছাতে প্রথমে জন্ম এ০ণ করে, জানের প্রকৃতি অনুযায়িক হণ্ণবা গেনাডের ভাগ অভংপর আহার

সরণ করে, এবং পরিশেষে মনের ছথের বা জংখের অবস্থানু বায়িক মনে তরিহিত ইক্ষা জয়ে। মতএব মনোবিজ্ঞান আলোচনার প্র- বৃত্ত হইয়া প্রথমতঃ আমাদিগকে জ্ঞান সম্ব লীয় ভাবৎভাব ও প্রবৃত্তি নিরূপণ করিতে হইবে। এক আত্মটেতনা এবং আত্মজানই আমাদিপের অবসম্বন, সেই কঠিন এবং তুর্ন-বছার্যা অস্ত্র ধারণ করিয়া আমবা অতি সাব-দানে বিজ্ঞান-ক্ষেত্রে উপনীত হইতেছি, ভ্রম-ক্ষপ অসং কল লাভ না করিয়া যাহাতে প বিশ্রম ধারা দত্যের অমৃত ফল লাভ করিতে প্রায় ইচাই আমাদিগের উদ্দেশ্য।

## राङ्ख्याभिनी।

५१६ स. या शक्तिकात हर शक्ति शहा

ন কলেজন বাজর বল্পকাল স্বাধী ভিল, উচোর সহায় উজ্জিনীর অধিপতি লষ্ঠ্য লে চ, ন্তরিড হুইলেই প্রজাসকল ক্টিচার হুছি অমাস্থান প্রকাশ করিতে আন র র করিন। এবং ভাছার। মুদ্র ভূপতির व्यक्तक के छता, चिल्लाही अवतरमगरक चार न्त्रांन कतिल। धारहरान रेमना मांग्छ गए-গ্রহপুর্বাক কাশ্মীরাভিদ্নতে গ্রহন করিলেন। মাৰ্ভ্ৰু স্থায় রাজ্য রক্ষার্গ কোন উদ্যোগর करवस नारी, अहे काडू धारतरमम जमाराधारम ও বিনাধুকে রাজাধিকার করিলেন। ম<sup>া</sup>-कुछल जिल्हामन्। छ हहेसा दास्त्रमी श-মন করিলেন এবং ভগায় ধর্মা,চরণ ও ইন্ট-সাধনেই কালাভিপাত করিতে লাগিলেন। তিনি প্রায় পাঁচ বৎসর রাজত্ব করিয়াভিলেন। প্রবরদেন অতিশয় প্রজারঞ্জক ও বিক্রম-শाली गतপতि इहेतां ছित्लम, তिमि छेज्जितिनी নগর আক্রমণ করেন, এবং তথাকার আগ-পতি বিক্রমাণিড়াভনর শীলাদিভাবে যুক্ত প্রালয় করিয়াছিলেন। এই সময়ে তিনি উজ্জারনীর বিখ্যাত ছাত্রিংশৎ পুত্তিকাল-क्ञ भिश्शंगन श्रीय ताक्षधानीटक वहेता शि श्राष्ट्रितन। जिनि क्षिनश्रहत्क मान्। ध्यकात

মুন্দর ও ছতন অটালিকা হার। হাংশাভিত করিয়াছিলেন । প্রবিদেন ৬৩ বহুনর বাংশিয়া রাজ্য করেন। ভারাক পর তা-নাষ্করে তহুপুত্র ও পেটিল গুলাছির অন্ধর জাদিতা রাজ্যভার ফরন করিয়াছিলেন। ন-রেন্দ্রাদিতার পর ভারার জাতা রালাদিকা বিংহাবনস্থ হয়েন। ইতিহাস লেপক গ্রি নার্মাজ হকান ভিন্নত বহুসর লিখিয়াছেন, কিন্তু ইচা কল্পি স্টালিত নহে। বোপ হয় এই শির্মাকার গ্রামাজিক বহুসর লিখিয়াছেন, কিন্তু ইচা কল্পি স্টালিত নহে। বোপ হয় এই শির্মাকার গ্রামাজিক বহুসর লিখালিক করিমাছিলেন ভালাকের নাম ত ইনিচন্তের কোন স্থান্ন, প্রিশ্ব ইত্রান কোন আন

होंचे किया अमरोत् ग्रेशेय विद्याल करा लिशत वेजिशाम व्यवस्य व्यासासकातीः विष्ट भित्रपूर्ण, विष्क स्टाइन व प्रत्य प्रत्या कर्ना थः।तश्वकः। ज्ञानतीनरामात्रः शतः विः जन्मानिका ७ व्यव्यक्तिक राज्य कर्ता ५० नांकिता महाउन्ह देशितांन ६ भूक महत् र्राम्बर विश्वारिक (छट्टाबर, रिकॉन) न ओहत दशेरक रेमसःग्रीमसः ग्रामकिर्गन्तः अकारा 有實施 电插 不有性 网络布里西亚约尔 河頂 করিয়া ভখাল আন কাঁতো চিব সক্ত क्षाक्रम कराव क्षित्र हाराज बहुत দিক্তেল অব্যাত্ত প্ৰাণ ছবা, এবং প্ৰ গোনক সংক্র গের ভূপতি চুচ লল ্ रेमनका ५ । इस्ताहासम्बद्धाः १८८१ है। है। শ্বে অগলালয়ে, বলিয়াছিল, সে উট্টো প্রতিহেল্যার ছার। ভার বংশার ১৯০ का भौतिक विश्वभाषा स्थापन राह्यक। क्षांका खंडे खंडगाद व्यक्तरक वार्थ करिव्यं निम्छि श्रीप्र क्याटक आहाराईक दर्धा भागा किछ रिम्ब्लिबक्षर फूल्डब्क्रिंग मन মক এক জন ভূপতির প্রিয় সভাসন ভূপ-ব্লোর মাতিশয় আহি- খান্ধন ইট্টাছিলেন,

এবং গোপনে তাঁহার পাণিএহণ করিয়া-ছিলেন। স্থতরাং রাজার মৃত্যু হইলে পর অধান কর্মচারিগণের মহায়তায় তিনিই রাজাাভিষিক্ত হইলেন।

छूल छ-वर्षान करकी ने नारभंत वर्रमाख्य ছিলেন। ভিনি স্বয়ং ধর্মপ্রায়ণ জিলেন এবং প্রজাদিনের ধর্মোলতির প্রতি বিশেষ মনোলোগ করিছেন। তিনি ৩৬ বৎসর রাহ্রত্ব করিয়াছিলেন। ভাঁহার পর তৎপূজ প্রতাপাদিতা রাজা হন। ইনি সীয় নামে এক নগর স্থাপন করিয়াছিলেন এই নগর অপে কাল মধ্যে অভিশয় সমৃদ্ধিশালী হল্-शুছিল। এই নগর মধ্যে নোনা নামক এক জন মহাধনাত। বণিশ্ বাদ করিত। এই বাজির মণিত রাজার পর্ম বন্ধুত্ব হই-য়াছিল। এক দিব্দ বাণ্ক নরপভিত্র নিমন্ত্রণ ছারা সীয় গুলে আহবান করিয়া রাজি কালে দীপালোক পরিবর্তে রাশীরত হীরক হারা গৃহকে আলোকিত করিয়াছিল। ताकः हेरा (नरिया वाक्या ७ सर्व भून-কিত হইয়াছিলেন, ইতাবসরে বণিকের এ-কটি প্রম কপ্রতী ভোগ্যা নারী অক্সাৎ রাজার দুটি প্রেণ পতিত হইবা মাত্র রাজা াল্য কণ লাবণ্যে একে বাবে বিমোহিত-(५% क्षेटलन। কিন্তু লজ্জা ও কলঙ্ক ভারে স্বীয় মনের ভাব ব্যক্ত করিতে অসক্ত হুইয়া উপস্থিত মনে।বিকারকে দমন করি-লেন। পরস্ত ভাহাতে তদব্ধি তিনি বিষম রোগে আক্রান্ত হইয়া শ্যাগত হইয়া প-ড়িলেন, এবং ভীহার প্রাণ পর্যান্ত সংশয়া-পন হইয়া উঠিল। ইহাতে বণিক্রাজার মনেবিকারের ও পীড়ার কারণ অবগত **অবিলয়ে । সেই যুব**ভীকে *ন্*-হ্ইব্যাত প্ৰদেশে প্ৰেরণ ক্রিলেন। কিন্ত মুপ্ত ধর্মভীত ছিলেন তিনি পর জ্রীকে এহণ করিতে অস্বীকার করিলেন। পরে ব্লিক্ ভূপতির সহিত্ত অনেক তর্ক বিভারের বারা णशिदक त्यारेदन शत, जिनि त्मने नाहीदक धार्ग कतिरवाम, अवर छाहात माम महत्त्व-প্রভা রাখিলেন। এই জীর গর্ভে রাজার সাতটি সন্তান হইয়াছিল। ইহাদের মধ্যে চক্রাপীড় ভারাপীড় এবং ললিভাদিত্য নামক তিন পুত্র রাজার মৃত্যু হইলে পর এক। निकास आक्राणिसिक इहेस हिल्लाम। ললিতাদিত্য অতিশয় বিখাতি ও বিক্রম-শালা নরপতি ছিলেন। তিনি স্বীয় বিজয়ী टेमना गर्मा ज्याहित वहेशा आश मनस् ভারতবর্ষ মধ্যে একাধিপত্য স্থাপন করি-রাছিলেন। প্রথমে তিনি অন্তরেদী নামক . जन जम करतन, **उ**०्रात यरणांत्रमं नामक কানকুজ নগরাধিপতির প্রতিকৃলে গমন করিয়া তাঁহাকে যুক্তে পরাস্ত ও রাজ্যচুত্ত कतिशाष्ट्रिका यदमावन्त्रं भक कन दि प्लांदगारी जूपिक **हिट**लन। हैं। होत কবিবর ভবভূতি কবিবাচস্পতি এবং র্ জন্ম বাস করিছেন। ললিতাদিতা ভদনভুর গোড় ও কলিঙ্গ দেশাভিমুগে যাতা করি-লেন এবং তথায় স্বীয় জয়পতাকা উড্জীয়-মান করিয়া দফিলে কণাট দেশে প্রস্থান করিলেন, তথা হইতে পাশ্চম সমুদ্রতীর-বত্তী হইরা দারকার উপস্থিত হইলেন। খারকা হইতে নির্গত হইরা বিজ্ঞাগিরি ল-ख्यन क्रिश चन्छीनगद्र व्यद्म क्रिटलनः এবং এই तटल ममूनाश ভার**তবর্ধ প্রদক্ষি**। করিয়া ও বছ্ছর রাজগণকে পদানত করিয়া শ্বরাজ্যে, প্রত্যাগ্রন ক্রিলেন। কাশ্মীরে আগমনামন্তর স্থীয় সেমাপতি ও অধান অধান কর্মচারী দিগকে পুরকার ছ-রূপ অধিকৃত ভিন্ন ভিন্ন প্রেচেশের শ্রেমন-কার্য্যের ভারাপণ করিলেন। কিছু ভিন অধিক কাল ছিব থাকিতে পাৰেন নাই," अंग्र नाटक कुकांत्र डिट्ड बिंड स्ट्रेंब जून-

রার হিমালমের উত্তর উত্তর কুল নামক भूतान व्यक्तिक देननाजिम्दर याजा कतिरनम । এই স্থান কুবেরাস্থ্রর রক্ষণিগের বাদভান विद्या बार्फ, देश मसूर्यात वर्गमा। किछ ললিভাদিতা স্বীয় পৌরুষ বর্দ্ধনার্থ এই স্থানের অন্থেষণে হিমালবের অভ্যন্তরে প্রবেশ করিকেন। কিয়ন্দুর গমনান্তর তিনি মহাক্রেশে পতিত ইইলেন, পথ অতিশয় कुर्भम इहेश छेठित, এবং श्रव्यट-वाती वना জাতিরা নানা দিক হইতে তাঁহার সেনা গণকে নিহত করিতে লাগিল। এই প্রকার প্রমাদ দেখিয়া নুপতি পত্র দ্বারা দ্বীয় ম-ন্ত্রীকে জ্ঞাপন করিলেন যে তাঁহার প্রতি-গমনের আশা নাই, তরাকাজ্ফাই তাঁহার মূভার কারণ হইন, স্করাং যুবরাজ রাজ-मिश्शांभरन व्यक्षितांहन कल्लन। রাজার আর কোন সংবাদ প্রাপ্ত হওয়া গেল না। ললিভাদিভোর জ্যেষ্ঠ পুত্র কুৰ-नशाशीज ताका करेशा, भाष्ट्र जीवात क-নিষ্ঠ আভা রাজত্ব পাইবার জন্য বিভোই উপন্থিত করে, এই আশক্ষায় ভাষাকে শ্বথে কার্যুক্তন্ধ করিলেন। পরে কিয়ৎ কাল রাজকার্য। নির্বাহ করিয়া তিনি উ-দাসচিত্ত হইলেন, এবং পুনরায় স্বীয় ভাতা বন্ধাদিত্যকে কারাযুক্ত করণান্তর তাহাকে রাজপদে স্থাপন করিয়া যোগ সাধনার্থ সন্ন্যাৰ্শাআন অবলয়ন করিলেন,এবং এই ৰূপে দৃক-পথ নামক পৰ্বতের এক গুছাতে বাস করিয়া জীবন অভিবাহিত করিতে লাগি-লেন। বন্ধাণিতা অতি নিষ্ঠুর ও ইত্রিয়-পরায়ণ হইয়া উঠিলেন। তিনি কেবল স্বীয় ভোগ্যা রমণীদিগের বেশ ভুখাতেই यमानात सुना कतिशाहित्सम, अवर जात्र्वत विभिन्न वाना अकलरक रम्हिनिद्धात निक्ष विक्य कतिर्देश। छात्राकत्म वह रुगिक तास्त्र बन्भकावमात हिन। रज्।-

দিভোর তিন পুত্র ক্রেম রাজন্ত করিয়াছি-লেন, তন্মধ্যে ক্নিষ্ঠ জয়াপীড় যিনি শেষে সিংহাসনত হইয়াছিলেন তিনি অনেক গুণালস্ত এব॰ সুথাতি**তিত হ**ইরাছিলেন। তিনিও অপরাপর বীর্ঘাবন্ত নরণতির নাায় অনেক দেশে সীয় জয়প তাকা লইয়া গিয়া-ছিলেন। অপর তিনি স্বদেশে সংক্ত भारत्वत हालनात क्षांक विरमय मरनारयात्री হইয়াছিলেন। তিনি আধ্যাবর্তের প্রায় সমুদায় অধান ও নিখাত পণ্ডিতগণকে श्रीय म बार व्यानशन कतिया वाशियां हि तन। এই সকল পণ্ডিতের মধ্যে সহা প্রধান वाकिभिरशत नाम ७३ ७ मारगामतछ थ <u> अन्</u>र क्विंग्रान्त मरना मरमान्य, मन्त्र, ठांडक मन्त्रीयांन, अनः नामन,अहं कअदः বাক্তির নাম প্রাপ্ত হওয়া যায়। এই প্র-কারে কিছু কাল রাজ্যের কুশল বর্দ্ধন করিয়। জয়াপীড় নেপাল রাজ্য আক্রমণ করিতে शिटलम। किन्नु এই मिटल व्यत्यम किन्न-বার পতাদি তিনি জানিতেন না, স্কুরাং কিয়দূর গমন করিয়া এক নদী পার হই বার সময়ে হঠাৎ নদীর জগ ও জ্রোত রিনি হওয়াতে ভাঁছার সমুদায় দৈনা ভাগিয়া ও জলময় হইয়াগেল। রাজারও এই কাপে প্রাণ্ডাণি ছইত কিন্তু বিপক্ষ দৈনার: ত্রীলাকে ভাগিতে দেখিয়া জল হইতে উদ্ধার করিরাছিল। এবং নেপালরাল ভাঁছাকে লইয়া গণ্ডশীনদী তীরস্থ এক চুর্ণ মধ্যে রান্ধ করিয়া রাখিলেন। কাশ্মীরে এই ভূঘ টনার কথা শুনিবামাত অজাগণ মহাব্যাকুল হইল। প্রধান মন্ত্রী অপরাপর রাজকণ্মচারিদিগের মহিত পরামর্শ করিয়া আপনি কিছু দৈনা लहेश (नभारत शमम कतिरलमः) धवः তথাকার ভূপতির সহিত দদ্ধি স্থাপনের কথা ধাৰ্য্য করিয়া একবার তুর্গ রুদ্ধ কাশ্মীর রাম্বের সুহিত সাক্ষাৎ করিতে চাহিলেন।

তাহাতে নেপাল নরপতি সহজেই সশাত হ-ইলেম। পরে মন্ত্রিবর জয়াপীড়ের দহিত শাক্ষাৎ হইলে পর ভাঁহাকে পলায়নের পরামর্শ দিলেন। বিস্তু রাজা কিৰাপে একাকী গণ্ডকী পার হইবেন তাহা কিছুই হির করিতে না পারিয়া প্রভুভক্ত মন্ত্রী কহিলেন যে মহারাজ আমি আপনার নিমিত্ত প্রাণত্যার করিছেছি, প্রাপনি স্থামার মৃ-তদেহ নদীতে ভাগাইয়া তদবলয়নে পার হইতে পারিবেন! এই বলিয়া মন্ত্রী তুর্গ-আচীর হইতে আপনি পতিত হইয়া প্রাণ-ভ্যাগ করিলেন। এবং রাজা তাহার দেহা-বলম্বনে নদী পার হইয়া ছঅবেশে কাশ্মীরে অভ্যাগমন করিলেন তাহার কিছুকাল পরেই लाहात मृजूा शहेल।

অনুষ্ঠানের আবিশাকত)।

তে সংগ্রহ পত্রিকার ৭৮ প্রার তর।

(অল্প )

প্রাক্ষণিতার সন্মুখান কি কি এবং সেই সকল অনু-ষ্ঠান কভদুর কার্ট্য ভাষা কপঞ্চিৎ আলোচিড ইইল, একংশ সেত্ত সাই বিষয়ে ধে সকল আপাড়ি উঠি-য়ালে তা প্রাক্তি থকন করিছেছি।

ংট আপত্তি এই যে ব্রাহ্মদিগের অনুষ্ঠান-সক 🗔 🕾 পৌরানিক দিগের অনুষ্ঠানের ন্যায় ব্রু-সংসাধ 💚 জট্যা দাইবে। ইহার অর্থ আমি প্র-কুডক্রপে বু, 🤜 পারিডেডি না। তবে ব্রাক্ষেরা কি শাসার আঠান কালে পৌত্রিকদিগের মত १२४ - मतीह शका कतिराम ! **आवाद कि धमन** · ' ভইতে ষণম শিলা গ্রেম্বরের প্রজা না করিলে ব্ৰালালিলের অনুষ্ঠান সকল সক্ষম হইবে না ? ইহা এতার বিষ্ণাস করিব ও যদি এক **ঈশ্বরে সকলেরই** ৮০ বিশাস গাংকে ধলি সকলেরই **এ জান থাকে** ाव भारी मिला। छोर कि अकारत पुनर्सात ली-'হ'লকভাৰ সংগ্ৰুম **হইছে.?** পৌন্তলিকদের গুটকডিত বিদায়ে এবল **ধর্মানিবরতা জাজানতা,** মাওরাও ভোলাদিলের কিয়াতে কুসংক্ষার সকলাদ্ধি-াল কৰে: ভাষারা বিশ্বাস করে প্রিওদান ক-িতে পিলে পৰি ইউডে ভোজৰ করিয়া পরিভূপ্ত ইন টালরে) ব্যঞ্জার সহিত **প্রিও দান**্**করে**; ভাষারা বিশ্বাস করে গলার জবে মনুমোর ভাছি ঘণ্ডনাত্র পাতিত হইলেই সে উদ্ধান্ত পার, জীহারা

मर्बाटक निर्मात निर्देश शिक्ष कविरक मा भावितन महा क्रिके ଓ कुछ हर, खार्शीय देवते देवतीय शू-कारक शहर मनन कान करत, बुख्तार अनुकान-कारत जाहो मिनाक श्रेषा को कत्रिया सुनिद हहेर छ भारत ना। किन्हं वर्षने जोना निरंशत मन्भ ने दिल-রীত বিশাস, ধর্মন উচ্চাল্লা গলাকে দেখী জ্ঞান करतन नो, जेश्वत कित्र कोत्र कोश्वरिक्ष आहा करतन না, পিতা স্বৰ্ণ হইছে পিও ভোজন করেন ধর্মন তাঁহার। ইহা অম বলিয়া জানেন, তথন তাঁহালের লিয়াতে কিরুপে পৌড়ানিক কুসংস্কার দৃট হইবে। ভবে হয়ত এমন জাতি থাকিতে পারে যাহাদের ভিভরে ভেমন বিদারে চালনা নাই, যাহাদের প্রাকৃতিক ঘটনাও অন্যান্য বিষয়ে অনেক কু-স°ফার রহিয়াছে, অপচ ব্রাহ্মধর্মকে গ্রহণক-রিয়া ভদনুষ্ঠানে প্রকৃত হুইয়াছে। এরপ জাভির ক্রিয়াতে কুদংকরে দৃষ্ট হইখার নিজান্ত অসম্ভা-বলা নাই। কিন্তু ব্ৰাহ্মপৰ্ম গিয়া যে ভাছাদিগকে কুসংক্ষারে জড়ীভুভ করিয়াছে ভাহানহে, 💖 হাদের আয়ো কুদংস্কার জানে জড়িত পাকাতেট ব্রাহ্মধর্মা কথায় উজ্জ্লরূপে প্রকাশ পাউড়েচেন নাই। ফল্ডঃ যে জাতি আপনার আবিকে যত উন্নত করিবে, ভাহার মধ্যে ত্রাক্ষাধর্ম ডসই সমুজ্জুন বেশে প্রকাশিত হউরে, এবং বে জাভির আছা যত হীন অবস্থায় থাকিবে, ব্ৰাহ্মধৰ্ম্ম ফেথানে ভত্তই মলিন রূপে আষি ভূতি থাকিবে। অপিচ ইহা যেন व्यागोरभव व्यवन भीत्क त्यात्म प्रत्ये व्यवस्थान व्यवस्था माहे (मर्ट्या हे सा कुमरकांत्र आला ध्यान गाहा। कुमर-স্কারের অর্থ--জিফানত।। আডানতা এক দিক मिशालिय ना लोश जना मिक मिना वोश्ति इहेटवरे इटेरवा सूमलभाष्मिया करु जेनन्द्रका विश्वास कन्नि-য়াও অক্সানভা বশভ ভেগ্লচিত অনুষ্ঠান সমলে প্রাহ্রন্ত কা হইয়া থাকিলে পারে নাই। কুদংস্কার शक्त पूत्र कर्तित नाः, अथा आकाश्रदर्भात्र भूक्त ताल जानुकान कतिन हैं हा गतन कहा जुला। क्षेत्रात्म कराज কেছ কেছ বলিংবন ভবে ব্রাহ্মরা ক্ষণ্ডো গেলের কুসংস্কার সকল ভূর করিয়া পরে কেন অনুষ্ঠান मक्स क्षर्वार्ड मा कदान ? ध क्षास्त्र उन्हें धई (ध, ব্রালোরা (क এই দেশকে জানালোকে উজ্জ্ব) ক্ষতে জারত হন মাই ? তাঁহায়া কেনই বালক-मिट्रशत क्षानिकार्य विमेत्रानस सानिक केब्रियार्टिन, क्रमहे ना उँशिहा अख्य भूष्य श्लीमिक्स नियम क्षविश्व कतिराज्ञाञ्चन । दक्ष विनिद्दम, हेशाह कि मानामा हरेल, द्वारकाता नेपूना नामाना कार्याह कि गहाँके वाकित्वनं ? मा, ब्राह्माती देश कारमन व्य डीहात। डीहाएम्ब हेक्समुक सक्न कार्या नमाधा कतिएक अमालि भारते हरेक्स नहें । जिल्ला अज्ञता प्रश्नित जारकते। जानिक जीवादनत यनि ভেমন সঞ্জতি কাৰিত, জ্ঞানালোক প্ৰদান করিতে যাহা থাহা প্ৰয়োজন তাহা বদি উহারা বিশেষ রূপে সংগ্রহ করিতে সমর্ব হইতেন, তবে ওঁছোরা এ দেখকে মতাও জ্ঞান রত্বে বিজ্ঞাত করিতেন সন্দেহ নাই। ঘাঁহারা এ দেখকে বিদ্যাধনে সন্পান করিছে, অজিলামী হয়েন, তাঁহারা ব্রাক্ষাদিণ গ্রেক সাহায়া করিয়া দেখুন, দেখিতে পাইবেন এ বাকা কভ দুর মধার্থ। ঈশ্বর করন যেন ব্রাক্ষেরা এ দেখকৈ দিন দিন জ্ঞানালোকে জালোকিত করিতে পারেন।

অনুষ্ঠানের বিপক্ষে ছিতীয় আপত্তি এই যে ত-लाहा करन वर्ष-बाग्र रग्न। त्रभा वाग्र कार्राटक वरन इतिशा मिटल इहेरन। व्यर्थ कि निधिख ? व्यामारमत গুয়োজন সাধনের নিমিত্তই কি মুদার প্রচলন न८१ अनुष्ठीम नकन य आमादमत कीवटनत महर उंशकाती शूर्त्वहे छार। मिस्ताख इंदेग्रास्क, মুতরাং অনুষ্ঠান সকল কি আমাদের প্রয়োজনীয় বিষয়ের মধ্যে পরিগণিত হইবে ন। ? ভাহা যদি আবশ্যম হইল ভবে ভাহাতে অর্থ লাগে দিতেই হইবে। একথা উপস্থিত হইছে পারে যে বিদ্যা মত দুর অংনিশাক অনুষ্ঠান তত দুর আ*ৰিশাক* भरह। द्वारकार्य विषाहिक अमीपत नौकलन, কিন্তু ইহা কি সভা নহে কিলাে অপেকা ধর্মেতে व्यभिक्छत । धारा, कन ?। । । कथा । धनिया (कड़ কেচ অবাক্ চটালে পারেন, কিন্তু ইছা অমূলা সভা। ভবে লোকে বর্দের জনা অর্থ প্রয়োগ করিতে কেন্ট কাতর হইবেন ? যদি বলা ধায় धारााशिक अनुष्ठीन कतिलाई धर्मा इनेटा शाह्य, यारिक अबूक्षीन ना कतिवाम ? किन्न आमि जिन ফাষা করি অনুষ্ঠানের প্রকৃত ফল আছে কি ন। ? व्यत्नदक राजन नमाएक ना बाहरत कि धर्म हम ना। ইশ্ব মনুযোর প্রকৃতি এমন ক্রিয়া দিয়াছেন বটে व विश्वादन उक्तिमाज नाहे, विश्वादन अनुक्रीन मकल आविष्ठ नाहे, स्थारन मनुसाद उसन गामाञ्जिक (ठके। नाइ स्मथान कांत्र लाटक अप-র্ম্মের উচ্ছেন মুখ দর্শন করে। কিন্ত সে গভ্য ঈ-चरतत अने छ महिना है श्रकांग करत, अनूछेदिनत अ-নাবশাকত। সপ্রমাণ করে না। বেথানকার লোকে আত্মার উন্নতি সাধনাথে সমবেত হইয়া চেউা দা করে, দেখানকার ধর্মোগ্রতি কখনই তভ শীস্ত্র সম্পাদিত হয় না। আনি অনেক সময় দেখিয়াছি य "ममादक ना बाहेटन कि अर्घ इस ना" अहे कूहक वाका भावा नवल युवानितात मन युक्त घटेगा नमाज एटेटल दृद्द काम राजन कदाएल करम कारात अम अ व्यवस्थिति निम्तं इहेग्राशिग्राट्ड । त्रहे क्रेल व नकत जाका अस्त्रोहन, शत क्षा व स्ट्राइडन, डीहा-রাও কনে পোভালিকভার দান হইয়া পড়িয়াছেন। যাহা হউক অনুষ্ঠানচয় বখন মনুবোর খাভাবিক কিয়া এবং নছত্ব সাধন কারী বলিয়া ছিরীকৃত হইয়াচে, তথন বাহার। অর্থ-বায়ভয়ে ভংপা-লনে বিরভ লন ওঁলোর। নিভান্ত জনসকল যুক্তির অনুসরণ করেন। আর একণে ইহাও লিজাসা করা ঘাইতে পারে, ব্রাক্ষদিগের অনুষ্ঠানে অধিক অর্থ বায় হইবে ইহারই বা মন্তাবনা কি! পৌত-লিকদিপের অনুষ্ঠানে দে অধিক অর্থ-বায় হয় ভা-হার প্রভুত্ত কারণ আছে। ভাহাদের মন প্রায় ধর্মের দিকে বড় দৃষ্টি করে না, ভাহারা অনু-ঠান কালে প্রায়ই যশঃ নান আনোদ প্র-নােদ অভিমান দার। উত্তেকিত হইয়া থাকে। ক্রমশঃ প্রকাশা।

#### নুতন পুস্ক আস্তি।

'কে কিল দৃত্ত' কাসাং''। এই কাৰা খানি কালপয় আদিবদ সংঘটিত, ভাগাৰ্থ সংলিত সংস্কৃত কবিতার সমন্টি। কবিতান্তলি স্থানে স্থান্ধ-পিপাত ও সুন্দর, কিন্তু অপিকাংশই শকুন্ধলা পদাক্ষদৃত প্রেক্তি সংস্কৃত কাব্যচয়ের অনুকরণ নাজ। যাহা হউক সংস্কৃত রচনার চেন্টাই মহং। লেখক মহাশায় ধে যত্ন ও ব্যয় সহকারে সংস্কৃত ভাষায় নিজ বিদ্যার এবং দেশীয় প্রাচীন ভাষার উৎকর্ষ সাধন চেন্টা করিয়াছেন স্থানর। ভজনা ভাঁহাকে সাধুবাদ দিতেছি।

"চিন্তানালা"। এই ক্ষুদ্র পুত্তক থানি বিবিধ বিনয়ক কতকশুলি চিন্তা দ্বারা পরিপূর্ব। শক্তের ঘণ্পতা নিবন্ধন সর্ব্বেই গ্রন্থকার মহাশয়ের চিন্তার্থ সংগ্রহ সাপা নহে, কিন্দু স্থানে ভালে গ্রন্থক বানিক্তে উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্টি সন্তা উল্লিখিত হই-য়াছে, ধ্যা মানব জীবন সম্বন্ধে এক স্থলে কথিত ইয়াছে,—

'মানবের ভাগ্য সর্জাই চঞ্চল, কিন্তু চঞ্চল-ভাবই মানবের ভীবনী শক্তি।'' প্রায়শ্চিত সহক্ষে;—

"বর্গ আর নরক, আনন্দ আর বস্ত্রণা ভোগের ছইটা বিশেষ অবস্থা মাত। কম্পানার বসন হইতে সেই ছুই অবস্থাকে শূনা কর, আপন অন্তরেই ভাহার আভাস পাইনে।"

পুনর্কার এক স্থানে কণিত আছে ;---

''সতা, দরা, ফনা প্রভৃতি গুণ সমূহ পৃথক পৃথক নহে। সে সজল সেই নিরাকার জ্ঞানেরই গুণ দার, এবং সে জ্ঞানের ভাব অনস্ত এবং অ-থও। মুভ্রাহ ভাচুশ জ্ঞানই প্রম জ্ঞান "

"লোকে যদি পৃথক পৃথক রূপে সভা, জ্ঞান, দ্যা, ক্মাং, উপাসক হইল; ধদি আলোচনা ক-রিয়া ভাহার একটীকেও শেষ করিভে না প্যারিল, अवर रिक जारात मध्या अवहीदकं छाण्डि। या ब्लिएक भावित, करन काविता रम्थ रमेथि स्नारक একরণে অনন্ত, অথও,নির্বয়ৰ, সভ্যক্ষ্মণ মৃত্যা-वक्रम भारम छाटमह "छेमानक इंद्र कि मा ?"

''योशोब क्षेत्रध वक्ष कशूर्न, तम तमहे श्रीत्रका महक ভজ বিভাগ করিয়া ও অপূর্ণ ভাবিয়া উপাসনা করে। কিন্তু গাঁহার আতা যত পূর্ব, তিনি তাঁ-হাকে ডভ পূর্ণ ও অথও ভাবিয়া পূলা করিয়া भारकमा"

পুলর্মার জ্ঞাপর এক স্কামে--

'अर्फाकिमानी उत्तरित्य धर्मादकार्थाय ? हैनि পনাভিনানী ও বিদ্যাভিয়ানী অপেকাণ ঘূণিত। देश दुनिया माध्यक बाल्किनाक मात्रधान रुखा। कर्डना !''

'লিডি নাদ থে ৰিষ্ঠুর দেও সময়ে সময়ে ধর্মের অভিযান করে। এতিয়ান বিশ্বাসের হস্তকারক।<sup>11</sup> ঐক্য সমদ্রে কথিত হইগাছে।

"ঐকাই সংসারের জীবন, এবং ধর্মা সেই बेरकाद वस्त्र । धर्माक शतिकाशि लद्द, बेका শিখিল হইবে। এক। শিথিল ইইলে সংসার জী-वन जील इंडेरन ।

याज्या व्यवशाच रहेनांग वर्त्तभान खाक्रामणेटकह কোন কণ্যচাৱী ছাবা এই গ্ৰন্থ থানি প্ৰকাশিত इदेश[हा,माहा अडेक मगरा ममस्य नेपृत्र अब आको-भिक्त ३३८० (संस्था कार्यक मद्याला महाविना ।

''প্রক্লোদেশ অষ্টেন'' প্রকা দেশ, আপ্রাকা 4 Revelution) বিষয়ের প্রকৃত-দর্শা ও উদ্দেশ্য বি-पारवंद अना लहे शुस्त्रकथानि एकति कुष्टविमा द्वाक ছাতা বিহুটিত হইয়াছে। উংবি বিষয়ে মতানত अविमादक क्षेत्रामा कहा बाहित्वक ।

"শোষতরম" নামা তকথানি ক্ষুত্র গুভক আমুরা প্রাপ্ত টেলাড়। ইন্যা বিষয়ে কোন মতা-वस्य व्यक्षः कत्र, अनुवन्धक त्वाव क्वेटल्ड्स् न्।।

## বিজ্ঞাপন

বিবিধ উপানে ব্রাক্ত্য প্রচার ও ভার-'डवर्षक मधुनास द्वालामगारकत मेट्या थेका সংস্থাপন উল্লেখি আগামী ২৫ কার্ত্তিক রবি-बात नक्षा १५०% **चित्रात्र नगर्ने किन्छ।** जाकाममात्कत चिकी व्यक्त वृद्ध अभिनिद्धत একটা 'প্রভিনিধি সভাশ প্রভিতিত ইইবে। 

वाकि निद्दमन तम, छोशात्रा मनाक मरकार ব্রাক্ষিদের অভিনত চুসারে কলিকাতা-প্র-वामी ( अध्यो नियानी ) रकान उपकरक याजिनिष नियुक्त कहा। तारे तारे थाज-নিধির নাম নিম স্থাক্ষর কারির নিক্ট পাঠা-रेश (नन, এवर वे निवटम डेल म्डाय डेन-স্থিত থাকিতে তাঁহাদিগকে উপদেশ অদান করেন।

> ত্রী কেশবচন্দ্র সেন। কলিকাতা ত্রাহ্মসমাজের मण्यामक ।

১৪ই আখিন ১৭৮৩ শক ৷

#### বিজ্ঞাপন !

আগামী ২৩ সে আছিন খনিবার সন্ধা ৭।। ঘণ্টার সমরে যোড়ার্ম'রেকার প্রাত্য হিক ব্রাহ্মসমাজের চতুর্থ সাম্পর্যক্র সভা হইরেক।

রত্ন সরকারের গাওেঁ के कि. ६१ मरशाक छवन।

कि अंडाश्विष्ट मि हस्त ! उभाग्या ।

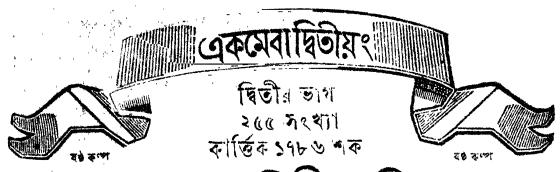
#### Recently Published.

THE RELIGIOUS PROSPECTS OF INDIA. To be lead at the CALCU TA BRAHMO SOMAJ.

Proes annas. By post 5 annas.

#### নিঘ'ণ্ট পতা।

	পুঠা
বিপাদ্যালে ব্রহ্ম স্থোত	, by 5
डिभागा	ъ₹
কলিকাভা ব্ৰাক্সন্মাজের হস্ত :	164
भटना विश्वान १००० वर्ग वर्ग वर्ग	<b>3</b> •
द्वामण्डामिकी	333
অনুষ্ঠানের আবেশ্যক্তা ্ত্ত বিজ্ঞ	,5 <b>≈8</b>
সুত্ৰ পুস্তৰ প্ৰাপ্তি	, na
and the state of t	11 CE 141-
मार्काविक दोक्यविकित क्राव्योक्त केर्टेट्ट क्षाकालिक हिंद्र १ अस्ट क्राविम चम्पाह	क्षिक्र वारम



# তত্রোধিনীপ্রতিকা

ব্রক্ষাএকমিদমগুলাসীয়ান্য কিঞ্নাসীতিদিদং সকান্দ্র তিদেও নিত্য জান্মনতং শিবং ত্তক্ষির্ব্যব্যাক-নেং বিভীয়ং সর্কারাপি সর্কান্যত্ত সর্কালয়সর্কাবিৎসার্কশিক্তিমন্ত্র কম্পূর্বমগুডিমমিতি। এক সংভবিশবেশি দন্যা পার ক্রিকটমতিকক শুভয়বভি। ভশ্মিন প্রীতিশুস্য প্রিয়ন্ত্রিসাধনক ওচুপান্নমের।

## কলিকাতা-ব্রাক্ষসমাজের বক্তৃতা।

>のではす >96つ ずま!

পাপঞ্চিন্তমতে তৈব এনীতি চ করোতি চ। তদাবির্মো প্রবিষ্টমা গুণানশ্যন্তি দাধবঃ।

যে ব্যক্তি পাপ-চিন্তা করে, পাপানাপ করে, পাপানুষ্ঠান করে, ভাহার সাধু গুণ-मकत नके इश्र। यमन जन्त्र हिप्त भीहें तन ब्देश स्तोका**७ कटन मध इयु; मिन्टे अ**कांत्र यनि গুণ-সন্ধিপাতে একটা দোষকেও পোষণ করা বায়, তবে তাহা মনুবেরর সমুদায় ভাবকেই কলক্ষিত করে। "ইক্রিয়াণাম্ভ সর্বেষাং ক্ষরতীন্ত্রিয়ং। তেনাস্থ্য ক্ষরতি अला पुरकः भावामिरवानकः।" যেমন বালু-কণা পড়িলে তাহা তথন আর উত্তম-ৰূপে দেখিতে পায় না, সেই প্রকার অন্তরে পাপ-রেণু প্রবিষ্ট হইলে তাহার জ্ঞান-চক্ষুত্ৰ আৰু পূৰ্ববৰ সম্ভাবকে সন্ধান कडिएक नाद्र मा-छारात (र गकन गापू थन, डांश कट्ड कटड रिनान शाहा थउ-वर वेश्वा कान्याद्वित्तर्म पूना-क्याविटड क्यांकियान वर्गाचरक शहरन , कें। हात्र) त्यन

षानाश कतियात ममरत भाभानाश नः करतन, चतुष्ठाटनत ममत्त्र भाभाभूष्ठीन ना करतन। এই रहेन निरम्य वाका, आंत्र विधि कि, অনুজ্ঞা কি, না, ইহার যাহা বিপরীত, তাহাই কলাখ-চিত্তা করি-আচরণ করিবেক। বেক, কল্যাণ কথা কৃছিবেক, কল্যাণ-অন্ত-ष्ठांन कतिदवक। यिनि अहे क्रकांत छेलएन-শারুষায়ী কর্ম করেন, তাঁহার সাধু গুণ নিয়তই উদ্দীপ্ত থাকে। পাপ তো এই ভিন প্রকার, পাপ্রচিন্তা, পাপালাপ, পাপানুষ্ঠান। কিন্তু এই ত্রিবিধ পাপের মূল কোপা ু মূল (দই মনেতে—প্রথমে পাপ-চিন্তা উপস্থিত হয়, পরে জিহবা তাংগ ব্যক্ত করে, পরে আচরণে ভাষা প্রকাশ পার যে বাক্তি একাকী নির্জ্জনে মনে মনে পাপ চিন্তা করে, দে একত হইয়াও পাপালাপ পাপামুষ্ঠান করিতে চাহে; অতএব পাপকে মনেতে কদাপি চিন্তা করিবেক না। যেমন भाभ माना जन तिष्ठ स्टेर्स, जमनि छा-হাকে মন হইতে উৎপাটন করিয়া তাহার भूटनोटक्षम कतिरवक। य वाख्यि किवन लाक-उद्य शांभावांश भागावृष्ठीन ना करतः; दम कथन माथू नम् जानादक विश्वाम मारे।

बिड्ड न स्रोत शाहरताहे उरक्रशार म गुए পাপে প্রবৃত্ত হইবে, দে কখনই পাপের খলোভন অভিক্রম করিছে পারিবেন।। পাপের হস্ত চইচে প্রযুক্ত হইতে হইলে অত্যে পাপ-চিন্তাকে বিদূরিত করিতে হয়, মনকে পৰিত্র করিতে হয়। যেমন কোন পুরাতন অট্রালিকাকে অশ্বথ-মূল আবেইন করিলে কেবল তাহার উপরের শাখা পল্লব কর্ত্তন দারা সে গৃহের রক্ষা হয় না ; কিন্তু যে তাহার মূলকে বিনাশ করে, সেই তা-হাকে রক্ষা করে - ভজাপ পাপের মূলকে र्य नके करत, रय गरनत गर्भा शांशरक आ-मिटल ना (मज़, (महे तका शांता यनि কাহারো অন্তরে গাপ-মূল বন্ধ গাকে; আর गणि तम পोश कथा नाउ करह, वांहाक शा-পানুষ্ঠান নাও করে; তথাপি জানা যায় যে মে কেবল কপট বানন্থার করিতেন্ডে, তা-থার রোজের কারণ মন্পূর্ণ রহিয়াছে –যদিও শ্বর এখানো তালার শ্রীরে প্রকাশ পায় गारे, (म जन्जं (त मक्ष इहेटल्ट्स-स পাপ কেবল লোকের ভয়ে তাহার মনের ছুর্বের নধ্যে প্রাথিট চইয়া আছে; যথন टम मिश्रिय एवं जीवात नाहित्तत महोत जाला, অমনি দে নিউয়ে ভাছার সকল শরীরকে আক্রমণ করিবে, পাপ-বাাধি ভাছার সকল অপেতে কুটিল উঠিবে। কিন্তু পাপ থা-ংতে এপ্রকার বল প্রকা**ণ করিতে না পারে,** মে জামো কয়াণামণ প্রমেশ্বর **দেখ কত** প্রকার কৌশল নিশাণ করিয়াছের। প্র-थरम (मर्थ भारभत मरक मरक ८कमन এ-কটি ঘূণা, একটি গ্লামি, আদিয়া উপস্থিত হয়। সেই যেএক পাপের প্রতি বুণা, তাহা আমার্রদিগকে কেমন রক্ষা করে। যেমন পাপের ভাব মনে উদয় হয়, আমনি দুগা ও আঅ-প্লানি আলিয়া তা্হাকে দ্বানীকরিয়া करन। य भागा श्रक्तिक शासक, तम

আত্মাতে কি পাপ ক্ষণ কালের জন্যও ডি-ষ্ঠিতে পারে; পাপ উদয় হইবা মাত্র স্থা ও আক্ম প্লানি আসিয়া ভাষাকে দূর করিয়া দের। ধথন মনের ভাব আর কে**হই জা**-নিতেছে না, কেবল এক ঈশ্বরই জানিতে-ছেন ; সেই সময়ে যাদ ঘৃণা ও আত্ম-শ্লানি আদিয়া পাপকে পরাস্ত করিতে গারে; তবে আমারদের পরম সৌভাগ্য। কিন্ত যদি দেই মৃণা-দেতুকে পাপ-প্লাবন আ-দিয়া প্রবল বেলে অতিক্রম করে, ভবে তাল ভালকে লজ্মন না করিতে করিতেই আর এক সেভু আদিয়া তাহাকে রোধ করে নেই সেতুটি লজ্জা-সেতু। যথন ৄগার উ-পরে আর নির্ভর না রহিল, প্রথম দেভু য-খন ভগ্ হইয়া গেল, তখন শেই দিভীয় দেতু লজ্জা আদিয়া উপস্থিত হয়<del>—তথ</del>ন নে আত্মীয় পরিবার গুরু-জনের লজ্জাতে প্রকাশ্যরূপে আর পাণ্টরণ করিছে পারে না। দেখ ঘূণা অভিক্রেম করিয়াও দে ল জ্ঞার শাদনে পাপ হইতে নিবারিত এইল। কিন্তু পাপের উচ্ছাদ যদি এত অধিক হয় যে দে এ ছয়ের আর কিছুই মানে না, সে উদ্ধান্ত ভাবে হৃদয়ের কবাট ভেদ করিয়া। শরীরময় ব্যাপ্ত হয়, ও মনের **আর আ**র দকল র্ভিকে বৃশীভূত **করি**য়া কেলে; ড-খন সে পাপাক্রান্ত মনুব্য উন্মাদগ্রন্ত হয়। ষখন পাপত্রোত উচ্চ্বৃসিত হইয়া ঘূণা লক্ষা উভয় সেতুকেই ভয় করিল, তথন অবশিষ্ট কি রহিল, না ভয়সেতু। পাছে গুরু লোকেরা প্রহার করে, বিষয় হইতে ব্ঞিত করে; পাছে শান্তি-রক্তকরা দও प्तत्र, कार्त्रागादत वक्त तार्थ- अहे **ध्वका**त চিন্তা আসিয়া সেই পাপাত্মার পাপ গতিকে वाधा मिनात छेशात (मटब) । हेशांदक बी-थन त्म व्यक्तिक कटत, उध्य त्म त्रीन-পুরুষদিমের হত্তে পতিত হয়, উপাবৃক্ত

দভোপভোগ করে। সে লোকের ছার। পরিতাক্ত হয়, গুরু জন কর্তৃক অবমানিত হয়। স্ণালজ্ঞাভয় এই তিবিধ লৌহ দেতুই যথন ভগ্ন হইয়া গেল, তথন কি সেই ঘোর পাপীর পরিতাণের জন্য আর किছूरे छेशांत तरिन ना ? यथन मकन লোকৈর ঘূণা-দৃষ্টি তাহার উপর পড়ে, যথন পরিবারেরা ভাষাকে গৃহ হইতে দূর করিয়া দেয়, যথন রাজ পুরুষেরা তাহাকে দও বিধান করে; তথন ঈশ্বরও কি ভাগেকে পরিভাগি করেন ? তথন ভাহার কি কেইই পরিতাতা থাকে না? যথন সকল সেতুই পাপের নিকট পরাস্ত হইল, তথন দেই পাপীর পরিত্রাণের নিমিত্ত স্বরং ঈশ্বর গিয়া উপস্থিত হন। যথন আর আর সকলেই তাহাকে হেয়ৰূপে পরিত্যাগ করে, যথন ভার নাম মাত্র জ্রুত হুইলেও মনেতে ঘুণার फेमस इस; उथन এकमाज ঈश्वत्रे छाहात সহায় পাকেন। যথন আর আর সকর মেতুই ভয় হইয়া গেল, তথন তিনি নিজে প্রম দেতু ৰূপে সেই ঘোর পাপার নিকটে অবতীর্ণ হন। পাপের কি কখন এ প্রকার প্রবল উচ্চুান হইতে পারে যে দেই পরম সেতুকেও উল্লন্সন করে? এ প্রকার কথ-**নই হইতে পারে ন। ''সদেতু**র্বিধৃতিরেষাং লোকনামসন্তেদায় "। তিনি লোক-ভঙ্গ নিবারণার্থে সেতু-স্বরূপ হইয়া এই সমুদয় ধারণ করিতেছেন। তিনি তাঁংধার রুক্ত মূর্তি অকাশ করেন, ভয় দেখান এবং সাস্ত্রা করেন। এই থকারে কত কত ঘোর পাপীরাও পাপ হইতে পরিতাণ পাইয়া শননের উপর জয় লাভ করিয়াছে, ঈশ্ব-रतत स्नीवन जानिकन आख क्रेसार्छ, মু**জির গৃহে প্রবেশ** করিয়াছে। কিন্ত খা-मोबद्देश यान अक वात्र डाहात सम मूर्जि मिथिटक मा इस्ता महम क्रिया दक कात्र

পিতার নিকট হইতে তিরস্কার থাইতে অতিলান করে। অতএব আমরা যেন কথনই ভাঁহার আজ্ঞা অবহেলা না করি, আমরা
যেন পাপ চিস্তাকে মনে কথনই আদিতে
না দিই; কিয়া যথনি তাহা মনে উদয় হয়,
তৎক্ষণাৎ তাহাকে উৎপাটন করিয়া কেলি।
আমারদের পাপের জনা ফুণা যেন নিয়তই
থাকে, লক্ষা দেন নিয়তই থাকে, ভয় বেন
নিয়তই থাকে এবং সকল হইতে পরম সেতু
যে তিনি, তাহাব পাবত্র দৃষ্টি দেখিয়া যেন
পাপ হইতে সক্ষদাই বিরত থাকি।

হে পরমান্মন্! আনি ব্যন্ভোমার মঞ্জ-মূর্তি প্রত্যক্ষ করি, তগন শ্রীর মনউত্ত खिठ इय, वाका-मकल आफ्र हहेश भट्छ। যগন এখানে উপবেশন করিয়া পরলোকের বিষয় ব্যক্ত করিতাম, তথনো তাহার মধ্যে তোমার করুণাই দেখিতাম। আবার এখন যথন তোমার নিয়মিত ধর্ম-দাধন বিষয়েরও আলোচনা করিতেচি, তথনো ভোমারই করুণা প্রত্যক্ষ করিতেছি। তোমার সন্মুথে যা কিছু আলোচনা করি, ভাহাতে ভোমা-রই করুণ। দেখি। বলিতে যাই অমুঠান, মনে হর তোমার করুণা। গগন পাপী-দিনের উপর তোমার ধর্ম-দডের কথা ক-হিতে যাই, নে সময়েও ভোমার করুণার ভাব থকাশ পায়। হে পরমাত্মন্। তুমি আমার্দিগকে পাপ হইতে নিজ্তি দাও; আমারদের রক্ষার নিমিত্ত তুমি যে সকল দেতু নির্মাণ করিয়াছ, তাহা যেন আমরা কদাচ উল্লঙ্গন না করি। আমরা যেন পাপ-চিম্তা না করি, পাপ-কথা না কহি, পাপান্ত-ন না করি--পাপের সহিত সংস্পর্ম যেন সম্পর্ণ রূপে পরিত্যাগ করি,নিম্পাপ নির্মাল-চিত্ত ও তোমার সভাতে নিঃসংশয় হইয়া বেন ভোমার উপাদনাতেই নিযুক্ত থাকি।

**ওঁ একমেবা বিভী**য়ং

## নিবাধই চতুর্দ্দশ সাম্বৎসরিক ব্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা।

२৮ आधिम ১१৮७ भक।

যাঁছাকে লাইরা আমাদিগের অদ্যকার এই মহোৎসব, আজি কি আমরা উহোর অপার প্রেম্যাগরে নিম্ম হইবা সমুদ্র ক্ৰ্দয় মন শীতল করেব না ? অসীম আক্রাশ ষাঁহাকে অবলয়ন করিয়া আছে, অনন্ত কাল মাহার জোড়ে জীড়া করিতেছে, তিনি আমাদিগের ক্ষুদ্র আক্ষাত্তেও পূর্ণকণে বি-রাজ করিতেছেন ; আমরং কে তাঁচার শুরু-ভাব অনুভব কারত না ? আজি উছেকে হৃদর্শারা স্পর্শ করব, ভাঁচার অনৃত গানন্দ-तम पाकटाथीरत शाम कहित এह अनाहे তিনি আমাদিশকে সমিলিত করেরছেন। ডিনি আমাদের অন্তরে কুধার মঞার করি-তেছেন, আমরা বহু চাহিতেছি, তিনি নুজ-श्रास के के हैं का हा अप अवाहित क्रिक क्रिक ্ছন। আসাদের জীবন কি প্রিক্ত স্থ্রাময় হইতেছে। দেই পূর্ণ পরিভাক মহান্পু-রুষকে প্রত্যক্ষ করিয়া আজি হৃদয়ের দাঃ সকল কেমন উন্মৃত্ত ছইতেছে—শ্ৰদ্ধা, ভক্তি, প্রীতি, ক্রতজ্ঞতা আপনা হইতে তাঁহাকে हरेट्ट ह **ভালিকন ক**রিতে উচ্চ্ দিত थना अभिने भा। ধনা তোমার মহিমা ! ধন্য তোমার করুণা। তুমি ধৃলিধ্ধরিত মলিন কীটদিগকে এৰপ বিমলানদে ক্লডাৰ্থ ক-রিতেছ।

আহা। এই পবিত্র ব্রন্ধানন্দের আশ্বাদ প্রিবীর আর কোন জীবই পায় না—মন্ত্র-নাই ইহার অধিকারী। কিন্তু কি আশ্বর্যা। আমরা কত সময় ইতর ইন্দ্রিয় স্থবে প্রশ্নুষ্

শইয়া পশুদিশের পশ্চাদ্বর্তী হইতেছি।
নামৰ জন্ম বিকল করিডেছি। সংনারের অনিত্য স্থানকা কি আশ্বাকেতৃত্ত করিছে পারে? তাহাতে পশু প্রকৃতি চরিতার হর,
কিন্তু আত্মার গাড়ীর কুমার শান্তি হর না।
এই জন্মই পূর্বে কালের কুক্মদর্শী ধৃত্ত্রত
খ্যিগণ বিরল অরণ্যে গিরা জীবন পাত করিতেন। তাহারা সেখানে আত্মার তৃথিকর দেই সতাং জ্যানমনন্তং ব্রক্ষকে লাভ
করিয়া নিতাানন্দে মহা থাকিতেন, আর
কিছুরই প্রার্থনা করিতেন না।

যিনি একমাত্র দকল স্থাংথর নিকেতন এবং বাঁহার সহিত আমাদিলের চিরসম্বন, তীকা হইতে যাত দিন আনিরা কিছিল থাকি ভত দিনই আমাদিগের মৃত্যু-তিহিকৈ পা-हेटल हे अगृह इ का छ रहा। द्वाचानम् व्यापा-मिश्रातक এই मामाराज शाकिश्रारे सिन्ह सिन्हा সম্পদ্ লাভের পথ প্রদর্শন করিয়াছেন। मनुद्यात ऋष्टश त्य अत्यात वीका निकित्र ছিল, ভাষা এত দিন স্কারা ৰূপে বর্ষিত হইয়া অমৃতায়মান ফল-নকল প্রদান করিতে পারে নাই। মানব জাতির উন্নতির সংখ্ मत्य राष्ट्रे रीम चन्नुतिष्ठ स्हेशा विविध শাথা প্রণাথা বিনির্গত করিয়াছে, কিন্তু তাল কুত্রিন পাত্রে স্থাপিত এবং কম্পিত আবরণে নিরুদ্ধ হইয়া আপনার প্রভাব প্রকাশ করিভে পারে নাই। ব্রাহ্মধর্ম্ম সে সকল বাগা কপ্পনা দুরীভূত করিয়া স্থ-শন্ত মানগদেত ইহার ভিত্তিভূমি এবং অবারিত অনমূ আকাশ ইহার উন্নতির আর-তন করিয়াছেন। এখন ধর্ম **আর স্থান**-বিশেষ, কলেবিশেষ, ব্যক্তিবিশেষ, ক্ৰাভি-वित्मव ना भूजकवित्मदय यस नारे। त्मरे मका सुन्तर भक्त चन्त्र श्रदमाहार विक মাত্র আদর্শ করিয়া আত্ম উহিরি প্রথে ক্ৰেমণ অগ্ৰসর হইয়া মুক্তি ও শবিত অনিক্ लां क विदय । जाबारमत विवकीयन क्ये Cबात शरब अक्**कार्टन व्यक्तिक एडेर**ना सा वात स्थापन स्थापन क्या मार्थ म

স্থানন হইয়া পালে পড়িব; কিন্তু নেই প্রিত্তপারনকৈ আত্রয় করিলে তিনি আবার আমাদিগকে উদ্ধার করিয়া তাঁহার পথে চলিতে বলীয়ান করিবেন। তাঁহাকে প্রতিকরিয়া এবং তাঁহার প্রির কার্য্য সাধন করিয়া যত চলিতে পারিব, ততই আমাদিশের চিরক্র্যাণ লাভ হইবে।

ব্রাহ্মধর্মা স্বর্গের জ্যোতি মর্ত্তা লোকে আনয়ন করিয়াছেন—দেবভোগ্য অমূতে मसूरमात्र आंद्रांटक जिंह छे अविष्ठं करि-टिट्ट्स । आमता এই গঢ় मश्मात शक्-কারের মধ্যে যে এ ৰূপ ধর্মজ্যোতি লাভ করিয়াছি ইছা আমাদিগের সামান্য সৌ-ভাগোর বিষয় নয়। কিন্তু এই জ্যোতিতে কি আমাদিলের সমুদার জীবন জ্যোতি-श्रांत इहेटवक नः ? यथन (मडे खण व्यागी-দিবের একমাত্র লক্ষা, তাহাতেই আমা-দিগের নিভোৎসব,তথন আমরা কি সমুপায় জীবন তাঁহার দেবায় অপণ করিব নাঁ? আমরা শরীর মন, পন জন সকলই যেনন তাঁহার নিকট হইতে পাইলাছি—সকলই অদক্ষ্টিত্টিতে তাঁহাকে প্রতার্পণ করিব ইহাতে আর আপতি কি? তাঁহার থ-দত্ত শক্তিতে তাঁহার কার্যা করিব ইগতে আর বাধা কি? কিন্ত কেমন দারুণ আ-মানিগের মোহ! আমরা আপনানিগকে चन्नुख, এই कीवनक निठा এवर मार्गाविक धन मान सूथ मन्भिक्टिक मर्दाय मदन करिं। किन्ठ এक मृत्रा यागिया व्यागीनरगत लास्डि कि गर्रामः। व्यातनं कतारेशः। मिट उटह ना ? শানাদিগের নাায় কত লোক এই মর্ত্তা **नारक नीमा क**िशां ছिन, करु धन अश्वर्यात ষ্পীষর ছিল। কিন্তু কোধার তাহারা, णांत रकानात्र जास्तिन्दगत এই পार्थिन भविकात-मुक्रम । जामानिरशत विवसामा ७ विषयभक्त मिश्रिया मुन्ना वितरण क्षिय कति-

তেছে। বস্তু : যাহা আন্থার সহগামী ছইবে না, ভাহাকে আপনার সর্বস্থ ননে করা কি উপহাসজনক নয় ?

বিষয়ে আত্মার লাভ নাই কিন্তু বিল-ফণ ফতি! একত ত(ছাতে জীবন এবং সমুদায় শাঁক িরর্থক নউ হইতেছে;-আবার তাহার উপর পাপ সঞ্জন। স্বার্থ-পরতায়ত প্রবল হইতেছে, তত্ই হৃদ্য় কুটিল হইতেতে, আবার কভ কটেট তা-ছাকে সরল করিতে হইবে। পশুপ্রবৃত্তি-সকল যতই চরিতার্থ কইতেছে, আয়ো ড-তই মলিন হইতেছে— গাবার তাল সমূহ यद्व धकांत्रन कवित्व इवेत्तः, विषय-धः লোভনে গভাই মনকে আকৃষ্ট করিছেছে ভত্ত সামার স্বাধীনতা বিন্ট হটতেছে, ভাহা উদ্ধার কর। সামান্য সংগ্রামের কার্য্য নয়। এই মকনত আন্তরিক অপাকার: এতদ্ভিন্ন বাহ্যিক অনিউ রাশি রাশি আছে। যাহাকে সুথ বলিয়া গ্রহণ করিতে যাই, তাহাই হয়ত তুঃখৰূপে পরিণ্ড হয়, নে খানে পুরস্কারের আশা করি, দেইখানেই হয়ত ভিরস্কার লাভ হয়। এই ৰূপ একে আন্তরে অবিমানিৰূপ ছঃসহ নরক ভোগ, তাহার উপর চারি দিকে বিমান ও নিরাশা: मःगांदी लांदक এই बदल পार्ट जारन শোকে মোহে জর্জরত হইয়া অবশেষে व्यक्तिय यञ्जनाय पक्ष इय ।

যাঁহারা সাংশারিক জীবনকে বলিদান
দিয়া ধর্মজীবন লাভ করিয়াছেন, ভাঁহারা
সংসারের সমুদার ভয়, তাপ, ও নোহ শোক
হইতে মুক্ত হইয়াছেন। তাঁহাদের নেত্রে
সংসার এক অভিনব মধুর বেশ ধারণ করে।
তাঁহারা সম্বত্রই সেই পরম পিভার ক্রোড়
প্রসারিত দেখেন, সকল জগৎ তাঁহার প্রেমে
অনুর্গ্রিত দেখেন, এবং সকল ঘটনার তাঁহার মঙ্গলস্ক্র সঞ্চারিত দেখিতে পান। তাঁ-

হারা অনুতর্ম পান করিতেছেন, 'বিপদ রাশি ছুংথ দারিছে" কিছুই করিতে পারে मा २ इहाई छ। हा फिटलंब तल, छ। की किएलंब আশা ও উৎসাহ, এবং চির কালের উপ-कीवा। भरकान, देवर्या, ভিভিক্ষা छ। थे-भित्तित व्यक्तिय मध्यी रहा। এই मकत्त ४-র্মান্ত্রের সংসারের মহিত—পাপের সহিত चात्रज्त मः भाग करत्न; व्यक्तिके रूपत्र मकन ठाएमा राजना गरा करतमः, मृङ्गारक ७ আনন্দের সহিত আলিঙ্গন করেন, তথাপি লশ্বরে মহিমাকে মগীয়ান করিতে—ভাঁ-হার জয়পভাকাকে উড্ডীয়ম ন করিতে নি-एखक इरश्न गा। "मणारमन क्रयरण मा-নৃতং ' 'আনন্ধ ব্ৰহ্মণা বিদ্যান নবিভেতি कुड " । (स्वाहर नाभूडा गाए किमहर ভেন কুর্যাংং" এই সকল মহাব্যকা ভাঁছা-कित्यंत्र क्रिक्टिक भनीताई बिब्धक इस्। भ्याम चारम ठीत कारक मिनाइब (य थान, ছাড়ি যাব অনায়ানে তাঁতো করিব দান' कहें हैं। ५८अव व्यांट छ्या । ''६न मान हाहि না তোমা হতে, দেও এই আবিকার, নিয়ত নিয়ত যেন সত্তর আনুচর থাকি তেমি।রে এই डीइएफिरशत अधिना। योशता क्ष নংলারের দাস, তাঁহারাই ধর্মা রক্ষা অসাধ্য মনে করেন, কিন্তু এরূপ ব্যক্তিরা তাহা অ-नाशामनामा (पशिष्ठ शान। এই मार्-ब्रोके प्रवासा हेर्स हारहे एक **कीवटनरे मू**-ক্তির দোপানে আরোগণ করিয়াছেন—অ-ब इ लाटक है। इंपिएवर कमा ' योगामम, अप्रानम ७ जकानतम्त्र देश्य छेश्यातिष् র হলতে ।

হে সংসারপাশবন্ধ নত্বাগণ তোমরা হস্তকাটের নাার আর কর কাল আপেনাদের কণ্পনা-স্তার আপনার। জড়িত থাকিবে? অনও আকাশে থাগীন রপে বিহার করিন্ বার জনা যে স্বর্মীর পক্ষে ভূমিত হ্ইয়াই; ভাহা কি এক বারও সঞ্চালন করিবে না? এই মৃত্যুর পাশে বত দিন আবন্ধ থাকিবে. তত দিন হাজার বিষয় বিভব, মান ঐশ্বয়া गःश्वरं कर गक्तरं शख्यम- गक्तरं व नवियापित कात्र करें त। किन्छ अक बात এ বন্ধন কাটিতে পারিলে আনন্দমর লোকে বিচরণ করিবে, প্রভেক্ত নিঃশ্বালে অস্তর हरेट मभूमात मृधिक ভाব বিদূরিত करें दे, अदः क्षत्र निमन हिल्लाटन भूने हहेटन, छ-খন সমূদায় আত্মা আনন্দক্তোতে ভাসমান হইতে থাকিবে. ড্ঞান উজ্জুল হইয়া সেই মতা স্বৰূপকে ধারণ করিবেক, প্রীতি প্রশস্ত হইয়া ভাঁহার মঙ্গল ভাবের অমুকরণ করি-टिक, এবং ইচ্ছা পবিত্র ও সবল হইয়। মৃ-ক্তভাবে তাঁহারই মঙ্গণ ইচ্ছা সম্পন্ন করিছে थांक्रित्वक;— তथन डाङोत महिल ममुनीय বিমল কামনা উপভোগ করিতে পারিবে; সংসার পবিত্র ধর্মক্ষেত্র এবং আননদ্ধাম হইবেক।

मिहे जगदिशिकांत स्थानित कहे चाछा। নান্ধ পাণ-প্রপীড়িত বন্ধ দেশে পবিত্র আক্ষধর্মের প্রভা দিন দিন বিকীণ হই-তেছে। যেখানে ইহার আনিভাব হই-তেছে, मिरे अभिविज जीवमकन ম্বতে মুক্ত হইয়া পবিত্র মঙ্গলে ভাবে পূর্ব হইতেছে। গৌভাগাক্রমে চতুর্দ্দশ বর্ষ প-র্যান্ত এই নিবাধই আমে যে ইহাঁর শীভল ছায়া প্রাপ্ত হ্ইয়াছেন, ভজনা সকলে সেই क्कनामग्रदक धनावाम माछ । हेर्हाहरू व নাদে মপ্তাহে সপ্তাহে যে কতিপার আত্মা কিয়ৎ কালের জন্যও সংসারশাশ হইতে মৃক্ত হইয়া ঈশ্বরের আনন্দর্য পান করি-বার জনা এখানে একতিত হন, ইহাও স্থাপ পরিতোবের বিষয় নয় কিন্ত তালাংগের বেৰপ অভাব ভাহাতে এত ব্যাপক কালে कि हेरा मदनका मधिक कर्त नारका क

ভাগা করা যায় না ? এখানে প্রাক্ষ নিবের কেন এত অভাব দেখা যায় ? ধর্ম কি কে-বল বাক্যেতে বন্ধ থাকিবেক, না ক্ষণকা-লের চিন্তাতেই পর্যাবগিত হইবেক ? ই-হাতে কি আমাদিপের হৃদয় অগ্নিয়য়, আত্মা উত্তেজিত এবং সমুদায় অল প্রতাল প্র-সারিত হইবেক না ? ইচাতে কি দেশের সর্ব্ব প্রকার অকল্যাণ বিশ্বংস এবং মঙ্গল উংপায় ক্রিবেক না ? আমরা যদি সেই সংসাবেরই উপাসক রহিলাম, যদি প্রতি নিমিষে প্রতি মুহুর্তে প্রতি কার্যো ঈশ্বরের মহিমা অধিকতর ব্রপে প্রতার ক্রিতে না

অবলয়ন করিবার গৌরব কি?।

 পরমালন্। তোমার অনুথ্রে অদা त्य व्यामती अहे भटकः (समनदक्करक व्यामिशा আগার অপার আনন্দ লাভ করিলান, ত-জ্জন্য তোমাতে একান্ত হৃদয়ে বার বার থা-ণিপাত করি। তুমিত দকলই দেখিতেছ, সকলেরই প্রতি ভোমার থেমদৃটি বিস্তা-রিত রাখিয়াছ, আমাদিগকে তোমার প্রতি আকর্ষণ কর। ভোমার এই ছুর্বল সন্তা-নলণকে তোমার বল প্রদান কর, আমরা সম্পূর্ণ রূপে তোমার আশ্রয় গ্রহণ করি। এ কাল পর্যান্ত তোমার কার্য্যে আমাদিলের যে অসংখ্য ভ্রম প্রমাদ ও অপরাধ হইয়াছে ভালা মার্জন। কর; যেন পর বৎনর অধি-কতর উৎসাহ ও আনন্দের সহিত তোমার মহদ্যশ গাম করিতে পারি। এই এামের আবাল রুদ্ধ বনিতা সকলেরই হৃদরে ভৌ-মার সভা আবিষ্ট ছউক, ইহার পরিবার স-কল ভোমার প্রিয় পরিবার হটক এবং এ-বানকার জাতা ভগিনীগণ, শুসকল বাজান-खनीत गरिक अक्षित रहेता कामात मनन ভবি প্রচার। क्यून। नोथ। व्यम्।कात्र य-व्याप्त विक अमारे भाग ना रह, किन्छ व

অমৃতভোজে আমরা বলিষ্ঠ হইলাম. তাহাতে মামাদিগের প্রভোকের জীবন যেন
তোমার সহিত দৃঢ় সহস্ধ নিবন্ধ করিতে সমর্থ হয়। তাহা হইলে প্রতিদেন আমাদিগের মহোসবের দিন হইবে এবং নিতা
কাল আনন্দন্য হইবে।

ওঁ শাখিঃ শাবিঃ শাকিঃ হরিঃ ওঁ।

### রাজ-তরঞ্জিনী।

২৫৪ সংখ্যা পত্রিকার ৯৪ পৃঠাব পর।

জ্যাপীছের পুত্র ললিতাপীড় রাদ্যাভি-विक इहेशा (कवल नीह ও धगर मश्मर्श এবং অতি কুখানিত আনোদে প্রাকৃত্ত চইয়া কালাভিপাত করিতে লাগিলেন। ভাঁছার পিতার সঞ্চিত রাজভাগুরেস্থ ধনরাশি তিনি স্বীয় পারিষদ ও ভোগা। রমণীগণের মধ্যে মুক্ত হল্তে বিভরণ করিতে লাগিলেন, প্রাচীন রাজকর্মচারিগণ তাঁহার কুচরিত দেখিয়া ক্রমে ভাঁহাকে পরিভাগি করিয়া যাইতে লাগিল, কিন্তু এই চুরাচারী নরপতির রাজত্ব অধিক কাল স্থায়ী হয় নাই; তিনি দ্বাদশ বৎসর রাজ্য ভোগ করিয়াই লোকান্ডরিত হইলেন। তাহার পাঃ তাঁহার ভাতা সংগ্রামাপাড় রাজ: হইয়াছিলেন, ইাহার রাজত্ব সাত বৎদর ছিল.পরে চিপাতজয় নামক ললিভাপীড়ের এক জারজ পুত্র রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন। এই নরপতি স্বত্পবয়ক ছিলেন, এই নিমিত্ত তাঁখার পাঁচ মাতুল মিলিত চইয়া রাজকার্যোর ভার গ্রহণ করিল। বাস্ত্রিক তাহারাই আপনাদিবের নধ্যে সনুদায় রাজা বিভাগ করিয়া লইয়া সম্পূর্ণ র**পে আধি**-পত্য করিতে লাগিল। পরে চিপা**তজয়** বয়ংপ্রাপ্ত হইয়া সীয় হত্তে রাজ্য ভার লই-বার মান্য প্রকাশ করিলে, তাঁহার মাতুলগণ পরামর্শ করিয়া গোপনে ভাঁছার আণ বধ করিল, এবং তৎপরিবর্ত্তে ত্রিভুবনাপীড় না

মক ললিভাপীড়ের একটি পৌত্রকে সিংহা-সনে স্থাপন করিল, ও পূর্ববিৎ সমন্ত গ্রাজ-কার্যা আপনারাই নির্বাহ করিতে লাগিল। এই প্রকারে তাহারা নির্বিবাদে ও অভিশয় পর্বক্রমের সাহত ৩৬ বৎদর ব্যাপিয়া ত্রিভু-বনাপীড়ের নামে রাজা করিয়াছিল। ভাষা**দের প্রস্পারের ম**ংখ্য **ই ঈর্ষা ও দ্বেদভা**ব উৎপন্ন হইয়া উঠিল, এবং পরস্পরে যুদ্ধ ্থারস্ত করিল,তাহাতে এক জন নিহত হই লে অপর চারি ভাত। পুনরায় শিলত হুইয়া ত্রিভুবনাপীড়কে রাজ্যচাত করিয়া ইচ্ছামত রাজবংশীয় অপর এক ব্যক্তিকে সিংহাস-নাভিষিক্ত করিল। এবং তদবধি ভাহারা অনেক কাল পর্যান্ত এক একটি কার্ছের পুত্তলিকা স্বৰূপ নাম মাত্ৰ বাজাকে সিংহা-সনে বসাইয়া নিবিবেরাধে রাজত্ব করিয়াছিল। এই চারি ভাঙার মৃত্যু হইলে পর,ভাগদের रासूहत्रान এकव रहेश। र्हारान्त्र मरना छेर-পল নামক এক ভ্রাভার পৌত্র অবস্থিবর্মাকে ब्राब्दनम व्यनांच क्रिनः अहे बार्टन करकीं बस्भ तांका हा छ इहेल।

অবন্ধিনর্দানি হোসনত্ত হইলে অনেকেই
শক্র হইয়া তাঁহার প্রতিকূলে অন্ত ধারণ
করিল, তাঁহার আপন আত্গণও ঈর্যাপরবশ হইয়া তাঁহাকে রাজাচাত করিবার চেন্টা
হ রিচে লাগিল। কিন্তু ভিনি স্বয়ং বিক্রমশালী ও অভিশয় বৃদ্ধিমান ছিলেন, এবং
তাঁহার মর নামক অভি বিচক্ষণ মন্ত্রীও
তাঁহার মহায়তা করিয়া উভয়ে বলে ও কৌশলে অপ্পকাল মধ্যে শক্রা দমন করিলেন।
শরে রাজা স্তর্বর্দা নামক এক আতাকে
যুবরাজ করিয়া তুই জনে মিলিত হইয়া কুশলে রাজ্য শাসন করিছে লাগিলেন। মৃপ্রি ও যুবরাজ উভরেই আপনাদিলের
উদার ভাব ও বদান্তাগুণে অঞ্চাগণের অভিশার প্রাতিভাজন হইয়াছিলেন। ভাঁহারণ

वाकाणिशस्य अपूर्व वर्ष मान कहिरकम अवश স্থানে স্থানে দেবমন্দির অস্তুত করিয়াছি-लात। जाशत, जूशकित छेरद्वक मृक्कोरखत অনুগামী হইয়া রাজ্যন্ত্রীও বছৰির সভার খারা বিখাতি হইয়াছিলেদ,ভিনি শ্বয়ং শ্বর-পুর নামক এক নগর স্থাপন করিয়াছিকোন, এবং স্থারেশ্বরীক্ষেত্রে এক শিবমন্দির ও অতিথিশালা নিশ্মাণ করিয়া দিয়া ছিলেন। অপর,তিনি পণ্ডিত ও অধ্যাপকগণের শ্রতি-পাগন, ও শাস্ত্রালোচনার প্রতি বিশেষ উৎ-সাহ প্রদান করিতেন। এই সমরে যে স-কল পণ্ডিত কাশ্মীরে ছিলেন তাঁহাদের मद्दा मूक्क काल, भिवश्वामी, श्लानन्दर्श्वन, त-ত্নাকর এবং রামজ এই কয়েক ব্যক্তির নাম ইচিহাদে খ্যাত আছে। অবজিবর্মার শাসনাখীন প্রকাগণ কুশলে ও স্বচ্ছাচিত্তে বাস করিতেছিল, কিন্তু তুর্ভাগ্যক্রমে কোন নৈসর্গিক কারণ বশত বিভক্তা নদী উদ্বে-इडेश काशीरत कनभावन इहेन, भगा (कञ्च मकल नक्षे इहेशा (भन এবং छो-হাতে ভয়ানক তুর্ভিক্ষ উপস্থিত হইল। এই ৰূপে বারয়ার জলপ্লাবন দারা কিছু কাল শলোগৎপাদন একে বাব্লে নিবারিত হইল। প্রজা সকল অন্নভোবে প্রাণ্ড্যাগ করিছে লাগিল এবং গোধুনাদি শ্লোর এইকার ছ-র্মাল্য হইয়া ছিল যে এক আড়ক পরিমিত मगा गरुख भौनाह(>) काता की उ स्रेटिक ना-গিল। ভূপতি এই বিপদ্ হইতে উজাতরস্থ কোন উপায় চিন্তা করিতে না পারিয়া হড়া-শ্বাস হইয়াছিলেন। পরে **স্ক্রা নামক এক** জন দামান্য বাক্তি ভাঁহার সমিধানে আ-দিরা কহিল যে মহারাজ, অনুমতি হুইতে यामि এই प्रक्रिक, छन्नमारमंत्र छन्। इति করিতে পারি। রাজা ভাষার **কথা**ছ নি-

<sup>())</sup> शेनात ।—नुर्व बात्तत क्षत्रतिक सूत्रो, व बात द्वीप स्थ रेश कांत्र सूत्री रहेंदरक।

শ্বাস করিয়া ভাষার অভি এই ছবহ কার্যোর ভারার্পণ ইরিলেন। সুজ্ঞারাজ ভাণ্ডার হইতে অচুৱাৰ লইয়া এক নৌকা করিয়া চলিলেন এবং জলপ্লাবন হেতু গে যে স্থানে গভীর জল জমিয়াছিল তথার তিনি এক এক মুদ্রা পরিপূর্ণ কুয় নিকেপ করিছে লাগিলেন, ভাহাতে লোক সকল সেই মূত্রা পাইবার জনা বাঙ इड्या ननीत मिटक প্রস্তরের ছারা বাঁধ প্রস্তুত করিয়া জল নি-প্রন করিতে লাগিল, তাহতে ক্রমে ক্রমে ক্লিপ্লাবিত ভূমিও কেত্ৰ সকল জল প্ৰাও শুক্ত হইরা আদিল। পরে পুনরায় নদী উচ্ছু-ति इ इस्ता जनकावन ना इटेस्ड পारत छा-ात क्रमा मिट्रे सूरकोशनकाती वर्गाङ काण्योत मध्य तृहर बृहर श्रील काणिया पि-লেন এবং বিভন্তার ভীরে উচ্চ নাঁপ নির্মাণ এই गकल डेशारा ক বিলেন। পূর্বাদেশক। অধিকতর উবরো হইরা প্রচুর শ্স্য উৎপাদন করিতে লাগিল। রাজা গ্রহজার প্রতি পরম সম্বন্ধী স্ট্রা ভাষ্ট্রে বছবিধ পুৰস্কার অদান করিলেন এবং ড:-হার কীর্ত্তি স্মরণার্থ বিহস্তার তীরবর্তি স্বজ্ঞা-পুর নামক এক নগর স্থাপিত করিলেন। এই ঘটনার কিছু কাল পরে রাজার মৃত্যু হইল, ও তাঁহার পুত্র শঙ্করবর্মা সিংফাদনস্থ হইলেন। ইহাতে অসম্ভব্ত হইয়া কতিপয় অধান কর্মচারী রাজবংশীর অপর এক वाक्तिदक तोषां कतिन, अवर मकतवर्मादक পদচ্যত করিবার নিমিম্ব অস্ত্রধারণ করিল। কিন্তু পরিশেকে ভাহার৷ পরাঞ্চিত হইরা প্রায়ন করিতে বাধ্য হইয়াছিল। শক্ষরশ্রী আপন রাজ্যে শান্তি সংস্থাপন केतिया पिथिकतः कित्रिष्ठ अर्थ हरेटनम । ভাষাতে অপর স্তই তিন রাজাও ভাষার সহিত নাৰ্দ্দিলত হইলেন এবং তিনি চারি नक अगोजिक वक नक अगोद्याकी

ও ভিন শত হস্তী সমভিব্যাহারে লইয়। কা-শ্বীর হইতে বহিগমন করিলেন ৷

जुशकि अथरम रेज्यार्डताम शृथिवीवस-কে(२) পরাভূত করিলেন। পরে গুজ্জরাবিপ-ভিররাজো অবেশ করিয়া যুদ্ধে তাঁহার সমস্ত সৈন। নিহ্ত করিলেন, এবং ভাষাকে একটি ক্ষুদ্র দেশ প্রদান করিব। তার্ছার মুখন্ত ব্যক্ত। । अ इक्ष्म छ। अप्रकात कि इस् न है र सम । পরে শঙ্রবর্ম। ভারত-বিখ্যাত মহাধ্রত।-পশালী ভোজনাজের দর্প চুব করিয়া প-**শিচমে গমন করিলেন। তথার বলদন্ত দর**ং ও তুরক্ষরাজ্য গণের (২, নিক্ট কর গ্রন্থ कतियां श्राटका क्षडांग्रंघ व्हेटलगा 🕒 🤡 -পরে স্থনামে এক নগ্য স্থাপন করিলেন। শক্রবর্মা অভিশয় ধনলো হা ছিলেন, এবং वक्रविध উপায়ে প্রজাগণকে निष्णीएन क-রিয়া ভাহাদিগের অর্থ শোষণ করিচেল। তিনি প্রচলিত রাজস্ব ও শুল্ক গুরুতর মা-ত্রায় গ্রহণ করিতে আরম্ভ করিলেন, এবং ভূমির উৎপন্নের যে নিক্রপিত অংশ রাজার প্রাপা, ভাষার অধিক লইতে লাগিলেন। অপর তিনি দেব সেবার্থে প্রদন্ত ভূমি দকল বদ-পূর্বক স্বরং অধিকার করিরা ভোগ ক রিতেন; এবং চন্দ্র কাষ্ঠ, স্থা দ্ধা দ্রবা, তৈল ও অপরাপর বাণিজ্য ক্রবং বিক্রন্ন করিবার দাধারণের অধিকার রহিত করিয়া, কেবল বিশেষ বিশেষ ব্যক্তিকে ভাঙা প্রদান ক-রিতে লাগিলেন। রাজা এই দকল নিঠুর নিয়ম ও গুরুতর কর স্থাপন বিষয়ে কভিপর কায়স্থ কর্মাচারীর প্রামর্শ গ্রহণ ওলিতেন। এবং তাহাদের ভারাই সমস্ত কার্যা নিকাছ করিভেন। এই শকল কর্মচারীর মধ্যে লবত নামক ব্যক্তিই সর্বপ্রধান ছিল; রাঞ্চা ভাহাকে ৩০০০ দীনার বেতন দিতেন। আ-

<sup>(</sup>१) टेंड्रगर्ड नर्डमान लाट्डात । (१) टाप्पीटवृद चेंड्रपु लान्डटम काम्याणि कर्म न्यूमक कांचि जारह।

পর রাজনভান্ত পণ্ডিভ, অধ্যাপক ও কবি-গণরাত্ত অভাবে অভাত্ত ক্লেশে পতিত কইয়াছিলেন। শকরবর্ণার এইবাপ নিষ্ঠুর শাসনে ৬ খনগার বাবহারে প্রভাগণ অ-তিশয় সুংখাপর ও কতির হওয়াছে, রাজ-মন্ত্রী ও রাজপুত্র ভূপতিকে তাহা জ্ঞাপন করিলেন। কিন্তু ভূপতি পুত্রকে এই মাত্র উত্তর দিলেন, যত কাল তুমি না হয় রাজা ছও ২৬ দিন অপেক্ষা কর,তাহার পার তো**-**মার ইচ্ছা হয় প্রকাগণের জুংখমোচন ক-রিও। শঙ্করবর্মা। কিছু কলে অর্থ সঞ্চয় ক-तिया भूनतोष रेमनः अरेशा উछता जिन्न तथ अभन कहित्वन, मिक्नुनिनी होदवर्जी एक म-্ষল জয় করিয়া উরস দেশে (৪) গ্রবেশ कतिर्लग: किन्नु अबे खुरल পर्वर । स বক্ষরের বংগে বিদ্ধান্তীয়া ভিনি আপিলাগি ফ রলেন : উণ্ণার মেন•িবিশ উদ্ধার মৃত্যু मध्याम (प्राथन क्रिया मञ्जाद देगना वाहेसा স্তুদেশে প্রভ্যাগমন করিল, এবং কাশ্মারের নিকটবভী হইয়া রাজার মৃত দেহ এক অভি উচ দেভিং প্ৰস্তুত কৰিয়া দাই কৰিলি ; তাহার সহিত রাজার তিন রাণী ওজয় সিংহ লামক একজন পণ্ডিত সহমূত হইলেন!

শক্ষর শ্বার পর তৎপুত্র গোপালবর্মা রাজ হুইলেন। গোপালবর্মা নিতান্ত শিশু ছিলেন, এই হেতু তাঁহার মাতা রাণী দুগলা রাজ প্রতি নাধ হুইয়া মনস্ত রাজ কার্নিরে ভার গ্রহণ কবিলেন। কিন্তু রাণী নিশিব্যক্তি ছিলেন, এবং প্রভাকর দেব না-নক মন্ত্রী হালার প্রিয় পাত্র হুইয়া সকল বিখা শুহু করিতে লাগিল। গোপা-না দুহু করিতে লাগিল। কথিত আত্ত থে বাভাবর মন্ত্রী হিল। কথিত হার প্রাণ নাশ করিয়াছিল। তৎপরে গোপালবর্মার এক ভ্রাতা রাজা হন, ইনিও কিছু
দিন পরে অকালে মৃত্যুহন্তে পতিত হওয়াতে রাণী স্থান্ধা সিংহাসনতা হইলেন।
কিন্তু ছুই বৎসর রাজত্ব করিয়া রাণী রাজ্ঞপদ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন
এবং তৎপরিবর্ত্তে সুরবর্মার পৌত্র নির্জিতবর্মা ভূপতি-পদে অভিবিক্ত হইলেন।

ইয়া উঠিয়াছিল। তত্তি ও একাঙ্ক নামক छুই एल जाकरमना महाप्रकान हरेगा साधीन-जाव ধারণ করিয়া আপন্যদের স্বেক্ষামত ব্যক্তিকে রাজপদে স্থাপন করিয়া দেশ লুগুন ও প্র-জাদিগের নান। গুকারে প্রীড়ন করিতে আ इंड क्रांडल। अहे हुई रेमना निकां श्रीय कि না ভাহার কোন উল্লেখ নাই: বোধ হয় ভাহারা তাহার ও আফ্রান জাতীয় হইবেক, কারণ ইফারাই মচরাচর বেত্রভোগী কইয়া বিদে-শীয় রাজাদিলের দেনা হুইয়া থাকে। যাহা ইউক অনেক দিন প্রাপ্ত ইহারা**ই অভাস্ত** পরাক্রান্ত ও স্বেভাচারী হইয়া কাশ্মীরে আধিপত্য করিয়াছিল, এবং এক ভূপতির পর অপর ভুপতিকে আপনাদিগের স্থবিধা ও স্বেচ্ছামত সিংহাসনত্ত অথবং সিংহাসন-চ্যুত করিয়াছিল। এই **প্রকারে নির্জিত**-বর্মার পর তৎপুত্র পার্গ, ত**ৎপরে পুনরায়** রাণী স্থাকা, পরে চক্রবর্মা, ভদনতর স্থা-বর্মা ও শঙ্করবর্দ্ধন, ইহারা অপ্প কাল মধ্যে একাদিক্রমে মিংহাসনে উপিত ও তথা ट्डेररु भूनण मृतौक्र ट्ट्रेश**हिरलन। हेड**ी-দিগের মধ্যে চক্রবর্মা রাজচ্যুত হইলে পর প্রাণ ভয়ে পলায়ন করিয়া ডামর নামক পর্ব্যতনাদী এক বর্ব্বর জাতীয় রাজার আ-প্রায় লইরাছিলেন; এবং ডামর রাজ তাঁহাকে পুনরার সিংহাসনে ভাপনার্থ বছসংখ্যক প্রতীয় লোক একত করিয়া ভাষাদের

ত্রক দেক তের না বের ভারে নির্থ করা সভ্জ ১৯ ১ নির পারি চক্ষণ, হারে গায়ত কিন্দু ভারারা ভারত বার্মির নির্ভানি এনে বের্জানের । বেশি হয় উন্ন নাম্ক কালি এবে, বিজ্ঞানিক।

সহিত কাশ্মীরে গমন করিয়া অপ্রতিহত ভাবে এনগর পর্যান প্রবেশ করিল। ত্রা-হাতে শঙ্কাবৰ্দ্ধন বিক্ৰান্ত তত্তি সেনাগণকে লইয়া আক্রমণকারী ভামর দৈন্যকে পদ্ম-भूत निकटि युक्त ध्वनान कतिर्वन। এই যুদ্ধে তত্তি দেনাগণ সম্পূৰ্ণৰূপে প**াজি**ত ও ছিল্ল ভিন্ন গইল এবং তালাদের অবি-काश्म हे निरुष्ठ रुरेल। भक्तत्वर्क्षन् अमतः ক্ষেত্রে প্রাণভ্যাগ করিয়াছিলেন। চক্রবর্মা चीत्र विक्रही जांबत रेमना लहेता जी मना-त्तां भूर्यक तांक्यांनी मत्या व्यत्न कतिश निकितादण ताणच शक्त कतिदलन। किन्छ জিন স্বীয় নীচ প্রবৃত্তি হেতু শীঘ্রই প্রজা-দিগের অঞ্প্রিয় হট্যাছিলেন। একদা তিনি ছুইটি ছোন্ত । ভোম) জাতীয় <del>স্থাদ</del>রী ন-র্ত্তকীকে দেখিয়। ভাহাদিগকে আপনার भूतजो कदिरलमः, अतः अन्यम ভाष्टारमत अ প্রকার বশীভূত হইয়াছিলেন যে সমস্ত কার্যাই ভাহাদের অনুমতি ক্রমে করিছেন! অপর তিনি আপনার মাল্যাকরো ডামর **দেনাগণকেও সম্পূ**ৰ্ণ ৰূপে বিশ্বত হইয়া গিয়াছিলেন; ভাহাতে কতিপয় ডামব একত্র ইইয়া রাজি কালে তাঁহার শয়নাগারে প্র-বেশ করত তাঁহার শাণ বধ করিল। তদন-ন্তর উন্মন্তিবর্ত্তি নামক পার্থের এক পুত্র রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন। এই রাজার চরিত্র অতিশয় ঘৃণাজনক ওনিঠ্র ছিল। ইনি নৃতা গীত ও স্ত্রীদংদর্গেই সমস্ত সময় অভিবা-হিত করিতেন, পক্ষিযুদ্ধ ও বন্য জন্তুদিগের যুক দেখিতে তাঁহার বিশেষ আমোদ ছিল। অপর পাছে পরে কোন বিদ্রোহ উপস্থিত হয়, এই আশিক্ষায় যে যে ব্যক্তির প্রতি ঠাঁ-হার বিপক্ষ বলিয়া সম্পেহ ছিল তাহাদি-গকে নিহত করিতে আজা দিলেন; তিনি षापन ভाতादक এक सक्तकातानादत सम করিয়া নিরাহাত্রে বধ করিলেন; এবং তাঁহার পিতা পার্থকেও কতিপয় অস্ত্রধারী দ্বারা নিহত করিয়াছিলেন। কিন্তু এই শো-ণিতপিপাত্ম নরপতি ইহাতেও দস্তুট হন নাই, তিনি ক্রীড়ার্থে এবং অন্ত শিক্ষার্থে স্বয়ং অদি ধারণ করিয়া আপন অন্তচরগনের मञ्जरक्षम्। এবং নার্বাগণের স্বনচ্ছদন করিতেন। অপর রক্ষদ নামক ভামর দেনা-পতি তাঁহার মন্ত্রী হইয়। প্রজাদিলের সর্বস্থ वल भूरतक अभवत्व कित्व लागिन। এই ৰাপ নিঠার শাসন তুই বং দর মাত্র ছিল, ভাগর গবেই এই জুরাচার রাজার মৃত্যু হইল এবং ভাধার পুত্র স্ববর্ম। ও নিংহা-सङ् रहेता ज्ञान काल मरता रलाकाग्रह खांख इहेल। इहाटज ताक्षकपानाती अभिक्षिण्य একত্র হইয়া বশক্ষরদেব নামক এক জন দামান্য ব্যক্তিকে বাজপদে স্থাপন করিল। यमकत পिশावभूत वांनी कामतनव नामक এক ব্যক্তির পুত্র ছিলেন। তিনি বাল্য কা-লাবধি অসামানা বুদ্ধি শক্তির পরিচয় দিয়াছিলেন এবং ভাহাতে যেরুবর্দান নামক এক রাজমন্ত্রীর বিশেষ অনুগ্রহস্তান হই-য়াছিলেন ও তৎকর্তৃক শঙ্করবন্মার রাজ্য कांद्र अञ्चाधिकांचा (१) भए आश्र इड्यां ছিলেন। যশকর স্বভাবত যেমন বৃদ্ধিমান ছিলেন, দেই ৰূপ তিনি বাজকাৰ্য্যেও বি-শেষ দক্ষত। প্রকাশ করিয়াছিলেন। ভিনি রাজা নগো প্রথমে স্থানিয়ম ও শাস্তি স্থাপন করিয়া চৌহা।ও দস্মারুত্তি নিবারণ করিলেন। ওঁছোর সময়ে রাজপথ দকল ভয়শূনা ৯-ইয়াছিল এবং বিনা প্রহরী সমস্ত রাতি দো-কান দকল মুক্ত-দার পাকিস; এক জাতি অপর জাতির বাবসায় গ্রহণ করিছে পা-রিতনা এবং প্রজা সকলে রান্ধার ন্যায়-গুণ ও স্থানিচারে পরম সম্ভূফী হইয়াছিল। কিন্তু একটি ছুৰ্ টনা উপস্থিত হুইয়া যুশক্ষ-

<sup>(</sup>a) दैमना मः क्रांख भन ।

(त्रत ममक कीवसरे फ्रांचावर ७ ताक्षदात्रत প্রতি ব্যাঘাত চইয়াছিল। ভাঁচার এক ত্রী চুল্চরিত্রা হট্যা বাজবাটীর এক নীচ জাতীয় ভূতোর প্রতি আসক্ত হইয়াছিল; এই বিষয় তিনি জাত হইয়া দুঃখ ও লক্জায় অভিনত হইলেন; এবং এই কলস্ক অপ্ নয়নার্থ প্রায় ভিত্ত করিয়া রাহ্মণ পণ্ডিত-গণকে বিক্র অর্থ দান করিলেন, 'আর এ-কটি মঠ স্থাপন করিলেন। কিন্দু তাঁহার मन इहेटा वहें कलक मुत्रीक्छ बहेन ना। ভিনি ভদ্বিষয়ের চিভার নির্ভর বিমাশ-ভাবে থাকিতেন:এবং পরিশেষে গাঙ্গ্য ভাগ করিরা আপনার প্রভিষ্টিত সঠে প্রবেশ করিয়া গোপনে জীবনের অক্ষাই ভাগ অভিবাহিত করিলেন। তিনি ।-খন রাজপদ প্রিত্যাগ করিয়া ব্ন ত-খন তাঁছাৰ এক পুতা ছিল, কিন্তু এই পুতের জ্যোর গতি উহোর সন্দেহ তিল, এই ছেতু মলিবর্গকে আহ্বান করিয়া তা-হ্রে এক জ্ঞাতি বর্ণাট নামক ব্যক্তিকে শিং-क्षानन अनाम कविटल करियाकिटनन। किन्न মশক্ষরের পূত্র সংগ্রামদেব নিভান্ত শিক্ ছিল এই কেছু মল্লিগ্র ভাঁহার রাজত্ব হইলে মস্পূর্ণ আধিপতা করিতে পারিবেক এই আশায় সংগ্রামদেবকেই রাজা করিল। अहे कटल व्यवास कमांगातिश्व मयन्त्र कमरू অাপ্ত হইয়া কিছু কাল সধ্যেই পরস্পার विवाम जावु कहिन, अवः डाशरण्य गरमा পার্বপ্র নামক মন্ত্রী কতিপয় লোক সং-এছ করিয়া এক বিদ্রোষ্ উপস্থিত করিল, এবং দেই গোলবোগে রাজাকে ও তাঁহার মপ্রক বাজিদিগকে নি**হত করিয়া আপ**নি নাহ্ন পূৰ্ব্বক নিছোবিত **ভরবান্ধি ধার**ণ ক-রিয়া সিংহাদনে আরোহণ করিল, আর তা-ভার অনুচরগণ ও ভরযুক্ত অঞ্চারণ জাহাকে त्राका महाधरन व्यनाम कतिला। किछ भा-

किंग्रेट अंश कामजा व्यक्ति निम हिल मा, छ। हात्र প্রতিপক্ষেরা পুনরায় প্রবল হইয়া ভাষাকে পদচাত ও নিহত করিল, ভাহাতে তৎপুত্র ক্ষেমগুপ্ত বাজা হইবেন। ক্ষেমগুপ্ত অতিশয় ইন্দিয়পরায়ণ ও ভোগস্থাসক্ত ছিলেন স্থভরাং তিনি রাজকার্য্যের আভি किছু মাজই মনোষোগ করিতেন না, ইহাতে (मगबर्धा बोक्नामन निकास गिथिल इहे-য়াছিল, এনং প্রভবাদী বর্বরগণ **আদি**য়া नशत्रामि लुर्छन उ वोक्रमिरशत সক্ষুদ্ধ করিয়া দিতে লাগিল। वाक। कारमांवाविश्वि मिश्म्तांरकत मिफा নামী কন্যাকে বিবাহ করিয়া আপনার চরিত্র কিংগ্রুৎ সংশোধন করিতে পারিমাছিলেন, এবং ভদবধি অপর সকল ব্যসন পরিতাপি করিয়া মুগ্যাতে প্রকৃত্ত হইলেন কিন্তু ইছ'-তেই ভাঁছার অকাল মৃত্যু হইল। তদনন্তর ठाँगात भूल चिम्ना ताकां इरेटनम् किन् <u> फिला तोनी समय ताक कार्य। खतः निकार</u> করিতেন এবং প্রায় সকলকেই আপনার ক্ষমতাপীন করিয়াছিলেন। ইছাতে হা-ন্তুন নামক প্রধান মন্ত্রী নিতান্ত অসম্ভূষ্ট হইয়া এক বিদ্রোহ উপস্থিত করিল; কিন্তু নরবাহন নামক রাণীর এক বিশ্বাসী অস্তুতর দৈন্য সংগ্রহ করিয়া উক্ত নন্ত্রীকে পরাজয় क्रिल। এই क्रिल नवर्वाह्म व्याविध এक्री বিদ্রোহদমন করিয়াছিল। অভঃপর অ-जिमना ताका लाका हति वह रहेतन, धदः ভদবধি দিন্দা রাণী এক একটা শিশুকে রাজ সিংহাসনে স্থাপন করিয়া আপনিই রাজত্ব করিতে লাগিলেন।

আনাদিগের ইতিবৃত্ত লেখক কছান পা-ডিত এই পর্যান্ত লিখিয়া দ্বীয় এন্ড দমাপ্ত করিয়াছেন স্কুতরাং তাঁহার ইতিহাস ১৪৯ শকান্দা (ইং১০২৭) পর্যান্ত আনীত হই-রাছে। তাঁহার পর অপ্রাপ্ত ব্যাক্ষণা তৎপরবর্ত্তা সময়ের ইতির্ভ প্রকৃতি করিরাছেন: কিন্তু ভাষার অনুধাবন করিবার
আর প্রয়োজন নাই, কারণ এই সময়েব
কিছু কাল পরেই কাশ্মীর মুসলমানদিগের
অধিকারভুক্ত ছইরাছিল। স্বতরাং হিন্দু
রাজত্ব কালীন কাশ্মারের ইতিহাস ও অব
ভার সংক্ষেপ বিবরণ উল্লেখ করাই আমাদিগের যে উদ্দেশ্য ভাষা এক প্রকার সংসাধিত হইল।

# উদ্ধৃত।

ভবানীপুব जन्म-বিদ্যালয়।

প্রধান আচান্যের উপদেশ। প্রথম সংখ্যা। ৮ টের ১৭৮৫ শক।

ইহা অভান্ত আহলাদের বিষয় যে ভিন বংসয় পারে পুনর্বার এই ভ্রানীপুরের ব্রহ্ম-বিদ্যালয়ে জামরা শুক শিধ্যে, পিডা 'পুরে, সন্মিলিড হই-ক্লাছি। ইহার মধ্যে পরিচিত অসল মুখ অসলো-कन कतिया आभात क्षण यानटम डेस्यन हरे-ভেচে, আবার মূভন উৎসাহ-পূর্ণ ব্রহ্ম জিজামুকে উপস্থিত দেখিয়া আশার অভীত ফললাভ করি-তেছি। এ ভিন্বৎশরের নগে। কত প্রকার পরি-বৰ্ত্তন হইয়া গিয়াছে, কিন্তু ব্ৰহ্মাগ্লি ভেমনি জাজ-লামান বহিষাছে। বাহাতে ভোমারদের হাদ্যে পৰিত্র ঈশরকে ধারণ করিতে পার, বাহাতে জানের উন্তি-সহকারে প্রীতির উন্তি হয়, যাহাতে পশ্ম-वरम रकामहा वनीमान २७--शाधीन इदेश विनगी হও, এই আমার লক্ষ্য। এথানে মাসের মগ্যে क्वल छूडे घती काल उभटमथ अनिवात जना উপদেশ নয়। বাহাতে তোমরা শাস্ত দান্ত উপ-রত ডিভিফু সমাহিত হইয়া ব্রহ্মধামে উপনীত হইতে পার, এই আমার লক্ষ্য। ভোমর। চির জীবন ধর্মের উন্নক্ত পথে ঈশ্বরের সহচর অনুচর হইয়া থাকিবে, এই শুরুতর অভিপ্রায় সিদ্ধ করি-बात निविष जिन बदमत शदत ज्यामात्रदणत अशादन निमानसः आसमा मदन विमान क्षारत यक हेकू नाथा नार्थाया क्रिटिंग क्राप्ति । द्यागांतरमत ज के-कान नारकत निमित्छ व अकात बच्च, का शह क करणाय । कार्य का क विकाहि । किन पर नत

A Company of the Comp

श्रुटक य मकन उभरमण निया हिनाम, ए। हा कि हू है বার্থ হয় নাই। ভোম'রদের অনেকের ছ্দমে ব্রাহ্মপর্টের মধ্রতা প্রবেশ করিবাছে এবং ব্রহ্মকে আহে। বিশেষ কুলে জানিবার নিমিত্ত জোমার-भित्र छ। भेन । छ ग्रिया। ८६ । जेश्व (कि.स. दिश्व स्मिहे প্রোথন। সিদ্ধ ককন্। সেই নিভা অমুদ্র অভর कृष्टेच अवन अन्य भारतमञ्जलत कार्यी कहेगा है अधारम ভেগ্রা সমাগত হটড়াচ, ইহানে ব্রাক্ষণশের प्रिश्राम्भ बक्ता कविया छ--- भ छिन्न का गर्भः म **अक्राम**-্যাথনা বাতীত শুক राजिभाषः । মঙ্গল পুরুদের অমৃত্তন্য ভারে প্রকাশ পায় না। ভাঁহ'তেও জানিবাৰ যাঁচ র ইক্ষা হইলাছে, ভিনিই অভাব ধর্ণাধা ব্রহ্ম জান লাভ কবিজে পারেন। ব্ৰদ্যকানেৰ ভাৰণ লোপান প্ৰাথনা : বিভীয় ষোপান যমুও চেটা। তোলবা গাঁ, সুভকারী इहेटल ५ क. क. व केप्टरबंद न गांचीया लग्ना जाममा मना इहेगा एक अन्धिक अन्मात केश्रीस्थित गर्धा मकल (श्राणिम् हत्। ज्यान-श्राम्धान्य) निविद्य ভোষারদের নিজের অনুকার ওমছের উপর্যত নির্ভর করে, আমার উপরেশের উপর ভঙ নহে। ভে'মবা বিদ্যালয়ে যে ভারে বিদ্যা শি-शिष्ठ याङ, य जात बक् का स्थापित याङ. নেই ভাবে কি এখানে আসিয়াছ ? সেই ভাবে र्यान व्यानिष्ठा शाक, खर्द खाला फेंडे हर श्र नारे। এখানে প্রিছ ভাবে আংশিতে হইবে। যে ঈশা বের জন্য কড় লেকে অর্থে। অর্থে ভন্গ করি য়াছে, অণচ উহিচে পায় নটি ; কছ কন্ত দার্শনিকেরা জর্ফ-জাল বিস্তার করিয়া ঘাচাকে জানিতে বিয়া অবস্থ হইয়া ফির্ণ আট্নয়ত্ত ্ कैं।इ। वि निष्ठां व हेवाव स्वया अवादन कारिया छ । প্রমেশ্রের নিকটে ঘাইতে সহলে প্রিত্র হার্থে स्वक ऋभरप्र या है एक करेरत । यमञ्जूषान्य द्वान छ ह भगादभ पारेटक दुर्फिल इंडेटल इस, दश्यम সাধু-মমাতজ অবিনয়-সভাবে বর্করের নাম্ম উপতে শন করা যায় না : তেমনি পরিত্র-পরপের সলি ধানে অপ্ৰিত্ৰ ইইয়া যাওয়া যায় না। কেমন করিয়। অপবিত্র চক্ষু ভাঁহার চক্ষুর প্রতি অর্পন করিবে ? পাপে রছ থাকিয়। কি প্রকারে সেই পর্মেশরের পবিত মুথ দর্শন করিবে? বিশুদ্ধ-ভাবে শ্রদ্ধা-ভাবে সেই প্রম পিভার নিকটে উ-পদ্বিভ হইভে হইবে। তিনি আমারদের প্রম পিজা, আমরা দকলেই ভাঁহার সম্ভান : ডিনি व्यामावरमत अञ्च, व्यामहा नकदल है जाहात क्रका : তিনি আমারদের রাজাধিরাজ, আমরা সকলেই ওঁহোর প্রজা, ভিনি ''একোবশী,'' আমরা সকলেই ভাঁহার বশে রহিয়াছি। আইস আম্রা হত্তে ছন্ত ধারণ করিয়া, ক্ষমে ক্ষেক্তে মিলিজ হইয়া, সেই

श्रेषात्वव माध्यादम ज़िश्मीक रहे-- भाषात्मत् পার সোপানে আরেছেও করিয়া উদ্ধুরে সেই দের-দেবের নিংহাসনেও নিকটবর<sup>†</sup> গই। জা-मरक फेंब रु कविश्व। गर्फारक व्याप्त न विश्व है की করু, আ এক সহকারে সভোর অনুষ্ঠান ভারা হৃদ-গতে প্রিক্ত করে, ভাষ্টে পাসত্র স্কুপ এখনট আংলি। क्ष के हेटबस । श्रीम अपने करहे । इस् নেখের আবিবলে ভাষা মলিন ভ্যা তবে সেই পৰিত স্বপ্ৰকাশ স্থানৰ কিব্ৰাকে নেয়ে। নথা নিয়া कि खकाइव महान कविद्व र असम शास्त्र के सिरा-भरयस्य धचुचीतः इट्यम, अधन हुमालहोता हुन-পালনে তৎপর পালেন: সেই প্রান্ত কোমারদের ্ত্র-সহকারে ত্রাক্ষা-ধর্মা ব্রন্ত প্রধান করিলে চইবে। এথনি কি ভোগারদের গালত ১ইলে ইছে৷ ১ই- ছে না? কেৰে প্ৰবিদি ভিক্তি সংগ্ৰহ কৰিছা! ानिक कडेश। कथारम लाभिशा हडेरट, जिएल श्र-ोनल श्रीकटच सञ्च कहिरत। अति श्रामिता इकेटत १ ্দিৰ নায় ইন্দ্ৰিয় সংখ্য করা তাৰে প্ৰিণ হইবে। ों। तथ-मा भग कि १ न, ए ४,- प्रेशनपुर बालन है स्तिष्ठ-দিপত্তে সম্মাসতে বিজ্ঞাত করা ৷ যেন্ন অস্থাক্সচ अमारक मिराइ। इ करने १ राज्यां भी स्वरामियोदक निवसम र्रोजन्ता । अभिप्रक ० का । इ गुगक्त कया गर् কড় শাক্তা দ্বার, সভাল ভিনেত ভাইটে অপ্রি-्कः । (१६५) । हैं सिश्रां विश्वतात खेल्यकार्य अध्यय ক'র'র ন্রাক্ত রক্তান্ত প্রক্রিক হয়, আগ্রা প্ৰতিষ্ঠ ও প্ৰসন্ধ হয়। হান্দিগ্ৰিগ্ৰ পৰ্য্য-প্ৰথ ক্রেয়াল করার ই শ্রেষ সংগ্র করা ৷ মৃত্তিক শরীর পুদ্র খ্যা মন ব্যানি - ১ম, আংগ্রা সভ ও ্ৰেন্ড ইট্টা লক্ষ্যের পিল অ্রাস্কার লয়, সেই च्यक 'रत् हैं' क्या मियरक नगत की बहुत । व्यथम शहा-करा अव्यास का निर्देश के देश करने से आधार ) है, श्रद्ध दर्शने श्रादाना, शिक्कद्व मिलाए गापु छोड़े। গ্ৰহ্ম ১৯ বেশিলায় নিয়েপি কহিত্য সংগ্ৰহাকে ্রিষ করিব ও নিমিত্ত। কি প্রকারে আপেনাকে तर कर्वित्व १ विक्रिश्च १ वम द्वारा कि धकादय প্ৰায় মাংখ্য কৰিছে । প্ৰায় শুইতে প্ৰেটি নিম্বৰ্তি र्दिश शरमीत अरण है कियुविशतक विद्योग कतिशा। া, ভরতের সভারে সেঘ শুনা আকাশে যেমন ७३ ७क.च लाहा, त्यर कुल जिल्लाल यस्त्रीम् ি দৰেৰ আন্মিৰত ইঞ্জন তোকাল পা**ইবেন। ভাঁ**-ার খাটে ক নাম-কূপ হয়তে প্রজাতির বিক্ষালিক লিংবাত ব্টারে, নিত্রপি স্থিয়ের রুপন্য ক্টানে মধ্যম मना मकर किया जिल्ला कराइन । एक्सिककेदल ऋथि-पण प्राच विकेश र मिलाल अप, ८७ व्यक्तिक सम पालित्रेटन पार्वकारक प्रमाय । ठ केंग्मा **पश्चिम क्रिया है**। प्यास्त्रा । इत्रामा अन्तर कराम जाशामिक कालिकम िन अध्यात मिलाइक संधानात्य निवास ने स्था **सहस**ि

या है देव मा। अक कार्क सम्मन काश्चि अव एवादश काएता महन-वाश्र हर, इड महिमत श्रवित खादा। श्रवित-স্ত্রপের সংযোগে সেইরূপ আরো প্রিত্র-স্ক্রপের আবাদের যোগ্য হইবে ৷ ত্রান্ধ হইয়া যদি বি-শেষ-कर्ल खन्नारक सामिएक हेन्छ। कतः छरव छ-थान कह, जाश्रद रख, छेदक्के आहार्दात महि-পানে গমন কর। ঈশরের সিংহাসন অসীম আ-কাশে প্রতিষ্ঠিত রহিয়াডে, বাহা বিষয়ে সর্বাত্র ভিনি দীপ্তি পাইতেছেন, ভিনি সকল ঘটনাকে যথাযোগ্য-রূপে চির কাল নিয়মিত করিতেছেন, हेर्। (क न। कारन १ किन्नु ज्ञानार्या वरत्न "७-দিলি ভাগর' উহোকে বিশেষ-কপে জানিতে ইচ্ছা কর। তাঁহাকে উপরে উপরে জানিলে হইবে ন। : ব্রামাধর্মের আত্রা লইয়াছ, অভএর সকলের অ-ন্তবে প্রবেশ করিয়। তাঁহাকে বিশেষ রূপে জানিছে। ইচ্ছাকর। কি সভা জাতি, কি বনা জাতি, भक (लंद हे मध्य भिक्ते भक्त हो भी भक्त का भक्त भक्ति । মানের সভাতে বিশাস আছে: কিন্তু তোমায়-দিগকে সকলের মধ্যে প্রবেশ করিয়া, সকলেতে নিমন্ন হইয়া, বিশেষকপে উহিতেক কানিতে হইবে। উশ্বেৰ মহিনা বাহা বিষয়ে যে প্ৰকার প্ৰকাশিক হাহিয়াছে, ভবানীপুরের এই বিদ্যালয়ে ভিন বং-সর প্রকো ভাষা বলা ভইয়াছে; এ কলে সন্ধ্রের নিগুড় ভব্নেকল জোমর। অনন্যমন। ভইয়া জীয় অন্তঃর সীয় আমেতে অনুসন্ধান কর, ভবে বি নোৰ কপে জীহাকে জানিছে পারিবে। প্ররে বলা হট্যাতে যে জগতে যাগ্ৰিছ আহি, যাহা কিছ কইতেছে : মেট প্রাণ-ধর্মণের অপিপ্রান ভিনি ও কার-প্রাতপাদা, তিনি সৃষ্টি-বিভাত প-लय-कार्नु। जिन नव्यद शुर्द्ध क मकल दिश्राप्तम् হট্যা গিয়াছে: এখন ফাচা ধলিব, ভাহা সীয় काकातक निमध करेगा मेहक जान याता. सुना-জি ত বৃদ্ধি দ্বাবা, পবিত্র হাদ্যা দ্বারা জানিতে कर्रान-शकः ও ভব্তি मक्कार्य छ।निष्ठ इहेर्ट। यथम ताकि कारल सक्तक मस्त जिम्ह रूग, यथम সুধাকর মুধা-জাল আস্তৌর্ণ করেন ; তথন দেই শোকার মধো শুক্তিত হইয়া ঈশবৈর আবিঠাব मिथिएक पाकि। यथन छेवा काटन स्था छेमग्र হয় ভাগন স্থুদায় আকাশে উচ্চারি মহিমা ভাষ-लायन कर्ता अर्थक भिष्ठा, निष्ठाता, भेगा-रकार इ. ८४३ अथ! ८क हे महम क्या । स्मरण **विद्वा**रक ব্যালয় নিজে উন্তারি **শস্কি প্রকাশ পায়। বিশ্ব** अदल काहि काहि को हे। वृज्ञ अञ्चलको भने व्यवस्थिया র্চনা-কর্তার বিচিত্র শক্তি অনুভয় করি, আবার क्षीरभावे नार्षः धानस्य जिमा संस्टानातं मूल्यान गर्धानः डाराज कामात्माक अमानिक पानि । सर्वन आफ्न-भार्त अंदर्श कविशाहिः व्यक्तश्री व्यक्ति । निर्मान 

वाली नर्वनिष्ठका नर्वमक्तिमान् भून भुक्रवद দত্তাকে বিশ্বাস করিয়াছি। এথন হস্ত ধারণ ক-বিয়া ভোমারদিগকে থীয় দীয় আত্মার অভাস্তরে, ঈশবের অন্তঃপুরে, দহরে ব্রহ্মপুরে, লইয়া যাইব। বেখানে এখন অক্সকার দেখিতেছ, দেখানে পরে ज्यादकाक दम्बिट्व।' ज्यालमात मतीत दम्बिटक5, ইহাও অন্ধনার। আতার আবাদ-তান এই দেন-नैक्षत्र जममात्रक । त्रदाकत जात वा काल, मंतीरवर् 'अंतिष्ठ त्मेष्टे कल । अहे महीरत्त्व ज्यखरत निमग्न হইয়া সীয় আত্মাকে নেখ। আত্মার কিরণে সু-র্নার আলোক প্রকাশ পাইতেছে। যদি আত্মা नः भारक, फारन एक रमधिराक शांख ! संबीरवृत महशा আ্যার প্রভাব দেখ, তাহার অন্তর্জন প্রদেশে शत्रमाधारक रंगियरङ शाहरुवा रम अवका रित पत्रका अक समग्र बंदीत शक्तिक कहेरन, उधन শ্রুর এইডে আলা অবসুত হুইলা লোচান্তরে প্ৰন ক্রিবে। কেন এট চক্ষু গেল, ত্থন স্ত্রা কেংথায় 🖯 অস্তরাত্তাকে স্থ্যাবে অস্কার ज्यम कि अक'रत क' मन । यथम गर्मेतन क्लान করিকে না পারিলাম, নে সমীরণের মধ্যে ঠা-হাকে ক প্রেকারে জন্ত ক্রিকাপ যথন প্রাণ-শাক্তি भाकिरतक ना, कथन व्यक्तिक रलव पुरण्योमगटनव मुश्रास्त्र हैं।शास्त्र कि ध्यकारन डिश्रालाक्न करिन ? धमिल रुपा थाकिरत, सम्बंद्ध अनाहिल इन्ट्रेन, প্রক্রোদান নিয়ত গল্প দান করিবে: কিন্তু মৃত म्हित मध्यक्त छेठात किछूठे भोकित्वक ना। खब्दन। তো আলা নিকাণ চটবেক না। আলার অলা-खद्ध 'ऋख्यां जादक दम्बिट'ड हे शाहित। नाहित्तुत् अध्य मितीरत्व भाषप्रका, कि'०। वर्डमारम आर्ट्स. াক্স ভবিষাতে পাকিবেক না, ইছা সকলেই জা নেন : কিন্দু আত্মার সঙ্গে পর্যাত্মার যে চিরু স-দক্ষ, ভাষা ভোমার্রিপকে বিশেষ করিয়। জানিতে इहेटव । भथम अभूमास वाका विषय मिस्कीत है ক্রিয় হইতে ভিরোহিত হইবে, তথনো আহার अञास्तरत अमूनसाम करितल श्रमाञ्चाटक मिथ তেই পাইর। এই প্রকার প্রদাবার সঙ্গে অ'-মারদের আঁথার চির কালের সমন্ত্রী ভূলা চ-ल्फात मटल व्यामास्टामस विरक्षम इनेटन, किस भ वर्गाबाहर महिन्त कमालि विटब्हम इंटेटवरू ना । यथन में हिर्देश माचा काचारक प्रांचि, उचन मंदीहरक कार्तात आवाम-छोन त्वाभ इतः । यंथन त्वहे आ धारिक आरोत शहरा छ। दक दमिय, उथन 'धरे म-तीत शनिक रमय-मॉक्स्त्र इय । मन्नीत-मन्त्रित वाजा-वान्त्व ठीकाटक वानीन दल्लाको, उत्हादक जानात व्यान-करन आधार केटन जारित है। 丁克岛 金黄山

गरिएका ध व्यक्ति होना बरक किन्छ अंतरव

সারের পরিক শভাজে পূর্ণ রহিয়াডে। এই সম্ माग्न क्रमार (महे श्रेष्ठम महत्र्यद्व आवाम-स्रोम : এই निश्व-मस्मित्र मिहे (मन-(मदन्दे) निश्चन्त मस्मित्र। यकि कामाता छने मन्तिरवह वावित शाकिया पुत হইদে তাঁহাকে প্রণাম করিতে চাও, ভবে ভোমা-রদের উন্নত ব্রাহ্মপর্যাতে আনুগ্রায় করিবার সকল ফল পাইবে না। পদি ভোষরা ইচ্ছা কর, জবে ব্রাহ্মধর্মার ভাষারদের এট মন্দিরের অন্তঃপুরে হস্ত পার্ন করিদা লউয়া যাউবেন, দেখানে ভাহার আবিটাত্রী দেবতার সাক্ষাৎ পরিচয় প্রাপ্ত হটয়া ভোমরাকুভার্হটরে। এই বিশ্ব-মন্দিরের অ-क्षात्र्व सव-नातीय आधा , परे आशाहि क्रेश्रद्वत छै-क्किन असेन राजान, बड़े आहेत एकडे अड़े एका छूर कि त्मरेक्षात्रः । तत्र दम्तात्राहरू देशविष्टे । मानगा मर-সার-পাত্র রম্ম কর্ম কামের নেতুল ল'ল করিব। सिदीक्षण करिया (तथा, भागीक्षय समस्य भक्त हाथ, আবাল্লার জেমনি জিনটি দুর নেধিকে প্টেবে মেই ভিন দার দিয়া ঈশরের জ্যোতি অস্তবে *আ*-বিক্ট হইকেছে। ত্রকটি স্বার আন্মার জ্বান, একটি দার সাগার প্রতিত আর একটি দার আহার গর্ম। জান দারা ভূত কাল-সিদ্ধ স্কা স্কপ্তে मर्गम कति, वर्ज्यादम औरिं छ।त. छैदि मकक-य-রূপের অন্তর্না করি, ভাষী কালে কর্ত্তরা পর্ণোব অনুষ্ঠান দ্বি) শুদ্ধ অপাথানিদ্ধ পারিক স্বকাপের मित्रकर्म अञ्चय कवि । याहाः मार्ट्यः सम्बे भिन्न রস্ক্র-সভ্যানস্করেক, ভানা স্থার। জ্ঞানিকে পারি। ভাঁহাকে বর্তমান জানিয়। গ্রামি দার ভাঁহার অ-স্তনাকরি। ভখন খানজ আমারদের প্রস্প হয় এবং পর্নিত্ত,ন ভাষারেদের জাবন কাল भर्पा त्थी। कत महश्चा धनि एक हित्र के छ। न इशः कहन ভাষার। দিশবের পাংগা ও এমর ত্রুতের পালা নাল 畅销 蜀剑 听说 计区域制 测知之间 网络。 写话 কাহার প্রাণ ভাজি আকাপ কবিব যৈদে প্রাণী ন ভিক্তি দ্বালা উপাসনা না করি, ভবে ঈশরণে কর-खन-मान्छ आभनकतः छानिया**डे** त् कि ठीस्त १ याम जीकादत क्षीडि जीक कांत्रा छ। है। धार या:-(मण लाजन ना कति, खात केंग्रच लाज जीविक পালিবে'লে কেনে জনে নিৰ্দ্ধণ চট্টা ধার। সকল गमधने केंद्रिक लक्त वर्षिटम । हेद्र । कि छेला-नस्ति नगम, कि मार्भात् क कार्यन मगग्र। व्यथ-র্মাচরণ করিবার ভো ক্যাই ।টে । যাহা কিছু लर्फा-कामा कदिएया आहा । के के प्रदाय महस्य प्राप्त हो। थिया कवित्र इष्टेश्व। योग अध्यक्त मा अध्या করিয়া কার্গা করি, ভবে আপনার কার্যা চটল ; र्याप अच्चेद्रक नका कविया कार्या कति, उत्वर्षे क्रे-শরের প্রিয় কার্যা হইল। ব্রাহ্মপর্মের উপদেশ এই ; বিশুদ্ধ জ্ঞান ছারা তাঁহাকে দর্শন করিবে,

মিশাল প্রাতি ছারা ভাঁচার পূজা করিবে, পর্মানু-है। स बाता लोहांत कारमण शालन करित्व। त-भाम कार्य बना शहरक थात्व, काम-व्योकि-अबू-क्षेत्र-खांव मिया शवयाचारक व्याशमात व्यवस्त (प-चित्रा है। हात्र श्रुका काहत्व कतिता । यह जाक भएग्री कार्यात्र विषय काम ४- यक्तभा औ कित विषय मञ्ज अकुभ, कार्या मायदम्ब सका भविता, तेन भर्मावर भारतम्बद्धाः स्मन् करे द्वाराभमा नतन পর্ম্ম ছইলে উংক্রট : জেমান জোমার্মিগকে সকল धर्मावनश्री। परनद्र गरभा अञ्चल इङ्केटल छ्ड्रेटर । यथम তোন্যা এই সমাবয়ৰ সম্পন্ন ব্রাহ্মপর্না গ্রহণ করি-রাছ : ভথন ভোনার্দিগকে সমুদ্ধি তাঞ্চে সম্পন্ন হইতে চইবে--শ্রীর্মন আলা তিনেরি উছতি সাধন কবিতে হইবে. কণাডে কালেডে ভাবেডে नर्स खकादहरे धक इस्टब्स करेटन, रक्तामान्द्रमद की-বনে এই ব্রাহ্মগর্মের মাহার। প্রকাশী করিছে হ ইবে। আমার এই হস্তান্থিত প্রবিদ্ধ ব্রাহ্মপর্য্য গ্রান্থ ব্ৰহ্মবিদ্যাৰ জ্বোজি-রূপ অনুন্য মুক্রা-মণি-সকল ইভন্তভঃ রাশীক্ত বিশিষ্প হট্যা বহিরাছে : তেই ম্য়া ইহা হইতে এক একটি মুক্তা বাছিয়া লইয়া আ-পানার মানাজপ ভুত ছাতা ভালার মাল। গ্রিয়া विष्युत शक्ति में मक्टलंड खन्नीय उप्ताद उद्गाप ज-र्भाक्ष ।

# বিজ্ঞাপন

ভাল্যমাজ-গৃহ সংস্কারের প্রয়োজন ক্ইরাছে: যে অবধি ইহার সংস্কার সম্পন্ন না হয়, সেই অবধি এখানে ত্রস্কোপাসনা স্থাত থাবিবেক। অত এব সাধারণ সজ্জ-নকে অবগত করা ঘাইতেছে, প্রীযুক্ত দেবে-জনাথ ঠাকুর মহাশয়ের ভবনে প্রতি বুধ-থারে সায়ং কালে ত্রস্কোপাসনা হইবেক। ঘাঁহারা মানস করেন, তথায় ঘাইয়া উপাসনা ক্রিবেন।

वी जानमहस्र (वमाखवातीम।

#### বিজ্ঞাপন।

আগানী ৩০ কার্জিক সোম বার সন্ধান ৭০০ ঘন্টার সময়ে বেহালা গ্রামের একাদশ সায়ৎদরিক ব্রাহ্মসনাজ হইবেক, ব্রাহ্ম মহা-শয়ের ভংকালে তথাকার ব্রাহ্মসমাজে উপস্থিত হইয়া ব্রহ্মোপাসনা করিবেন।

> শ্ৰী জগচ্চক্ৰ চট্টোপাধায়। সম্পাদক।

### Recently Published.

"THE RELIGIOUS PROSPECTS OF INDIA '
To be 'd at the
CALCUTTA B HMO SOMAL.

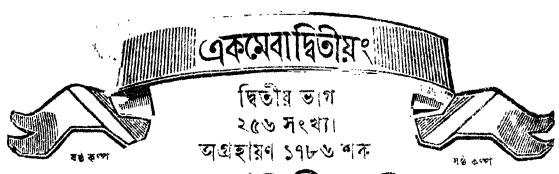
#2" PRICE 4 3NN 22. By POST 5 ANNAS.

#### নিঘ ণ্ট পত।

পৃষ্ঠ।

নিবাগই চতুদিশ সাধ্যমিক ব্রাহ্মসমাজের বজ্তা	कनिकाला जामारामारमा ४००, छ।	<b>P G</b>
রাজভরজনী ১০০ ভবানী পুর ব্রন্ধবিদান্ত্রের উপদেশ ১০৯ ভব্ববোধিনী পুত্রিকার মূল্য নিরপণ। ভাগ্রিম মূল্য (কলিকাভার জন্য) ৩/ শে (মফংখনের জন্য) ৬/০ মাসিক মূল্য ।/•	নিবাপই চতুর্দশ সাধংসরিক ব্রাহ্মসমতে	র
ভবানী পুর ব্রন্ধবিদানায়ের উপদেশ ১০৯ তত্ত্বাধিনী পত্তিকার মূল্য নিরপণ। ভাগ্রিম মূল্য (কলিকাভার জন্য) ৩/ ' (মফঃখলের জন্য) ৬/০ মালিক মূল্য	বন্ধৃতা	5**
তত্ত্বোধিনী পত্তিকার মূলা নিৰপণ। ভাগ্রিম মূলা (কলিকাভার জন্য) ৩/  ' (মফঃখলের জন্য) ৬/০ মালিক মূলা ।	রাজভরঙ্গিনী ,	<b>५०</b> ०
জাগ্রিম মূল্য (কলিকাভার জন্য ) ৩/  ' (মফঃখলের জন্য ) ৩/  মালিক মূল্য	खवांनी श्रुत्र जन्मविष्यांनास्त्रत्र উপদেশ	<b>د</b> ° د

ন্ত্ৰী এই তত্ত্বোৰিনী পত্ৰিকা কলিকাতা সগৱে ঘোণা-সাঁকোছিত ব্ৰাজসমাজের টুজীবিগের অনুসভ্যনুষারে অভি মাসে প্রকাশিত হয়। ১৩ই কার্তিক ব্যক্ষবার কথাৎ ১৯২১ ক্ষিপতাকা ৫৯৬৫।



# তভারোধিনীপ্রতিকা

# ঈশরের সহিত জগতের সম্বন্ধ।

এই জগৎ পু: ব্য কিছুই ছিল না। ঈশ্বর ইহাকে উৎপন্ন করিয়াছেন, এক্ষরেও তিনি জগৎ হইতে বিজিল চইয়া অবাস্থতি क्तिट्डट्ड्न मा, लिख् श्रद्ध भरेश। रेगाक ধারণ করিলা আছেন। যেমন জীবারা महीरतत अन्वत्रम करेश आर्छ ; स्मरे **क**र्श তিনি সমুগায় জগভের আল্লো ইইরা সমুগা য়কে অবলয়ন করিয়া রা গৈয়াছেন। যেমন की<mark>वाञ्चात कडादव भतीत निष्णक्त</mark> इस, स्मर् ৰূপ প্রমায়ার সহিত বিচ্ছিন্ন হইলে জগৎ উৎসন্ন इहेता यात्र। यमन जीवाचात हेन्छ। ক্রমে এই শরীর পরিচালিত হইতেছে, নেই ৰূপ প্রমান্থার ইচ্ছামুদারেই ভূষ্য উরাপ দিতেছে,অগ্নি প্রজ্ঞালত হইতেছে, মেঘ বারি বর্ষণ করিতেছে, সমুদায় জগৎ স্থ কর্মে নিরন্তর নিযুক্ত রহিয়াছে।

আমরা কাহারও জীবাত্মাকে দেখিতে পাই না, কিন্তু মনুষোর শরীর দেখিয়া জী-বাত্মাকে উপদ্বি করি। যখন মনুযা দেখিতেতে, শুনিতেতে, কথা কহিতেতে,

গমন করিতেছে, তথন কেহ তাই'কে আজন इहेट विक्रिय विविधा विश्वाम करत मे। নেই ৰূপ দ্দিও প্রমান্ধা মকন ইপ্রিয়ের অগোচর, কিন্তু জ্ঞানের অগোচন নালো: महीद्वत भद्धा छीताञ्चात माध अध्यक्त আত্মা জ্ঞান গোটর পরমেশ্রকে সার্বজই প্রতীতি কর। যায়। প্রতিনিনিট ধীরের। স্থানকিরণে ভাষারি জ্যোতি দর্শন করেন: भून हत्स छै। इन्ति काँच छे भनाँ व करतम. जनमञ्ज्ञा उँवाति वाष्ट्र विवास धान , নিজু-মালনে ভামারি গাছানা এতীভি ক द्वन, विदिन्भियद्व हैं। हार्वि स्वीन्धा शाः করেন: পিতামাভার স্নেহে ভাঁচারি করুণা অনুভৰ করেন: পতিব্রভার খেমে উল্লেখি র্থাত আস্বাদন করেন। ভাঁহার। সম্ভায় লগতে তাঁহাকেই ওহপ্ৰোত ভাবে ব্যাপ্ত (पर्धन।

আগনাদের আত্মতি মনে করিয়া দেখা।
বদিও আছা ক্ষ, ভুনাল, ও আর এক
সর্কাশক্তি প্রবের ইচ্ছার পরতন্ত্র; ভথাপি
ইছার শরীরে ইছার শাহিক ক্ছ দূর প্রচাহিত
ছইতেছে। আত্মাশরীর ও তে যদিও দংপার্ব
বিভিন্ন, তথাপি আত্মানখন যে প্রবার ইচ্ছা

করিছেছে, অবংধ-সকল স্তুচ তুর ভূতোর নামি লেন বুদ্ধি পূর্বেক সেই ইচ্ছা সম্পন্ন করি-ছেছে। ভাজা যথন দেখিতে ইচ্ছা করে, চম্মু তথনই উন্থালিত হয়; আজা যথন চলিতে ইচ্ছা করে, পদ তথনই জাঁহার আভিন্তে ইচ্ছা করে, পদ তথনই জাঁহার আভিন্তে ইচ্ছা করে, পদ তথনই জাঁহার আভিন্তে ইচ্ছা করে, হস্ত তথনি প্রামারিত হয়। আমালের ক্তু আজার যতচুকু শক্তি, গেনেই পরেল দেশরীরকে পরিচালিত করি-ভেছে। এই চুন্টাস্ত দেখিয়া জগতের সহিত তাহার মন্ত্রি আমালি করে; এই অনীম আকাশের দহিত সমুদায় ব্রহ্মাণ্ড ভাহার দ্বীর, ভিনি ইহার আজা। তিনি বে প্রকার ইচ্ছা করিভেছেন, ইহা তথ্যাণ্ড ভাহার সম্পন্ন করিছেছে।

কিন্তু আমানের আয়া যেমন কুজ,
তিনিসেরপ ক্ল নানে তিনি মহান্ আয়া
তিনি প্রকা, তিনি নিরাতশয় মহান্। আমাদের আলা যেমন শরীরের সহিত এরপ
ধর্মা যে, শরীরের স্পত্তরে সে স্থবছুথী হয়; তাঁহার স্থরপ দেরপ নহে;
তিনি নির্লিপ্ত, তিনি অনক, তিনি অপরিবর্জনীয় আনন্দ স্থরপ। আমাদের আয়া
ঘেমন তাঁহার ইছার পরতান্ত, তিনি দেরপ
কাহারও পরতার নহেন; তিনি স্বত্তর,
তিনি সার্যাজিমান, "ন তত্ত্ব কাচ্চজ্জনিতা ন চাধিপঃ" আমাদের আত্মা যেমন
এক সময়ে ছিল না, তাঁহারি ইছাতে
উৎপন্ন হইয়াছে, তিনি সেরপ নহেন।
অজ্যোনিতাঃ শাখতোয়ং পুরাণঃ।"

অনেকে মনে করিয়া থাকেন, "গৃহ
নিশ্মাণের সময়েই নির্মাতার সহিত গৃহের
যোগ থাকে, নির্মাণ কার্য্য সম্পান হইকে
আর ভাগর সহিত যোগ থাকিবার আকি
শাকতা নাই। মেই কপ কৃতির সময়েই
প্রতীর সহিত ইহার বোগ ছিল, এ ক্রেন

আর যোগ নাই, যোগ থাকিবার আবেশ্য-কতাও নাই; সেই স্বশক্তিমান্ পুরুষ যা-হাকে যে প্রকার স্বভাব-বিশিষ্ট করিয়া স্থ করিরাছেন, সে সেই স্বভাব অফুমারেই স্বস্থ নিয়মিত কার্য্য সম্পন্ন করিতেছে।" ঘাঁহারা এৰূপ বলেন, হুটি ও নিৰ্দ্ধাণ এই উভয়গতু रेनलकना उँशिएमत ऋषग्रकम रस नारे: উভয় ক্রিয়াকেই ভাঁহার৷ একবিধ করিয়া ভাবেন। সনুদায় উপকরণ বিদ্যমান **আছে**, কেবল সংযোগ বিভাগ প্রভৃতি প্রক্রিয়া দারা তাহার অবস্থান্তর প্রতিপাদন করাই নির্মাণ; স্কৃতরাং নির্মাণ ক্রিয়া সম্পন্ন ছইরা গেলে নির্মাতার নহিত যোগ থাকিবার আবশ্যকত। নাই। কিন্তু স্থলী ক্ৰিয়া মে ৰূপ নতে। একেবারে অভাবের অ্বস্থা হইতে বস্তকে উদ্ভাবন করার নাম স্থাট—ক্রটার ইচ্ছা মুর্তিমতী হওয়ার নামই স্থাটি —ফ্রন্টার শ্জিবাজ হওয়ার নামট ফ্টি; স্থতরাং মেই ইচ্ছা বা শক্তির অসম্ভাব হওয়াও যাহা. স্থির অসদ্ভাব হওয়াও তাই। অত-এব স্ফি ইইডে ঈশ্বকে পৃথক্করা আর ঈশ্বরের ইচ্ছা বা শক্তি হইতে ঈশ্বরকে পুথক্ করা, উভয়ই সমান। কিন্তু ইহা কাহার বিশ্বাস যোগ্য হইতে পারে 🤉 অভ-এব আত্মা হুইতে পৃথক্ হুইলে শরীর যে ৰূপ বিনক্ট হয়, দেই ৰূপ প্রমান্তা ছইতে পৃথক্ रुरेटल समूनांग्र स्टिकिं विलीन रुरेग्रा शाहा।

আমাদের আত্মা জগতেরই এক অংশ, সূত্রাং অন্যান্য জগতের ন্যায় আত্মাও ভাঁহার স্থত ও আত্মিত; কিন্তু অন্যান্য জগত বেমন বস্ত্র-ত্মকপ, আত্মা সেকপ নতে। আত্মার সহিত ভাঁহার সম্বন্ধ অন্যাহিত। , মেঘ, বায়ু প্রভৃতি কড় জগতকে

, মেঘ, বায়ু অভাত জড় জগৎকে তিনি পৃথক জান দেন নাই, আপ্ৰায়ই পূৰ্ণ জানে ভাহাদিগকে চালাইভেছেন; এই জন্য ভাহারা চিত্র কাল অঞাত-কপে কার্যা করিয়া আসিতেতছে। আত্মাকে তিনি পুথক্ জ্ঞান দিয়াছেন। তড় জগৎকে তিনি পৃথক্ ইচ্ছা প্রদান করেন নাই, ভাঁছার অ-পরিবর্তনীয় ইচ্ছা উহারদিগকে কার্যা করা-हेट उटह ; अहे अना छेश तरणत कार्या कथन অবসম হয় না। কিন্তু আত্মাকে তিনি পৃথক ইচ্ছা প্রদান করিয়াছেন। এই যে পৃথক্জান ও পৃথক্ইজা; ইছা প্রতি আত্মাই প্রতীতি করিতেছে, সন্দেহ নাই। এই পৃথক্ জান ও পৃথক্ ইচ্ছা প্ৰাপ্ত হইয়াছি বলিয়াই আমরা আত্মা শব্দে. शुक्रव **मर्क উ**क्ত इहेश्राष्ट्रि—**शाधीन इ**हे-থা ছ ---ধর্মের অধিকারী কইয়াছি এবং দণ্ড পুরস্কার লাভ করিতেছি। **স্ত্**রাং **অ**-ন্যান্য জগতের ন্যায় আত্মা তাঁহার যন্ত্র নয়। ত্রকীর মহিত কৃষ্টির যে নম্বন্ধ এবং আত্রের সহিত আত্রৈতের যে সহকা, তাহ। চেতনা-চেত্র সকল জগতের সঙ্গে সমার থাকিয়াও আছা ও পর্যাত্মা উভয়ের মধ্যে আরু এক ধর্ম সম্বন্ধ দীপামান রহিয়াছে। তেমন আর একটিও সম্বন্ধ দেখিতে পাওরা যায় ना, याहात महत्र ८म हे मद्दर्शत जूनना ह-ইতে পারে। সংক্ষেপে বলিতে হইলে আ-নরা আত্মা, ডিনি পরমাত্মা; কিছু স্পাইট করিয়া বলিতে গেলে এই মাত্র বলা যায় যে তিনি সামাদের পিডা মাতা মথা স্ক্রাজা প্র ভূ, আমরা ভাঁহার পুত্র ও পদানত বকু এবং প্ৰকা ও ভূতা।

# পিরোভোর পার কররের পত্ত।

বিষ্ণোডোর পার কর বেকিনের ক প্রিগেসনাল নাক্ষ সভাতে ৰে পার বেখেন আমরা ভাষা স-কলন করিয়া আকাশ করিছেছি।

व्यक्ति वर्धन व्यक्तित्व कालक हिलाग, रमहे व्यवस्थि वर्षाबाबदकत भग व्यवसम করিতে আমার অন্ত করণে একান্ত যত্ন ও উৎসাহ সঞার হইয়াছিল। এ কার্য্য অন্তি-শার প্রশান্ত ও বিস্তীর্ণ। এ কণে আমার বোধ হুইতেছে আমার প্রকৃতিই বল-পূর্বাক আ-মাকে ঐ বিষয়ে প্রবর্তিত করে।

অনা লোকে প্রচুর অর্থ বায় করিয়া বি-দ্যাভ্যাস করিয়া থাকে, কিন্তু সৌভ্রিক্রেক্রে শৈশবাবস্থায় আমাকে মেরপ করিতে হয় নাই। আমি পিতা মাতা ভাতা ভগী-গণের আদেশ ও উপদেশানুসারে শিকা-প্রণালী সুস্পাই অবগত হইড়াছিলাম। আদিনিরবচ্ছিল স্থিরভাবে কোন ২স্তর ८कवल प्यक्रमोन्म्या निर्वोक्षणं न। कहिला ভাহার প্রকৃতি পর্যাবেলাচনা করিতাম। যে-মন মাধ্যাকর্ষণ শক্তি সকল বস্তু অস্থালি-বিত ভাবে ধারণ করিতেছে, আমার স্মরণ শক্তিও ভদ্ৰুপ ছিল। আমি যাহা বাহ শুনিতাম তৎসমুদায় অবিকৃত ভাবে সার্ণ করিয়া রাখিতাম এবং সেচ্ছাক্রমে সম্পূর্ণ-करण लारकत निकंगे वाक कतिएक भाति-ভাম। বিচারশক্তি ও কম্পনাশক্তি উন্নত করিতেও আমার গাঢ়তর অধ্যবসায় ছিল। এই সুমন্ত ব্যতিরেকে আমি নীতি ওব-র্মান্ত্রশীলনে অতিশন যত্ন করিতাম। শৈ-শ্বাবস্থাতেই আখ্রার স্বাভাবিক সংস্কারকে के चटहर आफ्रिक विवश मगानत ও मनान করিতাম। অকপটে সভা বাবহার, নারি-পরতায় প্রতি, গদমর্যাদা এবং সম্ভমের প্রতি দৃষ্টিপাত না করিয়া গুণারুমারে সক লের সমাদর করিভাম। প্রম শ্রন্ধাস্পদ ঈশবে বিশাস ও ভাঁধার প্রতি প্রীতি স্থা-পন করাই দর্কাপেক্ষা আমার মুখা উ-দেশ্য ছিল। আমি সক্ষথোন মহারা-জের নার ভাঁহার আবির্ভাব লক্ষ্য করিতাম না; প্রত্যুত্ত ডিনি সম্পূর্ণ নাগরপর ও পরিপূর্ণ প্রীতির অকের প্রম পুজা পিডার নার

সাধারণের অতি তুলা দৃষ্টি বিতরণ করিছেছেন বলিয়া বাধ করিতাম। সকল বিষয়ে
আপনার প্রতি নিভর করিয়া নীতি ও বুক্রিকুত্তি অনুসারে কার্যানুষ্ঠান ও স্বচকে
সমস্ত বস্তু অনুসন্ধান করিতাম। ধর্ম অন্
মার বিশ্বাস ও মত ন্যায়ানুসত বলিয়া বোধ
হুইত, তাহ্রেরক্ষা বিধানার্থ দৃত্তা অভ্যাস
করিতাম। এই রূপে আমার অনুসন্ধান
সকল বিষয়েই উত্তেজিত হুইতে লাগিল।

प्य¦म (भन्ने ममरशत व्यव्यक्त वित्रका ७ অনক গ্ৰন্মত গ্ৰহণ করিয়াছিলাম ; কিন্তু বেধে করি আমিদের দেশের তথমকার ধা र्षिककृतममुद्रशत व्यन्त लाहकहे सब्ध অপে কুনংকার শিকা করিয়াছিল। নীতি ও ধর্মাঞ্চর ভিত্ত থে একছি মূলক, ভ্রিষ্ট্র বিশ্বাদ সাপনের নিমিত্ত কেল্ট যত্রশীল ছি-লেন না। আমার পিত নাতা লোকের ধর্ম-প্রবৃত্তি স্বভাগদিক বলিয়া প্রতিপাদন ক-র্মিতেম, স্কুত্রাং ভীহাদিলেরই সন্তান ব্লিয়া আমারও ঐ নিশ্বান অনায়ানে উৎপন্ন হটটা ছিল। কিন্ত ওঁ শাদিগেরই প্রমন্ত্র ने विश्वाम इन्यां हिल विलया आर्मि के नियद्य কিছুই আপনার গুণগর্বা করিতে পারি না। আমি শুনিরাছি, তীহার। মনুষোর চরিত্র ও বিশ্বাদের সবিশেষ পরীক্ষা করিতেন; কিন্তু কাল্যর তারিজ বিশানের অনুরূপ না হইলে উ.২াজা ঐৰপ লোকের প্রতি কদাচ অনমা-শের বাক। প্ররোগ করিতে**ন না।** 

আনার আগ্রীয় স্বজন ও প্রতিবেশিগণ

নকলেই শুক্তর শারীরিক পরিপ্রাম আয়ন্ত

কার্যাজিলেন। ঐরপ মহবাসে কাল যাপ্রন করিয়া আমিও দৈহিক শ্রম ও কার্যানুষ্ঠানে পটুলা অজ্ঞাস করিয়াছিলাম।

শ্রাপ্রের কার্যালয় এবং প্রাল ও অটস

শর্মাহকারে উহার স্থায়িত্ব সম্পাদন করা

আমার ভাতরে স্বর্গিকরে অভিত ছিল।

আমি শারীরিক পরিশ্রনের ন্যায় মান্সিক পরিশ্রন সহজে আয়ন্ত করিয়া লইলান এবং যথন গাঢ়তর অভিনিবেশ সহকারে কোন বিষয় পর্যাংলোচনা করিভাম, বাহ্য পদার্থ কিছুতেই আমার প্রতিবন্ধকভাচরণ করিছে সমর্থ হইত না। অধিক কি, যথন স্বহস্কে কার্যা সাধনে প্রস্তুত্ত হুতাম,তথনও স্বেজ্ঞানতে অন্য বিষয় চিন্তা করিছে পারিভাম।

আমি বাল্যকালেই উপযুক্ত শিক্ষকের
নালায়ে উৎরুই পুস্তক সকল অধারন করিরাছিলাম। ইংলগুরি পণ্ডিচদিরের গদ্য ও
পদ্যে প্রণীত স্থলনিত গ্রন্থ, বাইবল এবং
প্রীক ও রোমকাদধের সর্কোৎকুই স্থরস
পুস্তক নকল অনুশীলন করিতাম। কিন্তু
আমি সর্কাগ্রে ঐ সমস্ত পুস্তকের অনুধাদ
মাত্র পাঠ করি: পরে অন্তিকাল মধ্যে মূল
গ্রন্থে বিল্লে আন্তিকাল মধ্যে মূল
গ্রন্থের সন্তিও সম্পূর্ণ পরিচিত ইইয়াছিলাম। এক বার ঘারা পাঠ করিতাম, তালা
মাত্র আয়ত্ত প্রদর্জন না করিয়া ক্ষান্ত
ইইতাম না। যদিচ বালাবিস্থার যে সমস্ত
পুস্তক অবারন করিয়াছিলাম, তালার সংখ্যা
অতি অম্পা; তথাপি তৎ সমুদার সারবৎ
ও ফলোপধারক ছিল তালার সন্দেহ নাই।

পদার্থ বিদ্যা ও মনো-বিজ্ঞান অমুশীলন করিবার নিমিত্ত আনার অসাধারণ যত্ন ও অনুরাগ ছিল; উহা শৈশবাস্থাতেই আমার অন্তরে প্রীতিকর উহনাহ সঞ্চার করিয়াছিল এবং আমার পিতার স্থান্ত ও বিচারপটু ও স্থান্তর মনো ভির গতি ঐ বিষয়ে থাকাতে আমি তাঁহা হইতেও যথেন্ট সাহাষ্য লাভ করিয়াছিলান। প্রকৃতির রাজ্য আমার চতুলিকেই বিস্তীর্ণ রহিয়াছিল, আমি স্বিশ্বেষ অভিনিবেশ সহকারে উহার সৌন্দর্যা সন্দর্শন ও উপযোগিতা অমুধানন করিটাম এবং বালাকালেই স্বদেশের কীট পাত্রস্থারীস্থপ ও মহন্য প্রভৃতি স্থলতর ও জলচর

জীব কর সকল এবং পুশা কল অভৃতি উদ্ভিদ্ধ পদার্থের সবিলেশ পরিচয় পাল করিয়াছি-লাম। আফুডিক ইতিহ্বজের কয়েক খানি উৎকৃতি পুস্তুক এই বিষয়ে আগাকে যথেত সাহায়া প্রদান করিয়াছিল।

अहे बद्ध चारान विमायूगीलन कमन **উद्यक**्ष **स्ट्रेटक**् वृत्वमाश-विद्यम । व्यवस्था করিবার প্রকৃত সময় উপস্থিত হইল। তথন আমি ধ্রমধাজকদিগের বিষয় বিশেষ অমু-ज्ञान कडिया (मधिलांग, छीहाর। मकटलई আয় বিষান বৃদ্ধিমান ধার্মিক ও স্থীল এবং ভাঁচাদিলের চরিত্রও অকলক্ষিত। কিন্তু ষ্টাখাদিগের ব্যবসায় কিছতেই আমার চিত্ত थाकर्षं कतिएउ ममर्थ इहेन ना। নার আড়য়র, উপদেশের দরিক্রতা ও নির-র্থকতা, ঐশিক অভ্রান্ত প্রত্যাদেশ বিষয়ক° মতের অনৈদর্গিকতা ও অভিরতা, দামাজিক প্রার্থনার নির্জাবত। এবং উপাদক্দিগের অ-मत्नार्थां शंडी मर्मन क्रिट्ल धर्म्याक्रत्कत পদ অবলম্বন করিতে বিচক্ষণ বাজি স্বভা-বতই পরাজা্থ হইয়া থাকেন। এতদ্ভিন্ন षारमतिकात वर्मधाष्ट्रकता त्यारकत्र मौकि, বৃদ্ধিত্বতি ও ধর্মপ্রবৃত্তির উন্নতি সাধন ক-রিকে তাদুশ যত্নবান নহেন। যদিও তাঁহারা তবিবয়ে সচেষ্টিত হন, তাহা কেবল বাহ্যিক माज। जामि यथन जन्भवत्रक हिनाम, তংকালে এক ব্যক্তি আমাকে কিজাদা করিয়াছিল : ধর্মধান্তকুরা কি জ্বোত্গণের প্রকৃত দোবের কথা উল্লেখ করিছে পারেন? "यामि कहिलाम" यामि त्याञ्वदश्च त्वा মুক্তকটে উল্লেখ করিতে পারি"। মহাত্রা रेगार्गन् त्याञ्जात्वत त्याच मर्भन कविता केष्ट्राम्बरभूत निक्षे भवमत व्यादन कृतिया-बिद्रमन्। , जाङाब है।। निः , ज्यादम्बिकात भर्मगोसकिष्टिशव मद्या व्यवान हिटलन कर् णायांत सदय दिनिये ग्रासीदशक्य सरव हा व

করিরাছেন। আমার বন্ধু বান্ধবের। ধর্মধান্ধকতা অতি সামানা কার্যা এবং উহাতে
স্মধিক উপকার সাধনের সন্তাবনা নাই
এই বলিয়া ভাতরয়ে আমাকে বারংবার
করিতাম উহাই অতি বিস্তার্থ কার্যানেক এবং লোক সকলকে সংপ্রে আন্যান কবিবার অ্বিতীয় অবলয়ন।

রাজনীতি সংক্রান্ত কার্যো নানাঞ্চকার व्यत्नां क्र व्याद्धः अहे वायमात्री त्नारकत मर्ता व्यत्वद् उक-भन्छ ७ ताक्रमीविष्ठ বলিয়া সাধারণের সন্মান-ভাক্তন হইর৷ ধা-কেন এবং ধর্ণাযাজক দিগের অপেকা উহঁ। দের সমধিক স্বাধানতাও দৃটিলোচর হইয়া थांदक। এই ममस পर्यादनावना कृतिश আমি রাজনীতি সংক্রান্ত কার্যা অবলয়নে এकाम व्यक्तिभी करेश डेशह व्यक्तीलन क्रिटिंग नोशिनामः; किन्छ প्रतिरूपाय थे वा-ব্যাব্যের দোষ অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হইয়া ष्मिश्चनाम, वावकातांकी वीमित्यत भन्मश्रद्धां इ নিভাস্ত অকিঞ্ছিৎকর। তদ্দর্শনে আমি ঐ-ৰূপ প্ৰলোভনে আকৃষ্ট না হইবার নিমিত্ত मेश्रदात माहाया श्रार्थना कतिलाम । य वि-ষয়টি স্পষ্ট মিখ্যা বলিয়া প্রতিপন্ন হইতেছে. তাহা কিৰূপে সমৰ্থন করিব এবং কিৰ্বলেই ৰা আভিবাকদিগকে ভাষেধ্যে অন্থুমোদন ক্রাইতে সাধ্যানুসারে চেকা ক্রিব! এ-कमा এक वाक्ति नुष् बाह्यहायत वाका छेक् छ ক্রিয়া কহিয়া ছিলেন ''নিখ্যাকে সভ্যৰূপে व्यक्तिभागन कतिएउँ ना शांतिएन (कर वाव-হারাজীবী বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন না"। আমি দেখিলান অনেক ুদ্ধিনান লোক এই ব্যবসারে প্রস্তুত হইয়া যাহা সফলতা বলিয়া অনুমান করেন, আমার বিবেচনায় তাহাই বিশাশ। নির্দোষ লোকের ধনস-ম্পান্ত, খানীনুতা, ও জীবন বিন্ট করা অ

भिक्ता निरूके कार्या चांत्र कि इ*रेटड शाहता*य **এই ममक अर्थ।हनाठनाः क**दिशा **पाणि** वे वावमाञ्च अर्मनद्दनः मन्त्रृतं भवाबा्धः व्ह-लाम ७वः स्क्रीयाक्टकक्र कार्या निर्द्धाय वि-বেচনা করিয়া ভাহাতেই জীবন অভিবাহিত করিতে মনোনীত করিলাম। তথন আন-मात्र मरमामरधा এই ভিনটি অগ্ন উপস্থিত। रुहेल। आणि कि क्लांग मध्यमात्रविष्ण-বের শিক্ষান্ত বাক্যে অভিভূত না হইয়া প্র-ক্ষুত পতা অনুসন্ধান করি:ত পারি এবং উহা সাধারণের অনাদৃত ও অপরিগৃহীত হইলেও कन-मगरक मुङक्टर्थ चौकात कतिरु मनर्थ रहे ? जामि कहिलाम हैं। हेरा जानात म-ল্পূণ স্থ্যায়ত। আমি কি স্থাজের বিরুদ্ধ, রাক্ষনিয়দের বিরুদ্ধ ও খ্রীটীর ধর্মের বি-মুক্ত অধিকার অনুসন্ধান পুর্বাক ত-দিষয়ে সাধারণকে প্রবর্ত্তিত করিতে পারি ? आभि कड़िलाम हैं। ऐका आमात मन्भूनी সাধায়ত। আমি কি প্রত্তসতা ও প্রকৃত व्यक्षिकात खार व्यवसम्बद्ध क्रिंड ममर्थ हरे এবং ষাহা অনাকে উপদেশ দিয়া থাকি ভাষা কি স্থাং কার্যো পরিণত করিতে পারি ? ভখন আমি এই বিষয়ের প্রত্যুক্তর श्रांदन मन्त्रिक इट्लाम। छेश्रास्मासूक्र वावश्तं कता वड़ महत्र वाशितं नटह। কিন্তু আমি কহিলাম আমি ভবিষয়ে যত্ন ও অধ্যবসায় এদর্শন করিতে পারি।

এই তিনটি প্রশ্নে ধ্রুপ ছ্রবগাই ও গভীর ভাব অভিব্যক্ত ইইভেছে,আমি তথ-কালে উহা অভি অপেই বুরিয়াছিলাম; িন্দু একানে অপেকাক্ত সমধিক হারসম্ম করিয়াছি।

এই সমস্ত পর্যালোচনা করিয়া আদি ধর্মধালক পদে প্রতিষ্ঠিত হইকে অগ্নাবমা-াক্ত হইলাম। মনুবাদিসকে জীবিকের গুধান উদ্দেশ্য ধর্মোপার্লনে সাহায্য অধান

अविश्व जान रमय है स्टेटक आश्वित कर्मन जानि एव विकास्त्रकारन वर्षानिका क्**रेट्ड** नाटक, जाइडक क्रिक् कर्याच्य अधिक मस्तीनस्य धर्व क्षेत्रका । अध्यक्ति क्षित धटकात मन्त्र चासून्।वस कतिया कि चिलाम, তাহাতে আমার বিশ্বস্থ সংশয়শউপস্থিত रहेन। **उचारा कडकछन्दि अक कार्टन**हें क বীকার করিলাম এবং কডকগুলি বখাছধ-ধিং সিদ্ধান্ত করিয়া লইলাম। আমি বৈশ শবাবছাতেই শান্ত-শ্বপ ঈশ্বরে ক্রোখ-প্রবৃত্তির আরোপ এবং অনস্ত কাল ভয়কর নরক-বস্ত্রণা ভোগ বিষয়ে সম্পূর্ণ অবজ্ঞাও অশ্রদ্ধা প্রদর্শন করিতাম। বধন আমার বয়ঃ ক্রম দাভ বৎদর, তথনও ঈশার ভায়ের কারণ বলিয়া আমার বিশ্বাস ছিল না স্কুডরাং তাঁহা হইতে আমার অন্তঃকরণে কলাচ কিছু-মাত্র ভয় সঞ্চর হইতনা। শ্রভুতি তিনি চির বিশ্বাস ও স্থির আঁতির আধার বলিয়া ' অবগত হইয়াছিলাম।

দেবত্রয়বাদী প্রি**ডী**য়।নদিলের মত নিতান্ত অমূলক,উহা কিছুতেই যুক্তি ও বিচার দিছ विनयां श्राष्ट्रभाषन करा बाहरण शादा ना। यमि अपामि अव-मेश्वत्यांनी मेजिति दिशान् বি্দীরান সম্প্রদায়ের মধ্যে কম্প্রেছণ করিয়া-ছিলাম,ভথাচ এক বংসর কাল আমেরিকার অটেস্টান্ট ধর্মাজক ডাক্তর লিমান ৰীচারের উপদেশ ভাবণ করি। তিনি 🖛 ৰলম্বিত ধর্মের মত অন্সান্ত বলিয়া ভাষাতেই निकास वृक्ति कतियाष्ट्रियम। ये महाजा ইউনিটেরিয়ান, ইউনিবার্দ্রিকি, পোল-মতালয়ী ও নান্তিকদিনের নহিত ধর্ম কং ক্রান্ত মততেদ নিবকাৰ ছোৱাছর: বিভিঞ্ করিতেন। আমি উহৌর সংস্থাপিত স-कार भवन श्रुक्त डिस्तार मन्त्रम बार्कि मिटगत्र व्यक्षिये मटख्या योको व्यक्ति गरमन, नकीक ও बार्चना अवन कहिलान।

আনি ভাষার বৃদ্ধি, বন্ধ ও অধ্যমসাংকর
সাবিশেন নালং না করি। তিনি আয়াস ও
লারিকান বিদার পুর্বক আনাকে ধর্মণাতের
শিকাশ একান করিয়াছিলেন কিন্তু কোন
করিতে সমর্থ হন নাই। আমি ভাষার
একাশিত মক কও প্রগায় অভিনিবেশ
সহকারে অনুধাবন করিভাস, ততই উহা
অসমত, ভ্রিত ও অস্বাভাবিক বলিয়া প্র-

বিশুলী টোর অনৈসর্গিক জন্ম-বিষয়ে বিশাস বজমূল করিবার নিমিত আনি কোন বিশেষ অমান প্রাপ্ত হই নাই। বাইবলে যে ৰূপ অমান প্রাপ্ত হওরা যায়, তাহা নি-ভান্ত অসকত ও অমূলক। তাঁহার জননী মেরি এবং তিনি স্বয়ংও এই বিষয়ে কিছুই অকাশ করেন নাই।

মূতন ও প্রাচীন বাইবলে নানা প্রকার অলোকিক ক্রিয়া কীর্তিত আছে; কিন্তু তৎসমুদার নিভান্ত অবিশ্বাস্য ও অপ্রেজের।
ঐ সমস্ত অলোকিক কার্যোর মধ্যে কতকশুলি সম্পূর্ণ অসম্ভব, কতকশুলি একান্ত
উপহাসাম্পদ এবং কএকটি নিভান্ত ক্রের।
এই সমস্ত কারণে আমি অধিকাংশ এককালে অবিশ্বাস করিলাম এবং অবশিষ্ট
সামান্য-রূপ সিন্তান্তের উপর নির্ভর করিয়া
অনুমোদন করিলাম। ক্র্মানীর বে প্রাকৃতিক নিয়ন অতিক্রম করিবেন, ইছা কবন্ধই যুক্তি ও অনুভব সিদ্ধা হইতে পারে
না। স্তরাং বাইবল-প্রনীত ঐ সমস্ত অলৌকিক কার্যা স্বর্ণ-নির্দ্ধিত প্রস্তর পারের
নায় নিতাক অসম্ভত সন্দেহ কাই।

বাইবল সম্পূর্ণ অত্যান্ত ও ক্রম্বরের গাঁকার অত্যাদেশ বলিরা কোন ক্রমেই বীকার করিতে পারিনা এবং উহার অলো-ক্রিকারিকাটিনের বিবদেশ বিদ্যালয় সংস্কৃত भारतंत्र माहिन्छात वर्तिक आस्म का विश्वत्र में स्वाहित्य महिन्द्र महिन्द्र

# ডুইড মত।

ইউরোপের অন্তপাতী গাল, কর্ণনি ও বিটেন বীপে খ্রীফ ধর্ম প্রচারের পুর্বে যে প্রকার ধর্ম প্রচলত ছিল তাহাই ডুইড্ মত বলিয়া পরিগৃহীত হইতেছে। এই ধর্ম সংক্রান্ত যাবতীয় কাষা ডুইড্দিগেরই হস্তায়ন্ত ছিল এই নিমন্তই ইহা ডুইড্মত বলিয়া প্রসিদ্ধ হইয়া আছে।

पुरेष नांदम कर्की खंडल कांकि कांन कांटलरे विमामन हिल ना । क (मट्म एयमन खंडी हार्या विलया कांन कांकि नारे, माल विद्याल कांकिया विलया कांकि नारे, माल विद्याल कांकिया विलया कांकिया कां

केक नगरत चात्रकदर्य जान्यत्नत्ति

गटकार्या हित्यनः जगापि काशत हाला বর্তমান আছে। ক্ষত্রিয়ের। রাজা ছিল বটে। किस बाब्यत्वहारे वावचा ध्ववहन कतिएक, বিচার করিজেন, 'পৌরোহিড্যা করিজেন, व्यवश्याहाया इहेटचन। त्कवन युष्कटकारा রাজাদিগ**কে রাজা** বলিয়া বোধ **হইত।** ডুই-ুড়দিগের অধিকারও সেট রূপ ছিল।ুএক এক রাজ্যে এক এক জন অধিপতি ছিল, ভাহারা কেবল যুদ্ধ-ক্ষেত্রে দৈনাগণের অধ্য-ক্ষতা করিত, অন্যান্য যাবভীয় ক্ষমতা ড ইডগণের হস্তগত ছিল। তাঁহারা বাবস্থা অব্যান করিছেন, ধ্যবস্থা এচার করিছেন, मकल विनत्य माथि अन्। व विषयि कविष्डम, मखोक्टक मध्य भिटक्री। এएमरमा खोक्तन-দিগের মভানুদারে না চলিলে বেমন সমা-জ-চ্যুত কইতে হয়,দেই ৰূপ খাহারা ডুইড দিলের দণ্ড বিধান অমান্য করিত, জুইডেবুরা ভাষাদ্যিকে যজ্জ কাৰ্যো আসিতে দিতেন सा. काशह व्यक्तियांत व्यक्षाश स्टेट; धवः লে'কে তাহাদিগকে ছাভিশপ্ত ও অপবিত্র বোধ কার্য়া ভাছার ্নুং দর্গ পরিস্কাাগ **事 (5)** 

ভূইভেরা লয়মান শাশ্বন ও মন্তবে অ
বীঘ কেশ ধারণ করিতেন, সচরাচর প্রশস্ত পরিচ্ছদ ও ধর্মকর্মের সময়ে শুল্র পরিচ্ছদ পরিচ্ছদ ও ধর্মকর্মের সময়ে শুল্র পরিচ্ছদ পরিচ্ছদ ও ধর্মকর্মের মায়াদও নামে একটা দও ধারণ করিতেন। তাঁহারদের গলে একটা করিয়া প্রশমর মায়লী থাকিছ; তাঁ-হারা তাহা প্রশাহ্রাদিত সর্প-ডিম্ব বুলিরা লোকদিগকে সুঝাইগা দিতেন এবং এই কপা প্রচার করিয়াছিলেন যে, অনেক সর্প এ-কত্র হইয়া ডিম্ব উৎপল করে, অনন্তর উহা সর্পগণের নিশ্বাসে আকাশে উপিত হয়। ডিয়াথী ব্যক্তি ক্রত্রামী অন্যে আর্মেইণ্ড প্রক্র এ ডিম্ব পুনরার ভূতকে না প্রিক্তি

ভাষাতে সর্পাণও কুল হইয়া তাঁহার পাশাবিদ ধাবনান হইছ; বত কণ কলা বো কোন বোক না পড়িব, ফছ কণ সংগ্রিয়া কাল হইছ না। প্রকৃত ডিছ স্বৰ্গাল্টানিক ক্রারিয়া কালে কি ক্ষেপ করিলে আনিছে লালিছে জ্যোভের বিপরীতে গমন করে। উহার বিশেষ এব এই যে, উহা স্থানিতিত করিয়া ধারণ করিলে কেহ বিচারে পরাস্ত করিয়া ধারণ করিলে ধনশালী পরাকাল লোকের ক্ষীতি-ভালন হওয়া যায়।

জুই জেরা তিন শ্রেণীতে, বিভক্ত ছিলেন। এক শ্রেণী এদেশের বন্দীদিবের
ন্যার লোকের বংশোপাধান ও ব্যারগণের
বীর-কার্যা বর্ণনা করিতেন, আর এক শ্রেণী
ভবিষাৎ গণনা কান্য রচনা এবং ধর্ম কার্যার সময়ে গান ও বাদ্য করিতেন। তৃতীয়
শ্রেণীর ভুইডেরাই ধর্ম সংক্রান্ত কর্ম সকল
অনুষ্ঠীন করিছেল। ভুইজিদিবের মধ্যে
এক জন ভুইড শ্রেণান থাকিছেল। ভুইডেরা আপ্রনিদের মধ্য হইতে কোন সম্ভাক্ত
ব্যাক্তিকে প্রধান পদে প্রতিক্তিত করিয়া তান
হার অধীন হইয়া চলিতেন।

ভূইভেরা একেশ্বরণী ছিলেন এবং ওক বৃক্ষকে তাঁহার প্রিয় আবাস মনে করিয়া ওক বৃক্ষকের স্বিশেষ সন্মান করিভেন; এমন কি, ওক বৃক্ষ কণে কথারের পূজা করাই জাঁহা-দের প্রধান উপাসনা ছিল। এ ছেলের বিল্পতা ও তুলসী পজের নাার, এক বৃদ্ধ বাজ্বেকে তাঁহাদের কোন পূজা ও ক্ষোন ধ-মানুষ্ঠান সম্পন্ন হইত না। তাঁহারা ওক বৃদ্ধ বাহা কিছু উৎপন্ন হয়, ভাষা কথার ক্ষান্ত করিয়া মিলিল্টো নামক পর্বাহা এক বৃদ্ধে উৎপন্ন হইলে ক্ষান্ত স্থাক ক্ষান্ত ভূইভেরা স্থাকেছি পূর্বক ওক বৃদ্ধের কি ভূইভেরা স্থাকেছি পূর্বক ওক বৃদ্ধের কি তুই শৃলে ওক রুক্ষে বন্ধন করিতেন। তৎপরে শ্রধান ডুইড শ্বেড বন্ধ পরিধান করিয়া
থা ছুরিকা হতে সইয়া রক্ষারোহণ পূর্যাক
মিনিল্টো ছেন্ন করিডেন; আর এক জন
ডুইড রক্ষতলে শুক্র বন্ধ্র পাতিয়া রাখিতেন,
এবং ছেনিত মিনিল্টো ভালার উপর পতিত
হইলে কুড়াইয়া স্থবর্ণ পাতে সংস্থাপন করিতেন। তৎপরে নানাবিধ বলিদান করিয়া উৎসব করিডেন। এক সময়ে পার্সা
নেশেও মিনিল্টো পরগাছার অভান্থ সমানর ছিল।

कु हेट छड़ी । এटक श्रव वाणी हिटलन वट छै, किस कानकरम छल स्र्या नकव गर्भ প্রভৃতি স্থী বস্তু এবং মনঃ কম্পিত নানা रनव रमवौतः । जेशामना कतिराज्य । चाजीकः দেবভার উদ্দেশে অগ্নিতে আছ্তি দান এবং পশু ও মনুষাকে বলিদান তাঁহাদের উ-পাসনার প্রধান অফ ছিল। ভাঁচারা এই দকল ধর্মা-জিয়া দম্পাদন করিবার নিনিস্ভ ঘনের মধ্যে কতক ভূমি পরিফুত করিয়া বৃহৎ বৃহৎ ধান্তর ঘারা ভাহার চতুর্কিক বেউন করিতেন; ভাহার মধ্যে প্রথমে তুথানি শস্তর দিয়া বেনী করিছেন। **এ**ই বেদীসে ভাঁহাদের ছোম ও বলিদান ক্রিয়া সম্পল হইড; যে সে ব্যক্তি তাহার মধ্যে প্রবেশ করিছে পারিত না। যাহার। ভুইডদিগের উপর সম্পূর্ণ নির্ভরের চিহ্ন স্বরূপ এক প্র-কার শৃষ্ণল ধারণ করিয়া আসিত, ডুইডেরা (करन क्रांतिभटकरे व्यटनम क्रिट्ड मि-(फन। भुइछिन्दिशंत वार्धिक मटहादमवानिष् এই একার ছানে অ্রুটিত ছইড। ডুইড গণ-**८क्द्रा भ्रमामित विमान ममटत डाइरात अ**ख गक्त मर्भव कतिहा छविदार क्रान्य कर्मन क्तिएक । बद्र बलित समस्य बलि प्रकल मधु-যোর ৰক্ষঃস্থলে থড়্গাঘাত করিয়া দেই रव्याता कि धरादि कृष्टम शिष्क रह,

কোন্দিকে ভাহার রক্তপারা নিঃস্ত হয় এবং कि बार्प रम खक्र विस्कर्भ करत छ-ব্দুটে ভাবী শুভাশুভের অবধারণ করিত। **क्वल निर्मातिङ मनराष्ट्रेश विमान इरेड,** ভাহ: নছে। কেছ নুদ্ধকৈতে অভাস্থ বিপাদে পণ্ডিত অথবা ঘোরতর রোগে আ क्लाच कवेटल, এटकड श्रीत्रदार्ड छश्रदात व्यान मांन ना कातरल (नवशन धमझ इहेरवन না, এই ভাবিয়া নর বলি দিত অথবা তৎ-कार्गाएक नत् र्वात ना मिय्रो । प्रत्यादनंत निकारी নর বলি দিনার অঞ্চীকার করিত: ভিন্ন আর এক প্রকরে ভয়ক্তর নরবলির প্রথাও প্রচলিভ ছিল। সময় বিশেষে ও ঘটনা বিশেষে লভা নিৰ্দ্যিক মনুষ্টাকগ্ৰ এক পিঞ্চ প্রস্তুত করিত এবং রাজ বিচারে যে সকল বাক্তি পোষী বলিয়া স্থির হইত, তাহাদিগকে ওদ্মধ্যে প্রবিষ্ট ক রিয়া দিত ; ভাহার মধ্যে নানা বিধ গশুও থা,কত। যদি অপরাধিগণে নেই পিঞ্জুর পরি-পূৰ্ণ ৰা হটত, ভালা হইলো নিভান্ত নিৰ্দোদী वाक्तिरक७ मिडे यश्राधीमित्रत सकी क हैटह इहेह। अहे अकारत मिहे शिक्षत পরিপূর্ণ ছইলে ভস্মদাৎ করা ছইছে।

ভুইডনিগের চারিটি মাহাৎসব ছিল।
মার্চ্চ মাদের প্রথম ভাগে (১০ই অথবা
তাগার চুই এক দিন অগ্র পশ্চাৎ.) যে দিনে
মতী তিথি শড়িক, সেই দিন নব বর্ষ নিবন্ধন
মহোৎসব হইত। দ্বিতীয় মহোৎসব সে
মাদের প্রথম দিবসে হইত। এই উৎসবের
পূর্বে মন্ত্রায় মকলের গৃহে ধাবতীয় আয়ি
নিব্বাণ করা যাইত এবং পর দিন দেবমন্দিরের চির-প্রজ্জানিত অয়ি গ্রহণ করিয়া
নিক্ষ নিজ গৃহে লইয়া যাইতে হইত। জুন
মাসের একবিঃশ্রুদিবসের পুর্বাহেল তাঁহাদের
ভূতীয় মহোৎসব ও অক্টোবর মাসের
শেষ দিনে চতুর্য মহোৎসব হইত

কালের করাল হত্তে সংসারের সমুদায়ই পরিবর্তিত হইতেছে, কিন্তু আআর সাভাবিক বিশ্বাসের উপর ভাহার কিছু
মাত্র অধিকার নাই। ডুইডেরা প্রায় সকল
বিষয়েই ভ্রমান্ত্র হইয়াও আত্মার অমর্থ
বিষয়ে দৃঢ় বিশ্বাস করিতেন এবং হিন্দুদিগের ন্যায় আত্মার জন্মান্তর অঞ্চীকার করিতেন। ইহা দারা একটি বিলক্ষণ উপকার
ইয়া ছিল। যোদ্ধারা এই জন্মান্তরবিষয়ক
উপদেশে মুহাকে তুচ্চ জ্ঞান করিছা যুদ্ধক্ষত্রে অসাধ্রেণ সংহস প্রকাশ করিত।

ভুইডেরা মৃত বাজির সমাবি প্রদান ক-রিত এবং পর-জন্মে উপকারী হইবে বলিয়া বছু মূলা অলঙ্কার, বিবিধ অস্ত্র শস্ত্র, ধুনচী, পান-পাত্র ও কখন কখন কুকুর প্রভৃতি জন্ত-দিগকেও শবের স্ভিত একত করিয়া মৃ'ন্ত-কার সধ্যে প্রোধিত করিত।

জ্ইড়াদ্বের ধর্ম-শাস্ত্র কেবল পরমার্থ বিষয়ক ছিল না; মীতি স্তি,কাবা জ্যোতিদ ও আয়ুর্বেদও ধর্ম শাস্ত্রের অন্তর্গত ছিল ! ভীছার জোতির্বিশার কোন কোন অংশ ও চাক্রনাম গণনা করিবার রীতি অবগত ছিলেন; কেন না চাক্র দিন অমুসারে তাঁহা-(मत उँ भन मकल अनुष्ठिंड इंट्रेंड, येथी তিথি আরম্ভ করিয়া মাস ও বৎসর গণনা **১ই**ত এবং এই অমুদারে তিশ বৎদর অন্তর ভাগদের এক এক জ্যোতিষিক মহা-एक मन्त्रवाहरू । एकार्जिनिया पृष्टिना थाकित्व अक्षेत्र क्रेवांत महावना नारे। এ-ভদ্তির আনত প্রমাণ আছে। আয়লতেও রঙ্গু ভাষ্ নি প্রিত একটি চক্র পাওয়া গি-য়াডে। ভাহার নেমিভাগে চন্দ্রের কক্ষ নি-র্দ্দিউ আছে ও চলুকলার হাস বৃদ্ধি প্রাদ-র্শনের নিমিত্ত ভাহাতে আটটি অঞ্বীরক সংযুক্ত আছে এবং তাহার আভান্তর ভাগে পৃথিবীর কক্ষ অদর্শনের নিমিত্ত আয় এ-

কটি কুদ্র চক্র অবস্থিত আছে। বোধ হয় ইহা ডুইড জ্যোতির্বেজাদিগেরই ব্যবহার্যা ছিল, আয়ল তেও ও ওয়েল স দেশে কতক গুলি চক্রাকার বৃহৎ বৃহৎ প্রস্তর, অদ্যাপি ভূমিতে প্রোধিত আছে, বছকাল অবধি উহা জ্যোতির্বিদ্দিগের চক্র বলিয়া কিংব দন্তী আছে।

शृत्स डेङ श्रेताह य, हिनिस्मा শাস্ত্রও ভূইডদিগের ধর্মশাস্ত্রের অন্তর্গত কিন্তু চিকিৎসা বিদ্যাতে ভাঁহাদের কি ৰূপ অভিজ্ঞা ছিল, ভাহা নিশ্চয় বলা যায় না, ভিষেত্র মামানা সামানা ঔষধ প্রস্তুত করিতে পারিতেন ভাষার দলেক নাই। ভাষার: खेयव रगवन कारण नानांविव अगना छाउः ভাবী শুভাশুভ নিরারণ করিতেন এবং রোগোপশমের নিনিক্ত হিল্ফুদিরের ন্যায় বিবিধ দৈব ক্রিয়ার অন্তর্থান করিতেন। তাঁহার উষধের নিমিত্ত যে সকল উদ্ভিক্ত ব্যবহার করিতেন তাহা সংগ্রহ করিবার বিশেষ বিশেষ নিয়ম ছিল। তদকুসারে रि मक्न मध्यम् ना क्रिट्न (केवन सास्)-বিক গুণে আরোগাকর হইবে বলিয়া তাঁ-হাদের বোধ ছিল না।

শিক্ষা কার্য্যের ভার ডুইডদিনের হস্তেই
সমর্পিত ছিল। যাহারা উত্তর কালে ডুইড হইবে, ভাহারা কেবল ভাহাদিগকেই
শিক্ষা দান করিতেন। শিক্ষা দিবার নিমিজ নিবিড় অরণ্য মধ্যে তাঁহাদিগের চতুল্পাসী ছিল, তথায় ছাত্রেরা কথন কথন
বিংশতি বংশর পর্যান্ত শিক্ষা গ্রহণ করিত। তাঁহারা বিষয় কর্মের সময়ে পত্র
লিখিনে পঠন ব্যবহার ছিল না । ছাত্রা
দিপতে কতকতালি লোক মুক্তে মুবে আর্থি

none could invert the outline portrait of Jesus, no difficulty appears in the way of a theory, that the moral sentiment of the church has cast a soft balo over a observer perhaps rather stern and ambitious, than discriminating, wise, or tender.

We cannot recover tost history. Into the narratives and discourses of Jesus so much of legendary error has crept that we may write or wrangle shout him for ever: Paul is a palpable and positive certainty. In what single moral or religious quality Jesus was superior to Paul, I find myself unable to say. Is it really a duty incumbent on each of us to decide such questions? Why must the task of awarding the palm of spiritual greatness among men be forsted into

religion?

It is a fact on the surface of history, that Paul, more than any one else, overthrew ceremonialism. Hereby he founded a religion more expansive than that of Isaiah, and, in his fund belief, expansive as the human race, as the children of God. He was not the first Jew to propound the nullity of corrections. If time allowed, that topic might a into instructive amphibiation. The controversy orgainst ceremonies was inevitable, and, with or without him, must have been fought out. What he effected, let us thankfully record; but God does not allow us to owe our souls to any one mun, as though he were a fountain of life. It is an evil thing to call ourselves a man's followers, to express devotion to him, and blazon forth his name. Every teacher is largely the product of his age; whatever light and truth he imparts, the glory of it is due to the Father of Light alone, from whom cometh down every good and perfect gift. Any glory for it would be inexpressibly painful to a true-hearted prophet; I mean, for instance, to and true hearted as Paul. He had no wish to be alled Master, Master. He could not bear to show yo have believed?" What! when a man behaves himself to be the channel Ly which at has pleasad the Unseen Lord to pour out some postion of hidden truth for the feedings of huntry souls, can such a one hear to be praised and thanked for his ministrations ? Nay, in proportion as he knows himself to speak God's truth In the impulse of God's spirit, in the same properson he feels his own personality to be annihilaid, and he broathes out an intense desire that God in him may be glorified, but the man be forgotten. Fray then; fet not us thwart and countowart such gearnings of the simple-hearted intotructor. Hear Paul himself further on this matter. "Let no man glory in men; for all things are yours; whather Paul and Apollos or Gephan, or the world or life or death, or things present or things to come all two pours. Homesas that the collective children of God are the end for whom God has provided teachers as took and instruments. But this is not all. Is proportion as the teachers are elevated, the taught become unable to judge of their relative rest in honour. Paul therefore for bad the attempt, and deprecated praise. "With me," he continues "to is a very small, thing that I submiddingly and you or of man's judgment you. I judge my connect labels he shad parents was the front. Therefore judge nothing before the time, walk the Land come; who detheats the fact will be a land on the content of the same and sall many marks the land come; who detheats will be the blades for the content of declarate and the half ways. What else did he mean to say but: Think not to distribute awards among those to whom you look up. To graduate the claims of equals and inferiors is generally more than a sufficient task. Leave God to pass his awards on those who are spiritually above you; who possibly, like Paul, may rereive your praise as poinful, and to wholly unconcerned at your blame. The glorifying of religious teachers has hitherto never borne any fruit but canonizations and defications, "voluntary humility and worshipping of messengers," vain competitions and rival sects; stagmation in the letter, quenching of the Spirit.

By Francis W. Newman.

#### কলিকাতা ব্রাহ্মদমাজের ১৭৮**৬ শকের ভাজ,** ক্ষান্মিন, কার্ত্তিক ও অগ্রহায়ণ মা**ংসর** আয় ব্যয় বিষয়া।

	1161 176		., ,		
আয়			•	200	<b>!</b>
र्श्वका	র স্থিত	•	1	•	95
					2/0
ৰ্যয়			• •		340/30
मण्योक	क्तं इट्ख	•••		4	21970
		if the state of			₩.
	वगटक	* * ·	•	' e"	
কোং ব		• •		_	anger (
	দিগের প্রতিজ্ঞ		<b>इंद</b> न		
	त्रमगीरमाहन कोष्	त्री	• •	,	<b>₹</b> €
44	चिवष्ठऋ पन्व	• •	• •		>2
£:	कालिकामान मख	• •		• •	ť
"	त्शाविक्र छा भेड	• •	• •	• •	¢.
44	द्रामकानाडे त्मन		• •	• •	8
*6	वाकनांत्रभन मान				•
44	त्रामहस्य भाग			• •	ર
. 64	नीनगाधव मिक		4. "		ર
a	ক্রনাপ দাস			• •	ર
6;	প্রসার কর্মার দক্ত	• •		***	₹'
76	मनिज्ञाल मलिक			• •	2
"	बमस्कृषात मन्ड	• •	• * •		২
"	প্রজাপচন্দ্র থোক		v •	• •	5
4 18	मदरसमान मिक		***		5
## S	विशानिक्स महि	₮			>'
. et	खात्रकगाच मंड		• •		\$
· 60	मध्यम चाउँ।		••		\$
હે	इतिरक्षाद्यः व्यक्त				\$
6,0	<b>टकाउटमास्ट</b> िबंद				5
. 66.,	कामधनाथ गारा				45
	可管别·安		••		5
40	श्वामकूमात्र विश्व	<b>ল</b>	ۍ - • دست	,	3
	कार्डिकावन गरि				. 11 •
4	the facility of the section is	<b>अग्रा</b>	* / Y .		, Marc
	A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH	क्र सराज	e ne je	• .	- Barrel

	মাসিক দা	म <u>।</u>	
314	त्राका मधानंत्रण त्यांचा	剂	q
£4	कि, धन, शक्नेशिका	9	88
64	গোপীদোহন খোষ		२०
16	त्रमाध्यमान स्रोधः		==
**	इमनीस्माहन कोधूरी		58
64	western es		٠.
* <	नेश्रवहता (वक्रामागड		<b>b</b>
۲.	क्रांका आमनगातायम क्र	ty .	:2
u	रेवकुर्छनाथ रमन		৬
1.0	<b>উপেख</b> माइन ठेर्कुड		<u>ب</u>
46	भारतत्वामाथ राकुः		3
"	क्षप्रशाभाग (मन		G.
fi	মদনমোহন সেন	• 4 • •	ં છ
4.0	द्रापाठल ध्यायांन		٤ ,
(\$	मा भवनात मञ्		٤
6 4	नीनकमन बल्हाभाष	ाष	_ `
	,		<b>३</b> %२
	শুভকর্মের	मान ।	1
जी गुख	म्दिसमाध ठाकुत	••	<b>C</b> m
16	শ্ৰীরাম পালিত	••	9
16	इस्पन्न मास्त	•••	30
4.5	इर्गाठ्यं वहाउ	•••	\$ i
16	कालीनाथ भड	••	
			691/3
	এককালীন	मान्।	
खीर्ड			<b>{</b>
"	कि, भार, यि		,
4.4	জিংল'চন ব য		5
"	वस्यीकास अगे हाशा		10
			910
भागाध	दिव मान थ्याः	<b>4</b> +	3h/30

### বিজ্ঞাপন।

কলিকাতা ব্রাক্ষণমাজের কার্য্যের ভার ভাহার টুকী প্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহা-শর হয়: গ্রহণ করাতে তৎসংক্রান্ত সম্পত্তির সহিত আমারদের সহজ্ঞ অদ্যাবধি শেষ হইব।

্ৰী তারকনাথ দত।

এ উমানাধ গুৱ।

व्यथाक।

🗐 (कर्षं बहस्र (गर्म ।

APPITE

> পৌষ >৭৮**৬ শক**। वि क्षणां भारतीय । सन्देशीय प्रस्तावक कतिकांका बाक्यबाटका वृक्कि कर्-याती क्यांगना कार्या मंग्यांबटना कटना क्रियुक्त विद्यासनाय बाक्यदिक कार्या सम्बा-मकीय कार्ट्या नियुक्त क्यां श्राम खंबर याविष्य विक-गण्यांक कार्या नियुक्त क्यांग व्याप्त स्वाप्तिय

কলিকাতা ব্রাক্ষণমাজের <sup>গ্</sup>র্ণস্থিতিকর
নহায়তার নিমিত্ত শ্রীযুক্ত, অবেশিয়ানার
পাকড়ালী মহাশয়কে সহকারী সন্পাদকের
পাদে নিযুক্ত করিলাম।

कि तमटचल्यानाथ ठाकुत । कतिकाण डाक्षमगटक है के।

ব্রাক্ষধর্ম প্রচার উদ্দেশে কলিকাতা ব্রাক্ষদমাজের দান সংগ্রাহের জার জীযুক্ত প্রভাপচন্দ্র মজুমদার মহাশয়ের থাতে অর্পিত হইল। তিনি দাতাদিগের অভিমান দার্থা ব্রাক্ষধর্মের প্রচার কার্যো ভাচা বায় করি-বেন। ঘাঁহারা ব্রাক্ষদমাজে উপাদনা কং-ঘাঁব বায় নিকাহ দিনিত দান করিতে ইচ্ছা করেন, সেই দান তাঁচারা জীযুক্ত ছিছে দানাথ ঠাকুরের নিকটে প্রেরণ করিবেন।

> জী দেবেলনাথ ঠাকুব। কলিকাডা রাজসমাজের টুক্স।

আগামী >> মাঘ সোম বার অপরাহ্ন ৭ ঘটিকার সময়ে কলিক,তা পঞ্জিংশ সাম্বদারিক ব্রাহ্মসমাজ হইবেক। ব্রাহ্মগণ এখান আচার্যা শ্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ সাকুর মাহাশরের ভবনে আগমন করিয়া ব্রহ্মোপা-সনা করিবেন।

> ত্রী বিজেজনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

ধাঁহারা প্রাক্ষণ মাজের পুস্তকালতে বিজয়ার্থ পুশুক রাখিয়াছেন, উাহাদিশকে বিজ্ঞাপন দেওরা
বাইতেছে বে, আখামী ১লা নাম অবধি দেই সকল
পুস্ক বিক্রের মূল্য হইতে চতুর্বাংশ কমিসানু লভয়া বাইবে। বাঁহারা অমুবিধা বোধ করেন, বর্জমান পৌৰ ঘালের মধ্যে মুখ পুজক লইয়া বাইবেন।
বিজ্ঞানী আবৈধিগানাক শোক্তামী।

गरकाष्ट्री मन्त्रापक ।

আগাণী ১৯ পৌৰ ব্ৰিকার ব্যৱস্থা আৰু স্বাক্তের সায় ব্যৱস্থা ক্ষা ক্ষান্ত ব্যৱস্থার ব্যৱস্থা ক্ষান্ত ক্ষান্ত ব্যৱস্থা ক্যান্ত ব্যৱস্থা ক্ষান্ত ব

# উ**ছ্ত।** ভবানীপুর ব্রহ্মবিশালয়। ————

्थाधान चाहार्यात डेशरमम्। विजीस मध्या।

1 30 देवलांचे 316 व लका

द्धांका धरमीत क्षायम वारकात खारशर्रगरक है वहे আছে বে সকলের আত্মাতেই ব্রন্দের অনম্ভ-মঙ্গল-ভাব স্ববিন্ধর অক্ষরে বিথিত আছে। ভোমরা चीय चीय आजारक अनुमक्तान कतिरलहे अनस-পর্মপ মঞ্চল-মর্কপা ঈশ্বরের পরিচয় প্রাপ্ত হটবে। মাজএৰ অন্তদু ডি স্বারা দীয় আহাতে ক্রণ্ডে দেখা সাধারণ মনুষা জাভির মধ্যেই আত্মাজান আছে। আমি যে আছি, এ জান মনুষ্য মাতেরই আছে। আত্ম-ভ্ৰাম থাকাতেই আল্লার অন্তিত্ব বুকিতে পারিভেছি। আমি কিছুই ন'হ, এই বাফ বিষয়-मकबारे जावर, जत्य रेश्विमिश्वक प्रिचित्क क ? ध प्रशिष्टकटक, ए बाक्ट्रक प्रशिष्टकक्रि, देशता পরস্পর অভান্ত ভিন্ন। ধে দেখিতেছে, সে আমি ; আর ধাহাকে দেখিতেছি, সে এই প্রাচীর। ধে আপদানে না জানে, যে পরকে কি' প্রকারে জা-निर्देश शहरक जानियांह्र महस्र महस्र आश्रेनारक জানা যায়। আহার সহক্ষে এই শরীরও পর। আত্মা যথন এই শরীর হইজে উৎক্রমণ করে, ভখন এই শরীরেভে আর এই প্রাচীরেভে বিশেষ কি গাকে ও ভখন এই শরীরও আচীরের নাায় নি-खक रुरेश वासा मंद्रीरत निमग्न इरेस। ध्यापरम খীয় আত্মাতে দেখ, সকল সভোর মূল পদ্ভন্দে থিতে পাইবে; ভাহাতে প্রনামার উজ্গ-নঙ্গল-দ্বি দেখিতে পাইবে। বক্ষ-জ্ঞান-রূপ যে স্থগীয় অগ্নি দকলের জ্নয়ে নিহিত আছে, দেই অগ্নিই আত্মার ক্যোতি। সেই আত্মার ক্যোতিতে অন্ত-র্ঘটি বারা বীয় স্পাত্মাকে দেখিলে ভাহাতে পর-माञ्चात अमस-मनन-छात त्विर्ड शाहरत। त्रह जनस-मझलान्दे अविन्यत जन्दा मन्दलत छ। <sup>আতেই</sup> ব্রক্ষের অন্ত-মঙ্গল-ভাব অবিনশ্বর অকরে निथित आहरू, मक्टनबर्टे क्नटब जन्म-जान-क्रथ वर्गीत जीत जास्त्र छाटा निश्वि जारे ; जार-र्वाट्य विकासम् कार्यास्य कार्याच्या वाता स्वार जागरक अक्तिक कहिरकहे जाचारक शहराजात चविनचत्र-महन-मुर्खिः । छामात्रस्य स्थान-स्तरवात व्यक्तक रहेरव। त्र जानवात्र जात्राट्ड नहेबाजात शिविष्य ना शास्त्र अभावता क्षार कि उक्तिरव । व्यक्ति अद्भाव आमानाव आश्रमपत्र

আত্মাতে প্রমাত্মার অনম্ভ ভান পাঠ করিতে আদি ভোমারদের নিকটে আত্মার আ-প্রার পর্যাত্মার পরিচয় করিয়া দিভে চেন্টা করি-তেছি: তোমরা নিম্পে নিজে দীয় আত্মাতে তা-খার পারিচয় না লইয়া কেবল আমার কথার উপরে নিষ্ঠর করিবে না: বখন নিবিটা ইইয়া আআ দ্বারা আত্মাতে দেখি, তথন দেখি, লেসে পরিমিত আহাা, সে অপর এক অনির্ফোশ্য পুরুষের নিয়মের পরভন্ত হট্য়া কর্মা করিভেছে। কোন আয়া কিছু আপনি সংকন্প করিয়া এ পুণিবীতে আইসে नार्रे, भिरंत काल अथारन थाकिवाइ हैका कवि-লেও শভ সৎসরের অধিক পাকিতে পায় মা। বিনি আযোরদিগকে ফুখা তৃষ্ণা দিবার পুর্বো অগ পালের বিধান কবিয়াছেন, যিনি চকু দিবার পুরেই মুর্যা চলেকে অফোরাতের প্রদীপ করিয়াকেন, ভিনি জন্ম বিহীন মহানুজারে।। সেই অন্ত পূর্পু ক্ষের কৃপাতে আমরা জীবন পাইয়া ভাঁহারই আপ্রামে নিয়ত বাস করিভেছি। ভাঁহরেই শা-সনে আমরা পুণা পাপের বধা উপযুক্ত দণ্ড পুর-কার লাভ করিয়া দিন দিন সমুলভ হইভেছি। থিনি জানেতে পরিপূর্ণ, ভিনিই আমারদের পরিমিত আয়াতে জান প্রেরণ করিতেছেন; यिनि भूर्व सक्रव-यक्तश, जिनिष्टे आधात्रदम्ब आ-আতে ধর্ম-ভাব, পুণা ভাব, দাধু-ভাব, প্রেরণ করিজেছেন। সর্কশক্তিমান পুরুষই আমারদের আয়াতে এথানকার কর্মোপধোগী শক্তি সংযুক্ত করিয়াছেন। এই প্রকারে আমরা আপনার আ আতে পরিমিত জ্ঞান, পরিমিত শক্তি, পরিমিত সাধু ভাৰ দেখিয়া সেই অপরিমিত মঞ্জন্ম পূর্ পুরুষকে উপলব্ধি করি। এই পরিমিত জাতাা এক সময়ে ছিল না; কিন্তু জন্ম-বিহীন প্রমায়। সকল সময়েই আছেন। যিনি এই আজাকে প্রভাশ করিয়াছেন, ডিনি নিজে পপ্রকাশ। যিনি আ चारक এই সংসার ধর্মে নিয়োগ করিয়াছেন, তিনি আগনি কাহারো কর্ত্তক নিয়োজিও হন্ ' নচাসা কশ্চিজনিত। ন চাগিপঃ।" ' ইহাঁর কেই জনকও নাই এবং অধিপতিও नाहे।" यिनि आञात सकै।, लाजा, नियसा, ভিনি পরমাত্মা। বেশন কুদ্ররাজ্যেশরের সহস্কে প্রমেশ্বর, বেমন ঐহিক পিডার সম্প্রেম পিডা, ভেষনি আত্মার সহজ্যে পরনাত্ম। আত্মা জ্ঞানেতে পরিমিভ, পর্যায়া জানেতে অনস্ত; আত্মা শক্তিতে পরিমিত, পর্যাত্মা শক্তিতে পূর্ণ; আত্মা সাধু ভাবে পরিমিভ, পরমাত্মা ধর্মাহত এই প্রকারে পরিমিত আঝা মজল-স্কৃপ। **হইতে অপরিমিত আত্মার পরিচয় প্রাপ্ত হই।** रचनहै मिथिनाम व जाया जाजिङ ଓ পরিমিত,

ত্বনই আহার কাহতে জনত ক্রেল ক্রান-বর্জণ আশ্রের-কালার সংখ্যাল কেবিলান। আশ্রেরক করি করিয়া আশ্রিত কর্মনো বাকিতে পারে নর, জ্বাতিতের কহিছ আশ্রেরক চিরা সমস্ক রহিল্যাইছে। একন শ্রেরণ করিয়ের, ইহার পর নিক্ষানে আনেচনা করিয়া ছেখিতে বে এই পরিমিত আন্যায় অন্তর্যানী অনন্ত বর্জণ পর্মায়া কিনা।

্ঁ"তিনি আপমার বিশুদ্ধ বল্লব-স্কল্প এই कार्यं एकोलिक श्रामार्थ जवर मनुरवात भागम-शर्ष মুক্তিত করিয়া রাখিয়াছেন<sup>্ত</sup> কিন্তু **ভাহা দে**-বিজে পায় কে ? ভাহার পায়ক ও জপ্যেতা কে रहेट७ निद्धि ? मा मह-मातीत आह्वा 🗠 🗪 दे মঙ্গল-পর্যাপকে আত্মা কাহার জ্যোভিতত দেখিলে পায় ? ভাহার আপনার জ্যোভিছেই, আত্ম জৌ-ভিডেই দেখিতে পার। সেই আত্ম-জ্যোতি সে কোথা হইতে পাইল গু এক ঈশর-প্রসাদাৎ ; ঈ-শ্বর জনবাকে জ্ঞান-জ্যোতি দিয়া পৃথিৱীয় ভাবৎ और स्ट्रेंटल डेगड कदिशादकम । 'एमटे केशत-अक्षेप्रक काम-स्कार्गाक निकास करा किएम ? भाभा-চরণ ছারা, অসম্ভাব ভারা, কুতর্ক ভাষা ৷ দেই नंगीप के ति-रक्षांकि श्रकान रथ किरत देवितरक. **छ**ंबटक, ठाँबबटक ८४ है का'त्मत स्मञ्जू हत केतिस्ता। ধলি বুদ্ধি, ভাৰ, ও চৰিজ সেই সহজ ক্ষানকে পোণ-বণ করে, তবে পেই শতক জ্ঞান আবার দিন দিন 🕏 জ্ঞাও সভেজ হইপা, ৰুদ্ধিশ ভাৰ ও চরিত্রকে माजिल क स्व में १ मा विक् कात्र । शतकारहरू मा-शास्या मिन मिन छान, वुक्ति; कुन्नी, कार्गा; भा-महींगा जीव शाहर करहा, এतर इर्मण मन महीहे अभोख-काटन नगरवर्क इड्सं आधारिक श्वेम ज्ञाना স্থানে উল্লেড করিভে থাকে। প্রম ভারনকান্ সম্ভিন্নপার নিজ্পাপ বড়্শীল নহারারা অনস্ত-चक्न राज्यक अक्रम श्रद्धारम्हरक क्षेत्र क्षम्य सम আত্মাতের সাক্ষাৎ প্রভিত্তি করিয়া এবং সক্লেব भव्या जैरहात जिलारमान अमान केनिया जनानी रूत । ''अमाबिर ७ अकारांगी इनेशा करना अभे-যিলের কি কাল বিশেষ কি জাজি-বিশে**যে**র 🐝 शिका भटि। अकल एक्षीय अञ्चलको प्रिमार्ट अ খা-বিষয়ে উপদেশ দিবার অধিকার আছে।" ভা-রভবর্ধের পুরুতন প্রকার দীবিবের জান-রত্বে আন-নরেদের**ুজু**লিকার ; জানরা **ধর্ম-নিম্ন**র **ইপান্তুক** भाग प्रभी । सह पन जामाब्रह्मक भन्नेत्र अन सक्त. ভাষা আনৱা আনারদের গিড়েশুক্র হুইছে অং-প্ৰমাণ্ড কাভ কৰিয়াছি: ভাষা অন্ধ্ৰিক্সি-নিয়ে দিকট হুইতে তিকা ক্ষিতে প্ৰাৰ্থ পা। এই 'अविकास करकात आहिमा कार्म कि **देवलिक अस्तिक** নাৰ ক্লৈতন ধৰ্ম আৰু কোন ছেলে স্বা मालिटक नारे। श्रीवर्षोटक अन्य विकास

त्संत्रहे काविकाव । असिहिद्धं महस्त्रीम् समग्र व्हेट्ड व व्यक्तिमा <u>युवी स्नारमः व्यक्त-व्य</u>क्त-त्व्य विनिर्गे इर्डेग्राहिन; त्म कार्य कार्य क्रम्म रम्ब चर्कान-वर्षकारत बाइक किन । हटमत ब्रह्मा अ-थर्म धरे जातजनविष्ट हम, धन् अंबरमरे तिह পথিত রচনা ধর্মা-ফল-দান্তা ঈশ্বরের চরণেই জ-र्शिं रहा। ने बत जाइक्र कृतिहरू धटमीत जाकत्र-খান করিয়াছেন, ভাহার অগণা রসু রাজি এখনো निः व्यथिष्ट इत्र मार्डे। व्यथम छेख्त विमानस छी-রত ভূমির, বেশুন দক্ষিণ লাগর ভারত-ভূমির, নে मन शका नभी जातक कृमितः । कमाम राम किन-নিষদও ভারত ভূমির, তেমনি পুরাণ উপাপুরালন নারত ভূমির। ধর্ম বাইয়া ভারতবর্ষে বক্ত আ-ন্দোলন হইরা সিয়াচে, এক আর কোপাও হয় নাই। ভারতবাদীদিগের ধর্মা-বিবদ্ধে খাভাবিক অনুরাগ। এখানকার সকলে ধর্মাকে যেমন পরিরা<sup>জ</sup> ভাবে দেখিকে পায়, দে পরিমাণে আর কোন (मरचंत्र व्यादक्षेत्र भाषा मा—पर्व्याटक अवन आह्ना, ঈশ্বরেতে এমন নির্ভর, আরু কোথাও নাই। তা रात्रा भ्रहे आ खिश्री करूक, रक्षाहे नम्रन क्यूक, কোন স্থানেই বা গমন কঞ্ক, সিক্ষি-দাতা, কি-ধাতা পুরুষকে অত্যে স্মরণ করিয়া সকল কর্ম আ वेड करत । छोरांत्र। मामाना भव विधिनात्र भूरक श्रेषत्रदक विष्म ७ इय ना ; क्रेश्नद्वत नाम निभिन्ना পরে পত্র বিথিতে আরম্ভ করে। যে দেলে ধ-र्गात कृत कांचक लाहे, खाकांच्रा हैशत वर्गा कि-छूटे युक्तिटल भोदब नाम् दरपंत आधिक अवस् ষ্ঠতে এই অকার ধর্মের ভাব চলিয়া জাসিভেছে। এক এক বিষয়ে এক এক জাড়ি গণ্ছয়;কেছু যুজে, কেহ বাণিজ্যে, কেহ শিত্যান্দারে, কেহ বা থর্ম-ভারে। ভারতবর্ষের বদি আর কিছুই দা থাকে, তথাপি এ দর্ম ভাবে সকলের প্রেষ্ঠ হই-पादह। काम्रजनर्वनामिनी क्वीमिटमर्व मर्का ७ मन তীত্র ইহার অধিকতর প্রমাণ দিছেছে। অনা জাতির বিকট সইতে রাজনার্গের, নিপে-नगरअव, वानिकाबावनारवह, नाक्रिकांक छेट्कक लिका नाज कतिएक शांति, किन्दु वर्कानिकारम् जि-कांत्र निविद्य कांत्रिक कांत्रिक कांत्री है कांक जनारामी कविद्वा जना विवदः हव नकव बन्नार्कः स्व स जाया-बाकाय निक महाबाद के सहका किन् शंद्रिम, छाराचे भामका वर्षे असिता महिन आहे: जारावे व्यक्तामार्थात क्रमा व्यक्त व्यक्तिक र-THICK I THE ENGINE MEANING MENTS TIS PERSONAL BRIDGIST TOPES PERIOD OF LIBERT OF MANAGEMENT AND TICS MICEN WHITE WAS THE WORLD TO A MICH.

शृक्ष त्माणा त्मिश्रा भागतम छेरकृत रहेत्व अर्थः नेवदप्रत भागत कृता भागतम कर्त्रित पानित्व।

# THE VOICE OF GOD IN THE SOUL OF MAN.

There is something sublime in that trusting faith which reaches us through all ages and from all nations, asserting God's positive presence and controlling power. "The ford spake unto me." "The Lord commanded me," sence of God has spring from no external faith, but from an interior recognition of a power within the soul, that was superior to all external commands. It was the sign of the divine life expressing the divine presence.

Philosophy and reason have both come and questioned this faith. What! is God the Infinite speaking to man the finite? Is there any possibility that the life of worlds and universes of worlds individualizes itself, and interferes with the trivial affairs of so iusignificant an atom as a man, and with his relations to his fellow man? But philosophy an I reason in agestioning as do not entirely silence the interior sense of a life, a presence, a power a oneness in and of what is termed that. Sometimes the spirit in its moments of exultation recognizes its part and presence within the infinite, and thus knows itself closer to God than to any individual spirit in the unverse; but these moments do not satisfy the heart, which calls upon reason and upon philosophy to bring the positive presence of God before the spirit, either as a life or an interior power, or an outward agent individual and supreme.

There is within man a sarse, if we may so term it, or a spiritual consciousness, of the divine. It is sometimes scarcely active, but it is always existent. It is a feeling through the myriad channels of life, a bond, a union, a reception of that universal life and that infinite presence which it terms God.

From the highest to the lowest, in living threads of light the presence extends, and man speaks within himself to God, and yet that inward voice reaches through all space and time; for it is life within well to life without that impels the thought, and that thought vibrates as it goes out, and is an actual power in the universe.

Then prayer to God is an aspiration, an inward sense of an appeared destiny. It is the heart's testimony of immortality of an undying life and an eternal progress. But prayer for special good must have finite means of answer, and thus every aspiration teaches some spirit that with loving thought endeavors to respond, and to post back not only an answer of life, but so to change its minimum of man to man that the good screet shell be gained.

This answer comes as an evidence of infinite love and so the heart says, "God hears me," "I know that I have a Father who is close by my side." It is this inward recognition of spiritual aid that has given to the world such proofs of an actual God-that the idea often becomes individualized and limited. The religious world places Christ between the Infinite and the tinite, and he becomes an ever-prsent individual, so that God is only a name but not a necessity. The irreligious world puts the interior self-head as the only power of existence and Gold is not much cared for. The Spiriunalist places the spirit-world as the setive agency of life and makes God as an incomprehensible infinity, that need not be sought and cannot be recognized. The mediation or coming between the highest and lowest of some positive presence has been made necessary because of the intellectual conception of God as raunitely high, infinitely pure and holy, and thus impproachable. But the wisest of intelfigences can never fully satisfy the spiritual life within man. It knows itself like every other soul except in degree, and it turns from highest Christ and from most exalted angel to that which Christ and angel also turn unto. It is then positively affirmed by the aspiration of the spirit itself that it individually holds its close bond to God, and receives in its inner life testumony of him, even as do the higher intelligences of heaven.

We must then seek God in our own souls, because it is within ourselves that we find the termination, in our individual consciousness, of those threads of divine life that reach our and bind us to the infinite universe and to the infinite God.

Theodore Parker says of himself, "When a little boy in petticoate in my fourth year, one fine day in spring my father ted me by the hand to a distant part of the farm, but, area sent me home alone. On the way I had to pass a little pond-hole, then spreadour its waters wide; the lara in full becom--a rare flower in my neighborhood, and which grew only in that locality-attracted my attention and drew me to the spot. I saw a little spotted tortoise maning himself in the shallow water at the root of the flaming shrub. I lifted the stack I had in my hand to strike the barmless reptile; for though I had never killed may organize, yet I had seen other boys out of sport destroy birds, squirrels, and the like, and I felt a disposition to follow their wicked example. But all at once something checked my little arm, and a votee within me said clear and loud, 'It is wrong', I held my uplifted stick in wonder at the new emotion—the consciousness of an involuntary but inward check upon my actions--until the tortoise and the rhodora both vanished from my sight. I hastened home and told my mother, and asked what was it that told me it was wrong? Sho wiped a tear from her eye with her aprob; and taking me in her arms, said: 'Some mon wall it conscience, but I prefer to call it the woice

of God in the soul of man. If you listen and obey it, then it will speak clearer, and clearer, and always guide you right; but if you turn a deaf car or disobey then it will fade out little hy little, and leave you all in the dark and without a guide. Your life depends on heeding this little voice. She went her way, careful and troubled about many things, but doubtless pondered them in her motherly heart; while I went off to wonder and think it over in my poor childish way. But I am sure no event in my life has made so deep and lasting an impression on me."

The "voice of field in the soul of men" is proof of the divine life that awaits every spirit. It is the recognition of a destiny that can never be achieved antil purity, and right; and holmess shall prevail.—From the Herald of Progress.

### বিজ্ঞাপন।

পর্যান্তন্ত্র-নারী মাসিক পাত্রিকার প্রথম সংখ্যা প্রচারিত হইন্নাই। গার্ননীতি; ধর্মাতত্ত্ব; সানাজিক উনতি । বাজিগর্ভ আখ্যারিকা; সাধুদিকার জীবন; বেদ পুরাণ বাইবল কোরাল প্রকৃতি দক্ষা পুরুক হইছে সভ্যা প্রাক্তি পাদক লোক; এই সমুদান এ পাত্রিকার লেখ্য বিষয়। উছার অগ্রিম মূল্য বার্মিক হাতে টাকা এবং যামাসিক হাত এক টাকা চারি আনা নির্দ্ধানিক ইয়াছে। প্রতি সংখ্যার মূল্য তি আনা। মিকানরিত হইয়াছে। প্রতি সংখ্যার মূল্য তি আনা। মিকানরিত হইয়াছে। প্রতি সংখ্যার মূল্য তি আনা। মিকানরিত হইবে। গ্রহণেক্ষ মহাশ্যের। কলিকাজা ব্যক্তিক অনুসন্ধান করিলে অথবা নিয়া-লিখিত শিন্রোনাম দিয়া প্র লিখিলে প্রাপ্ত হইবেন।

ধর্মাতত্ত্ব সম্পাদক। \*
কলিকাত। ব্রাক্ষসমাজ।

## প্রকার।

নিয় লিখিত প্রবন্ধ রচনার জন্য, রোহিল গণ্ডের অন্তর্গত বেরিলীর মিউনিসিপাল কমিটি ভিন শত টাকা পুরস্কাব দিবেন এই প্রবন্ধ ইং-বাকী অথবা কোন ভারতবর্য প্রচলিত ভাষায় বিশিত ইইবেক।

#### . die 5

তার করনীয় বানিকাগণের বিদ্যাশিক্ষা এবং ভাছার সমুদ্রতি ও প্রোৎসাহের উৎকৃত উপার। ?' পারস্ক প্রকাশি নিক্ষা নাম বাক্ষর না করিয়া বনাশ চিক্ষমার্ক লিখিতে হইবেক। এবং প্রেম্প ক্ষরেয় উক্ত চিক্ষ সম্বলিত এক স্মানিত আবর্গে রচনিক্ষর अवक गर्कण आशासी 3 हा मार्क जातित्वत शृत्त्वं, जात्कर मास्यक्षित्रा, त्वासित संदेश प्रवर्क त्वकि लीत निकेश्विनिनान स्वितित त्वत्वक्रीत निकेश श्रीकृतिक क्षेत्रं

(च दिनी

७० ज जानके । ३५७८ सः

प्रामिष्ठे, तम वण्डशाय न स्त्रम्द्द्रास्त्रन्त् साहित्रक्तः।

আগাদ্ধী ১৩ ই অগ্রহায়ণ রবিরার অপরক্ষ ৪ খাটি-কার সময় কলিকভা ব্রাক্ষাসমালের বিভীয় ভল গুলে স্থারণ প্রভিনিধি স্ভার বিভীয় অধিবেশন হইবেক। প্রভিনিধি ম্লাশ্যেরা ভৎকালে সভায় উপ্রিভ হইয়া কার্যা সম্পন্ন করিবেন।

কলিকাজ: ৪ অগ্ৰহায়ণু ১৭৮৬ গ্রী কেশবচন্দ্র সেন্ প্রতিমিধি সভার

जन्म किस्

#### <del>~}</del>∙⊗•#•

সাধারণ প্রতিনিধি সভার জন্য করিকাতা ব্রাহ্মান্তর প্রতিনিধি নিযুক্ত করণেদেশে আগামী ১৩ ই অগ্রহায়ণ রবিবার অপরাক্ষ ও ঘটিকার সময় কলিকাতা ব্রাহ্মমহাশয়েরা ডৎ কালে বিশেষ সভা হইবে। ব্রাহ্মমহাশয়েরা ডৎ কালে সভায় উপস্থিত থাকিয়। উক্ত কার্য্য সম্পন্ন করিবেন। কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজ ক্রিকেনাকর স্ব

मण्मित्र ।

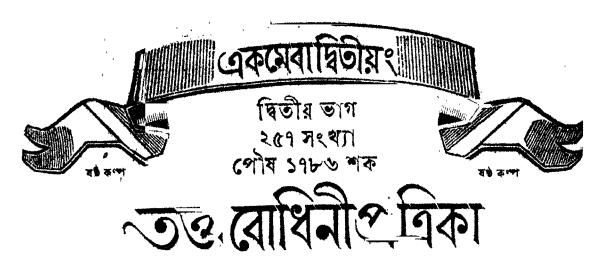
, .	>20
* •	352
	520
• •	5
डेशटनम	> <b>२</b> @
• •	389
	डे <b>श्ट</b> मण <sup>े</sup>

এক খণ্ড

এই তন্তবাধিনী পত্ৰিতা নদিকাতা লগতে যোগাদ্বাকোত্বিত বাক্ষমান্ত্ৰেল উন্নিদিনের অনুসভাস্থাতি আছি
নামে থাকালিত হয় ৷ ১ই অঞ্চাহন স্থ্যায় স্থ্য হলিগভাসা ১৯৬৫ ৷

( गयः इत्राह्म कना )

মাসিক মল্য



ব্ৰহ্মবাএকমিদমগ্ৰহ্মসীদ্বান্য কিফনাসীডদিদং সৰ্ব্যসূত্ৰত। ওদেব নিত্যং জানমন্তং লিতং স্বডক্ছিরবয়বংমক মেবাৰিতীদং সৰ্বাব্যালি সৰ্বাবিদ্যন্ত সৰ্বাভায়সৰ্ববিৎসৰ্বাভিন্যক প্ৰস্কৃতিমমিতি। একস্য তটুস্যবোপাসন্তা পার-ব্ৰিক্টেম্ফিক্ট প্ৰভাৱবতি। তদ্মিন্ গ্ৰীভিন্তস্য থিয়েকাৰ্য্যসাধনক ওদুপাসন্মেব।

### সাক্সন্ শত।

বল টিক সাগর, উত্তর সাগর ও রাইন
নদীর তীরে জুটস্ প্রভৃতি ক চকগুলি জাতি
বাস করিত; সাাক্সন জাতি ভাহাদিগের
অন্যতম। ইহারা কালক্রমে ইংলগুরও
অধিবাসী হইয়াছিল। এই স্যাক্সন জাতি ও
তৎকালের ইংলগুরি জাতি মিপ্রিত হইয়া
বর্ত্তমান ইংরাজ জাতিকে উৎপন্ন করিয়াছে!

ইহাদিগের মতে এক অনাদি অনন্ত পরমেশ্বর সকলের উপর আধিপতা করেন। যথন সকল দেবতা সকল লোক বিন্তু হইবে, তথনও তিনি বিদ্যমান থাকিবেন। ইলা ভিন্ন ইহারো আপনাদের শ্বভাবের অনুক্রপ কতগুলি দেব দেবীর কম্পনা করিও। ইহাদের ক্ষেতারা পুরাত্তর রোমক ও একি-দিশের ক্ষেতার আরু নিতান্ত কামুক্র ও ক্রান্তা ছিলেন না বটে, কিন্তু সেই সকল দেরভার সহিত স্যাক্ষ্যনা করিও। ক্রান্তা ছিলেন না বটে, কিন্তু সেই সকল দেরভার সহিত স্যাক্ষ্যনা ক্ষেত্রার সহিত স্যাক্ষ্যনা ক্ষেত্রার সহিত স্যাক্ষ্যনা ক্ষেত্রার ক্ষিত্রার ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত্রার ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত্

ম্যাক্সনদিপের প্রধান দেবভার নাম ওডিৰ, ই হার আকার অতি প্রকাণ্ড; বাম रुट्छ मञ्जी कुछ हक ও मिकन रुट्छ अक নিচোষ খড়্গ থাকিত। ইনি সমুদায় দেবতার জনক বলিয়া কীর্ত্তি হইয়াছেন এবং নিভাস্ত ভীষণ, রক্তপাতপ্রিয়, রণোৎ-সাহদাতা, জয় দাতা, যুদ্ধে মৃত ব্যক্তিদিগের নিয়ন্তা ও যুদ্ধের অধিষ্ঠাতা ছিলেন, সমর-সায়ী বাক্তিরা ইহঁরে স্থময় ধাম প্রাপ্ত ইছারই নামানুসারে সুগ বারের নাম ওডেনম্ডে বা ওয়েডনেমডে হই-রাছে। ইংলও প্রভৃতি দেশে ইহার নামে অনেক স্থান ও প্রেনিদ্ধ আছে। কুইগা ষা ফ্রোনামে ইহার এক পত্নী ছিলেন। হিচ্ছুশান্তে কামদেবের পত্নী রতির যেৰূপ বৰ্ণনা আছে, ফুেয়াও প্ৰায় সেই ৰূপ हिट्टान।

হিন্দুদিগের পবন দেবের মারি ধর নামে

লগেক্সনদিগের এক দেবতা ছিলেন; ইনি

বাত্যা ও জলোজ্যুদের কর্তা। ইহঁরে মন

ভক্তে নক্ষত্র চক্ত থাকিত, ইনি আমাদের

কুন্দের নায় গদাধর ও ইন্দের নায় বজ্পুন্তর ও

বৃহৎ যে, দশ জনের ক্যুনো তাহা বহন করা षाइंड मा। अहे नना मना अञ्चलिङ अन-লের ন্যায় উত্তপ্ত থাকিত। একদা ধর দেব নিদার অভিভূত হইরা আছেন, এমন স-মটো অসুরগণ সেই গদা আপছরণ পূর্ববক স্বদেশে লইয়া গিয়া মৃত্তিকার চারি ক্রোশ নিষে লুকাইয়া রাখিল। দেবগণ ভাষা জানিতে পারিরা তাহার পুনঃশ্রাপ্তি বিষয়ে "অনন্যগতি হইয়া ফুয়া দেবীর সহিত এ-ধান অস্থরের বিবাহের প্রস্তাব করিয়ীঅ-স্থ্রদিগকে কছুলেন, সেই অপজ্ত গদা কন্যার পণ স্বৰূপ-প্রদান করিতে হইবে। অস্থরের তাহাতে সম্মত হইল। যেমন অমৃত বিভাগের সময়ে বিষণু মোদিনীর বেশ ধারণ করিয়া অন্ত্রগণকে মোহিত করিয়াছিলেন, দেই রূপ খর দেব ফ্রেয়া দে-বীর বেশ ধারণ করিয়া বিবাহ সভার উপ-স্থিত হইলেন। অনন্তর ভোজনের আয়ো-जर करेल। कश्रे एक्या (नवी अकरि व्यक् ७ आर्डेडि इड६ दूड६ २९मा अनासारम छन-ভদ্দিলে অস্তুরগণ तमार कतित्वम। স।তিশয় চ্মংকৃত কইয়া উঠিল। অভ্নের অস্থরপতি<sup>ল</sup> পাণিএহণের অভিলাবে বর**ু** বেশে কেয়। দেবীর সলিধানে উপস্থিত হই-লেন, কিন্তু কন্যার ভরক্তর ঘূর্ণমাণ লোচন ছয় দেখিয়া ভয়ে পশ্চাৎ ভাগে অপ**স্**ত অ্ষান খর দেব নিজ মুর্জি क्षेत्राभ 📗 बादन कड़िंगा **धुम**। लंडेग्ना श्र**ोत चटत व्यञ्ज**न গণকে আক্রমণ পূকাক সংহার করিলেন 1 থর দেবের মদা পানের শক্তিও অতি মদ্ভত । অস্তরগণের এক**টা অভি র্হৎ** ও ভাত গভীর পান পালা ছিল। একদা ভাষারা নেই পাত্র লটো পূর্ব করিয়া ঘর प्तरक श्री भूतक शार किति**रह** कहिन। পর দেব ভাষার কিঞ্জিয়াত পার করিয়াই क्राउ करेशा शिए देवन, मानी सुमी देव दहारी।

করিয়াও সমুদার নিঃশেষ করিছে পারিলেন
না, ভাহাতে তিনি অভিযাত্ত অথাতিত
ইইলেনী পরিশেষে অমালিত ইইল যে
অপ্রেরা এ পান পারের নিম কেলে ছিজ
করিয়া ভাহার সহিত সমুদ্রের যোগ করিয়া
দিরাছিল। থর দেব কেনল যে এ পানে
পাত্রের সমুদার মদা নিঃশেষ করিয়াছিলেন
এমত নয়, সমুদ্রের লবণায়ুও কতিপর হস্ত
পর্যান্ত পান করিয়াছিলেন। পূর্বের উলিথিত ইইয়াছে যে থরদেব বল্পরত ছিলেন।
এই নিমিত্ত ভাহার নামানুসারেই বজ্পের
নাম থনর বা থণ্ডর বলিয়া শ্রদিক ইইয়াছে।
এবং ভাহারই নামানুসারে সপ্তাহের পঞ্জম
দিবদের নাম থস তে ইইয়াছে।

ওড়িন ও থর ভিন্ন আরিও নয় জ্বন দে-বতা ছিলেন। বাল্ডর আলোকের দেবতা, টীর বীরগণের দেবতা, ত্রাগ্কবি ও বাগী-দিগের দেবত। ও হেমডাল স্বর্গ ছারের ও ইন্দ্ৰনুর দেবতা ছিলেন। স্বাক্সনের। এই একাদশ দেব ও ইহঁদের পাল্লী একাদশ मिरीत छेलामना कतिछ। এङদ্ভিল धाराक উপদেবতাও ছিলেন। মমূষ্যের সৌভাগ্য. ছুর্ভাগ্য ও মৃত্যুকাল নির্বয়ের ভার তিনটি উপদেবীর উপর সমর্পিত ছিল। বর্ণল্কির নামে ভিনটি উপদেবী স্বর্গের পরিচারিক। ছিলেন; ইহঁারা ওডিন দেবের আজ্ঞা-ক্র**েন** যুদ্ধ-স্থলে যোদ্ধাদিগের জয় পরাজয় দান গু প্রাণ রক্ষা বা ত্রাণ হরণ করিতেন। পাপের অবিঠাত্রী দেবতা লক্, তাঁহার সাভিশয় मोक्तरी हिला किन्छ अভिनय्न है, हिश्मील-রবশ দেব ও মানবগণের প্রতিক্রটারী ও নিতান্ত অবাধ্য বলিয়া ভাহাকে দেবগৰ এক গিরিগুহার রুদ্ধ করিয়া রাবিরাছিলেন। नतरकद्र अधिष्ठाको होना सम्ब्री, दक्काहिन নামৰ বৃক্ প্ৰহাও সৰ্প ও অক্সেগ্ড भाभभूमधानरात मर्था शातगान क्रिक्न।

नेताक मनमिद्रशत खटशे वे मामे वीजराहा।। श्वादकः युवालुकाती माक्मत्वता युक्टकरे পরম স্থান বলিয়া জ্ঞান করিত। স্থ-छताः छाहारमङ चर्राख रमहे ध्यकाङ स्ट्यह পরিপূর্ণ ছিল। ভাছার। মনে করিত, বাল-হালা-গত বীরগণ দিবা ভাগে ঘোরতর স্মুক করিয়া পরস্পার আঘাতে পরস্পারকে ক্ষত বিক্ষত করে, দিবাবসালে সহসা সেই সকল ক্ষত শুক্ষ হইয়া যায়। তৎপরে তাহারা কিনুম্নর নামক অক্য বরাহমাংক ভোজন ও শক্রগণের মন্তক্নির্মিত প্রপাত্তে মদ্য পাম করত প্রমানন্দ সম্ভোগ করিতে থাকে। স্যাক্সনদিগের নরকের নাম নিজ্লাইম; পাতালবাদিনী ছিলা দেবী তাহার অংশিষ্ঠাত্রী; ঠাহার আকার ও দৃষ্টিকেপ অভি ছংক্তর, छफर्नात्महे मकदलद ऋएकस्थ उपेखिउ इस्। জলপ্রপাত দারা সেই নরকে শ্রবেশ করিতে হয়। তথাকরি গৃহ-সকল পরিতাপনয়, বিপণি দকল চুটিক্ষময় এবং পরিচারকগণ নিভান্ত দাঘ স্থতী ছিল।

এই স্বৰ্গ নৱকের স্থখা চুঃখ (চুঁরস্থায়ী নয়। অসংখা বৎসরের পুর মহাপ্রলয় উপস্থিত 'হইবে; স্বর্গে ও পুঁথিবীতে ভী-मन लकन-मकल मृखे ह्हें छ शंकित्व ; পাপায়ারা মুক্তি লাভ করিবে; তাহাদিগের षांज्ञमानं किल्पा क्वा विवास इहितन, কতকগুলি দেবতা পরস্পার আহত হইয়া कालधारम भरवन कतिर्वमः (प्रवग्रत्व क्रमक ও অধিপতি 'ওডিন দেবও পঞ্জ পাইবেন। अक अव अवन अवनिष्ठ इहेशा- छेठित्व ; ভদ্বে বালহালা, নিজ্লাইম প্রভৃতি সমু-नाम क्रिनंद क्यानिस्मय इस्टर्स है देवल ्रम्हे अनामि अन्छ श्रेत्रमध्य वर्षमान ্রীকিবেন। অতংপর বাল্লালা অপেকা महत्रका हरहरू कर सुहत वर्ग ह नक नाहेंग मरशका मध्यक्ष करें वर नाम

ট্রাণ্ড নামক এক মূডন নরক হাই ইইবে। তথ্য মানব জাতি স্ব স্থ কর্মামূলারে স্থর্মে বা নরকে নিজিপ্ত হইবে।

'দেৰতাদিগের গুণ-তব ও তাঁহাদিগের निकर्णे विनमान गाक्मनमिरभन छेलामना ছিল। উপাসকদিগের গাতে উৎস্ফ ব-লিররক্ত প্রোক্ষণ করা হইত। সময় বিশেষে নর বলিদানের অথাও প্রবর্ত্তিত ছিল। সাধা-त्रांत श्राचारकार व रहार था क वन्ही ७ मीम- त्क वांलमान कहा इटेंड। तोकांता गुरकत. দময় জায় লাভ বারোগের দময় আরোগা লাভ করিবার নিমিত্ত নিজ্ঞ নিজ্ঞ সন্থানকে বলিদান করিতেন। সঃক্সনদিগের এই প্রাকার গাঢ় সংক্ষার ছিল যে, নরবলি প্রদান না ক-রিলে মৃত্যুর পর স্বর্গ-লাভের সম্ভাবনা ন:ই। এই নিমিত্ত তাদারা ছুজাগা বন্দীকে বলি-দান দিয়া স্বর্গের দার উল্বাটিত রাখিত। আল্মাও ভীরুতা স্যাক্দন্দিগের একান্ত বিষিষ্ট ছিল; ঐ ছটীকে ভাষারা উৎকট পাপ বলিয়া গণনা করিত। তাহাদের বি-সামে ছিলি, কাপুরুষ ও অলম ন∺্তি কথ-নই স্বৰ্গ প্ৰাপ্ত হইৰে না, প্ৰত্যুত, নেৱয়গামী হুইরা নির্ভিশয় যন্ত্রণ ভোগ করিবে।

অস্তারণ ও অন্তানোহণ করিলে বিশুদ্ধতা বিনফ হলবে এই অভিপ্রারে সাাক্যন যাজকাদণের উহা অত্যন্ত নিষিদ্ধ
ছিল। শ্রীলোকেরা দৈববানীপ্রকাশক বলিয়া স্যাক্দনের তাহাদের সবিশেষ সন্ধান
করিত। কখন কখন রাজকুলারীরা ধর্মধাজিকা হইতেন ও লোকদিগকে দৈববানী অবগত করিতেন। এনেশের অনেক লোকে বেমন সপ্রের মন্তে, ভূতের মন্তে ও তাকিনীর
মন্তে অদাশি বিশ্বাস করিয়া থাকে, স্যাকসনেরা সেইবপ মন্তের প্রতি সার্ভার করিছ।
তাহাহা বোক করিছ, মন্ত্রবলা ইন্থানত ভাষাহা বোক করিছ, মন্ত্রবলা ইন্থানত ভাষাহা বোক করিছ, মন্ত্র-

বাইন্দে পারে। কর্মকরের। ক্ষানা বর্ম নির্দাণ কালে বিশেব বিশের আবাত শনিবার্মণত পেই কর্ম বর্ম নির্দান অভ্যান করা করা আবাত শনিবার্মণত পেই বর্ম নির্দান অভ্যান করা করান নত্ত্রে তাহা নির্দান করা করার করা করার করা করার করা আবাত করার করা আবাত করার আবাত করার আবাত করার আবাত করার আবাত করার আবাত করার আবাত বিশাস হিল। অদ্যাপি ইউরোপের স্থানে তাহিনী বিশাসের করা শুনিতে পাওদা যায়।

ম্যাক্সনের বায়ুর মতি আকাশের রূপ,
পক্ষিগণের গমন ও শক্ষ এবং উৎস্কীবলির অন্ত দিরীক্ষণ বারা ভাবী শুভাশুভ
নির্গর করিত; সমাধি ক্ষেত্রে মৃত ব্যক্তিদিগকে সধ্যোধন করিয়া অভিলবিত বিষয়
ক্ষিত্রাসা করিত এবং গুরুতর বিষয়ের ভাবী
কল ক্যানিতে স্ইলে কোন হভভাগাকে
খুলামাত বা কলে নিক্ষেপ করিয়া, ঐ খুলাহত ব্যক্তির রক্তধারা কি রূপে নিঃস্তত
হয় অধরা ঐ ক্ষম-নিক্ষিপ্ত ব্যক্তি কিরপে
নিমন্ত্র হয়, তাহা দেখিয়া ভাবী শুভাশুভ
অবধারণ করিত।

থিরোডোর পার্করের পতা।
২৫৬ সংখ্যক পত্রিকার ১১৯ পৃঠার পর।

জনন্তর আমি ধর্ম-বিজ্ঞান অনুশীলন
করিবার নিমিত্ত প্রকৃত সময়ে কেম্বিজের
এক বিলালয়ে প্রবিষ্ট হইলাম। ছৎকালে উন্নতালয় ইউনিটেরিয়ান্ সম্প্রালায়ই
উহার ভত্তাবধান করিতেন। আমি এ বিষয়ালয়ে প্রবিষ্ট হইড়া দেখিলাম, তথার ধর্মবিক্ষান অনুশীলন করিবার বিশ্বাসন

THE STATES SON HE क्रिटक स्टबके चारीनचा नानान स्क्रिकाः चारकनः चालमा परगत शरकताचा बीकार করিতে কাহাকেই পীত্রন করেন না। शता धर्म-विकारमत विषय दश कर्न कानिस्कर भक्षा कारावर केन्द्रक अवान क्रिक प्रापनामिश्रदक मद्भक्त कदश प्रापी-মাদিগের মত অভাব বলিয়া কদাচ একি-পাদন করিতেন না। তাঁহারা সকলেই मर्भरथत नियस हिर्दान ; प्रनामा मुख्य-দায় অপেক্ষা অধিকতর বিভগ্তাবাদ করি-তেন না। তাঁহারা ধর্ম-বিজ্ঞানে অক্সিজত। লাভ করিয়াছেন বলিয়া অনোর নিকট আ-চার্য্যকভার ভান করিতে একান্ত পরাত্মুর हिटलम। पिथिलाम थे विमालिए भूकालम এত্বকার্নিধের সঙ্গবিত ভুরি ভুরি এত্ব আছে, কিন্ত তুর্ভাগ্য-ক্রমে তথ্যধ্যে জর্মনির পণ্ডিত দিগের ভূতন একখানিও ধর্মবিজ্ঞান দৃষ্টি-গোচর হইল না। আমি ঐ বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিয়া ধর্মানুসন্ধানের প্রচূব স্বাধী-নতা ও ক্ষাবকাশ প্রাপ্ত ছইলাম এবং অসা-ধারণ যত্ন ও পরিশ্রাম সহকারে ধর্ম-বিজ্ঞান অমুশী-নে করিতে লাগিলাম। সে মন্ত্রে ধর্মোপদেশকের আদন গ্রহণ করা অভি সহজ বাাপার ছিল, কিন্তু দেখিলাম যে মা-মস্ত এলাক ধর্ম-যাক্ষকতা পূদে প্রতিষ্ঠিত ছিলেন, চ্যানিঙই ভাষারদের মকল প্রপ্রেক। ममिक थाधाना लाख करतन।

অনস্তর আমি ধর্ম বিষয়ক বিশৈষ অ-ভাব পরিপূর্ণ করিবার বিমিক্ত শুরুত্ত করিবার নানা প্রকার পুস্তক পাঠ করিতে প্রবৃত্ত করিবে লাম। একানে আমি সকলেই বাক্ত করিবেজ পারি যে ভংকালে উদ্দেশ্য না লানিয়া কি প্রকার চেকা ক্রিয়াহিলাম এবং ধর্ম নালবের প্রথারণ ক্রিয়াহিলাম এবং ধর্ম নালবের প্রথারণ ক্রিয়াহিলাম এবং ধর্ম ক্রেম ক্রিপ্রারণ ক্রিয়াহিলাম

क्षामि वार्ययक अविभित्तम भूर्यक वा-देवन शांठ कविएक बहुख इहेनाम-वाहेदन কি, এবং কোন্ কোন্ পুস্তক ও কোন্ কোন্ खोबा लहेजा छेका मकलिंड हहेगाटह, वाहेव-(बाद उएमगाई वा कि बाग, এই ममस विवा প্র্যালোচনা করিতে আরম্ভ করিলাম। এই बाटभ र्थंन प्रिंदियंत्र मनिदम्ब भतीका कतिया মূল ভাষার বাইবল অনুশীলন করিতে লাগি-লাম। উহার বিদেষ বিশেষ অংশের আদিম তল তল করিয়া পাঠ করি-রচনাগুলি ঐ সমস্ত আদিম 'রচনার মর্মা বে'াধ করিবার নিমিত্ত ইহুদি ধর্ম্ম-যাজকদিনের প্র-<u>ণীত পুরাতন বাইবলের টীকা এবং খটিয়ান্</u> আচার্যাদিদের প্রনীত পুরাতন ও মূতন বাই-বলের টাক। অনুশীলন করিতে লাগিলাম। এবং জন্মন্ গ্রন্থকার দলের রচিত বাইবলের গুণদোষ-বিচারক গ্রন্থ ও টীকাও পাঠ করি-এই সমস্ত প্রালেচনা করিয়া দেখিলাম, বাইবল বিভিন্ন প্রকার গ্রন্থ হ-रेट मक्ति र्रेग्डि। धे ममस् अञ् य, कान मगरत कि करण कारा कर्ज़क थ-ণীত হয়, ভাছার কিছুই নির্দেশ নাই। যদিও কোন কোন এত্তে প্রণেভার নাম নিৰ্দিষ্ট দেখিতে পাওয়া যায়, ভাছাও কোন ক্রমে বিশ্বাস-যোগ্য হইতে পারে না। याहाहे इंडेक, वे ममल भूलक श्रष्ट्-श्रवाहरम চির-পরিচিত প্রণালী পরিত্যাগ পূর্বক व्यवाविष्ठ कटल व्यनीठ इहेस्ट्राट्स्। वंत मक्रवम काटन ये मक्रव थातिन श्राट्य त মধ্যে যে কি নিমিন্ত কোন খানি পরি-গৃহীত ও কোন খানি পরিতাক্ত হইল, তাহা নির্ণয় করা নিভান্ত হুরুঠিন। বাই-वरणत रकाम रकाम व्यरम् सरस्त्र मण्यू म বিশ্বাদিতা বিক্তি ইইরা থাকে ৷ ুপুরাতন वारेयण त्य जान वर्ष जिल्लाने क्षिप्रकृष्ट गुरुव तारेन्टम काशांत्र अकास विमतीक मृति त्ता- চর হয়। মূতন বাইবলে প্রণেতাদিগের কেবল রচনা-প্রণালী ও ভাবগত বৈলক্ষণা লক্ষিত হয় না কিন্তু ভাহাদিগের মত-বৈষ্মা ও অভিপ্রায়-গত তারতমাও দৃষ্ট হইয়া থাকে।

অনন্তর আমি বাইবলের প্রত্যাদেশ ও অলৌকিক কার্যোর বিষয় পর্যালোচনা করিতে লাগিলাম। দেখিলাম, কেবল इन्हिन । शृधियां में मिटनत मटवारे नाना थ-কার অলৌকিক কাণ্ড ঘটিয়াছিল ৷ অন্যান্য সম্প্রদায় যে কি নিমিত্ত উহার ফল ভোগে বঞ্চিত রহিল, তদিবয়ে ঐতিহানিক বা অন্য কোন ৰূপ প্ৰমাণ প্ৰাপ্ত হওৱা যায় না। তথাচ এই প্রাক্তিক নিয়ম-বিরোগী অলৌ কিক কার্যো সর্বণক্তিমান্ ঈশ্বরের সাক্ষাৎ इस्टक्क श निषद्य यांत्रि व्यक्षमञ्च महन विश्वाम করিলাম। আমি তৎকালে ইতিহাদ-ঘটিত। অমাণের অণালী আলোচনা করি নাই এবং माका विषदा किंबल अनुमक्तान कहिट्छ इस, তাহাও জানিতাম না, এই মিলিন্ত ঐ অলৌ-किक घरेना मकल आभारक निजास स-করিল। প্রভাতেশ-বিষয়ক মছ ন্ত্ৰ ব সিদ্ধান্ত করিয়া লইলাম--জড় কথ প্রিঃহ জগৎ ও মনুষা উভারেই ঈশ্ব আবির্ভ এই দ্বিধ পদাংগ তাঁ-ছইয়⁴ অ{ছেন। হারই কার্যা। তিনি এই জড় জগৎ ও মনুষাকে আপনার শক্তি দারা পরিচালিত করিতেছেন; স্থতরাং যাহার যেৰূপ ক্ষমতা এবং যে गिरे कमडाउ प शकात रावस्त করিতে সমর্থ হয়, তাহাকে তত দুর ধ্ব-ত্যাদিই বলা যাইতে পারে: দভাই বুদ্ধি-वृक्ति এवः नाम्मे नौजि-वृक्ति क्षकारम्म-विषयक विरम्य ध्यमान एता । वाह्यले छे-লিখিত-ৰূপ প্ৰতাদেশ বাহীত পৰা প্ৰকার रहेट आएत ना असर डेरांट ए अहिमादन गण-व नाम निवलिक चार्ट, तारे शह- মাণেই উছাকে প্রত্যাদিই বলিয়া স্থীকার করিতে পারি। এনন কি, উহার কোন স্থলই অভান্ত ঐশিক বাক্য বলিয়া হৃদয়-স্থন হয় না; কেবল এই মাত্র বলিছে পারি বে দকল দতাই ঈশ্বরের বাক্য।

অনস্তর 'আমি ইছদি ও " शृक्षिय न्मि-নের ধর্ম ও ধর্ম-বিজ্ঞানের যেরূপ উল্লভি **হ**ইয়াছিল, ভাষারও ইতিহাস **অনুশী**লন করিলাম। দেখিলাম, যাহা এফাণে পৃথিবী-মধ্যে অঞ্চিহত শ্ৰহাবে আবিপতা স্থাপন कतिशारष्ट, जे मास्त्रमाशिक मटरक कम्मन्हे মূতন হুতন ুংরিক ও সহা করিতে হইয়াছিল। ৰাইবলকে যেমন মৃত্যুদ্য-ক্লভবলিয়া প্ৰতীতি कचित. (मञ्चेकार्य शृष्टियान् निरंगत উপाम-बात इमि वे दाक-ताका, अलनार्जीमरभत আপণ ও ক্রবকের শদা কুমত অপেকা অ-ধিকভর পুণা স্থান বলিমুণ নির্দেশ করিতে ममर्थ हरेलाम मा। कत् च चारि वाहेवन ख ভন্ননালয়ের বিষয় যুত্তই অভিনিবেশ পূর্বক অফুসন্ধান করিতে লাগিলাম,তত্ই উহাদের অলৌকিকতাও মন্ত্রান্ত আনার অন্তর ছইতে ডিবেবিছিছ কইতে লাগিল। আরও ধৃটিয়ান্দিলের ধর্মবিজ্ঞানে যেৰূপ ধর্ম নিদেশ করিতে ট্রিট্রের সমাক্ বিপরীত।

আমি কেবল যে ইছনি ও খুটিয়ান দিলের ধর্ম-বিজ্ঞান ও ধর্মের উন্নতি-বিষয়ক ইভিছান আলোচনা করিরাছিলান একপ নছে; হিন্দু, বৌদ্ধা মুসলনান, গ্রীক ও রোমক প্রভৃতি ভানানা মন্তালারের ধর্ম ও ধর্ম-বিজ্ঞানের য ক্রার উন্নতি ইইমা-ছিল,ভালার ও অক্লান্তানি করিছে লাগিলান। ভামি বিশ্বস্থ টিকালাক্রিকে লাগিলান। ভ্রমান ক্রান্ত ইন্তালাক্রিক ক্রান্ত্রাক্রিকা লাম মুল ভালার প্রতিক্রিকান। হওয়া য়ার না; কজরাং জীক বিরাশন করিব। নেই
কারা ও দর্শন লাজ আলোচনা করিব। নেই
আভাব পরিপূর্ণ করিলাম। আমি অসভাও
বর্ষর জাতিদিপেরও ধর্মের মর্মাববেশ্য
করিতে লাগিলাম এবং হন্দারা ছক্ত বিষয়ের
দিদ্ধান্ত করিবার জনেক সাহায্য প্রাপ্ত হইলাম। দেখিলাম, বাহাদিপের বাকা-ক্র্ডি
করিবার সামর্থা আছে, পৃথিবী মধ্যে এমন
কোন সম্পুদারই ধর্মের শৃক্ষণ হইতে উমুক্ত নহে।

অনন্তর আমি যত্ন সহকারে মনোবিজ্ঞান ও আত্মতত্ত্ব আলোচনা করিতে লাগিলাম। দেখিলাম, ধর্মাজ্ঞান মনুষ্য জাভির সাধারণ আবিকার। সভাই কি ধর্মজ্ঞান মনুষোর স্বাভাবিক ? উহ। কি মনুষোর আত্মান্তে অবিভিন্ন ৰূপে বিদ্যান কহিয়াছে? এবং মনুষোর উন্নতির সহিত কি উহার উন্নতি হর না ? আমি অস্তদৃষ্টি (ছারা দেখিল।ম ধর্মাজ্ঞান স্বভংগিদ্ধ ও ছুরপনেয়। তবে আ-मात नात मकन मनुषा है कि व्यन्त्र विदाय। ধর্মা-জ্যানকে স্বতঃসিদ্ধ ও অপরিহার্য। বলিয়া অঞ্চাকার করে? বাইবল ও খৃঞ্যান্ সমাজ এই প্রশ্নের উত্তর প্রদানে একান্ত অসমর্থ। এই জন্য আমি মন্তুষোর স্বভাব স্থান ক্রেপ পরী-काश श्रव् इंड्लाम এवः त्य छेशानां म स्टेटड আমার ও অনাান্য মনুষোর অস্করে ধর্মজান প্রাচ্ভূত হইল থাকে, আত্মবিজ্ঞান বারা ভুকা উদ্ভাবন করিতে চেক্তিভ ক্ইলান—্য কারণ অবলয়ন কৈরিয়া পরীক্ষা ও অভিজ্ঞা ঘারা কোন বিষয়াসিখাত করিতে হয়, নেই কারণ অবলয়ন করিয়া, ধর্মজ্ঞান কোন খান ब्हेटड छद्भव ह्**हेड्डट्ड, खाहात वर्ष्ट्र गला**न करिएक कात्रिमाम । जन्मि लोटाक गोमाना -मानाना शक्क अविद्याहर्मा करिए व विवास निहर्ण क्षा नाव ना । जान क

हर्ग, राटकहि, स्थिर, श्रित अवः कदा-निम् कड़ राशीक्षा याराटक माना व्यक्तारक পরিপোষণ করিয়াছেন এবং রিড্ ও উরুয়ার্ড যাহাকে বিস্তৃত করিয়া গিয়াছেন, তাহা इहेट यदकि थिए माहाया शाक्ष हहेलाम। এই বাহা দশন আমার ধর্ম-বিষয়ক সহজ **•জ্ঞান উৎপন্ন করিতে পারে নাই, অথবা** মানৰ জাতির অন্তঃকরণে কিৰপে ধর্মভাব প্রাতুর্ভ ভ হইল, ভাহারও কোন ইতিহাস क्षप्रभीन क्रिट्ड ममर्थ इस ना। अमन कि, যাহারা সহজ্ঞ জ্ঞানকে ধর্মের পত্তন ভূমি বলিয়া বিশ্বাস করে না, এই মত সেই ব্রি-টিদ জাতির উপরেও আধিপতা স্থাপন ক-রিতে পারে নাই। ক্লার্ক ও বট্লরের ন্যায় বিচক্ষণ, কডওয়ার্থ ও বারোর ন্যায় বিদ্বান ধর্মদান্ত-প্রণেতাগণও এই জটিল ভাবের मिक्कां कि कि कि मगर्थ इन गारे। स्यम जु-গর্জ-নিহিত লৌহ চুয়কের নির্দ্ধ গতি প্ৰতিরোধ করে, দেই ৰূপ অপ্প বা অধিকই হউক নিগ্ঢ় শাস্ত্রের শাসন উহাঁ-দিপের বিচার-শাক্তির স্বাধীনত। অপহরণ করিয়া থাকে। ফরাদিদ্ দর্শনকার কু-জিন, যে উজ্জুল দর্শন শাত্র প্রচার করিয়া-ংছন, তদ্মারা বিস্তর উপকার দর্শে. কিন্তু উহা ভাদৃশ প্রীভিকর নহে। চিন্তা-শক্তিতে অদিতীয় ইমারুয়েল ক্যাণ্ট জর্মানির মধ্যেও নিতাত নিকৃষ্ট লেখক ছিলেন; ভিনি যদিও এসন কোন বিশ্বাস্ত করিছে পারেন নাই, বাহাতে আমার ভূঞি হইতে পারে, ख्थाठ **चामादक विक्रम धनानी** ७ बहुर भाष धार्मान कहियादका 💛

আমি দেখিলান মনুষ্যের কতকগুলি আজ্পান্তার আছে। ঐ সমস্ত আত্ম প্রচার মনুষ্যের আভাবিক সংকার হইতে সমুৎপল, শবহুতির বিষয়। তৎ সমুদার মুক্তি ও তর্কের উলার নিজ্য করিভেছে না। মামি এক্ষণে ধর্ম বংকান্ত তিনটি আবশ্যক বিষয় উল্লেখ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম।

প্রথমত ঈশ্বর বিবয়ক সহজ জ্ঞান— ঈশ্বরের অন্তিজে বিশ্বাস সহজ জ্ঞান প্রভা-বেই উৎপন্ন হয়।

দ্বিতীয়ত ন্যায় বিষয়ক সহজ জান— আমাদিনের ইচ্ছার একান্ত অনায়ত, অবশা-পালনীয় নীতির অন্তিত্তে বিশ্বাস সহজ জ্ঞান প্রভাবেই উৎপন্ন হয়।

তৃতীয়ত আত্ম-বিষয়ক সহজ জ্ঞান— স্বাহস্ত্রা জ্ঞানের মূল কারণ মন্ত্রোর আত্মা অবিনশ্বর ইছাও সহজ জ্ঞান প্রভাবেই উৎপন্ন হইয়া থাকে।

মানব প্রকৃতিতেই ধর্মের ভিত্তিমূল নিবন্ধ রহিয়াছে। নাস্তিক বা উগ্রন্থভাব গোঢ়ারা অস্বাকার বা স্বমত-সমর্থন করিবার নিমিত্ত যতই কেন বিত্তা করুন না,কিছুতেই ইছ। খণ্ডন করিতে পারিবেন নঃ। আমি সফলতার আশা ও বিফলতার ভয়ের বিষয়ে বাক্যক্তি না করিয়া আধ্যাত্মিক পরীক্ষা कतिए अतुष इहेलाम। आमि भोजातः ক্রমে তিনটি সভঃ মনোধিজ্ঞান বলে সংস্থাপন পূৰ্বক অভিশয় মন্ত্ৰট চইলাম এবং এই ৰূপ একটি প্রণালী উদ্ভাবন করিলাম, যন্ধারা স্থ-শিক্ষিত বাজি বর্গের মনে ঐ তিনটি সভা হাদরক্ষম করিতে সমর্থ হটব ; কারণ মূলী-ভূত স্বাভাবিক সংস্কার-সকল আপনা **इहेट इहे माधातगढक औ मडाछाल अपनान** করিতেতে 🗄

অনন্তর আমি ঈশ্ব নীতি, ও আত্মার অবিনশ্বর বিষয়ক আত্মপ্রতায়কে উজ্জুল করিতে নতা দৃঢ়াভুত এবং ঈশ্বরের শ্বরূপ, নীতির শ্বরপ ও অনন্ত জীবনের গতি অনুস-জান করিতে শ্বরুত হইলাম। এই সমস্ত বিষয় দিল্লান্ত করিতে আমাকে ছুই প্রকার প্রথালীন পারা কার্যা নিরূপণ, বিভীয় কার্যা বার্যা কারণ নিরূপণ।

প্রথমত আমি সভা অসভা, সুনিসিত অশিফিত, সকল প্রকার জাতির ইতির্ভ হইজে ঈশ্বর্নীতি ও স্বর্গ নরকের বিষয়ে কি ৰূপ অভিপ্ৰায় ব্যক্ত হইয়াছে তাহা সং-গ্রহ করিলাম এবং যে প্রকার মত প্রাপ্ত হুইলাম, ভদনুসারেই গে সমুদায়কে একপ্র-कात टानीवम कतिया नहेनाम, किन्न छ-হাতে আমার তাদুণ প্রীতি জন্মিল না,কারণ ঈশ্বরের স্বরূপ, নীতির প্রকৃতি এবং অ-নম্ভীবনের গভি বিষয়ে সর্ববাদি-দম্মত कांन मंडा डेटा रहेट उ जिल्लाक हरेल गा। কেবল কতককলৈ লোক এই সমস্ত বিষয় কিৰপ অনুভন কৰিমাছিল, ভাষাই এক প্রকার অবগত হই গান। তথাত ইহা দার। তংকালে আমার বিস্তর উপকার দশিয়া-ছিল, তালার আর জোন সংশয় নাই।

ষিতীয়ত আমি আশ্ব প্রভায়-সিদ্ধ অস্ত-দুটির মূল বিষয় হলতে ঈশ্বর, নীতি ও পর কাল বিষয়ক জ্ঞান সংগ্রাহ করিতে চেন্টা क्रिनाम। এই क्रिंश र्थन मसुर्यात थ-কুতি হইতে মতা সংগ্রহ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম, তথন আর মানব জাতির সংকীর্ণ ইতিহাস আমার প্রতিবন্ধকতাচরণ করিতে गमर्थ क्रेल ना। किन्हु धरे नमछ विसय যে কি পর্যান্ত কঠিন এবং তত্ত্বানুসন্ধায়ী মনুষ্য বিশ্বজনীন সভা অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হুইয়া যে কভ দুর ভ্রমে নিপ্তিভ হন, তৎ-কালে আমি ভাষা বিশেষ অবগত হইতে পারি নাই কিন্তু এ ক্ষণে অপেকারত সমধিক হৃদয়ঙ্গম করিয়াছি। এক রেপু রাওকায় আমার ভারকা ভাম হইয়াছে কি ন৷ ভাষার পরীক্ষা করা বিচক্ষা বাজির मन्भू र्व काश्र भटनार नारे। 🐃 📉

थामि करल डिम किन काडिस स्म

भाख, पर्य मध्याब कार्रा व पर्य सारवा माराया भारत्वत्र कृतिश यायाश्चिक दुष्टि मकर्म भर्गा लाहनात अवूब हरे नारे, किस याँहात यथ-मध्यत्, यथ्न, अविकाषानी, ভবিষাৎ গণনা, देन्द्रवानी, जाकिनी, जूक ও ইন্দ্রজাল প্রভৃতি বিষয়ে হস্তক্ষেপ করি-য়াছেন, আমাকে তাঁছাদিগের মংকলিত গ্রন্থেরও আশ্রয় গ্রহণ করিতে হইরাছিল। ধর্মবিজ্ঞানের প্রকৃত পদ্ধতি হইতে প্র-রিচ্যুত বিখাতি ইছদি ও ধৃটিয়ানদিলের বলিয়া প্রথিত অথক্ত পুস্তক, পুরাতন বাইবলের অমূলক সন্দর্ভ ও মূতন বাইব-লের সন্দিগ্ধ মত এবং নিয়োপ্লেটেনিই ও নফিকন সম্প্রদায়ের অন্ত কম্পনা পাঠ कतिलाम। यनिष्ठ एएकारण छेदकृषे धर्मा গ্রন্থ সমুদ্রি ই পর্যালোচনা করিতে আরম্ভ করিয়াছিলাম, ভণাচ মিটিক সম্প্রদায়ের मक्षणिङ व्यवसा जानूगीलन कतिरु जावज्ञः। वो अध्यक्त। अनर्भन कति नारे।" सीराता ধর্ম-বিজ্ঞান সঙ্গত অনুষ্ঠান, জ্ঞান-শিক্ষা ও অন্যান্য নীতি প্ৰতিপালন না করিয়া কেবল পরোপকার দাধনে যত্নীল হইয়া থাকেন, আমি তাঁহাদিগের ও বিষয় স্বিশেষ পর্য্যা-লোচন। করিতে লাগিলাম। আমি এই প্রণালী অবলম্বন করিয়া আত্মার অঞ্চক্ত কাৰ্যা সকল শিক্ষা, যাহা সভা বলিয়া এচ্চ বিত হইয়াছে এই ৰূপ অমূলক ৰুপ্নাৰ বিষয় পরীক্ষা এবং যাহা স্পপ্রতিহন্ত বেগে:: সহস্র সহস্র বৎসর অভিক্রম করিয়াছে: এইৰপ অলীক মনোরধের বিষয়ও আলো-চনা করিয়। সাধারণের স্প্রক্তাভ সভা गकल नकनम कतिया नरेकीम।

## উন্ধৃত।

ख्यांनीभूत खन्न-विकाशत

প্রশ্নান আচার্য্যের উপদেশ। ভূতীয় সংখ্যা। ও জ্যেষ্ঠ ২৭৮২ শক।

खार्स (बरमद्र मुखक डेशनियरमद्र धार्थम चार्छ যে মহাশাল শৌনক অন্তিরাকে জিজ্ঞানা করি-**राज "कश्चित्र, कश्चराशिक्षारक गर्सिमनः वि-**জ্ঞাতিং ভবতি " কাহাকে জামিলে হে ভগবন্! সকল জানা যায় ? "ভবৈম সহোবাচ" অজিরা ভীছাকে বলিলেন। ভূমি যে বিদ্যার প্রশ্ন করি-ভেছ, সে বিদ্যা কি না "বন্না ভদকর্মধিগম্যতে" যালার ভারা সেই অক্য় পুরুষকে জানা যায় মেই ব্রহ্ম-জ্ঞানেতে সামান্য-রূপে আরু সকল জানা যায়। সর্ব-শুটা ও সর্বাশ্রয় পর্যেশরকে জানিলে যারজীয় সৃষ্ট ও আশ্রিড বন্তুর সহিত ভাঁহার যে এক সামান। সমস্ক, ভাহা অবপত হওয়া যায়। পরা বিদ্যা এই ব্রহ্ম-বিদ্যা; ভদ্তির ঋক্ষজ্ नाम रवम, देदांद्र। नकलि खट्यांछे विमा। शहा विमा। गकन विमाद श्री छिछ। यमन जकरनद मूज जका, त्क्यिन मकल विष्णात मूली कुछ जका विष्णा । ৰেমন ব্ৰহ্ম দকল বস্তুতে ওড়প্ৰেছ হটয়া আছেন, ट्यमि उक्त-विमा नक्त विमाट्डिट मीखि शाह-ভেচে। যে কোন বিদ্যা হউক, ভাহার ছারা ত্র-का-विमा बाख कड़ा यात्र। कि बादीब-विधान, कि छु-उद्द, कि मत्ना-विकान, कि क्यां जिसिमा, गकन विभारि छै। होत स्थान मेखि मझन-छाटवत निका (परा । अकारक लका हाथिया बाहा चाटला-চনা করি, সকল হইভেই ভাঁহার উপদেশ পাই। व्यामत्रा উপদেশের याना इहेटन, नमी मानत, রক পদ্র, অচেডন নিস্তব্ধ বস্তু ইইডেও টোহার উপদেশ পাই। আমরা ঈশরে यंटनी-निद्यमं क-রিয়া জ্ঞান-গর্ক যে কোন শুস্তক পড়ি, ভাহা **ट्टेट्डे उक्त-विमा बाङ कति। यात्रीत-विधान** পড়, দেহের অমুত কৌপলের মধ্যে দেই জান-বরপকে প্রভাক করিবে। ভূ-ভব পাঠ কর, ভূ-गट्डिंत व्याप्नामात्मत्र मध्या छैदित महची मेखिन्त शक्तिय शाहेत्व । जाय-कह जात्कावमा कत्र, তাহাতে তাঁহারি কর্মণার নিম্পুন পাইবে। ই-ভিহান পুরাত্তত অধান্তন কর, নেই নকল বিচিত্র चिनात मत्था छीशाति महन-रखः मिर्फ नार्दित । त्व विता। अधाराम कत्त, आची स्ट्रेटन क्लार विनाहर त्वीगाव्य जन्म छान विचत्र स्वित्र विकरिक्ता

ৰায়া আমরা এই জিকা পাইটেছছি যে এক সাক্ষ বভাকে আঞ্জে করিয়া সমুদায় জনং রক্ষিত ই रेट्ड ; क्षेत्ररे बक गांव मृत मन्त्र, जांत्र मसून्य নতা তাঁহা হইতে নিংস্ভ হরয়াভে। সেই সূল সভ্যকে জানিলে আর সকল সভ্যের অর্থ ব্যেগ্ रम, डार्श ना कानिएड शाहित्स आमारमंत्र कार्यान ন-অন্তার আর কিছুডেই ধার দা। যানস্তরে বর্জদানাবয়ৎ ধীরাঃ পণ্ডিউৎ মনামামার। मख्यमानानाः পরিपश्चि मृहाव्यक्तांनवः नीत्रमानाः यशासाः। (क्टोशनियम् ) याहाता क्रेशब्दक ना জানিয়া অবিদ্যার মধ্যে বর্ত্তমান পাকিয়া আপ-नारक भीत ७ পণ্ডिভ विनश मदन करत,. स्मादे মূঢ়েরা অক্ষ কর্তিক নীয়মান অক্ষের ন্যায় মুক্তা-মামান ছইয়া ইভস্তভঃ পরিভ্রমণ করে; জানের গম্য স্থান দেখিতে পায় না। অভ এব সকল বি-माति व्यक्तिश्री, मकल विमाति मूल, द्वक्तविमाहि পরা বিদ্যা; "যয়া ভদকর্মপিগমাতে" ঘাহার ছারা সেই অক্ষম পুরুষকে জান। যায়।

ध म्हानंत लाहकत धड़े धक्री मण्यात खाइक, বেন ভারত বর্বে কথনই মন্তের পরিবর্ত্তন হয় নাই; কিন্তু ৰাস্তবিক এ সংস্কার অভীব অমূলক। 'ভিতাইপরাঝগ্রেদোযফারেরদঃ সামবেদোইথকবিদঃ শিक। करण्या गाकत्र मिक्रक्ट इस्मा देवाकि-ৰমিভি। অথ পরাষয়াভদকরমধিগমাভে''। कर्णुन यक्कृर्रास्य माम द्वन जायसं द्वन मिका कन्न वाकित्र निकाल इन्म क्यां जिय, व ममूम्य व्याद्धे বিদ্যা ; যাহার দ্বারা অক্ষ্য পুরুষকে জান। যায়, ভाषाই (अर्थ विमा। भूकं कात देवीं के छोटबंद যে কভ পরিবর্ত হইয়াছিল, ভাষা মুওক উপনি-যদের এই বাকোভেই জান। বাইভেছে। ঈশ্বরের सम्बद्धिकीय द्रांटका পরিবর্ত হইবেই হইবে। य সমরে আত্ম-জ্ঞানের ও ব্রহ্ম-জ্ঞানের জিজ্ঞাস व्हेंसाछिन, भि मम्दा देवनिक कर्म्य-काटखद छेन्द অনেকেরই অত্রজা হইয়াছিল; তথন আর ইক্স যিত বরণ প্রভৃতির উপাদনা দ্বারা তাঁহাদের স-নের ভৃত্তি হইত না। এক সময়ে বৈদিক মভা<sub>া</sub> পরমোৎকৃষ্ট ও বেদোক্ত যাগ যক্ত নিভান্ত 🖼 नूरकेश विनशा नकरनंत्र त्वांध क्लि, भरत छेभमि-वरम्त मभरत प्रविद्ध পास्त्रा शाम स्व जरकारमञ्ज জানবান পণ্ডিতের৷ বেদোক্ত কিয়া-কল্লাপে পু-বের ন্যায় প্রজাবান ছিলেন না। প্রত্যুক্ত জী-হারা কক্যজুং দাম প্রভৃতি সমুদ্দ বেদকে নি-कृषे विमा, क्वम जन्म-विमाहक शहा विमा विनिधा व्यक्तिभन कतिया निष्मादक्षम् । स्वरमञ्ज बद्धाः নংহিভার পর ব্রাহ্মণ, ব্রাহ্মণের পোষ ভার উল-नियम (ध नगरम काविक के रहेन, दम नमग्रकाम शतिवर्धन अनेन शक्तिकन नाइ। विश्वनिवास्

বৈদিক কর্মা-কাণ্ডের নিন্দা-কাছ , জনতে । প্রির্বাচ্চিত অনু চাবজ্ঞ গাজতী দলে। জনবরং বেষু কর্মা এডকে রো বেং ভিনন্দান সূচাজরামুভান্তে পুনবংবা পর নির্বাচিত কর্মানকর জনবর্মা ও অনুচ, মালা অভীদশ কর্মিক ভারা সন্সম হয়; বে মুচ্বো ইহাকে প্রেয় বলিয়া অভিনন্দন করে, ভাহার। পুনঃ পুনঃ জরামুভ্যুকে প্রাপ্ত হয়।

বৈদিক সময়ের খবিরা ঈশরকে কেবল বাহা বিষয়ে দেখিতেল, উপনিয়দের সময়ে তাঁহারা তাঁথকৈ আহাতে অনুসন্ধান করিছে শিকাক-রিয়াছিলেন। যত দিন প্রয়ন্ত ভাঁহারদের বা-হিরেভেই মনের অভিনিবেশ ছিল, ভভ দিন তাঁ-राहा क्रेशरहरू मीलामान भक्रत जावरक थ.ध-थ.ध-রূপে দেখিয়াই তৃপ্ত ইইতেন। তাঁহার। নবীন নেত্রে অগ্নির আভা, ভূর্মেরে প্রভা, উষার সৌ-न्मर्या, मारचत्र कान्द्रि मिथिया हर्स्ट छै । कान क्टर्या भिश्विष्ठ इहेर्डिन এवर् क्रेश्नरतत स्मर्थे मकल असुष कार्यात मर्गा नेश्वतक है अलाक कतिर्जन। অনম্ভ ঈশ্বরটো পরিনিত ভাবে সকলেতেই দে-থিতেন। ভাঁহার। অগ্নির অধিদেবভাকে শ্বভন্ত দেখিটেন, বামর অধিদেবতাকে সতন্ত্র দেখিতেন, নেছের আপ্রেবভাকে স্বভন্ত দেখিভেন। ধেমন রাজপুরুযদিগের এক এক বিষয়ে অধিকার থাকে, তেমনি জাঁহার৷ প্রভাকে দেবভার এক এক বি-যথে অধিকার মনে করিজেন। যিনি ভ্রিভ ধ-রাকে জল সিঞ্চন স্বারা ভূপু করেন, ভাঁহার বায় সঞ্চালনের উপর কোন অপিকার নাই। যিনি সমীরণের মধ্যে থাকিয়া সমীরণকে প্রেরণ করেন, ভাঁছার সমুদ্রের উপর কোন কর্ত্ব নাই। যিনি সমুদ্রের ভরঙ্গ-কোলাহলে বিরাক্ত করেন, ভিনি নদীর লহরীতে ক্রীড়া করেন না। যিনি জ্তানের অধিষ্ঠাতী নেবভা, ভিনি ধন পানোর নহেন। এই প্রকারে পূর্ব্য কালে উভার। সেই এক ঈশরকে মানা ভাবে পূজা করিভেন। ভাঁহারা অথও স্ফিলানন্দ পরব্রহ্মকে পুথক্ পৃথক্ দেবভা-রূপে পরিমিত ভাবে ভার্কন। করিভেন। ভাঁহার। ক-বিভারসে রুষান্তিত ক্দরে জ্লিবার্ আদিতে नेशरवत कौवस मझल-भूर्जि आरहाश कृतिया ग-দ্যুতে সাধুভাবে ভাঁহারদের পুরুষ করিভেন। পু-তের নিবিত্তে, পশুর নিমিত্তে শক্তাদিলের, উপুরে अप-लाट्ड निर्मिद्द नेश्वद्वत निक्दे जाहोत्रद्वत "विशिव्यो फिल । मश्माद्वत महक महक **छी छात्र जिल्**लांब শ্রদা ভাজ প্রবাহিত হইড, সংসারের অভীত व्यम् । भारम जाहारमञ्जू व्यामा ज्यम् छित्रक इत 

বেমন জাবেতে সম্বত্তের সভা জালা প্রকাশ

नाम, रञ्जान स्वपं स्टेट्स के क्षेत्र के क्षेत्र के विश्व हरा। क्षारमण्ड श्री विष्यं निक्षित्व इंद्रेश कामा-त्ररमत निकटणे ने चारक उक्का कतित्र। व्यक्ता करते । कान व जान श्रेक्षात श्रेतकात्राक संस्थान कर्याः জ্ঞান অধিক হইলে ভাবকে পরিভ্রাক্তর, জার अधिक रहेत्व स्वानंदक नगुस्त्र करहे । शृथिवीह भागिम व्यवसाय ज्यात्मक ठका अधिक स्थित मा, হাদয়ই বাহুলা কপে কাৰ্যা করিত। ভারত বর্মের পূৰ্বতন কৰিৱা আবার আজি-ছার দিখাই ইছ-রের মঙ্গলা ভাষা দেখিতেল া ভৌতারদের দর্শ হাদয়ে সকলি জীবন্ধ ভাষে **প্রকাশিক**াই**ইও**। আমরা বেমন কুর্যাকে অচেতন দেখি, ভাঁহারা ভাষাকে সে কলে দেখিভেন না। न्द्रया त्यम् कीवछ शुक्रम, जिनि भीम हैकाटल किन्नगं मानः क-রিয়া জগতের মঙ্গল সাধন করিভেছেন ৷ "আম্রা বেমন মেঘকে বাস্প্রাশি বলিয়া ভাহাতে ঈশ্রের কৌশল উপল্লি করি, তাঁহারা মেঘকে সে প্রকারে দেখিতেন না; ভাঁগারা গন্ধীর বজ বিহাতের মধ্যে **खिङ् ध्हेगा वाश्व-চाणिख म्मटच क्रीवन फ्राह्माश** कतिराजन, रमघ रयम कानिया स्थानिया साल वर्षद्रश भिमिनोटक भीजन कतिरखटछ। देवनिक अधिका ভত্ত-জ্ঞান অভাবে কেবল ছ্দ্যের ভাবে এই ঞ-কারে কম্পিত দেবতার পূজা করিতেম। ভীছারা সেই সকল দেবভাদিগের ভৃত্তির জনা ঋতগুদ হইতে স্তোত্র পাঠ যজ্পেদ প্রণীত যাগ মজের অনুষ্ঠান এবং গাম ফেদের মঞ্জীত ছারা ভাঁছারুদের পুজা করিভেন। পরে বধন ভাঁহারা বাহিরের বিষয় হইতে ইন্দ্রিয়দিগকে ক্রিয়া শীয় आञारक स्विष्ट भाहेत्वन, उधन महे आञात সজে পর্যাত্মার যোগ বুঝিতে পারিলেন—সেই व्यविभ विमास-विकादन ब्राट्माइना आहु इंदेम। বেদেতে আত্মা শব্দ বেমন বিরল, উপনিয়দ তেমনি আপাত্মিক বিদাতে পরিপূর্ব। বাহিরের विषय विगन थेथ थेथ, अद्यद्भत आधा रखमनि अर्थ । वाहिरतत विषय देव मिटकं मन यक मिम निविधे हिन, यन मिन ठाँशां आचादक दम्बदन পান নাই; ভত দিন সুৰ্যা অগ্নি বায়ু আন্ধৃতি সুষ্ট বস্তুতে ইশবের মঙ্গল ভাবের অর্জনা করিছেন। যথন তাঁহারা আমাকে অন্তর্গু জি জারা ছেখিতে পাইলেন, ভগন ভাহাকে একই দেখিলেন। তী-হারা আমি বলিয়া যাহাতে লানিলেন, ভাহা ক-थनरे हरे नरह; जामि **अकरे। तरे जासात** अद्धद आवार गर्यन शहमायादक एवं विद्राम, क्रमेन ज़करनम् अहर्यामी ज्ञेगद्र के कहे "अविकीस वेसिया क्षामिटलन। छन्न क्षमिद्दिन्द्व अक्षत्र व्हेट्ड **बर्ट महावाका जिल्लाहिक स्ट्रेंग** के नवस्ताबर शुक्राच यक्त जावाजिएका म क्रका (देखां क्रमारेश)

लिहरू) त्मरे और विनि शुक्राय, और देश रे विनि आहिएका, किनि और । और श्रमाध्य काटम काटम दिस स्टेटल अर्थानकरमञ्जा शिव्रमिक स्टेटल समस शुक्रायत आमि और स्वास वर्षि श्रमाविक स्टेम।

্জভি পুরাকালে ভারত কর্মে বৈদিক ধর্মের चारनाच्मा चात्र इहेग्रा त्महे ख्व व्हेट डेशन-यरमञ्ज नमदम् क्षेत्र कत्र कत्र कियाद्यं, छादा এই बुदका बुक्षा बाहि छिएह। मैनवनहावः शुक्रस्य वन्हा-• नावांपिट्छा न 'धकः ।'वैं" त्महे धहे विनि शुक्रदयः এই সেই বিনি আদিতে ভিনি এক টিনি আমার এই আত্মাতে আছেন, তিনি মেই সুর্যোতে আ-ছেন, ডিনি এক। সুর্যোর অধিদেবতা ভিন্ন আর আগ্নার স্থিদেবতা ভিষ, এমত নহে: কিন্তু বিনি সেই ফুর্যোর অন্তর্যামী, ও ধিনি এই আতার व्यस्तर्भामी, जिनि धकरें। ''धरका तभी मर्स एज'।-ন্তরাত্মা" ভিনি এক, সকলের ষশী এবং সর্বা ভূতের অন্তরাত্মা। ভারত ভ্নির ধর্ম বীজ এই **म्हिला को कि राज्य के अन्त हिंख हरेग्रा**हिल, अना प्राप्त कल मिक्रन हाता दश नाई। जेशहरक স্বীয় আড়োতে দেখ, ইহা উপনিদদের আদেশ। "এক্ষেৰাছভীয়ং" উপনিষ্দেই প্ৰকাশিত হই-ग्राहितः, उत्कात व्य व्यमस मझन छात्र, त्म छेश्रीन-यरमत्र है जाता ''मखार खानमनखर उक्का' धीरे मंद्र भर्क छ। न वर्ष छ । करन वर्ष महानाटम নকলের কর্ণে প্রারেশ করিছেছে, ইহা অন্য কোন ল্পাতির আশ্রায়ে উৎপর হয় নাই। যে গর্মোর ভাব ভারত ভ্মিতে নিহিত ছিল, তাহাই আলো-চনা ভারা প্রেক্টিভ হইয়াছে। যথন ঋষিরা व्यक्तिकाम हदेश " এकत्मवाद्वीय: " এই वाका উচ্চারণ করিলেন,ভখন এই ভারত বর্ষের সৌভাগ্য ৰনিভে হইবে। ভাঁহারা পরব্রহ্মকে অখণ্ড-স-किमानम-क्रांभ खाख हरेगा कान-कुख हरेकन। '' নং প্রাটপানম্ববোজানস্তাঃ কুতাবানোবী-ভরারীঃ,প্রশাস্তাঃ। <sup>১১</sup>, কিন্তু তথনকার ভয়ক্তর अक्षान-क्रमाइक लाक-ममास्क्रम क्रवणा प्रिया তাঁহার। দাধারণের মধ্যে দে জ্ঞান অচার করিতে उरमाही इरेटलन ना । अर्डाहाता शह नामझमा छ।-প্ৰ করিলেন। যাহারা ঘহী থাকিবে ভাহার। যাগ যজ্ঞ ফিয়া-কলালে পরিষিক দেবজার উপাসনা बाह्य नम्य बालन क्रिट्टक । कि कुर्सहमध्य क-क्रीति किकीविटक्ष्य तमाहा अवर क्षि माना-त्त्रदेशकि व कर्मा विश्वादक नदत्तः। (वाक्रमदन्य-मर्गराजानमम् । हेर त्याच्य वाल वस्तान कर्य-तकत कड़कान कड़क अंग्रे नेप्तर जीविड शानित्व देवा नहित्तक। व अवाह सम्बद्ध क पूरि CHINICS STRICT WHEN THE FOR ALL SPINISHED

আরু একারান্তর নাই। শাহারা একা-জান লাভ ক্রিবেন, উাহারা সংসার পরিভাবি করিয়া অরণ্যে ভৈ কাচ্যা অবলুমন পূর্বক ভাহার উপা-সনাতে রভ থাকিবেন। '' ভে হ সা পুর্বৈষণাযাশচ কিভিষণাযাশচ লোকিমণাযাশচ ব্যুখায ভিকাচ্যাই চরন্তি, '' (রহদারণ্যকোপনিষদ) যাহারা একাকে আনিয়াছেন, ভাহারা পুত্র-কামনা, বিভ-কামনা ও লোক-কামনা হইডে নির্ভ হইয়া ভিকাচ্যা অব-লয়ন করেন।

व्य काटन उपनियदमत्र ताना चाह्य इटेन, ঈশবের্জান আবিদ্ভ হইল, সে কালে অপ্প লোকেই ভাহা জানিবার উপযুক্ত ছিলেম। সাধা-द्रावत मापा मं उद्धान व्यातमं कदिए शादिन मा, কভিপয় উন্নত-ভাৰ-বিশিক্ত লোকেই উপনিষদের বর্মা এছণ করিলেন। ঘাঁহার। সমুদায় সমাজের **एफा-यत्रें थे, डीहांत्र एत्रहें भर्ता छार्। यन त्रिल**ा জন-সমাজের সেই নিবিড় অদ্ধকার ভেদ করিয়া জান-স্থা প্রবেশ করিতে পারিল না। অর্ণা-बामी मधामाताहै উপনিযদের অধিকারী হটলেন। সাপারণের মধ্যে ধেমন যাগ যতে প্রচলিত চিল, ভাহাই থাকিল। সুভরাৎ উপনিষদের দারা সাধারণের যে উপকার হওয়া, ভাঁছা হইল না। যাঁহারা উপনিষদের অধিকারী হইলেন, ওঁ(হার) वतः विवाप चक्षदनत निमिष्ठ मामक्षमा चारान क-রিলেন। ধাহার। একদেবাদিতীয়ং ব্রহ্মকে না জানিবে, তাহার। যাগ বজ্ঞ করুক। হারা সভা জানিতেছে, ভাহারা যেমন ভাহা কি প্রকারে প্রচার করিবে, ভাবিয়া ভাকুল হয় ; 🖫-হারদের সে উৎদাহ ছিল না। তাঁহারা মতা লাভ করিয়া আপনারাই তৃপ্ত হইছেন, আপনারাই ঈশবের পানি ধারণায় নিযুক্ত থাকিতেন। এই असा উপনিষ্টের নান আর্ণাক। ইহা অর্ণোর कन, गृशी बाज्जित ইहाटङ অधिकात नाहे। आ-মরা যে সকল মতা দেখিয়া আশ্চর্যা হইভেছি, সেইটি উছোৱা অভি যত্নে সাধারণ লোকের নিকট হইতে রক্ষা করিতেন। উপনিষদ্কেবল ভারণো ব্যিয়াই পড়িতে হইবে, গুহুষের অব্লে ভাই৷ প-ড়িতে নাই। ''মরণো তদগীধীত'' ( সামনাচার্য্য ধৃত) অর্ণো ভাষা পড়িবেড। জনশুনা হি-মালয়ের চ্ড়াভে রত্বর্জি নিহিত থাকিলে, হে क्रश इष, मनामीपिटणत इटल्ड जिल्लिस्ट्रपत दमके व्यक्ति कार किल। अक नमत्य अभित्र बाह्य बिन-য়ের শোভা সৌন্দর্যো অভিভূত ছিলেন, অ্রি আদিতাকেই পূজা করিতেন, বাহ্যিক আদৃত্ত দারা ঈশবের প্রতি ভক্তি প্রকাশ করিছেন। करम करम छै। हाजा बाह्य दिवस हहेटल अलिसिहा हरेया अवह कि बाबा और आसारक नका वक्क পরনার্থাকে দেখিনেন, কিছু ব হারা নেই কভা ফানিলেন, ভাষা তাঁহারদেরই মধ্যে আইন র-ফিল। আনরা এখন সেই দ্রেজ-জান খারা স্থ-দায় সংসারকে তেন করিয়া ক্রজের পভাষা উ-ভটীন করিভে চেটা করিভেছি।

मिट आपिय कान कटेल्ड ज कान शर्यास देव-पिक धर्मा करम **उन्न**ण दहेगा जानाधर्मा करने धा-কাশিত হইয়াছে। পূর্ব্য পুরুষদ্বিগের অধিকারে আমর। অধিকারী, এই আমারদের সৌভাগা। ভারত কর্ষে দর্শের কাঠা-ভাষ। এখানকার প্র-পম গ্রন্থ বেদ; ভাষা ধর্মের জন্য, ঈশবের জন্য, অরুণ-কিরণের ন্যায় উপিত হইয়াছিল; ভাহা হইতেই কনে কনে জ্ঞান রূপ ফুর্মের প্রভা জা-মারদের স্মাত্মাতে প্রকাশিত হইতেছে। সেই ध्वा कारणत भूका भूक्यपितात स्वतमत मधा इंडेटड যে সকল সভা পাইভেছি, ভাহা অতীব আদ্রণীয়। পূর্ব্ব পুরুষদিগের পরিশ্রেম আমরা বার্ব করিছে চাহি না ; ভাঁহারদিণোর পরিপ্রনের ফলের আ-মরা অধিকারী, ভাষা আমর। এহণ করিষ। আ মরা কিছু স্থভন ধর্মা প্রচার করিছেছি না। চির কাল হইতে যে ধর্ম উন্নত হইয়। চলিয়া আ मिटलर्फ, डाराहे आका धर्मा। क्ल्यांकि विकास কি আজি প্রকাশিত হইল গ না চিকিংসা-বিদ্যা आधि ब्रहिष इड्रेन ? हिंद काल्डे त्य विभाग हिल्हा আসিভেছে, ভাহাই উন্নত ভাবে অদ্য দণ্ডায়মান হইয়াছে। ভেমনি ভারত ভূমিতে যে ধর্মা চির কাল চলিয়া আনিভেচে, ভাহাই আজ উন্নত হইয়া ত্রাক্ষধর্ম নামে পরিণত হইয়াছে। আ-মরা কি পূর্মকার আচার্গাদিগকে পরিকারণ ক-রিয়া আপনারদের জয় হোষণা করিতেচি ? আ-শরা আরো নত হইরা বলিতেছি যে বদি উপনি-यरमञ्ज भटवा अमन अर्थीश महादाका मकल ना शा-ইতান, তাহ হুইলে ব্রাক্ষধন্মের এ অকার আ-পাত্মিক উন্নত ভাব হইতে পারিতন।। এফ সময়ে ঈশার সভা প্রকাশ করিয়াছেন, আর এক मगरप करवन नाहै, अमन ला नरहा अह পুৰিবীর অবস্থানুসারে ভিনি চির কাল সভা প্র-কাশ করিয়া আসিতেছেন। প্রথিবীর <mark>উন্</mark>নতির महामान भरमात्र एमिन इट्टिइ । दावन दान হইতে যে ব্রাক্ষধর্মের সাহায়া পাইতেছি, এমনো नटर नक्य जान हरेटलरे नाराया लाहेटलहि। यक धर्मा कारह, गक्न धर्मा इंदेरक मार्थामा शाहिशा काशहरमत छेशदत जाक्रथमा ऋाशिक हेईसारह। বেদেতে পরিমিত দেবভার উপাসরা ছিল্ উপা-नियम धकरमना दिलीग्रामह जिलानमा दिस्स य-तामा अतामा रहेक, वर्षन त्मेह क्रिमानना क्रियानन প্ৰসাদে প্ৰতি গৃহে প্ৰতিষ্ঠিত করা হইচেছে।

बाह्य दिन के कार्य कार्

रमगन चनि गर्धा कार्य हरेटड तुष्टक उद्वाद कतिराख करा, रखमनि स्वम दिवसाख महास्राहित मू-त्राग रहेटच प्रज वास्त्रिया महिर्द्ध सहेदन। सम्रात বে গ্রহণ করিজে হইবে ভাষাও সহয়; সকলিংয়ে পরিতাপি করিতে হইবে, ভাষতি নছে। বেদ विमास महाভाइडावि शूर्वेडव नाम-नका जारता-हमा कतित्व मिथिए शहि, शर्मात मकत अवह তাহাতে ইভস্তভঃ বিক্লিপ্ত হইয়া বহিনাছে। 🐠-বার যেমন ভারত ভ্মিতে সকল প্রকার পুস্তক অপেকা ধর্মের পুক্তক অধিক, তেমনি প্রতি জনের ভাব আলোচন। করিয়া দেখিলে খর্ট্যের ভাব অধিক দেখিতে পাই। আমরা বদি দেখীয় धर्मा छात तका क्रिया प्रत्मत डेब्राड माधन क्रित, जारा रहेताहै प्रत्नेत मलल स्टेट्व: यपि प्रमा प्र-শের আসুরিক ভাব এ দেশে আরোপ করিতে ঘাই, তাহ। হইলে দিন দিন আরে। ইহার অধোগভিই হইবে। ভদ্রতাবিনয় প্রীতি দয়া প্রভৃতি হৃদ-যের ভাব যত আমারদের মধ্যে নিহিত আছে, এমত আর কোন দেশেই নাই। আমারদের থে নকল সভাভার ভাব, পবিত্রতার ভাব, ভাহা রক্ষা করিয়া যদি আপনার্মিগকে উন্নত করিবার অভি-লাব করি, ভাষা হইলেই আমরা ক্রভকার্ব্য হইব। অন্য দেশের ভাব এ দেশে আব্লোপণ না করিয়া ष्योशनात्रसबरे क्षरसब्द महज छारव हेहारक छै-মত কর, দর্ব আকারে দেশের মলল হটবে। প্র-থিবীর মধ্যা বল ভূমির প্রতি সকলেরই অনাদর, वैदारक रेकदरे आंवर करत गा। यमि मचा धर्मा ইহুনকে উমত্ত করিতে পারি, যদি ঈশ্বর-প্রসাদে ব্রাহ্মধর্মা এখানে সুপ্রতিষ্ঠিত হয়, ভবে এই বঞ ভূমি আবার দকলেরই আদর্ণীয় হইবেটি আছ-क्ष रह छड विषक्षन वक्षामील । देशमहा बह ব্রাহ্মধর্মতে অবহেলা করিও না, এই প্রিফ ব্রাহ্ম ধর্মকে অবহেল। করিও না।

#### DISCOURSE

**AGAINST** 

#### DERO-MAKING IN RELIGION.

For more than twenty years we have been made familiar with the phrase Hero-Worship. It has been applied not only in the regions of politics and literature, bea in religion, as the phrase itself strictly claims. We have been told, from very opposite quarters that the excellence, as well as the charactcristic, of the Christian religion turns on its venorating a personal here in Jesus of Nazareth. Many who egard flests as a mere man, yet insist upon inscribing themselves his servants and followers, and on so wedding their honour for him with their adoration to God most high, as systematically to incorporate the two. Nay, some who utterly disown allegiance to Jesus-who think him to have taught many things erroneously, and to have had nothing supernatural in his character, in his powers, in his knowledge, in his virtue, in his birth, or in his com-rounications with God-still maintain that he is fitly called the Regenerator of mankind, and ought to receive-I know not what, acknowledgement-us our Saviour. It appears then not superfluous to bestow a little space on the treatment of this դատենօդ.

I need hardly observe that personal qualities alone in no case constitute a hero. Action and success must be added; and action cannot succeed until the times are upe. No one knows this better than the True hero. True gonius is modest in self-appreciation and is fully aware how many other men could have achieved the same results if the same vare conjuncture of circumstances had presented itself to them Men of genius are fewer than common men, but they are no accident. God has provided for their regular and continuous recurrence; their birth is ordinary and certain in every nation which is counted by millions. The same is true in every form of mental pre-eminence, whether capacity for leadership, or genius for science, or religious and moral susceptibility. Religion, separate from morals, is, of course, only fanaticism. We venerate ruligion only when built upon pure morals. Mural religion is notoriously a historic growth. and has depended on traditional culture at least as much as what is specially called science; and its progress is not more wayward and arbitrary than that of sciouce, if the whole of human history be surveyed. The present is ever growing out of the past, with a vigour and a certainty which never allow the fortunes of the race to be seriously dependent on any individual. Each of us is, morally as well as physically, a hirth out of antecedents. From childhood we are tunered in right and wrong, not only by professed beschers, but by all elder parsons who are around us. Improper deeds or words of a child are reproved by a servant, or by an elder brother, or even by a stranger, as well as by a parent or a pricet. We imbibe moral sentiment, as parent or a pricet, we immose moral sensiment, as it were at every pore of our moral nature; nor do we often human from whom we learned to abhor this course of conduct and to love that. Hence no wise man will stain originality for his moral judgments or religious sentiments. A foolish dogma, a fanciful tenet, may easily be original; but a pure sound truth is more likely to have been old. To prove its moral is moralish and certainly could not recomnovelty is impossible, and certainly could not recom-

mand it; on the contrary, the older we can prose it to have been the greater its estensible authority. For these reasons, in the theory of morals and religion, a claim of originality can seldom or never be surfaired; in this whole field the question is less what a trun has taught, than what he has persuaded others. Hundreds of us may have said, truly and wisely r "It is a great pity that Mahomedans, Jaws, and Christians of every sect will not unlearn their dissensions, and Llond into one religious community. The sentiment must once have been even new; yet its atterance could never have escaed praise and distinction. But if any one devoted his life to bring about such union, and succeeded in it, we should undoubtedly regard him as a moral hero; though (as just said) no one could succeed, until the fulness of time arrived and the crisis was seized judiciously.

Thus, in discussing the claims put forth for special and indeed exclusive honour to the name of Jesus we have to consider, not so much what he said, or is said to have said, as what he effected, what impression he actually produced by his life and teaching; what great, noble, abiding a sults his energies originated and bequeathed. The moment we ask, What are the facts? we seem to be plunged into waves of most uncertain controversy; info discussions of literature unsuitable for short oral treatment. You, before the present authories, I may with full propriety claim as admitted that which greatly clears our way I presume you to know familiarly, that the picture of Jesus in the fourth gospel is essentially irreconcilable with that in the three which precede, and is neither trustworthy nor credible. The three first gospels, taken by themselves, do present a character, a moral picture, sufficiently celf-consistent and in telligible to reason about. But our present question (allow me carefully to maist) is nor, Do we see in Josus a remarkable man, a gifted peasant, a dogmetist by whom we may profit, whose noble sentiments we may admire or applaud? but rather, Do we find one who dwarfs all others before and after ham? one to whose high superiority sages and prophets must how; before whom it is rearoughle and healthful for those who have a hundredfold of his knewledge and breadth of thought to take the place of little children ? Or, at least, Mas Europe and the world (as a fact) learned from him what it was not likely to learn without him? Is that name 'which is dinned into our ears, that Christendom has no bibed from him a pure spicitual, large-hearted, mis-versal religion, adapted to man as men, comenting mankind as a family and emobling the individual by a new and living Spirit, maken over to the philosophies, unknown to the priesthoods, untaught by the prophets, before him?

Even if we had no meight, as to the comparative value of the several grapels, one broad certainty affords solid ground to plant the foot upon. The positive institutions and active spirit of the first Chrissan church are notorious and indubitable. learning what the Apostles established in their Master's name within a few weeks of his death, we know with full curtainty what they had understood him to teach, what impression he actually produced, what was the real net result of his life and preach. ing and this, in fact, is our main question. Now. it is true beyond dispulse-it is conceded by every sect of Christians—that in the first Christian church the Levitical ceremonies were maintained with senious rigour, and that its only visible religious peculiarity consisted in community of goods. The candidate for baptism professed no other creed but

that Jesus was Messiah and the obscience of the disciple to the Master was practically manifested in the sunden renunciation of private property. This ordinance was not, in theory, compelsory, but, while the fervour of fath was near it was enforced by the public opinion of the church so sharply, as to tempt the richer disciples to hypocrisy. The story of Ananias and Sapphira is full of instruction. They did not wish to allowate all their could the public of the story o did not wish to alienate all their goods, though they were willing to be very liberal. In deference to the prevailing sentiment, they sold property and gave largely to the church; yet were guilty of keeping back a part for themselves secretly. For this fraud (according to the legend) they were both struck dead at the voice of Peter! Such a legend could not have arisen, except in a church which regarded absolute Communism as the characteristic Christian virtue. Higher proof is not needed that Jesus established this duty as the touchstone of discipleship; but, in fact, the account in the three gospols tallies herewith perfectly. Josus there mourns over a rich young man, as refusing the law of pen-FECTION because he hesitates to well all his goods, give them to the poor, and become a mendicant friar. When his describes, commenting on the young man's failure to fulfil the test, say: "Lot we have left all and followed thee what shall we have therefore?" downs in reply promises, that, in reward for having sacrificed to him the gains of their industry and abandoning their platives, they shall sit upon thrones, and judge the twelve tribes of Israel (In passing I remark, that the idea of such a reward for such a deed is shocking to a Paulm Christian)

The Jerusalest church was, alone of all churches, founded by the chosen representatives of Jesus on the doctrine of Jesus himself, while the respecial community, not unlike a 'religious order' of modern Europe; and could not be discriminated, by Jews any more than by Romans, from a Jewish sect. In the next century, those who seem to have been its direct successors were called Emonite hereties by the Gentile Christians When Paul, who ostentatiously refused to learn anything from the actual heavers of Jesus, had put forth what he calls "his own" gospul namely, "the mystery that Gentiles were to be follow-heirs" without Levitional purity—he brought on himself animosity and violent opposition from the Christians of forusalem, who were the historical fruit of Jesus' own planting. When Paul was in Jerusalem, one of the leaders called his attention to the fact that while many thousands of Jews were believers, they were " all zealous of the law;" he therefore advised hum to pacify their misgivings and suspicions of him, by performing publicly certain Judaical ceremonies. Paul obeyed him: nevertheless, no such conformities could atone for his offence in teaching that Gentiles, white free from the law, were equal to the lows before God; and Paul to his last day experienced enmity from the zealous members of that church. His relations to the other Apostles we know by his ewn account to have been certainly cold: the serms to be personally pointed at in the Epistle of James, as " s vam man," who presches faith without works; while he himself (as he tells us) publicly attacked Peter at Antioch as a dissembler and weak truckler to Jerusalem bigotry. When, from tirst to last, the doctrino of the church at Jorusalem was stormly Levitical, it is quite incredible that Jesus over taught his disciples the religious mullity of Levitical ceremonies and the equality of Goutiles with Jews before God. But

who need I arms about this when it is distinctly clear on the isco of the marratice. In the book of Acts the idea that "First is not respective of persons"—or of nations breaks upon the said of Peter as a new relation, and is said to have been imparted by a special vision. It is not presented that Jesus had taught it; nor does Paul, in any of his controversics against Judaism, dare to appeal to the authority and doctrine of the earthly Jesus as on his side. In fact, in the Sermon on the Mount, as also in a passage of Luke (xvi. 17), Jesus declares that he is not come to destroy the law; and that "Rather shall heaven and earth has away, than shall one tittle of the law, fail." I am, of course, aware that Christian theologians would have course, aware that Christian theologians would have us believe that Luke is here defective, and that the words in Matthew, "Until all be fulfilled," mean "Until my death shell fulfil all the types." But this would make Jesus purposely to deceive his disciples by a riddle. This is indeed worse than triffing, and a gratuitous imputation on the teacher's truthfulness. He must have known how he was understood. They supposed him to mean that Levitism was eternal; and he did not correct the impression. It was then the very impression which be designed to make simply and truthfully; and the disciples, one and all, rightly understood hime and knew it well.

表了数据数据的内型的图片的。在4.数据的图像 1886年,1886年,1886年,1886年,1886年,1886年,1886年,1886年,1886年,1886年

The verse which follows in Matthew clenches the argument, although (I see I must in candour add) I do not believe that Jesus spoke it in exactly this form. Nevertheless, it emphatically shows how the writer interpreted the verse preceding Por he makes Jesus to add. "Wherefore, who soever shall break one of those least commandments. and shall teach me so, he shall be called the least in the kingdom of heaven but whosoever shall do and teach them. the same shall be called great in the kingdom of heaven." I find myself unable to doubt that these words were written to mean : "Wherefore, one like Lual, who breaks the Levitical ceremonies, and teaches the Gentiles to break them, is least in my kingdom; but James, and the Apostles in derusalem, who do and teach them, are great in my kingdom." The intensity of feeling on this subject was such, that the Jewish Christians easily believed Jesus to have prophetically warned them against Paul's error. Be this as it may, the formula, " break one of these least commandmenta, and teach men to break it." is in contrast to "fulfilling the law," and distinctly shows that " fulfilling the law" refers to doing and enforcing even the least commandments

The Jerusalem church was the product (and, as in as we know, the only direct product) of the teachings of Jesus. Of its sentiment we have an interesting exhibition in the epistle of James; in whom we see a high and severe moralist, pure and exacting, full of righteous indignation against the oppression of the poor by the rich, and against all haughtiness of wealth. He does not treat all private property as unchristian rebut only large property. Evidently no rich man opuld have seemed venerable; to the chief saints in that Church. He assumes the guilt of all rich men, and announces misery about the ome on thom, as does Josus in the parable. of Lazarus: neverthelese, in him all the harshest parts of Jeaus' precepts have been softened by the trial of practical life. In fact, this epistic is much to the tone of the very noblest of the Mebaur prophets. As with them, so in him, the moral element is wholly predominant, and nothing constraint obtained itself. Nay, what is really to marketle, he calls his doctrine the perfect law of liberty;" so libtle did those exceptosive oppress him to which from childhood he had been accustomed. Let do honour be given to this specimen of the first and only genuine Christianity; yet it is difficult to find anything that morally distinguishes it from the teachings of an Isaiah of a Joel. There is certainly a diversity for the political elements of thought have disappeared, which under the Hebrew monarchy were prominent. The great day of the Lord was no longur expected to glorify the royalty of Terusalem and its national laws; and in this diversity lay the germ of great changes.

It would be absurd to censure an epistle because it is not a ritual, or to demand in it the fervours of spirituality found in this or that pealm. Nevertheless, in the present connection, I must claim attention to the fact that neither the three Gospels nor the epistic of James have ever been in high favour with that Calvinistic or Augustinian school which most nearly represents Paul to the moderns. To oring out the argument in hand more clearly, allow me to make a short digression. Morality requires both action and sentiment. No reasonable teacher can undervaluo either: yet some moral teachers ross more on action, and are said to preach duty and rock, and even make a duty of sentiment, laying town as a command that we shall love God, love our neighbours, love not ease, love not self. Other eachers endeavour to execte, foster, and develop just entiment, and trust that it will generate just acion, possibly they even run into the error of shansing definite instruction as to what action is good. Circle and one-sided as we are, two schools maturally row up among teachers, who may be classed as the reachers of duty and the preachers of sentiment; nt perhaps, if the question be distinctly proposed o the ablest men of either school, "Do we learn rtion from sentiment, or sentiment from action?" ney would alike reply (as in substance does Arisotle) that both processes necessarily co-exist. From nildhood upward, right action promotes right feelog, and right feeling generates or heightens right tion. There is no real or just collision of the two hools. Nevertheless, as a fact of human history sily explained, the preaching of duty and of outard action gains everywhere an early and undue seendency, perhaps especially where morals and region are taught by law, which deals in command id threat. The rule man and the child are substed to rule more or less arbitrary; and it is only aen intellect rises in a nation or in an individual at the spiritual side of morals receives its propormate attention. In Greek history, we know the t in the philosophy of Socrates and Plato. mong the Hebrews, a secular increase of spiritual r in the highest teachers will probably be con-ted by critics of every school to have gone on in the time of the judge Samuel to the writer m whom came the last twenty-soven chapters of iah. The characteristic difference of the Greek I the Hebrew is this: that, however spiritual the eek morality might be, it seldom blended with igion; and (with exceptions perhaps only to be ad under Hebrow influences, as at Alexandria) s moral affections found no place in religion at all, w it has been recently asserted by a Theist, that s to Justs that we own that regeneration of relip. which makes it begin and grow from within is not (it is said) is more teacher of pure is ? but his work has been in the heart. He transformed the lies into the troopel. He has nged the boudage of the alien for the liberty of 

the sous of God. He has glorified virtue into holiness, religion into piety, and duty into love." Hence it is inforred that "his confing was to the life of humanity what regoreration is to the life of the individual."

Deep as is my sympathy with the writer from whom I quote, I am constrained to say that every part of the statement appears to me historically incorrect. It does, in the first place, violent injustice to the Hebrews who preceded Jesus. Did he first glorify virtue into heliness"? Nay, from the very beginning of Hebraism this was dong-at least as early as Samuel. Did he first " glorify rolls gion into piety"? Is there then no piety in the 42nd Psaim? in the 63rd? in the 27th? in the 23rd? Nay, I might ask; from what utterance of Jesus can piety be learned by the man who caused learn it from the Psalms? Holiness and piety uppear to me to have been taught affir exemplified quite as effectively before Jesus as since. Surely in the religion of the psalmists riety dominated much as in Fencion of in the poet Couper. But finally I have to ask, "Did Jesus glorify duty into love"? And, in order to reply I turn to the three gospels, as containing our best account of what he taught.

A phenomenon there very remarkable is the save. rity with which Jesus enforces as duty the most painful renunciations; and the contempt with which he rejects anything short of namediate obedience to his arbitrary domands. I know not whether the narrators have overcoloured him; but they give us, on the one side, examples of prompt obedience to the command, "Follow me." in t. in Andrew and Peter; next, in James and John; who "cumediately left the ship and their father, and followed him: This is afterwards praised as highly meritorious On the other side when Jesus says to a man, "Follow me," and receives the reply. Lord suffer me first to go and bury my father? I'sus referts . "Let the dead bury their dead, but go thou and preach the kingdom of tiod. Another also said, Lord, I will follow thee, but let me first go and hid them furewell which are nt home in my house. And Jesus said unto him, No man, having put his hand to the plough and looking lack, is lift for the kingdom of God " The peremptory command to thundon their parents, not bury a dead father and not even say a word of farewell to the living is perhaps a credulous exargeration of the writer; yet it is in close harmony with the whole account, and with the declaration, "He that hateth not his father and mother, and wife and children, cannot be my distiple :" for evidently the following of Jesus, as interpreted and enforced by himself, involved an aban-domient (perhaps to starvation) of these near relatives. It is not my purpose to dwell now on the right or wrong of such precepts but on the imperious tone in which they are unposed from without, not the slightest attempt being made to recommend them to the heart or understanding, Again, in perfect harmony with the same is the reply, already addiced, of Jesus to the rich coming man, who comes to ask. "What shall I do that I may inherit eternal life?" The apportunity was excellent to set forth that no outward actions could

<sup>\*</sup> I quote from the striking treatise of my friend Miss. Cobbe, called "Broken Lights." The whole protest significant. It would be to the words above are the summary, should be read to understand their relation. I am authorized to say that she has not even the remotest wish to make honour to Jesus part of religion: she intended to write as a historian only.

bring eternal life, but that such life was an interior and divine state, to be equalst by love and faithful ness. Instead of spiritual instruction. Jesus gives a crushing arbitrary constand: If they will be perfect, go, sell that thou hast, and give to the poor and thou shalt have treasure in heaven; and come and follow me." Does such a teacher build from within by implanting Love? Does he set upon thore at all, or rather on selfish ambition. It He deals in hard duty and fierce threat; commands too high, and motives too low; thoughts of reward; promises of power; salvation by work; investment of money for returns beyond the grave; prudential adoption of virtue, which may soften judgment, we promotion, deliver from prospective prison and hell fire topics which at best are elements of Law, as opposed to Gospel. In the opinion of an increasing fraction of the most enlightened Christians, the most noxious element in the popular creed is the internal Hell: stronghold of this doctrine is in the discourses of Jesus. But what of Faith? If Faith be a purely spiritual movement, which elegents to Goodness and Truth for its own sake, and without regard to sellish interest, it is hard to say in what part of the three gospels it is found. In the mind of Jesus all actions seem to stand in the closest relation to the thoughts of punishment or reward on a great future day. To lose one's soul means, to be sentenced when that day shall come, cutting off a sin means, escaping mintilated from a future bell. In a religion practically monided on these discourses, cale latten of white we shall hereafter get by present chedience inheres as a primary essence. The only thith which Jesus extols, is, faith to work incredes, and faith that he is Messah and can work them Inquiry is frowned down and sighed over as unbelief. Power to largive rin is claimed by him; and, when this is reproved as impleus in a human teacher, the claim is marvellously justified by identifying torgit mess with cure of bodily disease. And to this the grant of initiaculous powers to the Seventy, and a deligation of power to lorgive is made out at which Protestants may well studder. In another place (Luke vii 4,5) Josus declares forgiveness of am to be carned by personal affection to himself; but I am bound to add that, on special\* grounds, I do not believe the account.

The narrative in Luke vii 37—50 seems to be an inassurate duplicate of that in Matt. xxvi. 6. Mark xiv. 3, John xii. 3; which nearly agree as to lime and place—viz., it was in Berhan', a little before the last Passover. Multhew and Mark say, it was in the house of Smon the leper: Luke says, of Smon the Phariseo. John calls the woman Mary of Bethany, sater of Lazarus and of Martha: Luke says, a woman notorious tor sin. I will here remark, that discussion on the behaviour of Jenes to woman of ill fann, which is called "delignt" beautiful," "characteristic," &c., uppears to me wholly without basis of fact. Those whe allow no bistorical character to the discourses in John will not quote John iv. 16—19, nor John viii. 1—11, against this remark: "and nothing remains but Luke vi. 37—50, the fair fame of Mary Magdatene has been obserted by believing this story in Luke, and then therefore her with the woman.

refl and that many who must know seem to forget, thet so Greek philosopher—whither an Anaxagoras nor Zana, to say nothing of Socratea Plato, Aristotle, Cioro, oners—would ever have the winds or unjust meeting a wounds a woman's faults. If happing sentiment conclinios appear barshagains wounds who have made a trade of themselves, is it not because the which are mainful rothe sinter are more investing, and many contaging than sins which impoverial him.

Lake has busine parts at lest anchor souther to desire, and process sone time dentities which it is according that Matthew and Mart price; while show retail so many that are fitting someon; but even dance. I seek in vain for anything essentiated by implant to the heart a sense of freedom; to elaste willing some vice; or to chemistic spiritual desire; gratismile and tranquil love, careless of other revenue than love. tranquil love, careless of other reward than love itself. In fact, Luke is sometimes harden than Metthew. Thus in vi 24, "Blessed be as part for yours is the kingdom of God. Blessed and for that hanger now, for yo shall so filed. But was unto you that are rich; for ye had resided your consolation. We want you that are fully for you shall hanger. We want you that lough some for ye shall mourn and weep." Be indigeniming and though they are directors that each doubting made thoughtless are divotees, that such doctring meets with the came theoretic glorification as the essentially different version of Matthew's "Bissend are the poor in spirit. Blessed are be who support and thirst after rightcourses." If Matthew be correct and Luke wrong, Luke has foisted open Jesus curses against rich and mirthful men in contrast to the blessings on poverty and weeping; but if the curses came from the lips of Jesus; Luke gives the opposite clauses justly; in which case Ataithew has improved monkish into spiritual sentiment. It would be a hard task to prove laskes version out of harmony with the constant doctrines of To borrow Calvinistic phrasedogy, and (if my memory serves me) the very words of a Pauline spiritualist." The three gospels may be read in the churches till domnsday, without converting a single soul." The spiritual side of Christianity, inherited from the Hebiew psalmists, not from Jesus was diffused beyond Judas first by the Jewish synagogues, next by the school of Paul to home the school of desir was in fixed opposition, preaching works and the lax, while Paul preaches the Spirit and faith "I'l ough I give all my good to feed the poor,' says Paul, "and give my body to be burnt, and have not charity, I am nothing." How vast the contrast hear to the doctrine of Jesus. Every one that both forsaken houses, or brethren, or sisters, or father, or mother, or wife, or children, or lands for my name's sake, shall receive a hundredfold, and shall inherit eternal tife" To make ascetie sacrifice for the honor of Josus was indeed a surpassing morit in his eyes, unless the most important discourses, even in these three gospels extravagantly belie hun. I amountable to discover on what just ground the opinion stands that the character of Jesus is less harsh, and his precepts less sourly ansters than those of John the Baptist Little as we are fold of the latter (all of which is honourable), the two must have had close similarities. Let it be remembered that Apollor is spoken of in the Acts of the Apostles as 'instructed in the way of the Lord, and torrent in spirit, and teaching diligently the things of the Lord," while he "knew only the baptism of John." So also Paul falls in with: "certain disciples " at ? Ephesus, who pass as Christians, yet he presently discovers that they also know only John hapten. It seems therefore evident, that the consequent had nothing essential to divide, them; and were intimately alike When, on the other, hand, the sharp opposition of the Bauline decreims to that of James and the church of Joins as James low and duly estimated, soine may think that correction ways. put into the mouth of John the Baltist will become less outrue if changed as follows. Liefled con-Jenus baptize with water made recommended to pure ty, but Faul shall baptice you with the Man

Spirit and with fire." Be that as it may give as little weight as you please to Paul's strong points press as heavily as you will on his weak side, out of which came the worst part of Calvinism—the fact remains, that Jeens did not teach Christianity to the Gentiles, or declare them admissible to his church without observing Mosaism; and that to the Jews themselves he preached merely severe precepts, ethical or monkish, with a minimum of what can be called Gospel;—precepts, on which a religious order might be founded, but totally un-

suitable for a world-wide religion.

When people calmly tell me that Jesus first established the brotherhood of man, the equality of races, the nullity of ceremonies; that he overthrew the narrowness of Judaism; that he found a national, but left a universal religion; found a narrow-minded ceremonial, and originated a spiritual principle ;-I can do nothing but reply that every one of these statements is groundless and contrary to fact. What his disciples never understood him to teach, he certainly did not teach effectually. It is childish to reply that the fault lay in the stupidity of the twelve Apostles. What ! could not Jesus speak as plainly as Paul did? Surety, the more stupid the hearer, the more plainly the teacher is bound to speak. If Jesus had so spoken, never could want of spirituality in the hearer have made the words unintelligible. Did only the spiritual understand Paul when he pro-claimed the overthrow of ceremonies? Could the most stupid of mortals have failed to understand Jesus also, if he had avowed that the Levitical oridnances were a nullity and Gentiles the religious equals of Jews? I may seem to insult men's intellect by pressing these questions; but do not they rather insult our intellect? For they would have us believe Jesus to have originated doctrines which are the very opposite of all that his actual hearers and authorized expounders established as his, before there was time for his teaching to fade from their memory and to be modified by novelties supervening.

I have called the primitive church of Jerusalem the only direct product of Jesus. Do I deny that Jesus bore any part at all in setting up the creed known in Europe as Christianism? I wish I could wholly deny it. Gladly would I relieve his memory of all responsibility for dogmas, whence proceed far more darkness and weakness of mind, confusion. bitterness, and untractable enmittes, than his moral teaching can ever dispel; dogmas which as effectually break up good men into hostile sects, with fixed walls of partition between them, as ever did the ceremonialism which he is falsely imagined to have destroyed. But, hard as it is to know how much of the gospels is historical, I suppose that no one for three centuries at least has doubted that Josus avowed himself to be MESSIAH, at first privately, at last estentatiously; and was put to death for the avowal. If so much be historical, we are on firm ground. There is then no room for transcendental philosophies and imaginative theories, we to what authority and honour Jesus was claim-The Jews of that day familiarly understood that Mesnah was to be a Prince from Heaven, who should rule and judge on earth. As to the great oddines of his character and power, manifestly store was no dispute. If the popular notions on this subject were wrong, the first business with the must have been to set them right. But he never discourses agained them, nor shows along the he be thought to claim supernatural digwity and logismp; nor could his riding trium phantly

on the ass, amid shouts of " Hosanna to the Sonof David!" have been intended to discourage the belief that he was to exercise temporal as well as spiritual royalty. The learned and the vulgar were in full agreement that Messiah was to be a supreme Prince and Teacher to Israel, Judge and Lord of all nations: but the rulers regarded it asimpious, criminal, and treasonable to aspire to this dignity while unable to exhibit some mira-culous credentials. The fixed belief concerning Messiah was gathered, not only from our canonical prophets but also from the book called. "The Wisdom of Solomon" (which was in the Greek Bible of Paul and other Hollenist Jews), and still more vividly from the book of Enoch, which Jude and Peter quote reverentially, and Jude ascribes to the prophet Enoch, the seventh from Adam. With the discovery of that books early in this century a new era for the criticism of Christianity ought to have begun; for it is evidently the most direct fountain of the Messianic creed. The book of Mormon does not stand alone: as a manifest fiction which had power to generate a new religion the book of Enoch is a like marvellous exhibition of human credulity recent German critic has given the following summary of its principal contents:-"It not only comprizes the scattered allusions of the Old Testament in one grand picture of unspeakable bliss, unalloyed virtue, and unlimited knowledge: it represents the Messiah has both King and Judge of the world, who has the decision over everything on earth and in beaven. He is the Son of Man who possesses righteousness; since the God of all spirits has elected him and since he has conquered all by righteousness in eternity. He is also the Son of God, the Elected one, the Prince of Rightcousness. He is gifted with that wisdom which knows all secret things. The Spirit in all its tulness is poured out upon him. His glory lasts to all eternity. He shares the throne of God's majesty: kings and princes will worship him, and will invoke his morey." So much from the book of Enoch: which undoubtedly was widely believed among the contemporaries of Acias. How much of the self-glorifying language put into the mouth of Josus was actually untered by him it is impossible to know. There is always room for the opinion that only later credulity ascribed this and that to him .- that (for instance) he did not really speak the parable about the sheep and goats, representing himself as the Supreme Judge who awards heaven or hell to every human soul. But it remains, that this parable distinctly shows the nature of the dignity which Josus was supposed to claim in calling himself Son of Man; and, even if we arbitrarily pare away from his dis-courses this and other details in deference to Unitarian sunnise, we still cannot get rid of what pervades the whole narrative, rhat Jesus from the beginning adopted a tone of superhuman authority and obtrasion of his own personal greatness, with the title "Son of man," allusive both to Daniel and to the book of Enoch According to Daniel, one like unto a Son of Man will come in the. clouds of heaven to receive eternal dominion over It is impossible to doubt, that, in. the mind of those to whom Jesus spoke, the character of Messiah implied an overshadswing supremacy, a high leadership over Israel, and hereby-

<sup>\*</sup> I quote from a summary of the book of Emoch by the German theologian Kalisch, given in Bishop Colenso's Appendix to his 4th volume on the Pentateuch.

over the gentile, who were to come and ait at Israel's feet a religious and, as it wein, priocely processineach, which only one mortal bould, received who by it was raised isnineasurably above all others. If he did not intend to claim this, it was obviously his first duty to disclaim it, and to warn all against false dangerous, or foolish conceptions of Messian; to protect that Messian was only a teacher, not a prince, not a divine lawgiver, not a supreme judge sitting on the thorne of God and dispusing of mon's enternal destinies. Nay, why claim the title Messiah at all, if it could only suggest falsehood? Since he sedulously fostered the belief that he was Messiah, without attempting to define the term. or guide the public mind, he could only be understood, and must have wished to be understood, to present hunself as Messiah in the popular, notorious squee. If he was really this, honour him as such. If his claim was delusive, he cannot be held guiltless

Every high post has its own besettings in, which soust be conquered by him who is to carn any admiration. A finance minister, who pilfers the treasury, can never be honoured as a hero, whatever the merits of his public measures. A statesman or prince, entrusted with the supreme executive power, rains his claims to veneration if he use that power violently to overthrow the laws. Such as is the crime of a statesman who usurps a despotesm, such is the guilt of a religious teacher who usurps lordship over the taught and aggrandizes himself. It in a bottomless gulf of demerit, swallowing up all possible merit, and making silence concerning him our kindest course, if only his panegyrists allow us to be silent. A teacher who exalts himself into our Lord and Saviour and Judge, leaves to his liearers no reasonable choice between two extremes of conduct. Whose is not with him is against him. For we must either submit frankly to his claims, and acknowledge ourselves little children-abhor the idea of criticizing him or has precepts, and in short become morally aunihilated in his presence -or, on the apposite, we cannot help seeing him to

have fallen into something worse than ignominy.
I digress to remark, that a teacher supposed by us to be the infallable arbiter of our eternity would, detain our minds for ever in a puerile state if he taught dogmatically, not to say imperiously. he aimed to elicit our own powers of judgment, and not to crush us into submissive imbecility, the method which Socrates carried to an extreme appears alone suited to the object; namely, to refrain tenm expressing his own decisions, but lay before, the hearers the material of thought half-prepared and claim of them to ecohine it into some conclusion themselves. In fact, this is fundamentally the B rec is which the Supremely Wise, who inhabits one minite world, trains our minds and souls. His greatures does not oppress our faculties, because it is ever silent from without. Displaying before us abundantly the materials of ju ignients he bliffts our powers; never commanding us to become little children, but always inviting our minds to grow, up into manhood. But, if there, ware miso an opmaite side of teaching healthful to us will it were well to start from dogmes guaranteed to us from heaven, which it is implety, to can be making the matter of first necessity would be, that the utfree from all onigma, all extravagance by benbule, all parable, dark allusion, and hard sacraphor all apparent suff contrariety; and incomers disas we should have no uncertainty which provide the transfer was been with its more markets with the contract to t and inconsistent duplicates, but a reliable genume

copy of every attention of third there is to be an oritidist. Po and up I will take heading and be less suited to minister the facility and make the powers of the human roul, than to be suited to a superhuman dictation of troth; and nothing could be more unlike a draine law of the letter, than the incherent; hyperbolic, enignation in consistent fragment of discourses, given as an authoritatively as teachings of Jesus.

Hut I return to my main subject. I have shown

what conclusions seem inevitable, as soon as cease to believe that Juans is the colertial Prime Messiah of the book of Eureh, popularly expected in his day. To lay stress on his possession of this or that gentle and beautiful virtue is quite away. from the purpose. Let it be allowed that Luke has rightly added this and that soft touch to the pinture in Matthew and Mark. Let it be granted that the nobler as well as the baser side of the Jerusalem. church came direct from Jesus himself. Whether. any of the actual virtues of European Christians hage, been kindled from fires which really burnt in Jesus, it appears to me impossible to know. The heart of Paul gushed with the tenderest and warmest love. and he believed Christ to be its source. Christ whom he loved to glorify was not the Christ of our books, which did not yet exist; nor a Christ reported to bim by the Apostles, to whom he studiously refused to listen; but the Chaich whom he made out in the Mossianio Psalms, in parts of Isajah, in the apocryphal book called Wisdom, and perhaps also in the book of Enoch-With such sources of meditation and information. open, the personal and bodily existence of Jeaus. was thought superfluous by a number of Christians considerable enough to carn denunciations in the opistics of John. A great and good man, Theodore Parker, tells me that it would take a Jesus to invent a Jesus 1 reply, that, though to invent a Jesus was undoubtedly difficult, to colour a Josus was very easy. The colouring drawn from a suffering Messiah was superimposed on Jesus by the perpetual meditation of the churches, which, after he had disappeared, sought the Scriptures diligently, NOT to discover whether Jesus was Messiah, which was already an axiom, nor to discover what, and what sort of a person, Messiah was According an the inquirems studied more in one or in another, books the conception of Messiah came out different; and here we have an obvious explanation of the varieties of portrait in different gospels. The first disciples. who thus by prophetical \* studies supplemented the dry outlines which alone could be communicated be the actual hearers of Jesus, would naturally affine to him many traits not strictly human, nor laudy, shie except on the theory of his superburant character. Nevertheless, in a church exalted by moral enthusia-m and self-sacrified in which the highest spirits were truly devoted to practice holiness, it is to be expected that whatever in most beautiful and tender, pure and good, in the traits of characten which in land process were believed to belong to Messiah, would be eagerly appropriated to Jesus, as they exidently were by Paul. Some of these would be likely be tings often-repeated narratives; no that attiques

To my personal bacybadge, the in the grant matic practice of Pauline Christian, in the personal day. They read of Jesus in the known in the phote, in the types of Levisian in the consumption in the Present — any sense in the consumption read and pleasure there is the first institute of the consumption of the consump

## রাজ-তরঙ্গিনী।

২৫৫ সংখ্যা পত্তিকার ১০৯ পৃষ্ঠার পর। এই প্রস্তাবের আরু রেডা ইছা উক্ত হই-য়াছে যে রাজতরজিনীর রুভান্ত সম্পূর্ণৰূপে থকুত ও অকাম্পনিক, ডাহাতে কাশ্মীরের প্রাচীন অবস্থা ৮ ইভিরুত্ত ষণা বিভিত্ত প্রক টিত হইয়াছে, সুত্রাং ভাষা জানিতে পা-রিলে ভারতবর্ষের অপরাপর প্রাদশেরও অবস্থার আভাস গ্রাপ্ত হওয়া যাইতে পারে। কারণ যদিও কাশ্মীর দেশ ভারতবর্ষের এক কোণে অব্প স্থান ব্যাপিয়া স্থাছে, তথাপি তাহার প্রচলিত আচার ব্যবহার ও ধর্মা হিন্দুধর্মানুষায়ী এবং তাহার রাজগণও হিন্দু ছিলেন, অতএব তাহার অবস্থায়ে অপরাপর দেশের অবস্থা ইইতে ভিন্ন হই- त अपक तथ्य महाना। अहे (इकु हेलि-ছানে কাশ্মীরের যে একার অবস্থা আমরা দেখিতে পাই তাল অনেকাংশে ভারতব্যীয় श्चिष्ठ ताष्ट्रदेत जापर्भ अंबर्ध। এই सुधानीनाक सनीय ट्रिव्य क्रेटि व्यक्त ताक व विषया आमर्ता कि कि जैशामन প্রাপ্ত হইতে পারি, তাহারই আলোচনা করা যাইতেছে।

শ্বনতঃ ইহা দৃষ্ট হইতেছে যে সমুদায় ভারতবর্ষ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র দেশে বিভক্ত
ছিল। এক এক দেশ এক এক নরপতির শাসনাধীন ছিল এবং এই সকল
নরপতি আপনাদের বল বিক্রম অমুসারে কখন স্বাধীন কখন বা অপর রাজার
অধীন হইয়া থাকিছেন, কিন্তু সকলেই
স্ব স্ব রাজা সব্যে একাধিপত্য করিছেন।
দিছিলমুের ইছা ইহাদিগের মধ্যে অভান্ত
শ্বল ছিল; যাহাতে আপনার নাম ও কীর্ত্তি
ভারতবিখ্যাত হর এবং অপরাপর নরপতি
করপ্রদ হইয়া পদানত খাকে এইরপ আকাতলা তাঁহাদিনের মধ্যে অভিনয় শ্বনল

ছিল। কিন্তু বিজয়ী হইয়া অপর রাজার রাজত্ব অধিকার করিয়া লওয়ার এথা ছিল না, ভুপতিগণ প্রায় আপন আপন রাজ্যের मौभां विश्वात कतिएक देख्या कतिएकन मा। वांका मत्या ममुनांस नियम ও वावका शाहीन শাসে ও চির প্রচলিত প্রথারই অনুযায়ী ছিল; তাহার পরিবর্তন ছিল নাও তাহা নরপ্তিগণ নিভান্ত তুশ্চরিক্রনা হটলে প্রায় লঞ্জন করি-তেন না, কিন্তু ভাহা লজ্মন করিলে প্রজা-দিনের তল্লিবারণের কোন প্রতীকার ছিল নগর স্থাপন ও দেবমন্দির প্রতিষ্ঠা করা এবং ত্রাহ্মণদিগকে ভূমি দান করা এই দকল রাজাদিগের অতি পিয় কার্যা ছিল এবং শাস্ত্রজ্ঞ ও বছদদী প্রভাগনকে প্রতি পালন করাও ভাঁহারা একটি কর্ত্তবা বলিয়া জানিতেন। কিন্তু রাজ্যের কোন মূতন ব্যবস্থা কর। অথবা ভাহার উন্নতির জন। কোন বিশেষ চিন্তা ও উপায় অবলয়ন কর! তদ্বিষয়ে হিন্তু নরপতিগণ বিশেষ নিসুণ ছিলেন না৷ অনেকেই ভৌগস্থামন্ত ছিলেন এবং সকলেই বছসংখ্যক পুরাঞ্চনা প্রকাগণ নিতান্ত পীড়িত মা রাখিতেন। হইলে প্রায় স্বাহ্ব সাক্ষা থাকিত. এবং রাজার নিষ্ঠুর ও অনাধ্য শাসন হেতু প্রজ্পণ কর্ক। কান বিদ্যোহ বটনা হওয়। क्षित्र कृष्णे व्येषः।

.... : 248 - ·--

टेपमा ।

12.5

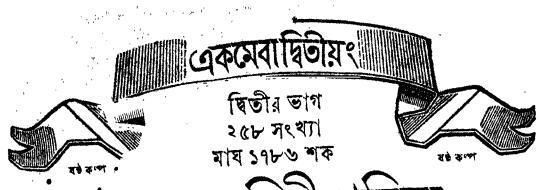
টানই হউক অধবা মনুষাকৃতই ইউক, বে সকল বিপন প্রতিকার করিবার উপায় অধবা শক্তি নাই ভাহাতে অন্তির না ইইয়া ভাহা ধারণ করিয়া পাকাই যপার্থ দৈর্ঘা। পৃথিবীতে এমন একটী স্থানও নাই, বেথানে চিরন্ধীবন নির্বিদ্ধ ও নি-রাপদে অবস্থান করা বায়। ভূমি যভ সাবধান হও না কেন, কথন এমন মনে করিও না বে,

কোন কালে কোন বিপাদে পড়িভে ছইবে না। দিখর ভোগাকে এমন শক্তি দিয়াছেন যে ভূমি (छचे) कतिरम प्रदास विशेष अखिक्य कतिरख পার। কিন্তু এমন সকল ঘটনাও আছে, হে ভুমি সমুদায় শক্তি একত করিলেও ভাহারী প্রভিকার করিকে পারিবে না। পৃথিবীতে কত অসাধা রোগ, কড নিদারণ শোক, কত রাক্ষস ভুল্য মনুষা বাস করিভেছে; কথন ভে মাকে কাহার হস্তে পড়িতে হটবে, এখন তুমি তালার কিছুই জানি-কেট না ৷ অজ্ঞার বৈধ্যান্তণ অভ্যাস করিছে বড়ু-শীল হও,যদি কোন অপ্রিভিবিধের বিপাদে পভিত হও, পৈর্যাট ভোমার বর্মা-সরুপ হইয়া ভোমাকে भाष-हिल हा विद्या भक्ष-युक्श शत्रमध्य अरे युक्-বগাছ মলল আভিআনে ব্যোগ-লোক-বিপাভি-ন-माकीन श्रीलनीटम आमात्रिशतक मर्द्यार्गम कति-মাছেন যে, আমহা ভাঁহার উপর নিতর ও বৈণা-তণ অভাগে করিয়া আত্মাকে অটল করিতে পা-রিব: আজা অটল লা হইলে অনস্থ উন্নজির পথে অন্বসর হইকে পারিবে না। ষাঁহারা দাঁঘ কাল পিতা যাতা প্রভৃতি অন্যের উপর নিভর করিয়। মিশ্চিম্ন খইয়া লালিভ পালিভ ছইয়াছেন, ভাঁছাদিগের স্বাধীনভাব ও কর্মানকভা প্রায়ই शास्त्र सा ; व्यक्ति मामाना कार्या-मण्कते छिश-প্রিত ভইলেই কীহারা হত বৃদ্ধি হতাশ <del>ও</del>নি-ভাস্ত বিষয় হইয়া উঠেন। আনু ভাতুশ বিপাদ উপস্থিত হইলে জয়ে ও বিযাদে চির কালের জন্য অক্রমণা অথবং মৃত্যু-গ্রাদে প্রতিত হটয়া शास्त्रम्। कम लोक अर्थ-स्थादक दे। शुक्क भारक डेगाक अहेश जिलादाना किन्छ याँहादा जाण्य নয়স অথপি নালা অবস্থায় পড়িভ হ**ইয়। স্বুদ্ধি**-জাভাবে বিপদ হটকে উভাৰ হইয়াছেন, অথবা টেখন্য পুর্বক ভংসমুদায় সম্ভ করিয়াছেন: ভাঁহারা मर्खादशका कार्यक्रम ७ ठकुत रहेग्रा भनाशास्त मर्गात निकार अधानकीतम भावि काश कतिया-ছেন । 'অনেক বিচক্ষণ পিজা মা**ভা সন্তামনিগকে** कुठ्डत प्राधीनद्राष्ट्र ७ कार्याक्रम कविवाद निमिक्न नामितिध कावजाय मिटकश कहिया बंदकम धवर আপনারা অলকা-ক্রপে ভাঁহাদের ভত্তারখান ক-(वस । वर्षम क्यान शक्त प्रकृत प्रकृत केंग्री हैंग्रे

তখন ভাহারদিগকে উদ্ধার করিবার নিমিত্ত আপ नात्रा डांशारम्ब अरुकार्ती हन। धरे पृष्टीख त्मः থিয়া পর্ম-পিতা প্রমেশ্বরের মঙ্গল অভিপ্রায় অবধারণ কর। সেই পারম পিতা ভীহোর প্রত্যোক শধানকে অটল খাধীনভায় উৰ্বীপিত ওচির-चांखिएक निमम कंत्रियात निर्मिष्ठ नामा वर्षेना-गः कुल এই श्रुभिवीदा मः हाश्रम कतिश्राट्यम धावः অলফ্য-রূপে ভত্তাৰধান করিছেত্রেন । আমরা প্রতি-বিধেয়, অঞ্জি-বিধেয় ও অসহা এই ভিবিধ বিপাদে পরিব্রত হইয়া আছি। কথন কোন বিপদের সহিত দাকাং করিছে হইবে, আমরা তা-कांत्र किछू है आमि मां। किन्नु श्राथम श्राकांत्र विश्रम উপস্থিত হইলে আমাদিগকে সমুৎ ভাষার প্রতি-বিধান করিতে হইলে: শ্বিভীয় বিপদে গৈবোর প্রয়োজন : উত্তীয় বিপদ আগিলে ঈশ্বর শ্বয়ং আ-মানের আছে।কে গ্রহণ করিয়া উদ্ধার করেন।

নিধ্যা-গুণে আম্য়া যে কেবল বিপদ্ সহ্ করিছে লাবি, এমন নুহে; তদ্যায়া উপস্থিত বিপদ্ হইছে পরিয়াণ পাইবার নিমিত্র ফুড্ন ভূত্ন উপায়াও উদ্যাবন করিছে সমর্থ হই। নিপদ্ পাড়িলে যদি আম্রা এক নারে আম্রার্থ হই, তাহা হইলে বিপদ্ প্রতীকারের প্রকৃত্ত উপায় সঙ্গ্রেও ভাষা উদ্যাবন ও অবলগন করিছে আম্যারদের সাম্পাহ্য না। যে সকল বিপদ্ বাস্তবিক প্রতি-বিপেয়, গৈগোর অভাবে ভাষ্য অপ্রতি বিপেয় হইয়া উটা; ভেগন অন্থাক ভক্ষনিত ক্রেশ ভোগ করিছে হয়।

বিপদের অপ্রতিবিধেয়ত। ততই হ্রাস হইতে পাকে। যে সকল কানা প্রেপমে নিভান্ত চুক্ষর বলিয়া বোপ হয়, ধীরতা সহকারে ভাষার অন্ধুঠান করিতে করিছে ক্রমে ভাষাও সহজ ইইরা পাডে। এবং অধীর লোকের নিকট বৈ সকল বিপদ্ নিভান্ত অপ্রতিবিধেয় বলিয়া প্রতীতি হয়, গৈর্নালালী পুরুষদিকের নিকটে ভাষার প্রশ্নতীতি হয়, গৈর্নালালী পুরুষদিকের নিকটে ভাষার প্রশ্নতীতি হয় ত অন্যালাল-লাধ্য হইরা উঠো অভ্যান হয় ত অন্যালাল-লাধ্য হইরা উঠো অভ্যান করা করেন ক্রমে ক্রমে ক্রমে ক্রমে ব্যাহিত বিধ্যা-তথ্য ক্রমে ক্রমে ক্রমে ক্রমে ব্যাহিত বিধ্যা-তথ্য ক্রমে ক্রমে ক্রমে ক্রমে অভ্যান করা সকলের ক্রমে আবশাক।



# তত্ত্ববোধিনীপ্রতিকা

রশ্ববাএকমিনমপ্রকাসীয়ান্য কিঞ্চনাসীডিনিলং সর্ব্যসূক্তব। তদেব নিত্যং জ্ঞানমনত্তং শিবং অভজমিরবয়বদেক মেণাদিতীয়ং সর্ব্ববাপি সর্ব্যনিয়ন্ত্ সর্ব্যাশ্রম্পর্বাজনিক কুন্দপূর্বমপ্রতিম্মিতি। একস্য উল্লেখ্য পার্ বিকটিমহিকক শুক্তরতি। ডিম্মন্ প্রীতিক্তস্য প্রিয়কার্যাদাধনক ডদুপাসনমেব।

## বিজ্ঞাপন

কলিকাত। বান্সসমাজ।

আগানা ১১ নাঘ সোন বার সন্ধ্যা ৭ ঘণ্টার সনরে পঞ্চতিংশ সায়ৎসরিক ব্রাহ্মসনাজ হইবেক। ব্রাহ্মগণ প্রধান আচার্য্য শ্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহাশয়ের ভবনে আগনন করিয়া ব্রহ্মোপা-সনা করিবেন।

শ্রী দিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর সম্পাদক।

কলিকতি। ব্ৰাশ্বসমাজ। আচাৰ্য্যের উপদেশ। ৭ ফাছন ১৭৮৪ শক।

ব্রাজ্বর্যা গ্রাহণ করিবার সময় আমর। প্রতিজ্ঞা করিয়াছি বে, "রোগ বা বিপদ ভারা অক্ষম বা হইবে প্রতি দিবস একা ও

প্রতি পূর্বক পরব্রক্ষে আত্মা সমাধান ক-রিব।'' প্রত্যহ নিজ্জলি ঈশ্বরের উপাদনা করা মনুষ্য মাত্রেরই কর্ত্রা। উপাদনাতেই आंगारनत मञ्जू, आंगारनत मनुषाच : रेश হইতেই আমাদের জ্ঞান, পবিত্রতা, বল ও উৎদাহ। ইহাই ধর্মের জীবন; আত্মাতে যাহা কিছু ধর্মের ভাব আছে, তাহা কেবল উপাদনাকে অবলয়ন করিয়া জীবিত থাকে! উপাদনা স্বর্গের দ্বার-স্বরূপ; ব্রহ্মকে লাভ করিবার, ত্রন্ধনিকেতনে প্রবেশ করিবার, এক মাত্র উপাধ। আমর চকু কণীনি ই-শ্রের স্বারা যে কাপ বাফা বিষ্ণের সহিত व्यामांत्ररमद मग्रम निवन्त कृति, छेशामना खादा मिरे क्ल च शैक्षिय महीन् लगोदर्वत गहिज নিত্য কালের যোগ স্থাপন করি। উন্নতির প্রধান কারণ উপাসনা; ইহা হ-ইতে বঞ্চিত হটলে কোন প্রকারেই আমরা সংসারের পাপ-তাপ হইতে মৃক্ত হইয়া ঈশ্বরের পথে চলিতে পারি না। প্রতিদিন নিয়মিত-কপে পরব্রক্ষে আত্ম সমাধান করিয়া তাঁহার উপাসনা করা ক-র্ত্তবা। যদিও ইংগ আমাদের প্রাত্যহিক कार्या, ज्यांत्रि हेंदा कठिन वांत्रांत मत्मर

নাই। উপাসনার **স্থান** জিহ্বাতে নয়<sub>ু</sub>চ-क्रा वन्त्र मात्रीतिक कार्या अन्तर। क्रवन কভকগুলি শব্দ উচ্চার্থ করিলে উপাসনা হয় না; সকলে মিলিত হইয়া সমস্বরে মধুর দামগানেও দামাজিক উপাদনা হয় **না। এ সকল অ**বলয়ন ইহার উপায় মাত্র। ध्यकुड डेशामना घरुत, बाद्यात महिड পরমান্বার দিমলনের নাম উপাসনা। যে-খানে মনুষ্যের চফু কর্ণ প্রবেশ করিতে পাবে না, দেখানেই উপাদনা; ইছার ভাব মনুষ্য দেখিতে পায় না, ইাহার স্তুতি প্রা-র্থনা মনুষা শুনিতে পার না , কেবল নেই गर्कागको मक्तान्त्रयांची शुक्रवरे हेहा ङानिट्ड পারেন, যিনি ইহার এক মাত্র ফল-দাভা, যাঁছার চক্ষু সর্বতা। অত্তর্ব হাহাতে আ:-मारमत উপामना भौथिक ও विकल ना कहेग्रा चार्याक ও फन-मात्र वयः, जाहात क्रमा চেফী কর' তেওঁবা, নতুবা কেবল কভক-श्री निकिष्णे अप डिकाइन क्रिटन क्रिपे ভাবে ঈশ্বরের পূজা কবা হয়। সাবধান। হে ত্রাহ্মগণ! যেন তোমাদের প্রাভ্যকিক छेशांगना आंध-शृना इत्तरा-शृना कांधा इड्रा না পড়ে। যাধতে আত্মতে ঈশ্বরকে দেবিয়া হৃদয়ের সহিত ভাঁচার পূজা করিছে পার, তাহাই ভোমাদের নিতা কর্ম। थ क्रुंच छेशांगरा इंट्रेट्ड कि मा, कल हाता ভাষার পরিচয় পাওয়া যায়। প্রতাহ নিয়-নিত ৰূপে ত্ৰলোপাদনাতে নিযুক্ত হউ-তেছি, অথচ প.প হইতে নিষ্তি পাই-তেছি না, পুর্বের নায় রাশি রাশি পাপ অশ্বরে দঞ্চিত রহিয়াছে, আশ্ব-প্রদাদ অনু-ভব করিতে পারিতেছি না, নিরুষ্ট প্রারুত্তি সকল অপরাজিত বিক্রমে হৃদয়কে শাসন করিতেছে এবং সমুদা**র জীবনকে মোহ**-সুষ্ঠলে বন্ধ করিয়া রাখিয়াছে;, **ইহাকে** क्यंन अक्ष छेशामना वना यात्र महा एक

উপাসনাতে আত্মার উন্নতি হয় না, তাহা

থ্রক্ত উপাসনা নয়। যে সাধু ঈশরের

যথার্থ উপাসক হন, তাঁহার অন্তরে বাহিয়ে,
তাঁহার সমুদায় জীবনে উন্নতি একাশ পা
ইবে। মঙ্গল-স্বরূপ পরমেশর আমাদিশকে

তাঁহার উপাসক করিয়া পরম সৌভাগাবান

করিয়াছেন; সাবধান। যেন কেহ এই মহৎ

অধিকার লাভ করিয়া ইহাকে বিক্তানা

করেন। প্রভাহ নির্দিত্ব প্রকৃতি অনুসারে

উপাসনা করিলে ব্রাহ্মবর্শের প্রতিজ্ঞা পালন হয় না; প্রকৃত আশুরিক উপাসনাই

নিতায় আবশ্যক।

উপাসনা করিবার পূর্কো অননামনা इडेया महा-चक्त প्रतामधात बाहा ममाधान করিবেক। সংসারের পাপ ভাপ প্রশ্লাভন হইতে দূরে গিয়া পরিশুদ্ধ মহান প্রমেশ্ব-রের সলিধানে উপস্থিত হইযাছি, ইং৷ স্মরণ রাখিবে। যেখানে বাহ্য আকর্ষণে মন আ-কৃষ্ট হয়, ছেথানে অপবিত্র কামনা মনে **छेन्य इयु. मिथारन छे**शामना कहा विरश्य নর; যেহেতু বিক্ষিপ্ত চিত্ত হইলে ওঁহোর দৰ্শন পাওয়া যায় না। দৰ্ব্ব প্ৰথমে ভাঁছাকে প্রত্যক্ষ দেখা যায় এ প্রকার চেক্টা করিবে, প্রীতি নয়নে তাঁহার প্রীতি ভাব দর্শন ক-রিবে, বিশুদ্ধ স্কুরে তাঁহার পবিত্র নিদ্ধুলক স্বৰূপের প্রতি নির্নাক্ষণ কারবে। তাঁহাকে না দেখিলে তাঁহার পুজাতে প্রস্তু হওয়া সম্ভাবিত নহে। কৃতজ্ঞতা-উপদার কাহার নিকটে অৰ্পন করিবে? আ**ন্ধার সভাৰ** মে'চন করিবার জন্য কাহার নিকটে **প্রার্থনা** করিবে ? যাঁহার পুলা করিতে মানস ক-রিয়াছ, ভাঁহা**র দর্শন না পাইলে কেবল** শূন্য হৃদয় হ**ইতে কডকগুলি বাক্য নিঃহুত্ত** स्हेश आकारण सिमीन स्हेटवा: **अक**ब्द বক্ষোপাসনার পারতে ক্রমু বর্ণন আক্র 啊本!

माख नमोहित हेरेग्रा बकाय हिर्दे नेत-ত্ৰখের স্বৰূপ চিন্তা করিবৈক, যিনি গৰ্ম-वांशी नवीहरीनी, विनि " विश्वजन्म" যিনি থকাশবান, বিনি ভোতের ভোত, क्रक्तू क्रक्कु, मटनत मन, প্রাণের প্রাণ ইইরা আমাদের মধ্যে ভত্তোত রহিয়াছেন, যিনি मकुत मंक्ति भूग मंकि, गाँशांक व्यवसम করিয়া আমরা জীবিত রবিয়াছি, বিনি সুাধকের সন্নিধানে স্বরং উপস্থিত হইরা হৃদয়ের পূজা-উপহার গ্রহণ করেন; তিনি आभारतत मणुरश, जिनि आभारतत अस्टत রিরাজ করিতেছেন। দ্রন্তানিষ্ঠ ইইয়া এই প্রকারে তাঁহার ধ্যান করিতে করিতে ভাঁহার व्याविकांव रहेल, ऋष्याकारण त्रहे मका-স্বর্যার উদয় হইল, এবং বিষল বিশুদ্ধ জ্যোতিঃ বিকীর্ণ হইল। সংসারের অন্ধকার जित्ताहिक इहेन, अमाधु काममा, विषय यञ्जना, লোক ভয়, ছুর্বলন্ডা, নিক্লুন্ট ভাব-দকল অন্তরিত হইল; দেই নিস্কান্ধ পবিত্র পুরু-বের দর্শন মাত্র শ্রন্ধা ও ভক্তি, জাহার মঙ্গল-মূর্ত্তি দেখিবা মাত্র প্রীতিও ক্লত-জ্ঞতা **আ**পনা হইতেই উচ্চুদিত হ ইল; স্থতি, ধন্যবাদ, প্রার্থনা, স্রোতের ন্যায় অমতিহত বেগে এবাহিত হইতে লাগিল, ক্ষরের মহিমা-কানে আত্মা পূর্ণ ইইল এবং श्रमानत्मत छदम छेदमातिङ इहेटक ला-गिन। यथन **এ**ই बटन जन छान, उमा-थानि, उक्क नर्गन गरकाति उटकाशामना रहे, তথনই আমরা এই পৃথিবীতে থাকিরাও বর্গের পবিত্রতা ও আনন্দ অমুভব করি। CF জাক্ষণণ। তেৰিয়া বিশু**দ্ধ উপাননা**কে व्यवस्थान करा, व्यवसार होशांत्र कन शक्तिम नाष्ठ कतिरव। विकिश-हिस्के, भर्मविक मरम टीहात मधिकारन छेननीय हरेले मा ; क्रमानात्र क्षप्रकारत्रकः चानीम स्वित्रह लैंगिन भूगांटल सहस स्टेरवा सहै सम्बद्धाः

ভাঁচার উপাসনা করিবে, এই একারে তী। হার উপাসনা করিবে।

হে পরমান্তম ! আমরা ভোমারই উপা
সক, যাহাতে প্রতি দিবদ নিক্রেনে প্রকার

সহিত ভোমার পূজা করিতে পারি, যাহাতে
ভোমার পবিত্র সহবাদে থাকিরা দিন দিন

উমত হইতে পারি, এ প্রকার ক্রপা বিভর্গ

কর। সংগার কোলাইলে যেন ভোনাকে
বিশ্ত না হই; তোমার প্রসাদে প্রতি দিন

ভোমার উপাদন। করিবার মহৎ অধিকার
প্রাপ্ত হইয়াছি, ইহাতে যেন আমরা কর্পন

অবহেলা না করি। প্রমেশ। কি প্রকার

করেহেলা না করি। প্রমেশ। কি প্রকার

দিগকে শিক্ষা দেও; আমাদের হন্ত ধারণ
করিয়া ভোমার প্রতি আমারদিগকে উম্নত

কর।

ওঁ একমেবাধিতীয়ং

## জীবনের প্রকৃত ব্যবহার।

হে মানবগণ! বিনীত ভাবে দেই বিশ্ব-নিরস্তার পথসকল অনুসন্ধান কর, এবং কউস্টে খদি এক বার তাঁহার নিদ্দিউ भश पास्त्रमण कतियां व्याश्च कथ, **ड**!हा हरे**ल** আর দে পথের বাহিরে গমন করিও না। ষধন ভোমরা এক বার তাঁহার পথ জানিলে, আণ পর্যান্ত পণ করিয়াও দেই পথের প-থিক ছইবে। পৃথিবার প্রত্যেক বস্তু জাঁ-হার জ্ঞান ও মহিমার পরিচয় দিভেচ্ছে এবং চতুর্দিকেই তাঁহার অভিপ্রেক কার্যা-मकन क्यानिवात छेशीत तकियाटकः, टिकी क्यू, कश्रे हे विकल इड्ट्रिमा। यिशास्म চন্দ্র ফুর্যা বায়ু প্রভৃতির গমনাগমন আছে बदः यथाम मस्तावप्रयदिणि है कि मेर्डिंग मन्नास कीय व्याष्ट, मिरे शामिर नेष-রের আজা এবং নিয়ম জাত্মলারূপে ঞ

কাশমান রাহ্য়াছে। তিনি শক্তিতে অ-নন্ত, জ্ঞানেতে অনস্ত:—তিনি অনস্ত শক্তি গ্রভাবে এই অনন্ত ব্রহ্মাণ্ড রচনা করিয়া পৃথিবীর সমস্ত বস্তুকে যথাছানে রক্ষা করি-তেছেন এবং অসীম আকাশ-দিংহাসন হইতে অনম্ভ জ্ঞান প্রভাবে এণটা কীটাণুর মুত্রা প্র্যান্ত ভাছার গোচরে বহিয়াছে। ছে মানবগণ! ভোমতা ইঁহারই রাজ্যে বাস ক্রিতেছ, ইঁহা কর্ত্তক স্থাট হইয়াছ; সাবধান যেন ভাঁহার আজ্ঞাধীন ভূতা হইয়া ढाँ होत्र है आख्दों न अपन ना कतिएठ इत्र। তাঁহার বিশ্ব-নিঃস্ত গভীর নাদ ভাবণ कत, अवन करियां जनसुयाशी कार्या कव, মঙ্গলই দেখিতে পাইবে। আয়া নূতন মূতন বেশ ধারণ করিবে; হে মানবগণ! বিবেচনা করিয়া দেখ তোমার দিগকে কি নিমিত্ত ঈশ্বর প্রেরণ করিয়াছেন। তোম'-षिरशत अञ्चत महस्रान, **छेरम्हर्गा, क्रम्य**। ও অপরাপর সময় পর্যাবেশ্চনা করিয়া (मथ। এখনি জানিতে পারিবে ভোনাদি-, ণের কর্ত্তরা কি. এবং ইমাও জ্ঞানিতে পারিবে ভোমাদিগকে কোন পথ দেয়া য।ইতে হইবে।

যে পর্যান্ত ভোমার ক্ষমভা, এবং যে
কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতে যাইতেছ ভাহাতে
ভোমার কি ৰূপ অভিকৃতি, ইহা বিলক্ষণ
কাথে পরীক্ষা করিয়া না দেগ,সে পর্যান্ত সেই
কাথে হন্তক্ষেপ করিবে না; ভাহা হইলে
ভোমার নিকট হইতে লক্ষা, অপমান ও
অনুভাপ দূরে অবস্থিতি করিবে। অবি-বেচক ব্যক্তিরাই ব্যর্থ বাক্য সকল উচ্চারণ
দ্বার আবিভিন্ন নির্মোধতা প্রকাশ
করে। যিনি কল চিন্তা না করিয়া কোন
কার্য্যে প্রত্ত হন, তিনি প্রানীরের অপর
প্রান্থ কি আছে না দেখিয়াই উল্লেজন করিতে গিয়া কুপে প্রিত হন। অভএব বিবে- চনাকে সর্বাদা অন্তরে জাগৰক রাখ, তিনি যালা উপদেশ দেন তাহা করিতে সাধ্যামু-সারে চেন্টা কর, তাহা হইলে তিনি তো-মাদিগকে সভ্য এবং মুক্তির পথে লইয়া যাইবেন।

হে মসুষা! তুমি কে, যে আপনার ভ্রানের এবং বিদ্যা বুদ্ধির গর্বে করিভেছু ? যদি জ্ঞানী হইতে চাও; ভাহা হঠলে **এথমে** জান যে ভুমি দম্পূর্ণ ৰূপে অজ্ঞ; আর যদিও তোমাকে লোকে বাতুল বলিয়া না জানে ভাহা হইলে ভুমি আপনাকে জ্ঞানী জানিয়া জনসমাজে বাতুলতা প্রকাশ করিও নাঃ रयमन अভाব-अन्तरतत मामाना প्रिक्छन-ও শোভার কারণ হয়, ভেমনি জ্ঞান নম্তা মহকারে বিভাগ শোভা পায়। छानी वाङ्गित मूथ इरेट य मकल দতা নিংস্ত হয় ভাহার জ্যোতি অধিক উচ্চুল হছ্ছা প্রকাশ পায়। আর যদিও ঠাঁ-হার নিকট কোন কোন সময়ে ভ্রম আসিয়া উপস্থিত হয়,তাহা হ্ইলে ওঁহোর নম্ প্রকৃতি তাঁহার ভ্রমকে আচ্ছাদন করিয়া কেলে। তিনি কখন আপনার বৃদ্ধিদে অভ্রান্ত ভা-विश काया करवन न।। यनि ७ कान मनद्र এমত কোন বিষয় উপাস্থত হয়, যাহা তিনি বুঝিয়া উঠিতে পারেন না, তখন তিনি পাৰ্শস্থিত বন্ধুৰ সাংখ্যা প্ৰাৰ্থনায় কথনই লজ্জা বোধ করেন না, স্থুভরাং জিনি কোন काटनरे शक्तिजीनरभन्न नाम मुर्थका थ-কাশ করেন না। তিনি যদি শুনিতে পান যে তাঁহার কেহ প্রশংসা করিতেছে: তিনি সে দিকে কর্ণিতিও করেন না; এবং যদিও তাঁহার কর্ণকুহরে বৈবাৎ ভাঁহার প্রশংসা অবিফ হয়, তিনি তাহা বিশ্বাস করেন না; বরং তিনি আপনার দোষনমূহের প্রতি যেমন অবশুঠন ৰূপের नका दारभन। অধিক দৌন্দর্য্য সম্পাদন করে, ব্রাই ক্লপ

তীহার গুণগর্ভ নমুডা ৰূপ অবগুওনে আ-হ্বাদিত থাকাতে আরো শোভা পাইয়া থাকে ৷ কিন্তু এক্ষণে এক বার গর্কিতের আতি দৃটিপতি কর, যিনি স্থাদর পরিচ্ছদ ধারণ করিয়া প্রকাশ্য পথে গমন করিতে-ह्न, এবং এই মানসে চতুর্দিকে দৃষ্টি নি-ক্ষেপ করিতেছেন, যে তাহাকে যেন সকলে দেখিতে পায়। তিনি মন্তক উন্নত করিয়া একপ ভাবে চলিভেচেন বোধ হয় যেন তিনি তাঁহার নিম্ন-পদবীম্ব লোকদিগকে প্রাচাই কবিতেছেন না; কিন্তু ভিনি যেমন ভাঁষাৰ নিম্পাদবীস্থ লোকদিনের প্রতি व्यवक्रा धकांग करतन, जावांत डाँशत डेक পদস্ব লোকেরা তাঁহাকেও দেইৰূপ অবজ্ঞা করিতে পারেন তংকালে ইচা অমুধারন করা তাঁহার কর্ত্তব্য। তিনি কাছারো বিচা-রকে বিচার জ্ঞান করেন না; আপনি যাহা দিদ্ধান্ত করেন ভাষাই অভান্ত, স্কুতরাং व्यवदर्गात काँका कार्या विमुध्यन ছইয়া উঠে। তিনি আপনার মনোমধ্যে इशा शर्व कोड इहेट्ड शास्त्रम, এবং সর্বাদা আপনার বিষয় লহয়। আন্দোলন করিয়াই প্রীতি লাভ করেন। তিনি যেমন আপনাব প্রশংসা আপনি গ্রাস করিতে চান **उमिन जारांत हार्ट्रकारत**ता छै। हारक मण्णून প্রাস করিয়া বদিয়া থাকে।

रेहा म्लाग्डे साजीण इंट्रेज्डाह या कर वात नमत्र नण इंट्रेल जात साजानाज इंट्रेंच मी, धन्द या नमत्र आनिट्ज्डाह णहात खेलत मान्यूर्न नदम निर्णत केता या-रेट्ड भारत मी, ''त्याहि जामाण क्लामा मृज्याता खियाणि। ' ज्याना नावधारम जानमा कालत क्षा लाग्ना मा त्रीच्या धन्द नण कार्यत क्या लाग्ना मा त्रीच्या धन्द नण कार्यत क्या लाग्ना मा त्रीच्या धन्द नगरत ज्यान वायसम्बद्ध कार्या नक्षामा मृद्ध द्वामानियां कार्या क्यान

শ্লবিষাতের গর্ডে ছিতি করিতেছে. কি আকৃতিতে ভোষার সন্মুখে আসিয়া উপ-স্থিত হইবে, ভালার ভুমি কিছুই স্থান মা। যাছা কিছু করিবে বলিয়া তির করিয়া রাখি-য়াছ, শীঘ্র তাহা নিষ্পন্ন করিয়া কেল, যদি আতঃকাল মধ্যে কার্য্য সমাধা করিতে পার তাহা হইলে আর সন্ধার প্রতীক্ষা করিও ্জালস্য দরিদ্রতা ও ক্লেশের পিডা স্থৰণ ; এবং পরিশ্রম সূখ সচ্চনতা ও ধর্মের আকব ভূমি। পরিশ্রমীদিরের মি-কট হইতে অভার দরিদ্রতা দূরে পলায়ন কবিরাছে, এবং স্থা দৌভাগ্য ইহাদিগের मरकत नको रुरेयारह। विनि यानगारक खरमछ निकरि जामिएड ना एमन अदश ইছাকে শত্ৰ বলিয়া জানেন, তিনিই ধর্ম, এশ্বৰ্যা, বীৰ্যা, মান, সমুম, মূল প্ৰকৃতি লাভ করেন। তাঁহাকেই বহুজনাকীন রাজ-म जात मट्या म आसमान हहेट के (मथा यात्रा তিনি যেমন অভূচেৰ গাতোপান করেন, আবার তেমনি বিলয়ে বিশ্রাম-শ্যায় গমন কবেন। তিনি নিয়মিত শবীর সঞ্চালন षाता (यमम महीत्रक मछ्डल त्रका करतन, তেমনি আবার নিয়মিত বপে মনোর্ত্তি সমুদ্র চলিনা ছারো মনকে স্থ রাখেন। কিন্তু, আনার দেখ, যাহারা অলম তাহা-দিগের জীবন কেবল ভার স্বৰূপ। ভাহার অতি মুহূর্ত কেপণ যন্ত্রণ স্বরূপ। তিনি কত প্রকার মনেতে উপস্থিত করেন, কিস্কু কোন বিষয়েই কুভকার্যা হইতে পারেন না। তাঁখার সমস্ত জীবন কেবল ছায়ার ন্যায় চলিয়া যায়: পৃথিবীতে এমন কিছুই রাখিয়া যান না,যাহা ছারা তাঁহাকে মৃত্যুর পর স্মরণ করা ধাইতে পারে। তাঁহার শ্রীরের অঞ্ व्यठाक यथाविधि मक्शानम ष्याखाद कक् পায় হইয়া যায়। ভাহার কর্ম করিতে বিল-कर्ग देखा चारह, किन्छ नहीरदद जनावधा

নিবজন তিনি অপারক। তাঁছার মন চির অক্ষকারে মথ আছে। তাঁহার চিন্তান্থান যথাক্তমে স্ফালিত না হওয়াতে এৰূপ এক প্রকার বিশৃত্বল হইনা রহিয়াছে, যে যদিও किनि स्नाताशाक त्न रेका कद्रन, किन्द मत्मत देख्या व्यज्ञात्य किंडूरे উঠিতে পারেন ন।। আগদা থেমন তাঁ-ছাকে সংসারের কার্য্য হইতে বহিষ্ঠ. করিয়া দিয়াছে, ভেমনি আবার ভাঁহার গ্রহ হইতে শান্তিকেও বহিষ্কৃত করিয়াছে। তাঁহার ভূতাবর্গ তাঁহার বশে থাকেনা; शांकिटवरे वा टकन? जांशिन शब् যখন আপনার কর্ত্তর করিতে পারিলেন না তথন অপরের উপর কর্তৃত্ব করিতে পারি-বেন, কথনই সম্ভব হয় না৷ স্কৃত্রাং তাহারা অবাধ্যতা ও মনিতাচার তাহাদি-গের প্রভুরই নিক্ট হইতে শিক্ষা পায। এ সমস্ত বিশৃত্বান, তিনি সকলি দেখিতে এবং শুনিতে পাইভেছেন, তিনি মনে মনে প্রতিভর করেন এই বরে সকলি করিব; किन्नु कतिद्वन कि, जानमा जामिश्र छाँश्रीक একে বারে আদ করিরা ফেলে। যে জী-ৰনে মসুব্য যাহা আৰ্থনা করিবেন তাহাই প্ৰাণ্ড হইবেন, তিনি এই ৰূপে সেই ময়ুখা জীবনকে, ছুৰ্বহ ভার স্থৰূপ জ্ঞান করিয়া পরিশেষে শোকে মলিন, রোগে কাছর ও বিবাদে জজ্জ রীভূক হইরা কালের করাল-বদনে লঘুতন পিণ্ডাকারে প্রবিষ্ট 🗪।

> থিয়োডোর পার্করের পত্র। ২০৭ বংখ্যক পত্রিকার ১৩৬ পৃষ্ঠার পর।

অনন্তর সাধারণকে যাহা উপদেশ প্রদান করিতে হইবে,তভিষয়ে অতি অশাই শিকা লাভ করিয়াছি এই বলিয়া এবং বছকার ধর্ম চিন্তা ও ধর্মানুসন্ধান করিছে প্রকৃতি

रेशंत्र निमिक्त व्यमिकाः श्रृंबीक अर्थ विकास লয় পরিভাগে করিকান। আমি নর্কা অপক্রে य जमन्त उभरतम निशाहिकाम, क्षित्रम আমাকে অভ্যের সক্ষুণ অমুকরণ করিতে হইয়াছিল। উপদেশ কালে যদিও মুভৰ নুতন ভাব সম্ভলন করিয়া দিতাম কিন্ত পূর্বকেন আচার্যাদিগের চিরপরিচিত প্রণা-লীর হস্ত হইতে কিছুতেই পরিজাণ পাপ্ত হইতে পারি নাই। আমি যথন ধর্মোণ-দেশ প্রদান করিডাম, তৎকালে অভিশয় ভীত ও কম্পিত হইতাম। আমি তরুণ-বয়ক্ষ যুৱা; যদিও বৰ্মবিজ্ঞান অনুশীলন ও ধর্ম বিষয়ক বিস্তর চিন্তা করিয়া ছিলাম, তথাত বহু দিবস জনসমাজের সহিত সমাক সংস্রাব রাথিয়া অভিজ্ঞতা লাভ করিতে পারি নাই; স্করাং বাঁহারা বয়দের আধিক্য নিবন্ধন বিজ্ঞ বলিয়া পরিগণিত হইয়াছেন. তাঁহারা আমার উপদেশ বাক্য ভাবণ করি-বেন এই জনা দাতিশয় বিস্মাপয় হইডাম। **উপদেশ কালে যাহাতে অসার বাক্য** নিঃস্ত না হয়, আমি ভাষিষয়ে সভত সভৰ্ক থাকিতাম এবং ধর্মবিষয়ক যে সহজ জ্ঞান বিদ্যমান রহিয়াছে,ভাহাতে সকলকে উদ্বো-ধিত করিবার নিমিত স্বিশেষ চেকা করি-जाम, এবং मनुगा प পরিমাণে आकृष्टिक नियुद्भत व्यक्ति, व्यक्ति मर्साट्य मस्त मनदक ভাহাই অভিবাক্ত করিতাম। এই ৰূপে কয়েক মাস অনেকানেক ছানে ৰঙ্গুড়া এবং মন্ত্রবার অন্তদ্ভিতে প্রবিষ্ট হইতে हरेदव **এই क्रश व्यवधार**ण कविष्या वाहाटक সমাক অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছি সেই ৰূপ धर्मात छेशीतमा धारात्म प्राथमात्रां विके আমার যুক্তি-সঙ্গত ও মর্মানুসক केशरमम माजीत मागरमक मृत्राम वर्षण केन्द्र वरेश निक्तानक नवारे कानिक क क्रिक मोविष्य । अवस्थि

প্রেশক আয়াকেউপদেশের সভাতা প্রকিপ্রালয়র্থ নবিশেষ কড়ক করিয়া দিয়াছিলেন, এই নিকিল্প আলি ভাঁহার নিকট কড়জডাপালে সংগত হুইয়া আছি। এক্ষণে আমানরও সম্পূর্ণ বিশাস হুইতেহে যে আমিও ভাঁহার বাকা প্রতিপালনে পরাশ্ম ব হুই নাই। আলি ইংল্ডীয় ভাষার ব্যবহার-নির্গর এবং ভ্রিষয়ক স্থলীয় বক্তুতার

কি তঠ বিতর্ক অনুশীলন করিয়া বাকা বোলনার পরিপাটী ও পদ বাব-হারের চাতুরী অভ্যাস করিয়া ছিলাম। গ্রীক ও লাটিন ভাষার বক্তৃতা পর্যালো-চনা করত বাকোর অলকার সম্পাদনেও সমর্থ হইলাম।

অনন্তর আমি ১৮৩৭ খুটাকে ইউ-নিটেরিয়ান সম্প্রদায়ের এবং বেফিনের সলিহিত পশ্চিম রক্ষবরি নামক ক্ষুদ্র এক জনপদের কংগ্রিদেশন নামক এক শা-মান্য সভার ধর্মঘাজকত। পদে অভিধিক্ত হইলাম। তথাকার স্ত্রী ও পুরুষ্দিশের সহিত আমার বিলক্ষণ সৌক্দ্য ক্ষমিয়া-ছিল। তাঁহানিনের ষ্ঠিত দৌহ্দা আমার मण्यूर्व वीविस्तक ७ कटनाश्रवाहक रहेश উঠে। आमि यथन धर्म विषय्न हिस्स कहिन তাম, তথ্ৰ বিজ্ঞান বিশেষ আমার স্বাধী-নতা পরিহার করিতে সমর্থ হইক লা এবং वांका निकास कतिकाम, काबाह आसीनकात करिक क्रेभट्रमा विकास। आसी महिकादा কেই কথন আপুতি উল্লাপন করেন নাই। भन्त-तिवार्शनदृष्ट्व सर्वानिहरूकोः त्करल स्क्र-विषयक भिक्रा असम कहिएका । केंग्सन क ्राक निक्रम सावस्त्रपंत वसीकृत्य साह सन् गच हरेतान केरहातिशयक संगान निनी क्र PARTY ALL MANY STRING BIR SCHOOL un galace la fara, excitantem a familia THE RESERVE AND STREET

ज्ञेच्य ७ अवन् चित्र व्यविद्यार्थ भनामक স্বাধীন ভাব উন্নত করিছে क शिट्च । ইউনিটেরিয়ান খুটিয়ানেয়া শালার বাধীনতা, চিন্তার স্বাধীনতা ও व अपूर्णात श्रीमिकाटक स्म महिद्याच मनामन করিভেন এবং ভাঁছাদিগকে যে পরীক্ষক ও পোপের পরতন্ত্রতার নিপীড়িত হইতে হইত ना, फरकाटन इंहा थे कूछ मञ्जूनाटसङ অত্প অফ্লাদের বিষয় নছে। ইউনিটেরিয়াম ধর্মোপদেশক ও সভাদিগের মধ্যে বিস্তর মত-टेवसभा लक्कि उक्हें कि ख धर्मा-विक्का-নের পরিবর্তে ধর্মের একতা সম্পাদনে मकरलत्रहे यञ्ज हिला। यथन (क्रान दा-ক্তিকে ধর্মোপদেশক পদে অভিষিক্ত কর: हरेक, विচারক मভা ভাঁছার ধর্ম-সংক্রান্ত বিশেষ অভিথায় কিছুমাত অনুসন্ধান ক-রিত না; দাশ্পদায়িক লোকেরাই ভাঁছার অভিথায় স্থাট অবগত হইয়া যদি তাঁহারে ধর্মোপদেশকের পদে শভিষ্ঠিত করা সঙ্গত বোধ করিত, বিচারক সভার গোচর করিতেল। জীছাদিলের মধ্যে এ-रेक्श धर्गाली तहे गविटमव मनापत हिल। ইউনিটেরিয়ান সম্প্রদায় এক ঈশারের আ खिद्यहे मण्यर्ग निश्चाम कहिया बादकन তাঁহারা থৃটিয়ানদিগের জিনীতের **মতে** किছूट इरे अञ्चरमामन करतम ना। शृथिशास्त्रता কছেন,খৃষ্ট সংধারণের ঈশ্বর; কিন্তু ইউ-নিটেরিয়নেরা এই বাকোর প্রতিবাদ করিয়া মানি যথন ধ্যোপদেশক প্ৰে অভিষক্ত হই,তৎকালে বিচারক সভা আ-মাকে আমার ধর্মবিষয়ক অভিঞায় কিছু**মাত্র** किछोगा करतम बाई। कामान मञ्जानिदशंत मञ्नेदेशमा चार्ट्स कि मा अदः कान् धर्माविकानः जामातः जनगः विक विविधान र वासा व्यक्ति सं के बिहा **द्यवण सामक्ष जीकि के अर्थ शहात्रणकां** 

বিষয় সবিশেষ পরীক্ষা করিয়াছিলেন।
আনার ধর্ণোপদেশক পদে অভিবিক্ত
ইইবার কালে এক মহাত্মা আমার মন্তব্দে
ইস্ত প্রদান পূর্বেক প্রার্থনা করিলেন ' কাবা
বা দর্শন শাস্তে অমুরাগ এবং কোন প্রকার
প্রীতিকর বিষয়ের অমুশীলন এই তরুণ
বয়স্ক বাজিকে প্রকৃত ধর্মের শিক্ষা লাভ
ও নানব জাতির মুক্তি সম্পাদনার্থ ধর্মের
উপদেশ প্রদান ইইতে যেন কদাচ বিরত
না করে। আমিও তথান্ত বলিয়া অন্তরের
সহিত তাঁহার বাকে। অভিনন্দন করিলাম।

আমার ধর্মোপদেশকের পদ গ্রহণ ক-রিবার এক ব' ডুই বৎদর পরে মভ্য সংখ্যা আয় সত্তর জন হইয়ছিল। ক্একটি বা-লকও ইহার অন্তর্গত ছিল। আমি অন-रिकास मध्य मञ्जव कृत कृत मञ्जूषि । দহিতও ন'স্ণ কপ পরিচিত হইলাম। তমবো দেখিলাম ক্রগুলি নিচান্ত অসভা এবং কভগুলি অভিশয় উদারস্ভাব ও ঘর্থার্থ ভাষা। আমি সাধারণের চরিত্র ও অক্রির ভাব সমুদায় সমাক্ অবগত হট-श्राहिनाम। मञ्जानित्रदक य ममल उपादना व्यम्बि कतिए इहेक, ७९मभूमां इतना कित-বার নিমিত সম্বেক বত্ন ও পরিতান স্বীকার कड़िटांस। अमांशि (महे मक्त छेश्राम আমার চিত্ত হইতে তিরোহিত হয় নাই। উপদেশ রচনা ও উপদেশ প্রদানে জ্যামার সম্বিক উৎসাহ ও আমোদ হইত। আমি प्रशः निकः वां ७ ७ वमात्क छेपानम প্রদান উভয় বিষয়েই **স্লপটু ছিলাম।** আপনার উন্নতি সাধন ও অনোর উন্নতি সম্পাদন করা আমার **একমাত্র কার্য্য ছিল।** কোন সম্প্রদায় বা ইতিহাস বিশেষের শাসন গারা অতিহত না ছইয়া আফুডিক নিয়ম मभूमारम् छेन्द्रमा अम्दिन अर्थ इंट्रेकाम । च मक गमर्थन ७ निवर्णन व्यवर्णन कवियात

मिमिखरे मध्यमात्रनिष्ठ में छ से विकेटिगत আন্ত্রর অবলম্বন করিতাম। ইভিছাস-ঘটিত विषद्यत निमिष्ठ जेडिशांगक अभाग जैक्ड করিতাম এবং ধর্মাতত্ত্বের নিমি**ত্ত আন্ধার** সহজ জ্ঞান ও ধর্ম-পরায়ণ ব্যক্তিদিগের দুড় বিশাসই অমাণ বলিয়া অঞ্চীকার করিতাম। রুষকদিগের নিস্তকাও শাস্ত অবস্থা সুকবি রচিত কাবোর নাায় স্বাড়ীয়-মান হইত এবং উপদেশ প্রদান করিবরি गमत गमांक श्रंहत मिहिक इक ममूह ষেমন গৰাক বিবর **হারা লক্ষিত হয়** দেই রূপ উহা আমার **অন্তরে সুভাট** অকিত হইত। সূচতুর মন্ত্রাদিগের সহিত সংস্রব রাখিয়া যালা পরিবদ্ধিত হইয়াছে मिहे असुर्वि धि बारित या विषया अनि-জ্ঞতা লাভ করিয়াছি আমি তাহারই উপ-দেশ প্রদান করিতাম এবং যাহাতে সকলে দন্যের প্রকৃত বাবহার এবং নিনীত সভা সকল কার্য্যে পরিণত করে তদ্বিষয়েও যত্ন-বান ছিলাম।

অনন্তর আমি পদার্থ বিদ্যার আলোচনা এবং যাহাতে প্রকৃত জ্ঞানোপাজ্জন হয় এই ৰপ নান। প্ৰকার শান্ত স্বতন্ত্ৰ অনুশী-লন করিবার বিস্তর অবকাশ প্রাপ্ত ফইলাম। একদা ধর্মা বিদ্যালয়ের এক অধ্যাপক আ-মাকে কহিলেন "তুমি একটি সামাম্য সভার थरमाश्रीतमाक। जेक्श महीर्ग स्राटन स्रवस्तान কর। ভোমার কর্ত্তব্য হইতেছে না। তুমি জাতি সাধারণ সকলকেই ধর্মোপদেশ অদান কর এবং বক্তৃতা ছারা যে বিষয় সংসাধনে जनभर्ग इहेत्व ब्रह्मा कविशा ७९ मण्यापंतनः যত্নবান হও।" আমি অবকাশ কীল কঠিন। পরিপ্রমের সহিত পুস্তক পাঠ করিয়া অভি-বাহিত করিতাম। স্থামি যে কেবল সভাসি रमार्ड मिवरंगत सर्वा मेम बा न्यानम घका भाजादशकता अतिकाम काही तरह ;

ঐ ৰূপ গাঢ়তর পরিশ্রম দার। প্রভুত আন-म् । अमू उद कहिजान । अमे द्रव यामि धर्म-বিজ্ঞানের স্থকটিন বিষয় নিৰূপণ করিতে अन, यञ्ज अवारमारमत गरिष्ठ भूनतात्र मी-व्यामात व्यवस्य साधीन किं इहेनाम। ভাব সংস্থাপন ও অধ্যয়ন উভয় বিষয়েই একান্ত 'অনুকৃল হইয়া উঠিল। ধর্মোপদে-শল্পের পদ এছণ পূর্বক ধর্ম বিজ্ঞান অনু-শ্র্মালন আরম্ভ করিলে একটি স্থমহৎ পরিবর্ত্ত লক্ষিত হইতে লাগিল, কিন্তু উচা এই ৰূপ নিস্তদ্ধ ভাবে প্ৰবৰ্ত্তি হইল যে উহা কোন্ স্থান হইতে প্রেডিত ও কোন্স্থানে প্যা-বলিত চইবে, তংকালে কেছ কিছুই নিৰূপণ কবিতে সমর্থ হন নাই। ফলত এই পরি-বর্তের সময়টি আমেরিকার ধর্ম সংক্রান্ত ইতিহ্নের অভান্ত ফলোপধায়ক হইয়-हिन, गत्म् ह नारे।

## ইজিপ্তীর মত।

ইজিপটীবাদণের পূৰার্ত্ত এৰপ কণ্পিত উপাशादिन পরিপূর্ণ, যে কোন বিজ্ঞাতন পণ্ডিতও ভাষা ফইতে কে:ন বাস্তবিক র-া ভাশ্ত নিঃসংশয়ে নিৰূপণ করিতে পারেন क्टिं क्ट वटनम, देजिकी देशता পরলোকগত প্রধান প্রধান বীর, কবি, শি-প্ৰস্তুত পদাৰ্থ বিদ্যাবিৎ পণ্ডিতদিগকেই দেবতা বলিয়া উপাসনা করিত। অনে চ ধৃতিয়ান যাজকগণ তর্ক ছারা অনায়াদে পরাজয় করিবার স্থাবিধা হইত বলিয়া এই পক্ষই আন্ত করিয়াছিলেন। গ্রীস দেশীয় উপুरागत्रिक श्रष्टकादतः। रेजिकीयविशदक পশু পকীর উপাদক বলিয়া নামা প্রকার উপহাদ করিয়া গিলাছেন, কিছ এীদ্ **ल्ट्लि**ड त्नव त्नवीत काख मक्न है जिल्ही स भूबाइक स्टेटकरे त्य महस् क स्रेत्राहिक, हेश

छै। हात्रा कानिट्डम मा। (कह (कह वटनम, वैकिन्धीरशत्रा सूर्या हता नकता यकृषि (का।-ভিক্ষদিগকেই ঈশ্বর জ্ঞানে উপাদন' করিত। मकन कां कित भूख भूक्ष एवता है ध्यथाम सूर्या প্রভৃতি কড় পদার্থের উপাদনা করি হ, এই নিমিজ্ত কোন সম্প্রদায়ই তাহা লইয়। ইঞ্চি-कीयमिश्रदक छेथेहास करत्रन नाहे। हेकि-প্টীয় যাজকগণের লিখিত যে সকল এম্ব প্রাপ্ত হওয়া যায়, তন্দারা অনেকে স্থির করি-য়াছেন,ইন্দ্রপটীয়নিগের চক্ত স্থর্য্য প্রভৃতিকে উপাদনা করিবার নিগ্ত অর্থ ছেল। সে যাহা হটক ইজিপটীয়েরা চন্দ্র সূর্য্য প্রভৃতি জড়,পশু পদ্দী প্রভূতি হয়,ও পরলোকগত প্রধান প্রধান মনুষ্যদিগকেও দেবতা জ্ঞানে উণাসনা করিত, ভাষার মন্দেহ নাই। তা-হারা পুকাতন রাজাদিগকে দেবভার পুত্র বলিয়া বিশ্বাদ করিত,এই ভনা অনেক রাজা তাহাদের দেবভার মধ্যে পরিগাণ্ড আছেন। रेजिन्छे प्रत्य रेजिन्छी । प्रवशामित्रत जिन भुक्र रवत नौना श्रान्त इउया याया अवस দেবতাগুলি আদে পুরুষ বলিয়া পরিবলিত আছেন; এই শ্রেণতে দেবও দেবীতে व्याप्टेक्न जिल्ला । १३ व्याप्टि इन्ट्र দিভীয় পুৰুষে আর বারটা দেবতা ভং<mark>পন্ন</mark> হইরাছেলেন। এই দ্বিভায় পুরুষ হইতে থার কতকগুলি দেবভা উংপন ₹ন ৷ व्यांगक अमहिम प्रद ७ पार्टेमिम् एवी এই তুর্তীয় সন্ত<sup>4</sup>নের শ্রেণীতে পরিগণিত ছিলেন। ইয়া দারা স্পাট रहेट ह रव, अमिदिम ও আहिमिरमद शू-र्व्स इंक्षिओं (मर्ग विश्मिकिंगे (मवका हि-লেন। কিন্তু আদি দেবতাদিগের মধ্যে মেণ্ডিস বা পানি নামক দেব ও বুটে মুবা নাটোনা নামক দেবী এবং দিঙীয় সন্ততির মবে৷ হকু লিস দেবে এই ভিন নাম ব্যক্তি-রেকে বিংশতি দেবতার মধ্যে আর ঃকোর নাম প্রাপ্ত হওরা যায় না। এবং ভাঁহাদিগের বিশেষ কোন প্রতিমূর্ত্তিও নাই। এই
দেবতাদিশের মধ্যে যে জন্তু যে দেবতার
প্রিয়, প্রায়ই ভাঁচাকে সেই জন্তর আকৃতিতে
প্রা করা হইত। এক্ষণে যত দূর প্রাপ্ত
হওয়া যায়, ইজিপটীয়দিগের দেবতা ও ধর্মা
বিষয়ক মত প্রকটন করা যাইতেছে।

আমন। গ্রীস দেশীয় ইতিহাস লে-शंक हिट्याटणाचेम् वटनन, देखिल्छीयपि-গ্রের অনেন ও গ্রীক দগের জোভ্তকই দে-বতা ছিলেন। আকিকার অন্তর্মন্তী থিবস্ প্রদেশে ভায়ক্সলিশ্নামক নগরে আমন দেবের মন্দির প্রতিষ্ঠিত ছিল। সেই স্থানে ভীহার উপাসনা হইত। ইপিওপিয়া এ-দেশে অভি বংদর একটি মহোংশব হইত। मिहे मभरत जामन भित्तत अভिमा नील নদীর ভীর দিয়া তথায় লইয়া যাওয়া হইত, এবং ইথিওপিয় লেকেলা অভান্ত আভ্রয়ের সহিত প্রত্যালামন পূর্বক ভি:হাকে এহণ করিত। মহে। ংশব দেখ হইলে পুনর্বার মেই প্রতিমা স্বস্থান সংস্থাপত চইত। इंकिन्ট मिनीय्रमिटनय এই क्राप्त विश्वाम किं । व. व्यापन एक्ट अ अविक मञ्जाश है-क्टिएर व्यटणाइत, किन्नु मन्त्र शांत्र अ यांत्र যুদ্ধ প্রেক্ত প্রক্রিয়া বারা বশীভূত হইলে ইন্দিয়গোচর কোন মুত্তি পরিগ্রহ করিয়া ভক্ষসালের নান পাগে আবিভূতি হন। है क्रजीश पर्यनकारतन य और टिंक क्रुड বুলিয়া নিৰ্দেশ কৰিতেন, আমন ওমাধ্যে ाक्षा इंडा पात है भीत करूशरणत की तन ধাৰণ কুইছ।

হকু লিম। ইজিকী মদিগের মতে ইনি নীল নদীর পুলা, ইনি হিন্দু দেবগণের নায় সূর্যামণ্ডলে অবস্থান পূর্বাক সূর্যের নহিত পৃথিবী পার্বেইন করেন। ভারতী বর্ষায়েরা যেমন সূর্য্য নপ্তানগ্রাকী নায়ন্

য়ণকে বিভূজ চতুৰুত্ব অভূতি ৰান্ত্ৰিধ আকারে পূজা করিয়া থাকেন, ইজিক্টারেয়া मिहे क्रि की होर्टिक नीना छाट्य जांबाधना করিত। ইভিশ্টার্দিগের এই কপ বিশাস ছিল যে, ज्ञान ममुनात भनादर्यंत आहि कातन: क्ल एक हरेश शिटन मृजिका उँ८ भन्न इस । **এই कल ও মৃত্তিকা হইছে সিংহের নাম**, मूथ ७ मदर्भत नाश नहीत अक्षि कहा छूर-পন হইয়াছিল। এই জন্তর মধ্য স্থানেঁ। নাম হকুলিল ও কাল। হকুলি দ্হইতে একটি প্রকাও ভিন্ন ইংগত হয়। হকুনিস্ ये जिन्नतक जैनेयुक्त नमदेश दिन विज्ञक क-রেন। তাহার উর্দ্ধ ভাগ স্বর্গ ও অধ্যে ভাগ चुम खन इरेन । चन खत इक् लिम् ११ ভূতকে হথাবং বিভাগ করিয়া রক্ষা করিতে লাগিলেন ৷ আমন ধেমন জীবদিগের নি-য়ন্তা, হকুৰ্ণিনা সেই ৰূপ জড় জগতের নি মুখা ছিলেন।

মেণ্ডিদ্। ইজিপ্টীয়দিগেব যে আটটি আ,দি দেবতং ছিলেন, ইনি তাঁহাদেরই অ-নাতম। ছাগের আকৃতির নাার ইহাঁর প্রতিমূর্তি। যে নগরে ইহাঁর মন্দির সংস্থাপিত ছিল, সে নগরের নানও মেণ্ডিদ

এই মতের সহিত মনুর মতের অংব-ক্তাংশে দানশ্য কাডে, যথা

সোভিধ্যাথ শরীরাং বাৎ সিদ্ কু নিবিধাঃ প্রাক্তাঃ।
অপ্তাৰ সসজাদ্যো সৈয়ে বীজ্মবাদ,জ্ব।। ৮।
তদ্ধমন্তবহৈদ্যা সংস্থাগ প্রদানপ্রকাত ।
তদ্মিন্ত ক্রেজা ব্যং ব্রুকা সর্বলোক পিতামক্ঃ।। ২।।
তদ্মিন্ত সভগবানু দিন্তা গরিব ব্যরহ ।
অহমেরা দ্বনাধ্যান ভিনতমকবোর্কি ধা । ১২ । ,
তাজ্যাংস শকলাভ্যাক দিবং ভূমিক মির্মান্তে।
মধ্যে ব্যোম দিশশচাকী বিপাংস্থানক শাশ্বং। ১৬ ।

তিনি চিতা করিয়া খ শরীর হুইতে বিবিধ আনা নৃষ্টি করিবার ইচ্ছায় এগেয়ে জল সৃষ্টি করিবেল ও ভা-হাতে বীজ নিজেপ করিলেন। সেই মীল প্রবর্গন ও কর্মোর ন্যায় প্রভাসস্থার অভ ক্রীয়া উঠিল। জ্বান বাম ব্রহা সেই অতে নম্বন্সর বাস করিয়া অন্তংই আশিনার ব্যান এন্ডানে তাহা বিধা বিভক্ত করিবেলন, এই ক্রিনি ব্যান এন্ডানে তাহা বিধা বিভক্ত করিবেলন, এই ক্রিনি কাল, অই বিক্ ও বছার নির্মাণ করিবেলন

विनिष्ठा श्रीमक इम्र। हेहीत विवेदम आत स्विक अवश्र हुउम्न यात्र मा, क्ष्मण এहे माळ क्रानिटक शाम यात्र व क क्ष्मण यही प्रवीत स्थाद व्याप्य कार्यात कार्य आटह, प्रविभित्र प्रदेश कार्यात स्थाक हिटलन।

পাঞ্চিমিন। নিজুঘোটকের আফুতিতে
পাঞ্চিমিন নগরে ইংগার পূজা করা হইত।
অন্যেক অনুমান করেন, নিজুঘোটক এই
ক্রেইডার বাহন। ইজিপ্ট দেশীরেরা ইহাকে প্র লয়কারী দেবতার অবতার বলিয়া
বিশান করিত।

## ভবানীপুর उक्ष-বিদ্যালয়।

প্রধান আচ্বয়ের উপদেশ।

চত্ত্ব সংখ্যা।

১০শ্বেন ১৭৮২ নক্ত

আনর৷ অপার সভার জান-দাগর হইতে যে সভাকে লাভ করিবার জন্য এখানে যত্ন করিছেছি, ংসই সভাবে ভাবিতে গেলে ভাস্তিত হটভে হন। त्म हे मेखा चराने आभारत क्षारत खन् आनिहरू প্রকাশ না করিবে আমবং কথনট ভাঁছাকে পা-ইতে পারি ন।। জিনি পরিষিত বিষয় নছেন ে আমরা কেবল আপানা। বুদ্ধি-বলে ভাঁহাকে বুবিতে পারিব। ডিনি মহঃন্, অন'দানস্ত; তীহার সাহায্য ব্যক্তি উহিচে লভি করা ধায় না। অভএব নভ হইয়া ভাঁহার নিকটে আপনাকে সমর্পণ করিভেছি, ভিনি আমার জ্ঞানকে উজ্জ্ব ক্রিয়া ভাঁহার সভা প্রের্ণ ক্রন। সেই সভা चि चूं विद्या धामत। छ। हात छेशा र्कटन निवस বাকিতে পারি না। তীহাকে না জানিবে নয়, ভাঁছাকে না পাইলেই নর; সেই সভাটে चंद्रमञ्जान कविया कानिटल्डे इहेटर। जन्म-ज्ञान यपुं-तांधा विविधा सामद्रा सञ्जीन हवेटल शांति ना, किन्द्रं चाद्रा वज-महकार्द्र है।शहक क्वानिट हरेंदर। व विकारक नाम कंत्रित रमार, भाग, भाग हरेट उ উचीर्ष रु७मा वार्षः मरमात-ममुख् माहि व्हेरा कर्ष गार्थ देशनीक इत्रा प्रश्न स्वाहरू नव-नाथा बनिया कि अवट्टमां कहिन्छ है अध्येता मण केत्रिया केवत्र व्यवसारि माध्या स्वित्रस्त व्याचा-करनेक के विश्वक रहा चर्नी में के नहीं किया করিলা ক্রমে ক্রাহাতক পুঞ্চ ও বর্দ্ধিত করিবেন।
আমরা কুল হইয়া মহানের দাস হইয়াছি, অপপ
হইয়া ভূমার উপাসক হইয়াছি, নত হইয়াই
ভাষায় জ্ঞান-অক্রনে চেটা করিভেছি।

ধ্বদ-স-ছিতার মন্ত্র-সর্বল ব্দিও কেবল অগ্নি সূর্যা মিত্র বরুণ পরিমিত্ত দৈবভার স্তুভিতে পরি-शूर्व, खवालि मत्या मत्या खाहारङ्ख ध्यनत्त्वत्रं আভাদ ক্টিভ হইয়াছে। " বো ঞাগার ভাষ্চঃ কামরতে যো জাগার তমু সামার্নি বন্ধি যো জাগার ভনরং সোম আছা" (ঋণুেদ-সংহিতা) বিনি काशिया আছেন, श्रक-नकत डाँशांक कामना कति-ভেচে: যিনি জাগিয়া আছেন, সাম-সকল ভাঁছা-কেই প্রাপ্ত হটভেড়ে; যিনি জ'গিয়া আছেন, এই माम-यान कैंग्झाटक कहिटल्डिं। दिम-मद्व बाहे মাত্র আছে; কিন্তু যিনি জাগিয়া আছেন, ডিনি যে কে, ভাহার নিকপণ কোপায় ? মত্মকুং ঋষিরা এক এক বার প্রপ্রে বিশ্ব বা জ্বর নায়ে জিন্দা। ক্রিয় ছিলেন ''কীমা দেবায় হবিধা বিদেম।'' ( ঋণেদ-সংহিতা ) কোন্দেৰত'কে আমর হিব দান করি? কিড় তাঁথোর। এই মাত্র উত্তর পাই-ग्राहित्सम् त्य ग्रेक्टिक इति सम् करि, लिनिहे সকল দেৱভা। "এমট ছেব সংস্থ দেবাঃ" (বাজ-तत्वय आकार के जर मिकः तक्कामामाध्यद्या-দিৰতে সমুপৰি হিক্<u>যান্। একং সহিপ্ৰবৈছ্</u>যা বদ্ভি অগ্নিং যা ন'ত রশ্নিমাছ: ।" (মন্ত্র-বর্ণ) উচ্চাতে ইজ, মিচ, লগ্নি করিয়া বলেব, ভিনি স্তুপর পক্ষ-সুক্ত চিবা পক্ষী, বিপ্রের। এক সংক্রে বছ অকার বলেন, উছেটে ভার, ঘন, মতিরিধা कांद्रया बदलम्। धा, होना त्यप्त-भास्त्रद्र ग.पास केप-রের অনস্ত ভার প্রাছিল ধারিতে পাবে নাই, এক এক বার ভাষে। হটকে জ্লিয়া টিনাফে। বেদের সংক্রিডাতে ঈশ্বরে, জনস্ত ভা,য় মেন্ প্রাভঃক।বেলুর ঞকাৰে নাম প্ৰকাশল ইইম ছিল। কভ কলে জন্মান খনি দণেব নিকটে সেই **অনস্ত** পুক্ষ জ্ঞা পাহিছে পারেন। কড়কাল আরু নিংহার এমন ধনে অসীয় আকোশে সমুদ্র ভীবস্থ বলৈ-রাশি সদৃশ অগণ্য নক্ষ্ম গা নেবল পার-মিশ্র দেবভাকেট মানিতে পাবেন**ং তাঁহারা** দেখিতে পাইলেন যে একই দেবত। সূর্যা চন্দ্র अधिक, मावाशृधिवास्त्रीदक, वाम कविरक्तकम ; ভাঁহারই নিঃধানে বিশ্ব সংগাব নিঃধ্যাত হাই-८३८५ । ॐ श्रदा खोन-श्वक्तांत्रम् मःक मध्केके অনপ্ত আকাশে অনস্ত দেবের হস্ত অধ্যেতে উদ্লেজ ध्यमाद्रित मिथियान। वास् विषयप्रदेश आसा आक्रुन ভেদ করিয়াও সেই জনভের জ্যোজিঃ প্রকাশিত ष्ट्रेम ! जीर'द्रा वरे नक्त कफ राष्ट्रंद्र मटपा, राष्ट्रि-রের এই অসারিত আধাশ দর্শনে, আন্ত পুরুষ্টকে

দেখিতে পাইলেন ৷ ভখনো তাঁহারা খীয় উব্দুল শ্ৰেষ্ঠ কোৰ আত্মার মধ্যে পর্মাত্মাকে দেখিতে शान नाहे, खबाना छाहारमञ्ज तमना हहेरछ "अक-মেবাশ্বিতীরং" এই মহা বাক্য বিনির্গত হয় নাই। ইন্দ্রিয়াদপকে বাহা বিষয় হইতে প্রতিনির্ভ ক বিয়া একমেবাদ্বিভীয়ং সভা পুরুষকে স্বীয় আত্মাতে (मृश्वाद उभाम उभानियान आख रुख्या यात्र। 'প্রাঞ্ ধানি বাতৃণং স্বয়ন্ত্রমাৎ পরাঙ্পশাতি নান্তর।অন । কশ্চিদ্ধীরঃপ্রভাগামানটমক্ষরার্ভচ-কুরমুজ হমিছন্"। (কঠোপনিষৎ) বাহরিস্ফির্দি-गरक नेयद्र अण्य वनहे नियाद्विन, धरे रहेकु कारावा বছিরিষ্ণাই দেখিতে পায়, অন্তরাস্থাকে দেখিতে शाप्त मा। এक कहे। एक या ठक्कू व्यक्त क्र निर्देश, ভাষারও বল অস্পা, বে হেড়ু সে অন্তর সাকে দে-থিতে পায় না। কোন কোন ধীর আর্ভ চকু হুইয়া, বঙ্গিন্য হুইতে ইব্রিয়দিগকে প্রতিনিক্কভ করিয়া, এব অমৃতদ্ধক ইচ্ছা কবিয়া,দকল আয়াব অন্তরাত্মা বে অধিতীয় প্রভাগাত্ম। উংখাক দে-থেন। যাঁছোক বাজা বিষয় ছইছে উল্লেয়দিগকে প্রতি-নিত্বত করিয়া আনাকে দেখিতে জভাস করেন নাই, ভাঁহার: বলেন বে নিরাকার পারমে-ধ্বদে দি প্রকারে ভাবিক। তাঁগদের প্রতি তো बिदाकात फाविवात উপদেশ नग ; **डाङात।** श्रीष्ठ স্মান্তাকে ভারুন, জানিবেন থে সে নিরাকার। फाउद्याद अवयव नाहे, ता निष्क निद्रत्यंत कहेंग्र স্বয়ব সমুদয় বস্থ প্রকাশ করিভেছে। পর্বছে, প্রবৃত্ত স্থান আকাশকৈ আগ্রেয় করিয়া আছে, ভিল ভিল সম'ন আকশিকে অবলখন করিয়া আছে। যদি সেই ভিলকে দশ ভাগ কর, সেই দশম ভাগেরও আধার ভক্ত টুকু আকাশ চাই। কিন্দু আয়ার সহিত কিছু মাত্র আকাশের সমৃদ্ধ নাই: সে অগুনহে, সে এপ নতে সে দিখি নহে। এই হলিয়। আছা। কি বস্তু নয় ? আছো। জড় বিবয় **২টাতে মহত্র বস** : আহো চেতন বস্তু, ভাহার সংস্থাৰ এই জড শ্বীর সচেঙ্কন হইয়াছে। যথন শরীরের অন্তরে শরীর ইউতে ভিন্ন করিয়া আত্মা-কে ভাবেতে পারিনে, তথনট নিরাকার ভাবিতে পারবে। বহি,রিন্থের ছারা বাহিরে নিরাকার म विदेश कारण भूगा कि शिद्ध। योशीती वीविद्रत्र বিষয়েতেই আসন্ত পাকে, ভাহারা আকাশবিত वश्चरक है वश्च व लगा यादम: या वश्च व्याकारण नाहे, ভাহাকে গ'রও শরিকে পারে না। यদি নিরবয়ব স্ইল, ভাষাবদের নিকটে তবেই ভাষা অবস্থ হইল। মাজা দের সংক্ষান্ত অতেজনে, ভা**হার। অতে**-হণ করিজে পারে; फन्**रक**हें पिथ क्रफ(कड़े কিন্তু ব্ছার চেডন আছে,১৮ট চেড**নকে জানিতে** भारत । एख छ ति, वस्तरक भावन वद्र। यात्र, मृन् ह्रांजी

মনকে মনন হয় বায়, জান ছারা জানকে জানা বার, জায়া ছারাই জায়াকে অকুজন হরা বার্না বে, হস্ত ছারা জায়াকে কার্ল করিছে চার; বে চকু ছারা জায়াকে দেখিতে হাঁছ; জাইল হইতে আর নির্কোধ কে আছে? এক বার অলুরে খায় আয়াকে দেখ, দেখিবে যে দে বিজ্ঞান্যয়। ভাহার আকার নাই, ভাহার অবয়ব নাই, ভাহার রূপ নাই; ভবে আচে কি? ভার জ্ঞান আছে, ভার জ্রীতি আচে, ভার ধর্মা আছে। এই আয়াছে আরোহণ করিয়া আরো ভাহার অর্থ্রে প্রথিত হও, সেই নির্মাল নিরাকার জ্ঞান-ক্যোভি মতলহর্মা অনস্ত ব্রহ্মকে দেখিতে পাইবে এবং আন্দর্যো উৎফাল হইয়া-প্রেমাঞা বিসক্ষন করিবে। বীয় আয়াই পরমায়াকে দর্শন করিবার সোপান-ভূমি। এই আয়াই ব্রহ্মধান।

المرائد أمالة

কঠোপনিষদেব আখোগিকাতে আছে যে বাল্য ` কালে শ্রন্ধারিট নচিকেতার আয়-ক্রিছাম। উপ-ন্থিত হইথাছিল। মৃত্যুর পরে কি হয়, তিনি ভারা স্বয়ৎ মৃত্যুকেই জিজাস। কবিবার অবসর পাইয়াছি-লেম্৷ শ্ৰন্ধান মচিকেদ্৷ পিডার স্থা-পাল**নের** करना जिन बाकि अनाशांत गय- खबरन हिस्सन। দেই ভিন রাত্রি গারে যম প্রবাস কইছে গুকে আদিয়া দেখিলেন যে নম্যা অভিথি তিন বাতি ভাঁহার ভবনে উপবাদী র্চিয়াছেন। ভিনি আপনার এই দোষ অপন্যনের নি.মত্তে তাঁহাকে তাঁর ডুফি-সাধন ভিন্টি বর দিসার প্রাথনা করিলেন। নটি (कडा) अथम वर् এই b। हिटलन य এ**ই उग्नह**न्न যম-ভবনে আসাতে আনার পিড' যে শোকাবিউ ও ব্যাকুলিত ভইয়াচেন, জাঁতার সেই শোক ও বাকুণভার উপাধন চউক--ভিনি খান্ত ও প্রসন্ধ-মন। হউন। তিনি জিতীয় বরে কর্ম সাধন যাগ-যক্ত-অনুষ্ঠানের প্রকরণ জানি বার অভিলাষ করি-लन्। कुछीप्र वरत जिल्लाशीनां कतिरत्नन "स्प्रर প্রেতে বিচিকিৎন। মনুষো অস্ত্রীত্যেকে নায়মন্তীতি চৈকে। এভবিদ্যান্ত্রিউ প্রাহণ বরাণামেববর-স্তু জীয়ঃ।'' ''প্ৰেজে মনুযো যা ইয়ং বিচি**কিংনা** '' । মনুষ্য এ লোক ছইতে মৃত চইয়া অনুষ্ঠ হইলে ध बहे मर मात्र दश । कि मर मात्र ? ना, " प्रास्त्री-ভোকে নায়মস্তীতি চৈকে" কেই বলেশ আত্মা थारकमः रकत्र वरतम् थारकम् मा । "अञ्चित्रगामसू-শিউস্বায়াহং '' আমি তোমা কর্ত্তুক অনুশিউ হইয়া ইহার সিদ্ধান্ত জানিজে চাই। " বর্ণামেশ-वज्ञक् कीयः " वद्वज्ञ मदेशा कामाज अहै कुकीय वज्ञ। ষম বালকের মুখে এগভ কটিন প্রাশ্ব ভ্রিয়া চমৎকৃত হইলেন। এ জিজাদা কত দুর জীয়ার স্পরের ভার, তাহার গঢ় আয়-ক্লান ক্লানিবার মতাব रेका ७ जायकान्न प्रदेशास्त्र कि जा, देश राजेका

क्रिवात निर्मिष्ठं क्षम छीष्टात्क विनिट्यम । ध दक्रीय-त्रवाभि विविधिकशीतालः भूता नांच सुविष्णप्रवरः। ইহাজে দেবভারাও পূর্বে সংখ্য করিয়াছিলেন, हेहां यूविरक्षम् मन्न। <sup>१६</sup>व्यमार वत् महिस्म्हा इनीचे" ए निरुक्षाः! जुनि अना वद शार्थना कर। এ বরের জন্য আরু অনোকে অধিক উপরোধ করিও না। নচিকেতা বলিলেন। দেবভারাও ইহাতে সংশয়যুক ডিলেন এবং তুমিও বলিতেছ ইহা সুবিজের নয়; ভোমার নাায় এই সংশয়ের দিবার-কর্তা এমন আচাগাই বা কোপায় পাইব, জ্মাত্ম-বিদ্যার সমান জার বিদ্যাই বা কি আছে; অভএব আমাকে এই বর দিভেই হইবে। যম সু-নকার বলিলেন, " শতায়ুবঃ পু্রপৌতান্ রণীম " শভাযুকিশিট পুত্র-পৌত্র-সকল প্রার্থনা কর। ৰহুন্ পশূন্ হস্তিহিরণামখান্ " বহু পশু, হস্টী, हित्रा, अभ नकल अर्थना कत्। "कृत्यम हमाग्रङन् রুণীয়া "মহদায়তন ভূনির প্রাথী হও। "ব্রুল্ড और मंत्रमा सार्वमिष्ट्म" स्ड नःम्य পृथियो छ জীবিত থাকিতে ইচ্ছা কর,তত কাল জীবিত থাক। আমি যনের পদে থাকিতে ভোমার মৃত্যু হইবে ন।। হে নচিকেডঃ। মরণের পর আগ্রার যে কি হয়, এ প্রেম ভ্যাপ কর। নচিকেছা এ সকল প্রেদো-छन-वारका गुक्त ना इहेगा अकृत महाङ्करपर नाम्न শির হইয়া উত্তর করিলেন, "ন বিতেন ভর্ণনীয়ে। মনুষাঃ ৈ হস্তী হিরণ অশু প্রভুতি বিত ছার। মনুবা তৃপ্ত হয় না; প্রত্যুত যত বিস্ত লাভ হয়, ভভই লালসা সুদ্ধি হয়। অভএর এ সকল আমি চাইনা। যখন ভেখেরে সহিত আখার বন্ধুত। হইয়াছে, তথন কোন্ল জায় ভূমি আর আমাকে মারিতে পারিবে; অর হিরণা অশ্ব হস্তি-সকল তো তোমার অমুগ্রহে পাইব ; কিন্তু এ সকল আ-নার প্রাথনার বিবয় নহে। মৃত্যুর পরে মনুবোর আত্ম। থাকে কি না, ইহাই আমি ভোমার নিকট হইতে শিক্ষিত হইতে চাই। অভএব হে যন। আমাকে এই ভৃতীয় বর প্রদান কর, ও ভোমার অলীকার পালন কর। এই প্রকারে নচিকেড। वनटंक प्रतिया विभिटलन, आण्या-विभाग विलिट्डि स्टेटव । खर्थन येम कील हरेश। विविद्यान । "हरी-**छित्रेनाटक रहर रहरक्तमनाटक रहर । छैटको टको** न विकानीटलानाप्र रहि म रनाटल।" रहा याम इज्ञनं क्रिवात निषिएक मरन करत, बदर् एक वाक्षि ৰদি আপনাকে হত বলিয়া মনে করে ভবে ভাষারা उँकत्वरे कांदारक कारम नाः ना वरे कांद्वा रनन फर्ड, मा धरे जाना एक रहा। नहिस्केश्वाद स्थम व्यक्तकारम् रचमनि उक्त- "म हमारक हमामादन भंदीतां' भंदीत नक इंदरतं आवा नक इस ना। क्रवन्तीकारक व देशात क्षक्षित कारह । धरमनः

ছिन्हरिं ने खेरीने देवनः इष्टिं नावकः। न देवनर ক্লেদ্যস্থাপোন শোষণতি মারতঃ।" ইছাকে অক্ল চেগন করিতে পারে না, ইহাকে অগ্নি দহন ক-রিতে পারে না, ইহাকে জল স্টিড করিতে পারে না, এবং ইহাকে বায়ুও শুক করিতে পালে ना। এই आया अध्यम, अमारा, अद्भगा, ष्याभाषाः भद्गीरतत विनात्मं हेशह विनामं रह ন।। নিঃশাস বাযু যখন বাহিরের অনিল হইর। যায়, এই শরীর ধধন ভগ্নের সহিত ভানাস্ক হয়, তথন আহা 'যগাকর্ম ঘণাচ্ছতং'' পর-लाटकत मधन कान पर्या नहेता वहे भृषिती हहेल्ड প্রস্থান করে; ইগরে উপরে মৃত্রুর অধিকার নাই। এই অকটো গদ্ভীর মার নিদ্ধান্ত পূব্ব কালের উপ-नियम् इहेट छाछ इडया ग्या । सम, १ नियास কেমন সভা৷ যথন মনু-ব্ৰুভি, রাম'য়ণ মছাভা-सङ, भूदान, किंदुई फिल मा: उथन अहे छेले सिमम् ছিল। যদি বলা যায় যে উপনিষদ ভিন দক্ত বংশরের পুর্মে প্রকাশিত হটয়াছিল, ভালতেও পুৰিক শাস্ত্ৰত প্ৰতেৱা কোন মাপতি আ-নিতে পারেন ন।। এছ পুরাতন কালে আছা-বিষয়ক এমন সার সিদ্ধান্ত এই মুবিস্কীণ ভারত বর্ষে প্রচলিত ছিল। ইংকে দি আম্চির্যা হইতে হয় न। ; ইহাতে कि आमात्रप्ति भूथ উচ্ছ न रहा न। १ এমত পুরাজন কালে জ্ঞান-ধর্দের এমন মহং কীৰ্ত্তি আর কোণাও নাই।

উপনিয়দে যেমন শবিংব হটতে পৃথক্করিয়া আমার-সক্রপ জানান হইয়াছে, এনন আর বেদেব कान अश्रम नाहै। किन्तु आम्हर्या कहे स शब्द-ल्लादकत काण्डिक, ७ श्रुवं ल्लाप्कर माधन, त्रापत व्यथम रहेटड माकिलाटडरे व्यास हसमा याम। रवम-विश्विष याच यदछत ও ইটোপুর্তের এবং मদ-नुष्ठीन ७ भूग करणीत कल य वर्ग ज्यां खां छाखि, ইহাতে হাতন পুরাজন সকল ক্ষেদিগেবই বিশ্বাস ছিল। বেদেব ক্ষিরা পর লোকের প্রতি কোন সংশয় আনেন নাই। তীহার। ক্রদয়ের সহজ ধর্ম-ভাবে প্রভাগ করিভেন যে ইহ লোকে পুণাানুষ্ঠা-নের ফল পর লেকে প্রাপ্ত হইবেই *ছইবে*। **উপ**-নিষ্দের সময়ে জ্ঞানের আলোচনা আরম্ভ ইয়া এই বার্ডাবিক আত্ম-প্রশ্তাবের উপর সংশন্ন উপ-ন্তিত হইল। ভখন উপনিবদের ঋষিরা সহ*আ* জানের আলোকে নিঃসংখ্য হইরা এই আছা-প্রভারকে আরো চূড়ভর করিলেন। " পুর্ণোন পুণাং লোকং নয়তি পাপেন পাপুং।" (প্রয়ো-পনিযদ্) পুণা ছারা পুণা লোকে গভি হয়, পাণ षांत्रा भाभ काटक ।

বৰ্ণন অনাঝা হইতে আন্নাঠক, দেহ ছইতে দেহীকে; পূৰ্ণক ক্রিয়া জানা যায়; তথন আনু

কি জানা যায় ? ভখন আর এই জানা যায়, বে श्रंदीरदृत विनारण आधात विनाण इस ना; य रहेडु উত্য পূথক বল্ল। আরু কি জানা যায়? না, মুবা চল্ল এহ নক্ষম সমুদয় বাহা বস্তু হইতে আখা উৎকৃষ্ট। य हिंचु आञ्चात खाता है समूमग्न बाहा स्न १९ প্রকাশ পায়। আর কি জানা যায়? না, আছা অমৃতের নিকেতন, অমৃত পুরুষ ঈশবের আবাস স্থান; জাবাভার অন্তরেই পর্মাতা রহিয়াচেন, ভাহা হইতে কীবারা। অভি অপ্য দুরেও নাই; লে হেতু উচ্চারদের মধো আকাশেরও ব্যবপান নাই৷ আব কি জানা ধায় ? না, অংখা ঈশবংক অবস্থন কবিয়াই স্থিতি করিছেছে। ''এটছি দ্রুটা। ম্পুক' ভাতারস্যিত। মস্তা বোদ্ধা কর্তাবিজ্ঞানামা পুরুষঃ। সপারে অকরে আন্মান সম্প্রিষ্ঠতে।" (প্রশোপনিষদ্) এই বিজ্ঞানায়। পুরুষ এন্টা স্পৃতি। প্রান্তঃ রগষিত্য মন্তা বোদ্ধা ও কর্ত্তা, ইনি অক্ষয় প্রমাত্মান্ত ক্রিষ্টিভ হইয়া আছেন। আর্থ্য দ্রুটা, চক্ষু দেখেনা; আহা চক্ষুর ছারা দুন্ন করে। আখাই গ্রেভা, আমাই প্রায়া, আরাই ' রণেব ভোজা। আছাবই শক্তি মন আৰাইই শাঞ্জ বৃদ্ধি, আখাই মনোবৃদ্ধি দ্বাধা বিনয়ের আ-লোচন। করে। এই পরিমিত বিদ্যালয়। কোথায প্রভিত্তিত আছে? "দপবে অকরে আছানি भ°त्द्र'क्श्रंट्रङ ্রেট অক্ষয় প্রথ ৯,তে সং-लिक्टिक कारका समय, अथारन अरकतारत छहे অ্যার কথ। এক নিশ্বাদে কলা ইইসাডে। ধে সভোৱ জনে। এক শক্তি আকেশিক ক্ষাত্ত ভাহে, এক কথায় ব্লিয়াছে। এমত গান্তীর সভাকে भे कि ख क विष्य , जारण व भरभा जीमा जिल्लामिन र परे দোখতে পাই। এই লোকে আমার বিশেষণে रुना भन्न আह्न। आ,बारक कड़ी बहिंग। ना क । बरल भव क्षाय श्रीकल अवैदाय इया। । छला स्वर्गा । साप्तर न्त्राय ध्रिकाक, शक्त शकी, त्वारक **करा** সাথ স্থায় প্ৰাব্ধ হৈব বৰে চলিছেছে। মনুষাই কেৰ্ম े। '० कर्ब-रक्ष कंशरम। পर्मार्थरभ हेव्हारक निरमान कात्रमा उम्रक इटेट्ड्राफ, कथाना व्यवस्त्र ানে ুলিয়া বিপাদে প্রতিতেতে। আত্মার কর্ম र कारचंड कांडाब कर्डना कर्या शर्या इहेगारह। মান্ত কুটা পশ্চ পশ্চীর নায় প্রকৃতির নিয়নে देख राज्य कि : । स्व भटाईद्र विषक्ष विनीयान् वर्षे-१८८४, व्याप इष्टेश छेदकुके प्रतिशति स्टिबात अभिनात भाडेगाफ, धवः मुक्तित भाषात्म प्रिम <sup>রি শা</sup>র্থারণ ক রাভ্যন্ত। প্রক্রান্তকে, পারুদ্রিকে, পণানলে 'ম'জিফান করিতে পারে বলিয়াই জীবাড়া पुरुष मारक लेक विवेगारक। धार्मिक विश्वार्थ ही-ীন প্রবেষর আত্মা সাক্ষাৎ পরমাঝার একটি ক্ষুদ্র প্রতিকৃতি।

· যাঁহারা অনন্ত ঈশ্বরে মগ্ল হইয়া আপনার কর্ত্তকে জেতাহার সহিত আপনাকে হারাইয়া क्तानन, ভाँरात्री कर्डवा धर्माटक जुनिया निया व-निष्ड थारकन, " किभिष्टन् कमा कामाग्र मंत्रीत्रमयू-मर्ब्यदर।" (ब्रह्मात्रगादकाशनियम्) कि देखा করিয়া আর কাহার নিমিত্তে শরীরকে দক্ষ করি। ভাঁহারা সংসারের কুশলের জন্য পরিপ্রম ক্রিডে ঢাহেন না। ভাঁহার। কর্ত্তব্য কর্মের অনুষ্ঠানে বিরক্ত থাকেন, ভাঁহার। ঈশ্বরের প্রিয় কার্ব। সাধুমে खेरमाठी दन न।। डीहातदमत कीवन नीवर्म सुक ভকর নায়ে কোন ফল প্রদান করে না। ভাঁছারী ইহা অবগত নহেন্ধে ঈশ্র আপনার অনস্ক মঙ্গল ভাব আমারদিগকে যে দেখিতে দেন সে ইহারই জন্যে যে আমবা ভাঁহার সেই পবিত্র নঙ্গল ভারতে আদিশ করি, ও নংগাবের শভ কার্যো ভাষার অনুক্রম কবি। যদি উহাব সুন্দ্র মঙ্গল ভাব দেখিয়াও সামারদের কার্যো ভাচরে অনুকর্ম না করিলান, ভবে ভাষা দে:খবার ফল কি ? ব্রাহ্মপর্যা কলেন, আন্মার পর্যা-ছার কদ্ধ করিলে কথনো ভাষাৰ উথলি হলবৈ না, "মত্যান প্ৰয়দি-ভবাৎ धर्माप्त अमिष्ठ वार कुललांग ध्याप हतार।" সভা হইতে বিজিল কটবেক না, ধন্ম হং ছে বিজিল हरेदक मा, एक कर्मा करेटल विक्रिश करेदक मा। ফান-আলোকে আয়াকে উদ্ধান করিয়া সেই महा-त्रकारक जानस-त्रकारक भाग, क्षीं ७-छ। द ভাগকে আন্ত করিয়া মেই মন্ত্র বরূপকে পুরু कद अव १ दर्मा वटल काकारक बलीय न् कहिया स्म हे ধর্মাবহ পাবত্র ধরপকে অনুকরণ কর প্রতিক্ষণেই जन्मानन भूतकात रहेर्व। जन्नभररादि अहे आरमम् ।

#### DEFENCE OF BRAHMOISM, AND THE BRAUMO SOMAL

- p 13m, ca

GENTLEMEN - You are aware that a warm controvers; has been rageng for some years past between some Christian Missionarus, and the leaders of the Calcutta Braim of Simaj about the truth of Brahmoism. The battle is growing thicker day by day, and, it mount incrour speak anglit, mightier combatants than those that have already appeared on the field, are gading their lains for the light, evidently then in a Brah coism to be no ordinary 100. The horizon regressing darker and darker and greater falumations and thunderings are expected to take place but without however, it may be safely guessed, the useful complement of showers refreshing to those who thirst after truth.

According to one view of the controversy, Gentlemen if cannot but gueve us, Brahmos, believers m catholic religion, as we are, to mark the bitterness of feeling that has been created by it between the Christian and the Brahme, who both believe that the essence of religion is love "love to God Being a lecture delivered at the Midnapore Brahme

明人 "妈妈我是谁怕的我。"

and love to man," and who are sons of the common Father with whom "verily there is no regard of persons, but in every nation he that worketh righteousness and feareth him is accepted" But in another view we cannot but be glad at the present discussion, for it is certain that our religion will come out brighter and stronger from the fiery ordeal, convincing men of its internal strength, and leading them to a clear recognition of "the light that light-eth every man that cometh into the world," but which is obstructed to our view by the mist of prejudice and passion.

It is my intention to offer, this evening, with reference to this controversy, some remarks on Intniton, and the guiding principles of the Brahmo Smaj, in vindication of our religion and its proncipal followers, avoiding as much as possible the

edium theologicum.

It shall be my endeavour in this locture to keep always prominently in my view the penceph, that among all religious denominations, the meek followers of the catholic religion, for Brahmoism is essentially the catholic religion, should exhibit in their own persons conspicuous examples of nligious toleration and love, never indulging in sarcasm instead of argument, and in vituperation in-stead of fair reasoning, in ver secretaing endor tor the sales of more liveliness. My remarks will not a lave relating to the arguments contained in at single lecture of a single Christian Missionary but to the arguments, advanced by Christian Missionsaries in general in this country against Brahmo sic-

The Christian Missionaries who attack the Brahmo Soma, say that Infuntion is resufficient to the as a clear idea of god. I would assemble this reverend sertlen or to consider that resolution always presupposes a being that reveas the good rest it that being, his midlibility and holiness, or else what he says (muot be b hered m. Xm the infallibility and the perfect belines, of God necessarily hopely his other perfections. A revelation is not at all possible unless a Perfect Bong exists

Now if we are able to knew so much clearly and disfinetly I say, without a volution what i the necessity of it? Cannot all the other feat, of religion, the most important for our salvation be deduced from the above? Has find made a natural provision for the gratification of every one of our natural wants and not for that of the greatout necessity of human nature, thirst after religion

knowledge?

Is not belief in God humself, our Creator, Comforter, and Rodeomer, whose sweetness should perfume our whole life, and the beauty of warse holiness should ever be present before the eve of the mind, as light that clasps heaven and earth in its lovely embrace is before that of the body-1 ask, is not a belief in Him only quite sufficient for salvation without a belief in a Mediator i Is the assistance of a third party required for a son to go to his father? Is every man who loves to with all his heart and strength and who loves his neighbour as himself, but who, from conscientions scruples, cannot believe in Christianity to be reasted in eternal bell fire? If that be not the case we then insust so much on the acceptance of a book revelation as necessary for salvation? Granted that a book revelation exists, what is its test? It cannot be any other thing than Intuition. Its tost can neither be the miracles, which the spostles of Ohrist themselves said every false prophet coming in the name of Ohrist could work, new prophecies conched in the most enignatical language, and

admitting of a thousand different interpretations, but the heart of man on whose fleshly tablets God has written the only true revelation. if a voice from the heavens cry out: "Oh man! lie! steal! bear false-witness! for lying, stealing, and bearing false-witness we the true road to salvation", could we believe in such a voice? Certainly not. Why could we not behave in It? Because its utterances would not agree with those of our own hearts.

It is plain therefore that "Intuition is our receiation and likewise the evidence of that reve-lation" The Brahmos cannot believe in any other revolation than what is contained in "The elder Scripture with with God's own hand Scripture authoritie, uncorrent by man"

Christian Missionnies assert that it is evident that Intantion does not give us a clear idea of Gad because digrading notions of him are found to prevail among the nations of the earth. It cannot but be admitted that such degrating notions exist among mandinal, but what is the cause? The intuiting about that is that there is a Perfect Mind in whom we entirely lepend but then different nations have get different dear of perfeeting. Rude nation, believe true or a ness to conses in power only As they are not chinch by the sight of civil phan that of good they consuler if a greater manifestation of power to an evil than good. Hence some nations believe the Dorty to be of an exit nature, as did the ascent dows, who thought God to be a palous and reveneutal god. Rude nations consider such inless as and storn ray cruel, as greater than those who are not so but as their ideas of perfective improve with then palgment they belove true greatures to be in power regulated by in-they and menes

The law of morres, oppose to religion as to orner thangs. Is not priver so to be perceived in the sorre writings of the thought die Was it not a great true from from the Flohine Mosos to for that is the New T stament . " A change please me, the dealer religion from he a to love, hore power to oronn, from the potice a clad to the mins of Gol, man the nation of a metryde if there there exists another those the contation critic sins of the father upon the choleen, to terry soul shall bear its own diagram from the air the eithoride and the current to the still

mall voice

except tients cand on that it was  $\mathbf{G}_{i}$ Olive, who has regal beared uctions of religion to manhand a decat they did not possess them become his command. You this is a statement marsh tothe all history

I would be samend, Gentlemen to your attention percent the 'Intellectual Session of the Universe' by off It Chiworth, whose hours Christianity do receive gonflewen as question would do well to mut to. This book contains intomerable process of the existence of correct norms of the gotto id prevailing among the arcient Greeks and

The Apostles and the Fathers of the corly Christum Church w ro more liberal in their acknowledgemuch of the ments of the so-called heathens in this respect than our present Christians. Every one win has read the New Testament must recollect the oft-quoted celebrated saying of St. Paul " The wrath of God is revealed from beaven against all ungodiness and unrighteousness of men whe hold the truth in unrighteousness; because tha which may be known of God, manifested in them for God hath showed it unto \_m. For the invis

thle things of him from the creation of the world are el aily seen, being understood by the things that are made, even his eternal power and godherd, so that they are without excuse; because that when they knew God they glorified has not as God neithe were thankful; \*but became vain in their imagination and their foolish hearts were darkened

Now from the expressions "God hath showed it unt them", "clearly seen", and especially "they are without evense", it is plain that the apostle behaved that the light of nature was quite sufficient to give man a correct knowledge of God Instead of flinking with our modern Christians that the to others did not possess correct knowledge of tood, the said sportle did not think it beneath him to borrow a line from the Greek just Aratus "in him we live and move and have our being" and another from the Dramatist Menander, " cvil communications corrupt good manners One of the Fithers of the early church carled Scerate: 8. Aperais on account of his noble life and still nobler death. Another was so struck with the beautiful religions and meral sayings found in threck authors that he said that a man might judge either the ores of Christians were philosophers or the old pur to Therame Christians

Turning from the one branch of the Aryan mandestation of the religious sentiment the field eme to the other the Indian, there have been but two great manifestations of the religious sentiment in the world, that is the Arvar and the Shenath, I would recommend to the religious inquirer the perusit of the compilation named Brilino Dharna. published by the Calentia Samay many veris ago It ontains religious sayings selected from the Shes e - so has tereby simple with so replete with or one to and beauty as to justify the assertion of Wisher Schlegel . It cannot be defined that the early Indians possessed knowledge of the true field All the a virtuage are replete with scatiments and especially enough notice clear, seconds grand, as deeply encoved and reverentially expressed as in any human language in which men have spoken of their God ! The Brahmo Dharioa also centaus beautiful moral precepts rivaling in excellence any found in the Scriptures of other nations

Our reverend friends lay great stress on the point the it was the Bible that brought life and immor talify to light. If that be the case. Why is the Logic' is a future existence, and the distribution of the rewards and pum-liments so prevalent among more demonstration nations? Why are there such be entiful descriptions of the destination of the aman out found in their religious Scriptures? This hads us to believe that the immortality of the beman soul is as much an intuitive belief as within is which ye call "I", from the body and or a revictions of the distinctness of the principle m.m asurable superiority to the latter. behild to future existence afterwards gains ample constorer on from the moral attributes of God which require a just distribution of rewards and processor to not witnessed in this life. Now believthe in an intuitive truth is one thing, and giving and monstration of it to others, another. People may often fail in the latter, the they cannot ignore the belief, as was the case with the Grecian philose va · Plato.

hogical demonostrations of the immortality of the soul oven in modern times are more estisfactery than those given in ancient times because the Sorence of theology improves with time just and other secences, while the primary intuitions upon

which the science of theology is based are the

same in all ages and countries,
Some of our reverend friends account for the noble and beautiful sentiments met with in the so-called heathen writers about God, immortality of the soul and the moral duties of man by the theory that they are derived from a primeval revelation. Now this theory rests only on the authority of the Bible. As the Lectures of our reverend friends against Brahmoism are intended to edify the educated natives, most of whom do not believe in any revelation at all to kezard an a-sertion on the authority of the Bible is as ab! surd as for an orthodox Hindoo to attempt to convince a Christian of the correctness of his opimore by enting in corroboration or them the thority of the Bhagavat Poorana, or Choitanya Choritane ita.

Our Christian friends maintain that the Gespel has revealed the time plan of redomption for our suns It will be going beyond my limits it I discuss the question how far the opinions entertained by modern Christians on the subject agree with the Christianity of Christian even apostological Christrainty, but suffice it to say that two e catertained or if by those whom our chirteen friends call heatherns, (I beg to be pardoned as them for stating the simple truth ) are superior to their own The idea entertained of God by our Christian friends is that of an oriental despot who while poinshing a criminal, look, more to his outraged how ir than to the good of the state or the amenduent of that erinmal. The opinica that God purshes exactly in the same way as a human goveraor dies who is not satisfied with only the repentimes of a cranmal or that punishment in the sense in which it is taken by mea is as much necessary in the divine action of government as in the binnian is arthropomorabitie. Art not the pangs of remoraes different punishment for our sins? If remare do not take place in the heart of a baidened sinner in this world, is it improbable that it may be awakened as his mind in a future state when his religious and moral susceptibilities along with his other faculties would be more improved than now? Will not then his own heart hea holl to him realizing the following description of Satan by the great author of Paradise Lost

. For within him beil He brings and round about tom, nor from hell One step, no more than from himself, can the By change of place !

Our reverend friend, if they impartially consider the subject will had it more consonant to the infinite goodness of God to believe that he punishes the summer is a father door his child in order, to amend his conduct and not as a ecalous revengeful eastern (trant to vindicate his own outraged honor. Our reverend friends maintain that not a single rel grous or moral truth has been discovered since the time of Christ. Why since the Christ? We may say since the creation of man, for religious and moral truths are as old as the human race, although their parification, which may be compared to that of a valuable metal from its state of rude ore and the discovery of the several modes of demousbrating them are more recent as they are the work of time. If no new religious of moral truth has been discovered since the time of Christ, another sort of discovery has been made that is that of the erroneousness of some of the beliefs of Christ, such as those in the propriety of sections in the existence of donis, and the efficacy of exerrism and in the occurrence of the universal discolution in his own generation,

Among those beliefs, I desire to dwell a little on the first of them, that is his belief in the propriety of leading an ascetical mode of life. Christ, though perhaps the greatest religious genius the world has ever seen, was still an accetic, like those commonly met with in Asiatic countries. His not recognizing his mother when others pointed her out to him and his enjoining his disciples not to care for temorrow's food or raimont; it short the gener I mode of life which he led, followed afterwards by his disciples proves that he was an ascetic New this asceticesm has been relaxed in Protestant countries although it exists in its integrity in Roman Catholic countries which the in this respect more christian than the former.

former.

Christian missionaries remark the diversity of opinions prevailing among the Prahmos. The same might be remarked of Christians by Brahmos. The Brahmos, however have this superiority over the followers of exclusive religious that although an individual may have difference of opinion with the Somaj on minor points, he is reckoned a Brahmo if he agrees it essent is "Unity in essentials, variety in nonescentials and toleration in all" might be predicated with greater correctness of the Brahmos.

than of Christians

After attempting to refute the arguments generally advanced by Christian massionance against Brahmosan, I now proceed to vindicate the Samaj from the charge of virellation which our reverend friends have brought against it. They say that the Samaj has passed through three different stages of religious opinion, namely those of Vedantism Rationalism, and Infinitionalism. This statement is not correct.

It must be frankly admitted that minor changes have taken place in the religious opinious of the Samaj but not in essential. A belief independently of an external revelation in the One True God, One only without a Second' the creator and the preserver of all, in the immortainty of the soul and the existence of the noral law, in the distribution of future rewards and punishments and in the paramount necessity of worshipping God with love and learing a pure and blameless life has been the distinguishing characteristic of the Somaj from the time of Ram Mohun Roy to the present. It has never believed in a written revelation except so far as it is consonant to reason.

Ram Mohun Roy cited the authority of the Vidas while writing against popular Hinduism, that of the Bible while disproving the doctrine of the Trinity and that of the Koran while attacking the absurdate. of Mahommedanism as in the Persiau work "Towfatal Mohaedin" but ne was neither a Hindu nor a Mahommedan nor a Christian in his religious apimons. His biographer in the "Calcutta Review" says on the authority of his immediate disciples that before he departed to Europe he told them that after his death the Hindoos will contend that he was a Vedantist, the Christians that he was a Unitarian Christian and the Mahommedans that he was a Mahommedan but he really belonged to no existing religious denomination in the world. The Cathelicity of Bam Mohan Boy were a triple aspect; that of Vedantism towards the Hindoos, that of Unitarianism towards Trivitarian Christians and a still pures form towards the Mahommedans in whose case he had not to contest with the doctrines of Multiplicity or Trinity. In the case of the Hindoss and Trinitarian Christians he thought it more proper to attempt to remove first from their minds the belief in many gods or three gods by attacking it with their out, meapons than to receive mare theirs. To them. than to preach pure theirn so them.

The essential catholicity of the religious opinions of Ram Mohun Roy plainly manifested itself in a theoretical form in the Towfatal Mohnedin" which by-the-bye was his earliest work and a very small pamphlet published by him in English, hearing the remarkable title of "Universal Religion" and in a practical form in the primitive constitution of the Calcutta Somaj In the Trust Deed of the Somaj building it is stated that it is to be used as a place of public meeting of all sorts and descriptions of people without distruction for the worship of the Author of the Universe but not "under or by any other name peculiarly applied to any particular being or beings by any men or set of men what-ever". The sermon to be preached and the hymns to be sung therain " should have a tendency to the strengthening the bond of union between men of all religious persuasions or creeds" It is said that, in accordance to this principle, in the very infancy of the Sanaj Euravan boys used to sing Psalins of David in English and Hindu musicians religious songs composed by Ram Mohun Roy and has friends in Bengah

But Ram Mohin Roy was soon after obliged to give a more Hindu aspect to the Somaj for the propagation of the doctrine of the unity of Gal among his countryinen and that to such a degree that the Vedas which were now pronounced by inne to be the chief guide of his followers in matters of religion were read in an adjoining room accessible only to Brahimias before public worship was held in the Samaj Hall and gifts were distributed to them on two or three successive Samaj anniversaries

It is however plain that Rain Mohan Roy did not consider the Vedus to be inspired compositions because while he acknowledged the Vodas to be inspired he in the same breath admitted the Christian Scriptures also to be inspired. His idea of inspiration was not that of a mic leulous process confined to any single ago or nation but a gift coextensive with the human race. In the sense in which he acknowledged the Volus and Ciristian Scriptures to be assured, he adoutted even cortain portions of the Poorans and the tanteas to be inspired. In his preface to his Bengali translation of the Ishopanishud, he says "Are not the Poorans and the Tintias Shadras? They ar. Shashras because they also proclain the units of flod? his opinion then, these pertions only of the Poorans and the Tantras p seesed Sansorn authority which proclaimed the unity of God It is still more carrons to relate that he held the works of the celebrated Person part Jelalorddeen Roomee, called by way of emisence the Moulana, to be inspired in the same some as the Vedanta His bugrapher in the Calcutta Review says that he once expressed his intention to retire in his old ago from worldly life and devote him elf to the study of the Vedanta and Mesnavi, the great work of the said Moulana It is evident therefore that Ram Mohun Roy's idea of inspiration was that of a process of spiritual illumnation and cestasy shared by all the members of the human race in more or less degree.

The intelligent portion of the immediate disciples of Rain Mohun Roy did not mistake the sense in which he called the Vedas a revelation. They partook of his eclectic spirit, quoted with almost as much enthusiasm a precept from the Tantras as one from the Vedas—a robase from a Scofee poet on the agreement between all religions as a sloke from the Bhagavat Gueta, and spoke with rapture (I state from personal observation) of the religion of themselves and their great teacher as being that

of the wave of all ages and countries, as being in fact the universal religion

After the death of Ram Mohun Roy, the catholic character of the Somaj was not destroyed. Even while its leaders admitted the Vedas to be a revelatem, they did so solely on account of the "reasonall hors and togency of their doctrines" as compared with the other Shasters of the Hindus and the religious Scriptures of other nations. They repedled the idea of a revolation supported by external cridence. "The only ground," they said, "on which the truth of any system of behelf can be maintained is that founded on the nature of the doctrines inculcated by it " "If the doctrine of theology and the principles of morality thegat in the sucred volumes refered to appear to be consonant to the dietates of sound reason at 1 visitom -- if these teners and people cury the nanopea habie character of truth in them - the man who has record them and continues to place his crust in them will have o casen to fear the vilupe alive sammes of un-godlines in respect to his i lighth? (Vide Vedan-tic Doctimes Violanded) The letter of Balm Debrudro Nath Time published of the Englishman in October 1816 species of his religion as one who a principle are echoica to by the dictates of that of nature and of bunnan reason and homen hear, and by the consequence missest of all ages and countries." The Previoud M. Mullens, at his Essay on Velantien Bedinnen and Crist anny says "Though the Brahms claim the Velis as a revelation of diving to the they look place its upon the works of Vite eas non reasons reached From native to y layed in the not because the Vela-(as they assert eagree vine nature therefore they regard opens as a spired. He quites in support of the chose assert in the following passage from the Volume Does no Visited a " The knowled re die In hier somes of disputation deals with thered teat's check require to other proof than what the whole creation and the rund of man to perverted by talling a measurings ullind in about fines? It is there was evadent that the leaders of the Samaj at the considered the Vedas to be s verted solely a community of the reasonableness and exprey of the executes. Their error lay in behoring that above or they contained was reasonable and cogent. As soon as they perceived then mistake after a wider study of the Vedas, they shook it off BI or e Now why did they do so so easly? The resson , that a higher standard of belief had always predominated in their minds as shown by the at the extracts from their publications over that of winds a regulation, that is the standard of reason and as an arata are men they could not continue protessn back be a revelation which was found to killing comma

the samp still holds that only those doctrines and a control of a composite that are reasonable in a control of a composite that are reasonable in a control of a train. The present member of the contains of all truth. The present member of the control of the distance of reason in its intuitive and as in a lorge on the the groundwork, and reasons the superstantine of religion. As all the superstantine of religion. As all the superstantine of religion of reasoning the determination of religious truth, its recognition of min ton cannot be reckoned as an organicating of pumpile but as eather a development of the processive intertained.

Yea see then, Gentlemen that a belief in the most truths of religion independently of an external

revelation and on the principle that the reasonableness of sedoutrine is the only test of its truth has been the chief characteristic of the religious opinions of the Samej from the time of Ram Mohun Roy to the present. There . also another feature of the Samaj which it has not just from its first establishment to the present time. I mean its Hindoo aspect as far as such aspect can be maintained in conformity with the principles of true religion. The service of the Samaj contains extracts from the Sha-tras, books held in veneration by the people of India from ancient times - In discussion with orthodox Hindoos, Slokas are cited from them by the Brahmos in corrobonation of their opinions. This practice has been adopted by some Christian misstonaries also, giving a greater right to the Brahmoe to its observance. The Brahmo Dharma Grantha or the manual of Brahmic faith consists of selections from the Shastras. The same process of selection and retormation but not of extripation is nowa-days long also applied by the Brahmos to the ritual and custom of Bengal Wnatever in them. is not apposed to the true religion and to right remson is being kept and whatever is so is being rejected The Brainnor Council he bianced for displaying a certain degree of conservation in the work of reformation. For a fance what would an English Theist have done in a similar case? Would be have at once rejected the whole Busic and the whole of the old cerein a cal and en-town. Certainly not "The natural result of the right of private judgment is to can sestimate christiante into philosophy a pincipl of racen a plicable to all obgons to purify and to spiritualize, by which the Jew ap, plying it to his Birth, the Hindoo to his Shastarthe the lete his Piaco, the modern European of the New Testment the Milleramedan to the Kerao and so to the markind neight gradually become were un ed in a motherly colectic feeling of piety and revience, to qually dlowing variety of costoms, and enscating out of former creeds to 'reject the woods and ke p the flowers'" Although Brahmore, is the purest form of Hinduism and althou the burry has a Hindu aspect which it would be a sampled step to destroy, its members, as becomes the followers of universal religion, are not backward to acknowledge then obligations to other religious than Hinduism, especially Christianity to which they are

more industed than to any other of those religious. The essential features of the Samaj have remained unaltered from the time of Ram Moleun Roy to the present but it has not however remained still since his death without making progress. The catholic religrou is essentially of an expansive character. One of its leading doctrines is that religion like other things is subject to the law of progress and that the religious ideas of man develop, expand and purify themselves with time. The Sams, therefore professing as it does the eatholic religion would have belied its character had it remained stereotyped on the Vodantic plate of Ram Mohan Ray and not made any progress since his time when its religious opimons advutted of progress The progress which the Samaj ha- made since the time of that reformer has been both of a negative and positive character. The negative progress lies in its abandoning its beher that whatever is contained in the Vedas, is reaconside. The positive progress consists in the clearer and fuller recognition than before of intuition as the foundation of natural religion. I use the expression "clearer and failer recognition, than before's because such recognition is not of a very recent date us has been asserted to be. The Brahmo Diarma published about fearisen reservations has the expression arts a rys rise taken from the Mandockya Oopanishad of the Athara Veda, meaning that the proof of the existence of God is intuition only. If any one tun over the file of the Tattwabedhices Patrika for Sakabda 1776, he will find an article headed the try from in which it is distinctly stated that our belief in the fundamental truths of religious is of an intuitive character. In some other articles published about that period, intuition was stated to be the primary basis of re-

ligion

The progress of Brahmotsm will ever keep pace with the age. The latter can never outgrow our When I was seience springs up, the memreligion ner of A Same denot require to take the infinite pain which the follows of other religious take on tart and with the creed the profess ire, and that instead of there being a natural more to be sent religion on the one hand and and segmen on the other, the latter exercises . . Illy difficulty upon the former in refining and , mag it. With regard to the relation between science and religion, the Samue echoes the following sentiment of an Emplish writer . True seience and true religion are twin-sisters and the separation of either from the other source to prove the death of both. Some propers exactly in proportion as it is religious and religion flourishes in exact proportion to the scientific lepth and firmness of its buts". With regard to the relation between philosophy and religion, the members of the Samar "The mangaration of celectic philosophy is already a fact in the plut so heat world and server to respice us with the board that sale by side with cities explainsophy will reign eath the religion that natural in rem and natural psechology will trimophantly use in harmony from the conflicts of contending sects." In combonity with such views, the Samaj has always gladly admitted secentific and philosophical articles into the columns of the Tattwabodhinee Pattrika. In short the opinions of the Samajon this point can be time summed up that there is no disagreement between Common Souse and Philosophy, between Reason And Revelation, between Theology and Science but that each has its own prescribed functions which must be preceted by those of the other in the building up of the grand edition of Theism.

Brahmo brothren who are present in this Hall, I have a word to tell you before I conclude. I on troversy with the followers of other religious we cannot avoid both for purposes of self-vindication as of conversion but let us set an example to them in what spirit religious controversy is to be conducted Appealing to those sentiments which every religion has in common with Brahmoism for Brahmoism is the universal religion, we should try to wear the followers of other religious from their errors and prejudices in the spirit of charity and love, for we are children of the one common father. Let us recollect the remarkable words of the great founder of our religion "strengthening the bonds of union between men of all religious per ussion and orceds." Let us not lose our temper at the time of discussion. Let us not indulge in sarcasm instead of fair argumentation for sareasm but ill befits the most momentous of all subjects, religion. Let us not sacrifice candour at the alter of liveliness. Let us not for the sake of appearing amount loss sight of the duby of behaving fairly towards the followers of other religious for they are men and as men they are our brethren.
I see come of us are very fond of religious con-

I see some of us are very fond of religious controversy but let us not give way to an over-fundamental for it for the transfer is

a religious being. Let us pay more attention to our own religious and moral improvement and that of our country than to how we will best acquit ourselves in religious controversy. Let us always cherish in our nimds a lively consciousness of the Divine presence Let us in all our actions keep Him before our minds' eye as "an abiding presence not to be put by." While we are engaged in the duties of a worldly life, let us remember were in the presence of a Task-master whom we cannot deceive though we can descive our earthly task-When we indulge in harmless pleasures and amasements, let us think of Hun as a father who is observing the mirth of his children. When wa are holding a great religious festival let us consider Him as at once its spectator and object. When we hold a meeting for any other purpose conneeted wish religion than we day, let us consider Him as its great president. When reworship Him in the Samaj Hell let us adore Hen as the living deny of the temple. Let us in all our thoughts words and deed keep Him before us

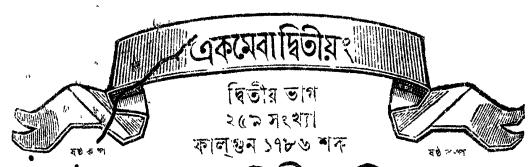
Let us be pure and body in our lives. Let us show to the idolater that our religion is a stardead religion, a religion out to a talked of and religion, and thereby show one contry non that we love it with all our minds, all our heart, and all our strength, then will they think that. Brahmoran is something and that it is not to so made light of. Let us think more of our country's than of our our interest. Let us direct our chief attention to the education and actual in provenient to our women for it one half of our population, be in dishines how can the other half prosper. Let us be always up and deing for our country in a date of transition and the duties of those and live at so happened are not hight. Let Gird's our Talket' our Savior' our Les-

Led find our Full of our Savior our Kes-demon forces strongth to be a the trials of this awfully critical time. To There ye look up not see each for we are weak. About a great the least of the constronamed for that flower an only consolution and the darkness of dargers of our site from From The alone come strength one fort, and hasse Forsake as not but infoso per not, finding, and fortified into our sore so that we may strind as witnesses of Thy ghory to generations to come

### পুস্তক বিক্ৰব।

and the second second						
					युना	
ব্ৰ:ক্ষপর্ণ্যের স	সুঠ⁺ন-পদ	-	, .		No	
ষংকিলিং (টে চটাদ ঠাকুর প্রণাড) ॥						
শি উপ:লন	भ्रम जान			• •	10	
À	২য় ভাগ			••	100	
বিদেশীয় গ্রাহকদিংগর নিকট নগদ মূলা						
বাজীত পুস্তক প্রেরিজ ইইবে নাঃ •						

ফ্লিকাতা ব্রাক্ষ্মমাজের ১৭৮৬ শকের পৌষ মাদের আয় ব্যয় বিবরণ।	" পীছারর বন্দ্যোপাখ্যার			
অঃয়	" পার্কভীচরণ হৈন্দ্যাপাধ্যায় >			
ভব্বেধিনী পজিকা	ব্যালধর্ম প্রচার ক্ষমস্থান।  ক্রীবৃক্ত প্রেলরকুমার দেন শুপ্ত			
ব্যস্থ	.01-10.			
মাসিক বেছন . ৮৭॥০ জীযুক্ত বিজগক্ষ গোস্থানী প্রচারক . ০০ পাজকা মুদ্রান্ধন . ০০ ধাস্ত্রালয . ১৪২ ১৫ প্রক মুদ্রান্ধন . ৭২ দবকারের ক্মিশন . ৮০১০ পূত্র স্কুদ্র বায়	বায় ।  বীয় ।  বীয় ভাকা গমনের পাংধয়  পাল্কী ভাডা  বিল দর্কারের হাওড়া পারে ঘাইবার বায় ১০০			
প্রকার বিদ্ধান : ত ১৮৮৮ ১৫ প্রকার বিদ্ধান : ১৯৮৮ ১৫ ১৭৭ : ১১৮ ১৫	ব্যয় ১০১০ বিহত ২৭৮/১  শ্রিত প্রভাপচন্দ্র মঞ্চদার। কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজের দান সংগ্রাহক।			
88¢4/¢	নিঘুণ্ট পুত্র।			
নায় ৩৭৭॥/১৫  নিয়ক ৬৮৮/২০ জী বিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।	পৃষ্ঠা ভ্রাচার্টোর উপদেশ ১৪৯ জীবনের প্রকৃত বাবহার ১৫১ থিয়োডোর পার্করের পত্র ১৫৪ ইজিপ্টীয় মত ১৫৭			
	छवानो পুর ক্রন্থবিদ্যালয়ের উপদেশ ২৫৯ ইংরাজি · · · · · · ১৬২			
ব্ৰেছিলের প্ৰতিজ্ঞা <b>ও সাত্ৎদরিক দান ৷</b> শ্ৰীযুক্ত বিহারীলাল ভটাচার্য ৫	আগুল ব্যৱের বিবরণ ১৬৮			
त्रायदाञ्च (म	তত্বেধিনী পত্রিকার মূল্য নিরূপণ। আগ্রিম মূল্য (কলিকাতার জনা) . ০৩) ল (মকংগ্রের জনা) . ০৬০ মাসিক মূল্য			



# তত্তারোধিনীপ্রতিকা

अभिवादक्षित्रमञ्जामी श्वासादः विक्रमाणि किति । সর্কাশসক্ষ। তে লব শিং গ্ৰাগ স্বাধন আছে দিং বা স্টেগ বিশিশে বাদ ১০ কিটীয়া সাক্ষরাপি সাক্ষ্যিণআৰু দ্বাশিশসক্ষ্যিত শবং যদিক্ষণ ুশ্বসাধিক শিংকি ক্ষেত্ৰ দিং বিশ্বস্থানি । ১০ গ্রা ক্রিকাইক আভান্ত বিভাগ বিভাগ আভি বিভাগ আহি বিধান বিশ্বসাধিক সংগ্রিকান ।

## পঞ্চতি শ সাম্বনরিক ব্রাফা-মনাজ।

१५ माच ३१०५ मल ।

जेषाह अमिटिन >> मिटियन स्टिश्रानित অতি সমারোহ পুর্বক স্থান কলে সংগ্রাপন হইস। গিয়াছে। এ বংগরে আনাধ্যনে इव्यास अधि প্রধান আটার্যা মহাশ্বের মহোৎমবের কেন্তু হইরাভিল। তগায स्वामधिक मध्य (लांक ममांगंड मध्याह-লেন; অন্যান্য বৎসর স্থান।ভাবে অনিক: তেও অনেকে পরাধার হইয়া বহিগত इरेट्डन, এ वर्षत अरे त्र्मायुक्त (कार्व সমাজ ভঙ্গ পর্যান্ত সকলেই স্তন্তিত হইয়া নিবিদে ভক্তিভরে মনের সাধে উপাদনা করিয়া ছিলেন। উৎদৰ ভূমির অধ্র বাহির নবপলব ও স্কৃদ্শ্য কুস্থম মালায় স্লোভিড হইরাছিল। সন্ধা ৭ ঘটিকার সময়েশত তুর্দিক আলোক মালায় স্ক্সজ্জিত रहेल, উৎসব ভূমি মনোহর বেশ ধারণ করিল, এবং আচার্যোরা বেদীতে উপবে-শন করিলে পর চতুর্দিক্ নিন্তন হইল, ও " थाकि यामात्रात मरहादत्तर " अहे छूट

। মাধ্যর উল্লাসকর ব্রহ্মসাহীত সংক্ষা তাকোণাসনা আবিয় শ্লীক ব্রহ্মহাণ শেষ হাইব। মান ব্রহ্মা, কাল আব্ধ গোলপ সমাজের মবের বেলান নাম্যার আছে। পদ আয়ুত্র কেম্বর্জন ব্রহ্মান্ত ব্রহ্মান হব্য। ভাষ্যার হব্য। এই বৃত্যাত ক্রের্ন।

"নভেলে কি আ ওয়া নাংলা। যে নান জির ক্রনে মতেটে প্রতিটা গ্রিক এক मर्छ। स्वरुक्त धर्म स्वरुक्त है। स्वरुक्त स्वरूप शोदवानिक इस , य फाल महा है । न मण्यालिह क्या (म (मन (५) (न्तर कालन अभीत जालक उभाउत निकटन स्थ। সত্য কাল্বিয়া নেজস্বাধন নতে, অংশচ শ্লাকে मुक्रानवरे आहराता गरः घरधः नाम नत्म, मम्। छेद्र७ असुगठ नद्भ। हेटाद নিকটে পজে-প্রায়াদ ও গ। কুটার উভয়ই मभारा भगवाम ७ निर्वम मन्द्रवदरे जना ইল্র জেড়ি নিরপেল ভাবে প্রদারিত র্হির্ভে ব্ল লোক-বিশেষে প্রবা मस्त्रायः विद्रभटन प्यथं व कार्डि-विट्रमटन विकी ज न्य गाने। वेदा प्रस्थ वस नटर, क्रिन अवक्रमार्, मक्न प्राप्त ७ मक्न সময়ে ইহার আধিপত্য। সভা মহৎ ও

উদার। ইহা আবার জীবন্ত ও বলীয়ান্। ইহার আধার নিজীন জ্ঞানও নহে, তরল ভাবও নহে; জীবনই ইহার আবাদ ভূমি, জীবনেতেই ইহার যথার্থ প্রকাশ। নমুদায় জীবন স্বৰ্গীং বলে সংসারকে পরাস্ত করিয়া, পাপ, তাপ ও মৃত্যুকে পদানত ব-রিয়া, ঈশ্বরাভিমুখে উন্নত হয় ; তথনই স-ভেবে প্রকৃত মহিম: প্রতীয়দান ২য়। বাস্ত-ঠিক সভাই আমাদিগের জীবন, এবং যে পরিমাণে আমরা সতা চইতে বিচ্ছিন হই, নেই পরিমাণে আমরা জাবন-বিহীন ও জড় ভারাপন ইই। সতোর ৫ রূপ জাবিন্ত বল বে টলার ক-।মাত্র কিয়ণে অমা-নিশার অভেদ তমেজাল ছিল ভিন্নয়, ইঞাৰ गः स्थान महिन भण्छ। भक्त दर्भ मक्षिण अस-লায়তন ব্লি-রালি চল এইফ মায়: নিরাশ মুখুৰ্বাতি নৰ জীৱন ও নৰ উদাম প্ৰাপ্ত इस : व्यांक कुरतन कींद्र दांकि संभा विदेतद नारि वीमावान इर. धनः अधि मामाना कुछ टांडि ६ ममुष्ति, जिंड खदार्भ मं≉ख मे-হস্তালে ক্ষেত্র সমলে বনীছিত্ত কারয়। ভাগার re एका श्राम्म नका मश्मारम कवियो लम । সতে देव वट अद्गतिक देवे उद्यान-वल धन-दल দেহ্-বল মক্রম প্রাভূত হয়-—কেবল প্রা-ভুত হয় এমত নচে, কিন্তু আবার অনুগ্র নাদের নায় ইহার পরিচর্যা করে। প্রমাণ স্বার্য ইভা সিদ্ধান্ত করা যাইতে পারে যে ঘালারা ভ্রমণ বিকট মূর্ত্তি ধারণ পূর্বক বন্ধ-পরি কর ও থড়্খ-হন্ত হইয়া সত্য-পরায়ণ যা জিব অনিষ্ট মাধ**ে প্রবস্ত হয়, ভা**হারাই শার্যর সম্ভিবিলয়ে সেই ব্যক্তির **দেবা করে** া হারুপ্রা হইয়া ভাহ'র আদেশানুসারে ८८ ा महिमा कीर्डन कतिरु शांदक। কি অভিযা সত্যের মহিমা।

ই উলার ও জীবস্ত সজোর উপারে
 পারারের পবিত্র ত্রাহ্মধর্ম সংস্থাপিত;

कनकः मठा है बांकाभर्मा। এই कनाई खाका-অধিকার। ইং ধর্মে দক্র মনুষ্টের যেমন ভারতবর্ধর্ব,তেমনি ইংলত্তেরও ধর্ম; ইহা যেমন পূৰ্বকীলেব, তেমনি বৰ্তমান मभटशत्र धर्मा। देश (यम) स्थापन भी नाना-বিদ্যা-বিশারদ পণ্ডিতদিগেরী, তেমনি সরল-চিত্ত রুণকদিলেরও ধর্ম। অন্যান্য ধর্মের नाम रेश क्रांकि-दक्ष वा मख्यानाय-वक्ष नटहा ইছাতে জাভির গৌরব নাই, দেশের গৌরব নাই। দকল মনুধাই স্বভাবতং বে। সা। যিনি যে পরিমাণে স্বাভাবিক নিশ্মল জ্ঞানের অনু-সরণ করেন, তিনি সেই পরিমাণে ব্রাহ্ম। ম-নুষ্যাত্মার দহিত ব্রাশ্বধর্ম দনব্যাপী; আত্মার স্বৰণমই ব্ৰাহ্মবৰ্ষ। দেশ কাল 🔞 অবস্থা নি-বিশেষে দকলেরই ইচাতে অধিকার। জগৎ जागातरमत (मद-मस्मित, পর্মেশ্ব আমা-দের উপাশ্য দেবতা, স্বাভাবিক জ্ঞান আম:-দের ধর্মাশান্ত,উপাসনা আমাদের মোক্ষ পথ थाञ्च शक्त गामारमत थात्राक्ति छ, मायु वर्ष মাত্রেই আমাদের গুরু ও নেভা। দার ব্রাহ্মণর্মে সাম্প্রদায়িক লক্ষণ কিছ নাঁই, ইফাতে বিরোধের কারণ নাই। ইহা সাধারণ সম্পাত্ত। স্ক্তরণে ব্যক্ষ**নাজ** স স্প্রদাযিক সমাজ নছে; থাঁছারা এক মাত্র অ-দ্বিতীয় গরত্রক্ষের উপাসক হইয়া ভাঁহাকে প্রীতি ও তাহার প্রিয়কার্য্য সাধন করিতে ইচ্ছা করেন, তাঁলাদিগেরই এই সমাজ।

পঞ্জিংশ বর্ষ পূর্কে এই ১১ মাঘ দিবনে অসাধারণ-ধীশক্তি-সম্পন্ধ, অত্যুত্রতপ্রশাস-ক্রদয়-বিশিক্ত মহাদ্মা রামমোহন
রার এই ব্রাক্ষসমাজের স্থ্রপাত করেন।
সেই দিবসে প্রীতি-বিক্ষারিক ক্ষমত্রে তিনি
সকল দেশীয় সকল জাতীয় লোকদিগকে
এক সাধারণ উপাসনা-গৃহে সত্য-স্বরূপ
অন্ধিতীয় সম্বরের উপাসনায় জনা আহ্বান
করিলেন; এবং ব্রক্ষোপাসনা-রূপ অমূল্য

ধনে দকলেরই যে অধিকার আছে এ গৃত প্রতিষ্ঠা দারা দগতে এই স্থান্চার ঘোষণা করিলেন। সেই দিন অবৃধি ক্ত শত লোকে এই ব্রাক্ষসমাজের পুশীতল আত্রয় লাভ कतिसा खाकावर देत गाराया मरणात थ-मारम, क्रमग्रदक अभेख कतिशास्त्रम, मनदक উন্নত ক্রিয়াছেন এবং আত্মাকে পবিত করিয়াছেন। দেখ কেমন আক্র্যা-ৰূপে অংশে অংশে ত্রাহ্মসমাজের বিস্তৃতির সঙ্গে मत्क भावित ताका, श्रीजित ताका, श्रमातिह হ্ইতেছে! কত শত লোক সাম্প্রদায়িক ° দকল প্ৰকাব শৃষ্থল ছেদন পূৰ্বাক অশস্ত क्रनरम् भरहात भाषांत्र ভূমিতে मकरनद ন্হিত উচ্চতম বিমল্ডম সমূলে আৰক্ষ इटेट उट्टन; विट्य, एवा, विवाप, विभाग ≥हेटच पूर्व्य ब्हेश नितृत्थक मत्न मकल लांकि ও धर्मा-मच्छानाय हरेटक धर्मा कञ्जू मक-লন কবিতেছেন, সকলের সহিত মিলিত হহয়া বিবিধ হিচকৰ কাৰ্যা সাধন ক্রিভেচেন, এবং উন্নত প্রীতি-যোগে দকলকে ভ্রাহা বলিয়া আলিক্ষন করিতেছেন। দেখ, জগৎ ্য পরিবারের গৃহ, ঈশ্বর যে পরিবারের পিতা মাতা, দেই পরিবার ক্রমে চতুর্দিকে वाश इटेटज्रह । वहे मत्नाइत मृणा म-ক্রমতিন কাহার চিত্তনা মহেলাদে অদা উ॰ कुल रहेरण्ट्र, जांचाधरमात महिमात शित-চর পাইরা কাহার শরীর না রোমাঞ্চিত क्ष्रेटलट्ड ?

ব্রাজ্যপর্যের উদার ভাব দেখিয়া অদ্য বেষন মন প্রশৃত্ত ইইতেছে, তেমনি ইহার মাশ্চর্যা স্থগাঁর পরাক্রম দেখিরা আমারণের আস্বা উৎসাহে প্রজ্ব লিভ হইতেছে। এই পঞ্চতিংশ বৎসর মধ্যে ইহার আগ্নি এ দে-শকে কেনন উজ্জ্ব ক্রিয়াছে; কভ কত পর্বভাকার বিশ্ব বিপত্তি, কভ ভয়কর কু-সংস্কার ঐ স্ক্রিভি ভাষীসূত্ত ইইয়াছে।

শভ সহস্ৰ ৰৰ্ষে যে সকল কুদংস্কার এদেশে বন্ধমূল হইয়াছিল, তাহা ব্রাক্ষধর্মের বলে मभूटन छेश्याणिङ क्ट्रेट इट्ड, मभुष्य ভाরত-বর্ষে যে দকল ভ্রমের আয়তন ডাহাও ক্রমে চূর্ণ হইতেছে। এই ভারতভুমি পৌতালক-তার ছুর্গ স্বৰূপ,ইহা কঠিন অভেদ্য কুসংস্কার প্রস্তরে নির্দ্ধিত,অগণ্য পরাক্রমশালী বিরোধী বিপক্ষেরা সভ্য-পরায়ণ বাজিক্ত প্রাণ পর্যান্ত বিনাশে প্রতিজ্ঞান্ত হইয়া নিদ্ধাশিত খড়গ ধারণ পুৰুক অংশীর ন্যায় নিয়ত ঐ তুর্গকে রক্ষা করিতেছে; মেই ছর্গের মধ্যে ত্রাক্ষ ধর্মের জরপতার। উক্তীবদান, এবং দেই বিরোধী দলের কত কত গোক এক্ষণে সভা भरागत भागवन् छिष्ठ इकेट ब्रह्मा मानु सा ক্ষের সভ্যের প্রভাবে আপনানিগ্রে ৬ পরিবরি এবং স্থানেশকে ভয়ন্তর ফুম সাং इंडेटर अगुङ कतिया श्रीनक् मदन स्पर्धाः করত সমুদয় ভারতভূমিকে নিনাদিও 🗥 🌣 **एटएन।** मन्दर्भाक्षमान् क्रेश्वत में शिक्त সচায়, এবং জাৰত জ্বত সভা ঠাছালৈ रुट्स, खेशिराय निकारे एवं विक्रीय कीर्र অম নিচয় আপনা হইতে পিনাশ খাপ্ত হইবে, ইহাকে অার আশ্চয় কি : বৃদ্ধ বলের মন্মুখে কি পার্থিব কেনে বল ডি-তিতে পাটাও বেংা, ক্রমে কেমন পথ পরি-ষ্ঠ হইমাচে। পবিবার মধ্যে পিস্তা মাতা, পুত্র কনা, ভাতে ভাননী সন্থানে মিলিত হট্যা নিসিতে অচিতীয় ঈশ্বদ্ধে উপংসম করিতেনের, চাল্রা গ্রাব লাবে জ্ঞানের সহিত রাভাগতিক আলিজন করিতেছেন, যুদ্দেরা সংখ্যাতে উদ্দীন্ত শ্রেয়া ইহার সভা সকল খানুষ্ঠানে শরিণত করিতেছেন, কো-मल-ऋगत महिनाहा तिश्वक धौिक-भूटका ব্রহ্ম পূক। ক্রিভেছেন। এ মহ্ৎ জয় কেবল মতোরই বলে, এমন রম্ণীয় শোভা কেবল जाक्रथर्भात्रहे मोमन्धा।

आंभगन । अभाकति छरमदा वाकार एक. छेलोन आप १ **कुछ** स नवा **म**बाक् साम का ए शानन कड़ अन्दर निश्च अस्त देवि ্ৰ লোচনা করিয়া ঈশ্বরকে ধনাবাদ কর ू भारताभी पर्सित कवा छात्र सिका करा ५५ क सरक्ष्मत्वत एथार्थ छ। पर्याः। গত ব্রু হান্ত্র প্রসালে নারভত্মির দক্ষিণ ও পশ্চিম ফ্রেকাশ তালিকা প্রচারিত চট-२ १० वर्ष प्रांतिक कारणेत उरम्यो ्रकः भगद्यः - नेशा दाजायमाधः मत्राध्यः रहिशाला वस्ताला । वस्ताला । প্রচায়ক, দক্ষের পারিক্সনে ত্রাক্ষধর্ণের উ ভারতি হল্মাটে : ব্রেপ্রক্ষা পেটা চার্লি प्राप्ति बहुद्धा गाँचा तर् क्या क्लिक के र १ ६ इ.७१८ । सुरूष मा १०५१० मी धन चे स्-大王(1) 对 海军有 指确则 1、河南鸭类 人 衛行 राम समाप्त रक्षेत्र स्था । इति । वाहमा अस्ति । भ्यान हिल्ला कर । अञ्चल विद्राह अहत् सह সভাষ কলে। খালা শ্কলি পাতি পাঞাগালুফী रहेदराज । जुरावे छिल्लालाक छ। ६ ८६ ,बर्धिय के विशेष के विशेष करें हैं। ब्द्रास्क के कि करेंद्रीहरू । ब्राह्म के हाई গক্ষাবলনীয়া ভাগিদিও যে প্রতি অংপক্ষাক্রত भुनान ७ अका अंक्षा बहित्राहर। ্র বালাদিখের এশত জীকি, নত্যান্ত্রাগ ्रिमप विभाग अस्तित् मञ्जूषे इहेश्वाट्डन এবং পাহার ক্ষেব্যে, বিশ্বাস করেন না জারবিত কিল্লুজ বেক্সিন্ধীবনের মহ**ন্ত দে**-, शेशो एक, एक (के १५) व्यवस्थ **व विटल्ट**न। গে চন মট্ল আছে লিডেল যাত্র ও অধ্যবসায় . इ.र. १४५ १ क्ष्री का अविश्वास ८० । १९० एक अप - १**३८७८ए, मभुनग्र** তিল এই ত্রাক্তপত পরিবা**ও হইবার প্রক** েলে। তেওঁ, বাং কাজা। তে আ**ল-পরায়ণ** ो । १९ । ८१६ टी जो जक्षरणेत् वी**ल महेश।** ্র নেক্টার উবলো ভারত-ভূমিতে রৈ**পর** 

কব। গে অমূল্যধন লাভ করিয়াছ, তা-শ্তে কেবল আপনাদিগের অভাব মোচন করিয়া শ্যাতে ব্যান থাকিও না, কেবল শাপনাদিগের আত্মন্তক চরিতার্থ করিয়া ফল্ড থাকিও না। দেশস্থা দাত। ভগিনী দিলের আগ্রার রোদন-ধনিতে বোধ হইতেছে মেন গগন বিদীর্ণ হইতেছে , সহারা ঘেন চতুর্দ্দির হই তে ব্রাক্ষ্মমাজের আশ্রর প্রার্থনা করিতেছেন, ইহার উদার অদাব্রতে অংশী ÷ेरांत कमा উटेक॰श्वदः निर्माः कतिरुट्छ सः ज्यागतः कि ध मगत्र भय' भूना-कृत्र छ পেনা ফরিব ৷ মা গাবিত ভাবে আর নাণিবের তাপ মুখ এদশন পুরুষ ধর্ম বিপাপ্ত ব্যক্তিদিগকে আনাধর ক্রিন্ত भाग दिवीर छोत्र आपण कार्रास्टी रागा आ, हारी छोड़। यह हा जिले स्थानी ারণাকে আ, শাস্ত্র দিবার জন্য চাত্রুক্রিক ধারিত इ.स. मध्य भाषाता या विक व्याद्वाहरू श्रीतकृत या, भारिकाहि भारा । अभाग कर्माक 制度的 进入 1

তে পরমান্ত্রন । কুমি আমার্থনের পির ও প্রভু , গালতে দুচ্বত , ইয়া চির দিন ভোষার পান দেব। ধরিতে পারি, চা কোন একাপ্রতা ও ধ্যাবল রিধান কল। আমার দের বন নাপাতে, আমার্রদের শরীর মন, আমানের লান ম্যাদা, মকলই তোমাকে অর্পন করিজেছি, ভূমি আমার্রদিগকে ম-স্পূর্ণকগে ভোমার মঞ্জা কার্য্যে নিয়োগ কর, যেন ভোমার মঞ্জা কার্য্যে নিয়োগ কর, যেন ভোমার আজা পালন করিয়া, ভৌমার বিত্রনাম কীর্ভন করিয়া এই স্কুদ্ধ জীবনকে সার্থক করিতে পারি। ব

### 'ই একমেবা**দিতীয**ং

প্রনশ্ব শ্রীযুক্ত অযোধানাথ পাকড়াশী মহাশ্ব ত উপকরে এই উত্থাধন খারা সকলের মনকে জাগ্রহ করিলেন।

এই সম্বংসর মার করুণা অবলক্ষ্ম ক-রিয়া অবাকার উৎসব-ক্ষেত্রে সকলে সন্মি-লিত হইলাম, সম্বংদর ঘার অভয়-ক্রোড়ে অবস্থা করিয়া রোগ-শোক ভয় বিপত্তি कंट छ खेरी व इवेशीं है, या कांत्र ध्यामील कन আমারদের জনা নিরন্তর প্রসারিত আছে. য়ুনি মণ্যে মণ্যে আমাদের আত্মাতে আবি-ভূতি ফ্টার্মা আমাদিগকে পাপ তাপ হইতে নিস্তার কবিয়াচেন, অদ্য সমস্ত দিন ঘঁংহার পবিত্র সন্নিকর্ষ অন্তভব করিয়াছি, এখনই वी हात (अपनुनं हक्कू आंगोरनंत स्नता अकः . শৃত দেখিতেছি; ভাঁগকে জ্ঞান-নেত্রে প্রতাক্ষ কর, ভাঁহার নিকটে হাদ্য় ছার উ-প্যাটন কর, তাঁহাকে রুভজ্ঞতা উপহরে দাও, তাঁহার চরণে প্রীতিপুষ্প বিকীণ কর, ভালার নিকটে শুভ বৃদ্ধি ও ধর্ম বল প্রা-র্থনা করু, ভাষার উপাদনা করিয়া এই ক্ষুদ্র ভীবন চরিতার্থ কর।

অনন্তর আদি অন্তে ব্রহ্মনাঞ্চীত সহ কৃত স্বাধানাত ব্রক্ষোপাসনা পরিসমাঞ্চ হইলে. পূজনীয় শ্রীযুক্ত আনন্দচন্দ্র বেদার-বার্গীশ মহাশয় উৎসাহসহকারে ব্রাক্ষবন্দ্রের অধম থণ্ডের চতুর্দ্ধশ অধ্যায়ের এই তিন্দী শ্রুতি তাৎপর্যোর সহিত্ব্যাখ্যা করিলেন—

বোবৈ ভূমা তৎ মুখৎ নাম্পে মুখমজি।
ভূমিব মুখং ভূমা ত্বের বিজিজাসিতবাং। ১।
ধিনি ভূমা, যিনি মহান্ তিনি মুখস্বৰূপ; ক্ষুদ্র পদার্থে মুখ নাই। ভূমা ঈশ্বরই সুখ স্বৰূপ: অতএব ভাঁছাকেই জানিতে
ইচ্ছা করিবেক।

मञ्रुरवात मन পরিমিত ক্ষুদ্র পদার্থে কথনই স্থাী হইতে পারে না। সেই ভু-নাতেই আমারদের স্থা, অপ্প বিষয়ে স্থা নাই। বিষয়-সুখে আমারদের আত্মা ভ্পা হয় না। বিষয়-সুখ সকলই ক্ষণ-ভঙ্গুর, অতীব ক্ষুদ্র-কথনো বা ধর্মের অনুকুল,

কথনো বা অভিকৃল; কথনো বা দেব। কথনো ত্যাক্ষা। সেই ভূমা ঈশ্বরই আ মারদের ভৃপ্তির স্থল, আমারদের প্রিত্ত শান্তি-নিকেতন। অভূতৰ ভাঁচাকেই অ-স্বেষণ করিবেক, ভাঁহাকেই জানিতে ইচ্ছা করিবেক॥ ১॥

সভগবঃ কন্মিন্ প্রতিষ্ঠিউইতি বে মহিনি। 🦮

শিষা জিজাস। করিলেন, চে ভগবন্। তিনি কোথায় প্রতিষ্ঠিত আছেন। আচার্য্য উত্তর করিলেন, তিনি আপনার মহিমাতেই প্রতিষ্ঠিত আছেন॥ > ॥

প্রমেশ্বর নিরালয়, স্বতন্ত্র ও মুক্ত স্ব-ভাব। অনা সকল বস্তু যেমন তাঁচাকে অবলম্বন কবিষা স্থিতি করিতেছে, জাঁহারই উপর নিছর করিছেছে, তিনি সজাণ ক। হাকেও অবলম্বন করিয়া স্থিতি করেন না এই বিশ্ব-ৰূপ শৃখাল ভাঁচাতে আৰম্ম থ'-কিয়া লয়মান রহিয়াছে, তিনি এক মাজ শন্ধু-ছব্ৰপ ইইয়া সমূদ্য ধারণ কবিয়া আন-ছেন, কিন্তু তিনি কিছুতেই আবদ্ধ নহেন, ভূঁ।হাকে কেছ ধারণ করিয়া বছে নাই। দেই নিরবলম পূর্ণ ব্রহ্ম স্বীষ্ নহিনাতেই অবস্থিত কবিতেছেন, আপ্নাতে আ্পনিই নিভা রহিয়াছেন: তাঁছবি কেই ধনকও নাই তব, ভাুছার কেই আত্ময়ও নাছ ।।।।। महवारखार भनेनदिनाए मन्कार मनुत्रखार मन्भिक्षाः, नाईन्द्रवाद्यः । अन्यादनाच्या छतामा मध-नामा मछ महः ।।

তিনি অধেতে, তিনি উর্কেতে; তিনি পশ্চাতে, তিনি সম্মুখে , তিনি দক্ষিণে তিনি উত্তরে। তিনি ভূত ভবিষাতের নিয়ক। তিনি অদাও আছেন, পরেও থাকিবেন। ৩।

কি উদ্ধে, কি অধোতে, কি পশ্চাতে; কি শশ্বুথে; কি দক্ষিণে, কি উত্তরে; আ-মারদিগের চতুর্দিকে সকল স্থানেই তিনি দ্বিশাসন রহিয়াছেন। আসর। যদি প্রতশিথরে আরেছেল করি, সেথানেও তিনি
বিশাস্থান যদি গভীর সমুদ্র-গতে প্রবেশ
শরি, সেথানেও তিনি ওইমান। দিবাকরের
মান্তে কালের কিরণে যেমন তিনি স্থান
লগ্ন হালের, তজেপ ত্রমণী বিভাবরীর
অপ্রেম তিন্যারেও জাত্র্যানা রহিয়াত্রেন।
নকল জানেত তিহার রাজা, নকল আনেই
ভাষার দ্বি। যেমন তিনি স্ক্র-দেশ ব্যাপী,
তেমনি তিনি স্ক্র-কালে হিদ্যোল। তিনি
যেমন ইহ কানের নিয়্প্র, ত্রমনি প্র কান্
প্রেও নিয়্প্রা: তান জ্বাও আছেন, প্রেও
থাকিবেন। ৩।

ওঁ শান্তি কান্তিঃ কান্তিঃ চরি ওঁ পরে শ্রীয়ুক্ত বেচারাম চট্টোগাধার মহা-শরমার গড়াব স্থারে এই মহোৎনাবের পরিত্র বংসাহ বাকা ভারা সকলকে সিদ্ধ করিলেন

ল, থ হাছে। এক ৮৯ দেবস, আজ বন্ধভূতি ত্রান্ত ভারণভূমের একনাত্র लेंदमव निम्म । बागन । नभरतः इस हरेटह—-हुकु। भुद्य इन्हेट इंटियुटन इन्हेटन रभवन (मन्हे भिक्ति सव दशक्ष व (इन कार्त्वोक्ष क्रेश शाहक रमसे क्या करे भाग्यर क्रकाम्य निदमी ধ্যদেশানুবাগা সম্বৰ-প্রেমী ব্যক্তি মাত্রেরই ন্মৰণ প্ৰে চির মুদ্রিত থাক। নিতামই কর্ত্তবাং কেন না এই দিনে এই অনহায় ুত্তর পে বজ ভূমির প্রকৃত প্রোণ সঞ্চার হয়---এদেশের সকল তৃথ সৌভাগ্যের স্থাতপাত ংল্, বজালেশে যে সঞ্জ করীতি কদাচার अर निम स्काविशवा कतिएकिन, **अरे मिन** ২৯ ছে এনন একটা কাংখার অনু ঠান হইতে অবিত্রহল, মাহার রাজ। ক্রম ক্রমে এ । मार्थान अकृत वाजान विमुद्धि इंट्रे**टिट्,** র্বহ'ৰ ক্রানের প্রতি গ্রেছর---প্রতি ভারোর ংশন অন্তন বিলোচন হুইরা আমার্দিরের ল্ম ভৃতির বিষয় মুখ অসম ইইতেছে।

চির ছংপিনী বঙ্গ মাতার স্বাধীনভাকপ অমূল্য হার পরিধানের সময় লক্ষ্য করি-বারও কাল উপস্থিত ছইয়াছে। বখন ব্রাহ্মণর্ম এ দেশের সকল বাধা বিশ্ব অভি-ক্ৰম কৰিয়া সম্যক্-ৰূপে উদিত হয়েন নাই, তখন যে কখনও বঙ্গভুমির ছঃখের নিশা व्यवगान रहेरव रेटा ভाविशा खित कताउ করিন হইও। এখন তো আমারী গণনার কাল প্রাপ্ত হইয়াছি—এখন তো উন্নতির সোপান লাভ করিয়াছি। এখন আমরা दय शनकार मटक मटक शनका कहि. एम एमर्लाव क्टमूत बीड्रिक इडेन.— **इ**नस् कि. প্রিমাণে গাপ মলিনতা ছইতে বিমুক্ত হইল.— খাখা কত দুর উন্নত হইল। কেন ন্দ্ৰিয় নহালা কর্ত্তক আমারদিলের কোন न। रक्षान এनটা अचार निवाकन अञ्चल হাঁহার নিকটো বাত ক্রতজ্ঞ হই, বিনয় বচনে ভিন্দেকে সভ সাপুনাদ প্রদান করি,কিন্দ যিনি ধর্মের অবর্তিং, সক্র মঞ্জের একমাত্র षास्त्रका, भारा बनेटन (मर्भव बार्जाव अधि গুল-প্রতি পরিবার-প্রতি পাঞ্চার গালী-রতম অভাব বিদুরিত হইবাছে, সেই জিছু-বনের রাজার নিকট ক্তজতা এফাশ করা कि यञ्ज ७ व्याताम माता २ छैक्तिक स्वरन করিতে কি আজ উল্বোপনের প্রয়োজন ১ অজি নাখের একাদশ দিবস, আজ ব্রাক্ষ-সমাজ সংসাপানর প্রথম দিন। ইছা উচ্চারণ কবিবা মাত্রই শরীর লোমাঞ্চিত হইষা উঠে, নদন যুগল প্রেমাজ্রতে পরিপূর্ণ হয়, হৃদ্দের অভান্তর হইতে যুগপৎ প্রীতি আকা ও রুতজভার ভার ঈশরের প্রতি উक्ट्रिंग कर्फ निरंती**थ कतिश्रा रकटल** ! ঢারিদিকে ঈশ্বরের মহিমা জাজ্জামীন সন্দর্শন করিয়া, এই শোক্তা সৌন্দর্যোর অভ্যন্তরে, এই সাধকদলের মুখ্যুম**্ভলে জা**-হার সভা জ্যোতি বিকীর্ণ দেখিয়া বিশাররদে 🤟

হাদর প্লাবিত হইতেছে। অনত্তের মহিমা ব্যক্ত করিতে গিয়া রসনা অসাড় হইয়া বাইতেছে— জাঁহার গুরু ভার ধারণ করিতে গিয়া শৃদর অবসর হইয়া পাড়তেছে।

সন্ধারে কি মনোহর দৃশ্য! শত সহস্র ব্যক্তি শাস্ত সংঘতেন্দ্রিয় হইয়া সেই দেব দেবের পূজার নিমিত্ত একতিতে হইয়াছেন, আনন্দোর্মীলিত— নিমালিত নয়নে সকলে আমারদিগের '' সাক্ষাৎ পিতা, পুরাতন পিতামহ'' পরমেশ্বের অর্চনার জন্য— তাঁহার পান বারণার নিমিত্ত সমাসীন হইয়া-ভেম, সকলে এক লক্ষ্য এক জ্বায় হইয়া এক বাক্ষো জন্মত্বর প্রদাদ-বারি ঘাচ্ঞা করিতেছেন, ইহা সন্দর্শন করিলে মনুষা মাজেরল ভোজ্নয় কনল প্রক্ষা টিত হলবেই, দেবতারাধ এই মনোহন দৃশ্য সন্দেশন

मेश्र-मस्तव अमास्त्राच, गुरुण, कव এই मम्भाग व्याराग्ड स--- मम्नाय चार युव स्यवन ঈশ্বের্ই জনা। তিল ঈশ্র হ্ইকে আ-धनाव मञ्जल, शतिवादनत मञ्जल, मञ्चलात বসভূমির মঙ্গল লাভ করিয়া আনন্দে উর-ক্সিত হইয়া চারিদিকে এই সকল মঞ্চলাচরণ করিতেছেন। আজ তিভুবনের রাজার পদধূলি ভাঁচার আশ্রমে পতিও চইবে, আজ সেই ভুবনেশ্বরের পূজ। জীহার গৃতে স্থাপন হইবে, এই জন্য তো দুপরিবারে হ্লনয়-থাল প্রীভি-কুস্কুমে পূর্ণ কবিষা তাঁহার খারে উপস্থিত হইয়াছেন—তাঁহার উৎসব আনন্দ জনিত পবিত্রতর স্থথের ভারী করিবার জন্য আমার্দিগকেও আছ্বান করিরাছেন, আমরা তাঁহার নিমন্ত্রণে — ঈশ্ব-রের সম্বেহ আহ্বানে নানা স্থান হইতে অক্টিত প্রীতিকুম্ম লইয়া এগানে উপ্-िष्ठ रहेन्नाहि, रमहे रनव रनरवत शुक्रांत উপতার লাইয়া সকলো<sub>ঁ</sub> একত্রিত হইয়াছি।

আইস সকলে মিলে ঈশ্বের পূজা করিয়। কৃতার্থ হই, হৃদয়ের পরিশুদ্ধ কুডজুতা উপহার তাঁহাকে দিরা জীবন স্বার্থক করি। আপনার উন্নতি, দেশের উন্নতি, প্রাণসম বাক্ষধর্মের উন্নতির জন্য সকলে মিলে তাঁহার মহদ্যশ যোষণা করি।

হে অথিল-মাত। বিশ্ব-বিধাত। পরমে শ্বর! আমরা ভোমার পূজার জন্য এখানে উপস্থিত হটয়াছি, ভোমাকে লইয়াই আমা-त्रिंदिश्व डिश्मव श्रानम युश्च (मो नांशा मक-লট | আমবা ভৌমাব চিবা্শ্রিত চিরানুগত দাস—অফাবদের প্রতি তোমার এড করুণ ' আমারদিগকে নিত. ব নির্ভার এক। ম য মহার দেখিলা ভোমান ব্রাকাধনের শীতল ছার্যে আন্যন ক্রিয়ভে,ডুমি ধ্যোর্দির্ব নির্বন নৈর্থ দেখিয়া রূপ। কাব্যা দেব ছুল্ ভ ত্রাক্ষধর্মের অবিকারী করিয়াছ। তুল দ্বীন হীন মলিন বজ দেশের অভন্তর ২ইতে অমৃতি গনি फेबा क कानशा किया है शतक क्षीतन त्यीत हन প্ৰকৃথিত ক্রিতেও। ধলা ধনা নথে। ধন্য ভোমার করণে। ভোমার প্রদাদ গুণা ছুব ल अ तल को च करत, जोक अभार में ० ने है। छ रहः

তে স্কলের বল, গাভ ইনেন গাভ প্রমেশ্র। তাম এই গৃহ আর্মিন মঞ্জল কর। ভূম ইছ হ সভান সম্ভিল্পকে তোমার জন্ম কলে করে। নাম করি নাম করে পর্বত প্রামান তর্সের মধ্যে নামার অভয় পদ আ্রান করিছা যথ সারস্থ পণ করভ যেমন ইনি নির্বিলে শাভি উপাত্রল উপনীত হুইয়া স্বীম নির্বাদানকৈ তনের সধ্যে তোমার এই সিংহাদন প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন, তেমনি যেম চির কলে অবাবে এখানে তোমার পূজা সম্পন্ন হয়। তোমার প্রিত্ত নাম যেমন এখানে বাহিরে স্থাক্ষিকের মুক্তিত রহিয়াছে, তেমনি যেম বাহিরে স্থাক্ষিকের মুক্তিত রহিয়াছে,

কলের হৃদয় পটে তোমার পবিত্র ধশ্মের মঞ্চল ভাব সকল চির মুদ্রিত থাকে।

ঘাঁণার গৃহে আজ সমুদাব বঙ্গভূমির

— ভারত ভূমির শাস্তি স্বস্তায়ন হইতেছে,

গাঁধার ভাহ্বানে আমরা সকলে এগানে

উপস্থিত হইয়া ভোমাকে লাভ করিতেছি
ভাগর মঞ্চল প্রাথনা না করিয়া কি হৃদয়

প্রতির হইতে পারে ?

ে ঈশ্বন তামার নাম সক্ষত ঘোষিত ইউক, তোমার মহিনা মহীয়ান্ ইউক, তো-মার ধর্মা সমুদান পাথেবী মধ ব্যাপ্ত ইউক, এই আমার্লিগের আন্তরিক প্রার্থন।

ওঁ একমেবাহি দীয়ং

অনন্তর এযুক্ত অধোগ্যানাথ পাকড়ানী মহাশ্যু সকলের জাদ্য পথ। এই কিতকর অসতেলী উপদেশ গুদান কবিলেন—

বাহিতে বাজবগণের আলন্দকর সমাগম, অন্তরে দেই চির জীবন-সংগ্র মধুময় আবি ভাব, অদাকার এক মহোন্দবের মধুরতা ও আ্মানের জীবনের চরিভার্যতা সম্পাদন করিল। যে প্রকার প্রত। শা করিছা এই মহোৎসবের প্রত্তীক্ষা করিতেছিলাম, তাহা পরিপূর্ণ হইল। স্নিক্ষমূর্ত্তি স্কলাণের শ্রীতি বিকশিত মুখমগুল দর্শন করিবার সঙ্গে সঙ্গে ্মই চির-সুক্দেন আভিতাব **অনুভূত হ**টল। অ∤য়। তেজধী হইল, মন বিনীত হইল, জনয় কোমল হইল জ্ঞান পরিভূপ্ত হইল, ত্রীতি চরিতার্থ চলল ইচ্চা পবিত্র হইল, প্রাণ শীতস হইল। কি শ্রভ ক্ষণে ব্রাক্ষধর্ম পাবিভূত হইয়াছিল। কি আশ্চর্যা <u>গ</u>ৃতিতে ইং৷ প্রদারিত হইতেছে ৷ কি মধুর ভীবে ক্র সমাজের শুভ সাধন করিতেছে! ভবি-ষাতে কি মনোহর দৃশ্য প্রদর্শন করিবে !

বথন বিজ্ঞানের তীক্ষ্তর আলোক প্রতি আত্মার স্বাধীনতা আবিষ্কৃত করিল, মনুষোর অন্তান্ত বিলুপ্ত করিল, সমুদায়

धर्मभादक सम धमान धमर्भन कतिए ना-গিল, সেই উপযুক্ত সময়ে ব্ৰাহ্মধৰ্ম আৰি-ভূতি হইয়া দেই প্রত্যাগার দহিত প্রতি আত্মার সাক্ষাৎ যোগ প্রকাশিত করিল; স্বাধীনতার মধুর ভাব, কর্তব্যের সরল পাথ, প্রীতির প্রকৃষ্ট রীতি শিক্ষা দিতে লাগিল। এক দিকে চির-দেবিত অনুকারে এক্সছ-বন্ধন-বশত বিদার বিগকে, বিজ্ঞানের বিপকে, স্বাধীনতার বিপক্ষে, সভ্যের ভি-পকে কোলাহল; অন্য দিকে অস্বাকার म्हेर्फ महम। प्यार्तारक श्रम क्रिया লুকনবিধ অন্ধতা, এক দিকে কড়ের ন্যায়— एएखेत नाच कर्ज् झ-हीन हहेश जालमाटक ঈশ্বরের প্রতি নিউর ভাবিয়া কাশুরুষতা, यना फिर्फ केश्रत हहेर विक्रिय हहेगा আপনাতে শুতন্ত্র ভাবিয়া পৌরুত্যর পরি-বর্ত্তের স্বেদ্ধার ক্রান্তর এক দিকে প্রকৃতির অভীত স্বতন্ত্র পুরুষকে আপনার সমান নীচ ভূমিতে প্রকৃতির শৃত্থলার মধে। অ নিবার নিমিত প্রয়াম, অন্য দিকে এক তিকেই প্রকৃতির অগীত গুণে অলম্ত করিবার জন্য আগ্রেহ: এক দিকে ঈশ্বরের কর্মাক্ষেত্র হইতে পলায়ন করিয়া ঈশ্বরের পরিবর্ত্তে শুনোর উপর জীতি বশ্বনের टिकी, अना नित्क क्रेश्रद्धत कार्या श्रद्धा হইতে গিয়া ঈশ্বরকেই বিশ্বৃত হওয়া; वाकाश्यां वह छेख्य निक्त मधा ऋता দণ্ডায়মান হুইয়া নিভান্ত অসকত পরস্পার বিরুদ্ধ এই উভয় পক্ষের দামঞ্চা বিধান করিবার নিমিত্ত অবতীর্ণ হইল।

স্থানিতা অপহরণ করিয়াকোন আত্মার অবমাননা করা ব্রাত্মধর্মের উচ্ছেশা নয়; কিন্তু সকল আত্মাকেই বথার্থ স্থাধীসভার উত্থাপিত করা ইহার অভিসন্ধি। জ্ঞানের আলোক নির্বাণ করিয়া অন্ধকার উৎপ্রম করা ব্রাত্মধর্মের উদ্ধেশা নয়, কিন্তু জ্ঞানের যথার্থ পতি নিরূপণ করাই ইহার অভিসাল। একটা সংকার্ণ সম্প্রদায় নিশ্মাণ করিয়া পৃথি-ৰীর সমস্ত সমাজ হইতে তালকে বিভিন করা ব্রাক্ষধর্মের উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু সকল **সমাজের পরস্পর** বিসম্বাদিত। উৎসল করিয়। मकलरक এक और जिन्ह्र व रक्षन शृक्षक (मर्जे সাধারণ শান্তি-নিকেডনে প্রবেশিও করাই **ব্রাহ্মধর্মের অভিস্থি। কোন** সভ্যের বিন্দুমাত্রও বিলুপ্ত করা ব্রাহ্মধর্মোর উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু সকল স্থানের সকল সভা সংগ্রহ করিরা দেই মতা স্বরূপের মহিমাকে মহী-য়ান্করাই বোক্ষধর্মের অভিসন্ধি। অজ্ঞা-নের অভি, ছুর্বলের অভি, পাপীর অভ খুণা প্রদর্শন ক্রিয়া আপনার অনুদরিতা প্রদর্শন কর। ব্রাহ্মওর্ন্সের উচ্চেশ্য নয়, কিন্ত সকলের আত্মাকে সংশোধন করিয়া ঈশ্ব-বেব জন্য প্রস্তুত কংগ্রু ব্রাক্ষণেরে অভি माञ्च। এই मकन लेफट्य डेएकमा मश्मा ধনের নিমিত ত্রাহ্মবহাের আবিভাব।

আমর: ত্রাহ্মবর্মের একান্ত পক্ষ পাড়ী। ব্রাহ্মণর্ম আমাদিগকে বে আনন্দ—যে উৎ-मव आनिया (मय, ७: हा आगातिह ऋनयत्र সম্পূৰ্ণৰূপে আক্ৰ্ন করে। ব্ৰ ক্ষধন্ম व्यामामिशदक एय छे भट्रम । एत्र. व्यामाद्रमत **জান,ভাব,ইচ্ছা এ**কত্র হর্যা ভারা **অস্পী**কার **করে। ধেখানে ব্রাহ্ম**নর্মের আলোচনা হয়, মহত্র কর্ম পরিত্যাগ করিয়াও মেখানে ষাইবার নিমিত হন্দর ব্যাকুল হয়। ত্রাকা ধর্মের এতি ঘাঁখার বিল্ফুমাত্রও স্নেহদৃষ্টি দেখিতে পাই, মনের সহিত ভাঁছাকে আ-লিক্সন করিতে যাই। অধিক কি, স্বদেশের কোন র্ভান্ত শুনিলে চির প্রবাসীর ক্ষায়ের ভাব যে অকার হয়, ত্রাহ্মধর্মের নামোলেখ শুনিলে আমাদের মন সেই ৰূপ ছইয়া व्यानत्म नृष्ण कतिए श्रांटक।

**क्रम खाक्रांम भागामिश्रक क बकात** 

করিল 

করিল 
করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল 

করিল

·এই জন্য যে—ব্ৰাহ্মণৰ্ম আমাদিগকে দেই আবিষ স্থান ব্রহ্মনিকেতনে লইয়া যায়, महें व्यागिषिक वक्कुटक व्यामीएमत इन्हेंस আনিয়া আনাদের তাপিত প্রাণ শীতল ক রিয়া দের, যথনি চাই তথনি দেই সর্বা সন্তাপ হারিণী মুর্ভি আম:দের সম্মানে আনিরা দেয়: পাপে প্রিত হঠনে নেট প্রিত পাবনকে শ্বরণ করিয়া দেন , সকল কার্য্যে দেই মক্সল হস্ত প্রদর্শন কবিষ। উ। । র প্রতি স্বামানের জীতিকে ধিতুতিত করিয়া (मञ् , भाक छः दथ णाकुन ४२ दन (मञ् খেম চকুর সক্ষাতে লইয়া মাত্রা প্রদান करत, अनः बाखरनय आश्वासन्त व्यापन स्थापन हाई-পা আমি।কে খলাল করিবার উদ্যোগ ক বিলে দেই শান্ত স্বৰূপের পাণ গান কবিশ্ শা, স্থ শিক্ষা দেয়। মঞ্জুমি সদশ দংসার ক্ষেত্রে যে এক মাত্র ছায়, অ সালের বিশ্রাম ন্তান, ব্ৰাহ্মপৰ্ম সভি সহকে অভি নিকটে তাহ আমাদিগকে আনম্য দেয়। আমাৰ-দের চরম স্থান প্রনায়া নিজ্ব মিল্ডা এ কেন, কৈন্দ্ৰ প্ৰভাগ নগা কিলাগা, ও জননীর নায় কে।মল, ব্রাভাবজোর ই এল মধুমর ভাব। किनि किरल अर्थुव मस्यानिश्वत स्वीत सर्वन কবিবার নামন্তই বিশ্বতশ্চক্ষ্ নতেন, কিন্তু ভক্ত জনের বাঞ্জা কম্পাতরু : ব্রাক্ষণশ্যেরই এই মাশাকর উপদেশ। তিনি উদাসীন ও মূক সাক্ষী নহেন, কিন্তু আমাদের চির-জাবন-সহায় ও চিরম্ভন উপদেফী; ব্রাক্ষধ-শেরই এই নিগৃত মত। তিনি কেবল পা-পের দগুদাতা নহেন, কিন্তু পাপী কনের পরিক্রাতা, ব্রাহ্মধর্মেরই এই শীতলকর সা স্ত না। বে তাঁহার একান্ত সাজ্ঞাকারী, ভিনি কেবল যে ভাষাকেই পরিতাপ করি-বেন এমন নছে, চির জীবন যে তাঁছার বি-কন্ধার্য করিয়াছে, তিনি তাহাকেও পরি-वान कतिद्वनः खाक्त दर्भावरे के वे व्यवस्थातन স্বর্গ-ধানে অবেশ করিবার 🔻 নদারতা। নমিত্ত মৃত্যুর থালিস্কন অপেমা করিছে ছত্বে না, স্বাধীন ভাবে একটি কর্তবের অনুষ্ঠান কর, নিজ হন্দ্রের মধ্যেই সেই ष्ठत (मृश्वि. ७) शाहेर्त : वाकायरमात्रहे कहे भूना ए भरम्म। जाभनात छेपत कर्जु इ कत् स्विन इटेटवः जिलार (धम वस्ता कत्, পরিকৃপ্তহ্বে; ইচ্ছাকে মাধুকর, কর্ व्यात श्व महत इहेटव : खाध्वतस्य हुई अहे তৃত্তিকৰ আ..৮শ। ঈগরের মঙ্গল-স্বরূপে নির্ভর কর, আপেনার পৌরুষ অবলয়ন কন, পাপের উপর জগ লাভ কর, অকুতো চরে চলিয়া যাও, বোদ্ধানেরই এই তেজ্ঞা ব্<mark>কা। ব্ৰাক্ত্ৰেরই এই সকল মহত্ত</mark>ম छ ९८६८। এই कता खाकाधर्मत এड গোৰন ও এত আকর্ষণ।

এই गर्वाक सूकत अध्यक्षिण पानाकति উৎসৰ ভূমি নিম্মাণ করিল, উৎসবস্থার উদযা-টিত কারল, সকলকে আহ্বান পূর্ব্বক এ থানে দমবেত কাবল, স্বর্গের আনন্দ পুথি-दीरक व्यवधीर्व कतिल, व्यामारभत मुक्तिक ठण् अकृष्ठि अविद्या मत्नाव्य मृत्रा अवर्त्तनः করিল। অভএব আজি ব্রাহ্মধর্মেরই জয় ঘোষণা কর, **ভ্রাহ্মধরেই গুণগরিমা গান** ব ! : আর মহোৎসবের আনন্দ, যত পার. উপভোগ কৰ। কেব**ল ব্ৰাহ্মদের জ**ন্য নয়, কেবল বজের জনা নয়, কেবল ভারতের क्रमा नय, मभूमाय भूवितीत स्ननारे अरे उद-দব দার উদাটিত আছে। मकरलब्र मन দমভাবে আকর্ষণ করিছে পারে, এমন नाहा (गोन्मर्या এ डिएनर्य किंदूरे नारे; তবে এখানকাৰ এই সামান্য বাছ সৌষ্ঠব

यि कितान मीन ही तन नज़न मन आकृषे करत, করুক, কিন্তু ইছার যে স্থান হইতে স্থাকর্ষণ শক্তি বিনিগ্ত হইতেছে, ভাছা ভোমা-দের সকল ইন্ডিন্ডের অবেগাচর। ধন চান, রত্নগর্জা পৃথিবীকে খনন করুন, মান সভান চান, রাজ প্রানাদে গমন কর্মন, কেবল প্রার্ভ সকলকে চারতার্থ করিতে ঢান, স্বেক্তাচারের সহস্র দার**্টান্যাটিত** আচে, তথায় প্রস্তান করুন , প্রভুত্ব চান, भाषनात मान मागौर निकटिं अवश्रास कः सन, यांन ध्यावल हान, ध्यावल हान, व्यादाम চান, শাল্ভ চাল, জম্মানকে চাক, এই উ.-मदनत वा नाजाशी क्षेत्र । এখানে भदनत অনুরোধ নাই, মন্ত্রের অনুধোধ নাই, শ্রভুরের অস্বোধ নাই, পদের অনুরোধ नारं, धर्यादन नेश्दतंत्र खलूरवाध, त्थादमत অনুনাণ, ধর্মেন অনুরোধ, কর্ত্তরের अनुरम्प । मरमाद्य याका लहेला (खर्छन् ক্রিড়ারের বিচার হয়, এখানে ভাছা নাই, এখানে যিনি ঈশ্বরের মত নিকটবভা তিনি তত শ্রেষ্ঠ। এখানে সকলই বিগরীত; যিনি এখানে আপনার শ্রেষ্ঠত্ব কিছুই চান না, তিনিই এখানকার স্বাপেকা; শ্রেষ্ঠ। যিনি এখানকার কোন কাম্যের প্রভুত্ব ক-विट्ठ हान ना , जि.नहे भक्त कार्याव अजु। যিনি যশের বিল্যুমাত্রও চান না, তিনিই এখানকার প্রধান যশসী। যিনি এখানে মান সম্ভন চান না. এখানে তাঁরই মান দ-ভ্রম আধ্রা । যিনি আপনার সর্বস্থ পরি-ভাগে করিরাছেন, তিনি এথানকার দক্ষা-পেকা ধনবান্। যিনি আপনার জন্য কিছুই রাথেন না, এখানকার সমস্তই ভার कता शादक। अधिक कि, मश्मादत दवन রাজি, এখানে তথন দিবা, দংদারে যথন मिन, এখানে তথ্ন রাত্রি, সংসারে ধিনি নিরস্তর জাগিয়া আছেন, এখানে তিনি

ঘোর নিদ্রায় অভিতৃত; সংসারে যিনি নিদ্রিত, এখানে তিনি ভাগ্রহ। আনাদেব खेरगद्वत वहे व्यवद्या, वहे त्रि, वहे छात, **बहे डको** ; हेव्हा हम, छेश्मद क्लाउन श्व-বেশ কর; আনাদিগকে আপাধিত কর্ আপনারাও আপাাবিভ হও। शांकिया पर्णन कांत्रत हेशात चा नेश नाहे. অন্তও লাঠ, হয় ত দকল চ বিশৃত্বলা— সক-लप्टें बाहालकः (प्रविद्या । अस मृत्य छ-বেশ কৰ ইছাৰ অৰ্থ বুকৈছে পারিবে। " खन्द। १ क मनम श या भी ए माना ए कि अन-নাদাং , ভনিদং সংবনস্তচ্ছ। শ শপুৰ্বে কে-ৰল এক প্ৰব্ৰুক্ত মাত্ৰ ভিলেনে, আনা আৰ চিছু চিলন ; তিনি এই সনুদায় স্টি कतिद्रामा" बहे हुक् बहे कहा अवगंता রের ভিভিড়ম। 'তদেব নিতঃং জনে मन्तर रि ४९ प्रकेश नित्रभारमकरमवाधि-धीयः गर्वसाया मञ्जूषाम् मञ्जामा मञ्जू বিধ নারিশা জিলদাপাও পূর্বি প্রতিমন্তি।" শ্তিনি জান স্বৰূপ, অন্ত স্বৰূপ, মক্ষল श्वतात्र, निका, निवन्त्री, नक्षळ, मर्काराहणी, मर्काञ्चन, नित्रस्य, निर्काशन, अक्रमाज, অবিতীয়, মাঠাণজিলান্, সংগ্র পরিপূর্ণ; কাহারও সহিত ভাঁচার উপনা হয় ন।।" हेशव कीवन। " अकता उत्तारवाशामन्या পারত্রিক মৈ চিকঞ্চ শুভন্তব ভি '' " এক মাত্র ভাঁহার উপামনা দারা ঐচিক ও পারত্রিক ম-**জল হ**য়।" এইটি ইহরে ফল। "তক্মিন্ প্রীতি-**ভ**দা প্রিয় কার্য- সাধনঞ্জ ভন্তপাদনমের।" '' জাঁহাকে প্রতি নরা এবং ঠাহার বিয় কার্যা সাধন করাই তাঁহার উপাশনা।" **बरेटि यागा**तरमत छेशमव।

ব্রাজ্যণ। প্রকার আস্পদ্ শ্রেমর আস্পান্ স্লেছের আস্পান্ আত্যাণ। আজি বেন তোমাদিগকে বহু দিনের পর দেখি-জেছি, কুশন জিজ্ঞানা করি, উত্তর দাগু।

षोगामत (महे कक्षां-भूवं भिष्ठां, स्त्रह-भूवं মাত্র সংবাদ কি ১ এই এক বৎসর ভিনি কি ভোমাদের হৃদয়-মন্দিবে বিরাজমান আছেন > নৎপুজের ষত দূর উচিত, দেই পরিনাণে এই এক বংগর কি উচ্চার সেবা কবিতে পারিয়াছ > ভাঁহার প্রদন্ত। কত টুকু উপাজ্জন করিয়াছ ? তিনি যথন যাহা বালয়াছেন, প্রীতির সহিত ভাষা 🖍 পালন ক্রিতে পারিয়াছ ১ এলানে ক্রি विপश्चि बातक, उभुमानि ~ A (35 व्हेशाटक ? अथारन 🥊 লধিত ব্ৰতেব ভ*্* भरम श्राम भावमः 🔍 भाः मारे ? अशरम क्या अरबर १०८क, १५ ধূর্ব প্রভারক আনেক, ক্লপা পাত্রত মনেক, দ্যাৰ ও ৰাখ্যত হয় নাইছ এখানে ১০০০ ष्मश्री इहेवान यर्थके मसुर्वस्, धर গুণ ত ৰক্ষিত হইয়াছে ১ এখানে সৎকৰ্ষেত প্রাছবন্ধান আনেক, তোমগ্র ভ নিরুৎসার কণ্ড নাই ০ এখানে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বিষয় একখা मछ (उद्देश्य भर्थके म झार्यमा, उद्भाग क वि-एषत ভার উপজিত হয় লাই ? এখানে **সকলে** নমান পুৰ্য উপাজ্জন কবিতে পারে না, তজ্ঞাতে ৷ বের উদারভাগ ত নাম্বাত र्य नार्रे १ (वंशार्त केश्वरतंत्र क्या द्यावनः কবা উচিত, সেধানে ত আপনার জন ঘো-यना कतिएक साथ नारे। दाश (स अन्यद्रत महिमारक मधीबान करा छ, 53, तमशास्त অপেনাৰ মহিমাকে ভ ক্ষাত করিতে যাও নাই > ব্রাফাগণ আমরা কি জ্ঞান ধর্মো এত দূর উন্নত হইরাছি, আমাদের আর खाविट इटेटव मां ? देहा कथन हे मा। व्यामहा (महे मर्वनाकोत मगरक (य कड <mark>অপরাধ করিয়ালি, ভাঁহার আজ্ঞাকারী দাদ</mark> হইয়া কত বার যে তাঁহার আফরা লজ্মন ক-রিরাহি তাহার সংখ্যা নাই। অতএব আজি

দকে নৈলিয়া তাঁহার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিব। এই সমৎসর কাল তিনি যে অম্বপম করুণার সহিত আমাদিগকে প্রতিপালন করিয়াছেন, রোগ শোক, ভয় বিপত্তি, পাপ
ভাপ হইতে যে রক্ষা করিয়াছেন, সহত্তে
কর্ত বিশুদ্ধ স্থপ—আনন্দ আমাদেব জন।
প্রেরণ করিয়াছেন, ডজ্জনা তাঁহাকে আজি
কৃতজ্ঞতা উপহার প্রদান করিব। ভবিষাতে
ভাঁহার আজে লংগন করিয়া ভয়ানক পাপে
পতিত হইতে না হয়, এবং যাহাতে ভাঁহার
কর্থো অনাঘাদে সম্পন্ন করিতে পারি,
ভত্মিনিস্ত ভাঁহার নিকট শুভ বুদ্ধি ও ধর্মা
বল প্রার্থনা কবিব।

ছে নিশ্বপি । অধিল মাতা প্রদেশব ।
ত্যেন্রট শক্ষম প্রতি উপ্রেলাগ করিছে
করিতে আন্না নির্নির সম্বানর অভিবর্গরত
করিলাম। তোমরট স্কেন্দল অক্ষে অধি
নাল ইট্যা এক ব্রুমনের পথ অভিক্রম করিলায়। এই ব্রুমন মধ্যে কছ স্ক্র্যানন ভূমি স্লেকের সহিত প্রদান
করিরাছ, ভাষার সংখ্য করিতে পারি না।
আমানের সংশোধনের নিনিত্তে ভূমি যে
সকল শোক, তথ্য বিপদ্পোরণ করিয়াছিলে
ভাষাতে ভোমারই মন্সল ভাব সম্ভাব করিবাছি, এক্ষণে কোটি কোটি নমন্ধার পুরুক
ভোমার চরণে ক্রজতা উপ্রার দিছেছি,
ভূমি গ্রহণ করিয়া আমাদিগকে ক্রভার্থ কর।

হে মজল দাতা মুক্তি দাতা প্রমেশ্বর!
তুমি সকলের অন্তর্যামী ও সকল হৃদয়ের
অধীশ্বর! আমাদের পাপ পুণা, ধর্মাধর্ম,
উন্নতি অবনতি সকলি কামিতেছ। তোমাকে আর কি বলিব: আমাদের আল্লাকে
গ্রহণ কর. এবং এই মলিন আল্লাকারা শাহাতে তোমার কার্যা দিল্ল হয়,ভোমার মঙ্গল
ইচ্ছা সম্পন হয়, ভাছাই কর। হও পুরকার ভোমারই হস্তে।

হে মজলস্বরণ পরমেশর! ভোমার
মঙ্গল রাজা বিস্তার কর, ভোমার প্রেম শিক্ষা
দাও, আমাদিগকে ভোমার ইচ্ছার অনুগত
কর। পৃথিবীর সর্বাত্র তোমার জয় ঘোষণা
ঘোষিত হটক, ভোমার নাম কীর্ত্তিত হটক,
নর নারী সকলে মিলিয়া ভেমোর মঙ্গল ভাব
বিস্তার করিতে থ কুক।

e openaifa श्रीयः' ·

অনস্বর ব্রহ্ম-স্পাত হইয়া সমাজ ভঞ্চ হইল এবং সকলের মুখে সন্থায়িত প্রি-ত্রতার চিক্ত লাক্ষত হইতে লাগিল।

## ইজিপ্টীয় নত।

১৫৮ দ থ্যক পত্রিকার ১৫৭ প্রস্ত'র পর।

আনুবিদ্ ইজিপট লেশ্র মধো আনু বিস অভ্যন্ত বিথাতে দেবকা চলেন। চলু-দার ইজিপটাযেবা বিশেষত সাইনাপো দি দেশীরেরা ইকাকে অভিশ্য ভান্তি কবিত। কুরুরের ন্যায় ইকার মন্তক চিল। কুরুরই ইকার বাহন। তনি প্রান্তক চিলেন। কুরুরই কি মাইনি দেবার সহচর চিলেন। ইনি দেবভাদিগের সমুদার কার্যেক আরম্ভক ও দুতের ন্যায় ছিলেন। এবং তনি মূত লোক দিগকে যথোপযুক্ত স্থানে লইয়া ঘাইতেন।

থং। বিশ্বকর্মা দেমন এ দেশীর শিশ্প করাদগের দেবতা, থংও অনেক অংশে ইজিপ্টীয় দিগের দেই কপ দেবতা ছিলেন। গ্রীক ও লাটিন গ্রন্থকারের। ইহাকে মাকরি দেব বলিয়া গিরাছেন। ইনি ইজি-প্টীয়দিগকে সমুদ্য় নিয়ম এবং অক্ষর বিনাম, জোতিষ, জামিতি, আয়ুর্বেদ ও অনানা বিদায়ে শিক্ষা প্রদান করিয়াছিলেন। আইবিস্নামক পক্ষী ইহার বাহন ছিল এবং ইহার এই কপ ইক্ষা যে সমুদ্ধ যোরা আইবিস্ পক্ষীর নায় প্রতিমূর্তিতে

আমার পূজা করে। টাইফন • যখন দেবতাগণকে আক্রমণ করিয়াছিলেন, তথন ইনি আইবিদ্ পক্ষীর ৰূপ ধারণ ক্রিয়া পলায়ন করেন।

अगितिम्। जि॰म्थ मिरम माग धतिरन जिन भ र यापि फिटन वर्गत इस, इंहाटड নৌর বুৎসরের আর পাঁচ দিন অবশিষ্ট थात्क। त्रियां (पूर्वी ७३ शाँव नित्य सूर्या, হকুলেম ও শনি ( স্বাটারণ ) হইতে ষথাক্রমে ভিনটি পুল্ল ও চটি কনা। প্রস্ব क्दत्रन। स्ट्रयं। स्ट्रेटच अमितिम् अ व्याक्त-यादिम् धरे छुट भूछ, भनि घरेट इ चारेमिम कना। এनः इकू. निम् इहेटड छ। इकन भूछ उत्पर्शिम् कना उद्याद्य क्रेशाहिल। अध्य পুত্র ভিনটি, পরে কনা ছটি, ক্ষম গ্রহণ করে। দেব ও দেবীতে এই পাঁচটি ভিন্ন ভিন্ন পিভা ছইতে এক মাত্র হ গতে জন্ম গ্রহণ করেন, স্ভর ও ইহাছের পরস্পর ম- । (रापित ও मरहामत्रः मध्यः व्यात्का विश्व কেবল এই সম্বন্ধ চির কংস বর্ত্তমান চিল म। ওদিবিশ্নিজ সভোদর আইদিশ্ দেবীকে ও টাইফন নিজ ভগিনী নেপ্রিস मिवीटक विवाह करतम। हेडिकी जिल्हा এই পাঁচটির বিশেষত তিনটি দেবের পুজাই अधिकडत अठांनड इहेग्न। इन । इंड्रॉटिंग्ड मस्या आंक्रयातिरमत अधिक त्रुखांच आश्र হওয়া যায় না। অনেকে অনুমান করেন, ইজিপ্টায়ের৷ স্র্যাকে ওসিরিস ও চক্রকে আইনিস্ বলিয়া পূজা করিও। উভয়ে স্থাও চল্লের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা ছिলেন।

ওিসরিসের জ্বের সময়ে এই দৈব বাণী
 হইয়াছিল বে, সমুদায় পৃথিবীর রাজা জন্ম
 গ্রহণ করিলেন। ইনি সমুদায় পৃথিবীর রাজা

হটয়াছিলেন। ইান সহস্ত লোচন, তেজোময় ও মঙ্গলদাভা ছিলেন বলিয়া ইহাঁর
অন্দিল এই নাম হইয়াছিল। ইনি ষে
সমুয়ে টাইফনের রাজো গমন করিবাছিল
লোম সেই সময়ে তাঁহাকে স্যারাপিস নামে
আক্রান করা হইড। যেমন আক্ দেবভা
জুপিটারের সাহত টাইটাগনের, পার্নিক
দেবভা অন্মনের স্হত আহি মানের এবং
ভিন্ত দেবভা ইলের মাহত আহি মানের এবং
ভিন্ত দেবভা ইলের মাহত র্লাস্থরের বৈর
ভাব হুইঘাছিল, সেই রূপ ওসিবিনের স্
ভিত্ত টাইফনের নির্ভর বিবাদ বিসম্পদ্

এकका अमितिम (प्रव. (प्रवर्ण ममस्ति । হারে পৃথিবী পরিভ্রমণে নির্গত হইয়ালি লেন৷ সেই সময়ে ভিনি পুৰিবীস্থ লোক-मिश्रातक गञाण। विषयि ७ क्रांषक**्यां भिका**। প্রদান কবিলেন ', ওসিবিস্ পৃথিবা পরি सम् करिया अधावृत्त करता श्रेष के हैं। ফন একটি ভোজেব সংখে ভাঁছাকে সিন্তু কের মধ্যে পুরিষণ রুদ্ধ করিয়া ফেলিলেন এবং লৌহনীনকে এ দিন্দুক বন্ধ করিয়া नील नगीटङ निरमान विशिद्यान । गिन्छुक ए गिएक अगिद्र गाल समीत के शिक्षेट नामक भूश मिशा मानात विभी विभाउि कहन। र्रे जन्हें रिश्त अरे निमान है। कि इस्थत নামেট্লেথ ক বলে অভান শক্তি হইত ৷ এই সমধ্যে ওমিারদের আটাবিংশতি বৎসর वयन् इहेगाङ्ग । कामम (भटमत कम्मू ख मार्छिम् कार्रिका अथरम छ मिन्स्क मिथरड পাইয়াছিল। ওমিরিম দেবের পরা আ-इतिम् (पर्वे । এই छूट जिनांत मण्याम खनियाः মাত্র মস্তকের এক গুল্জ কেশ কাটিয়া কে-

পাতঞ্জল দশনে অশ্বাবা উশ্বত্ত নির্মাণ-কাম
বলিষা থাকে ডাহার অর্থ এই —নিরাভার উশ্ব কুত্তকার
ও কৃষক প্রভৃতির শ্রীর ধারণ করিয়া ঘট নির্মাণ ও কৃষি
প্রভৃতিব দ্টাত প্রশ্ন কবিয়া ছিলেন। এই মতের সহিত্ত
আহিশিক সাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া যায়।

<sup>•</sup> ইনি কোন কোন বিষয়ে যম ও কোন কোন বিষয়ে শক্ষরের ন্যায় ছিলেন।

লিলেন এবং শেকস্তুতক পরিচ্ছদ পরিধান 🐇 হয়৷ ইভস্কল গে*ছ* নি**ন্দুক অন্বে**শণ কৰি**তে** লাগিলেন, গ্ৰেষাহাকে দেবেন, ভাছাকেই 🕆 ঐ পিন্দু কের মংবাদ জিতাগো করেন। এমন মন্দ্ৰে কৃষ্ঠ ও ব বালক ভাগেকে বানল : (र. मिन्द्र के बीन समीद ले। (कीक भूध । प्रथा । মনুজে পতিত হইলাছে: অনন্ধ আই- : लिन देन्द्र दानी भागा अप्याक इकेटलन एवं, रमही मिन्छुक मार्ग्स श्रीडिक इन्द्रेन कामाखाः, জুফান উপাত্তিত হয়, ভগোগেছ নেই মিন্দুক मन्द्रपत औतः खी व हिन्स् मासक मदम देल-विक्र हो। एथीन गर्नक छ। जन ए छ-लहरूर अक्षेत्र ज हिला। (मन्जूक्ति टाइ। र किंध्दर दिवन में १० ध । इस सम्रज्ञ । मह कुन গুলি প্রক্ষার মণ্যুক্ত হর্মা। একটি এক। গু व्या ह ए। ५०० । मिन्छु हिंदि । नई खन, ए নক্ষেত্ৰ চলাৱে ৮ বুক্ত ২ইব আক্ষেত্ৰ ভাষত কার ১০খা এলন। তুন্যমন্তির রুম্ম ভাব । व्यक्ति भागा व्याप्त व्याप्त व्याप्त विक्रिय প্রক ধ্ ভবনের একটি স্থান্থাণি কর नाइका: पार्शनम् । भी देननवादा हा : এই নংবাদ ভাষ্যক ছইয়। বা**ই**কান দেৱে धरम विशिवम कार धक कभी करिंगि-করের প্রশ্নে উপর্বদান করিবা রেখন ক-विष्ठ तो शदलन । এই भगाउँ वाक्र **अवदन**व अप्रकेश नाभी भाग शहन जैशिक्ट रथ। জভোৱা আইনিদ্ দেবীৰ **সন্নিটত হইলে** ক্রিত্রে গালে ইউতে সহল্পালেচ্যা সৌরভ শ্হণ ৰ হলপত লাগিল, লাদীরা এই সংবাদ वाक्रमं इसी तक अमान करत . রাজমহিধী এने मध्दान अपन्य कडेया (लाक **वांता आहे**-ান্দ দেবীকে স্ব ভব**নে আনমূন করিয়া** আগনার শিশু পুত্রের ধার্ত্তী করিয়া রাধেশ। অংগ্ৰিম দেবী দেই শিশু**টাকে স্থনা না** <sup>দিয়</sup> অস্কৃতি পান করাইয়া রাখিতেন। এবং

প্রতি রাভিতে, ভাষাকে অমর করিবার মি-করিলেন ৷ অন্তর অতিমতি ব্যক্ত হ- ুমিত অংগ্র মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া স্বয়ং সেই স্তম্ভটির চতুর্দিকে বিলাপ করিয়া বেড়াই-তেন। কোন কারণে রাজমহিষীর অভঃ-করণে সন্দেহ উপান্তত হওয়াতে তিনি এ-নলা জাগারিত গাকিয়া আইনিস্ দেৱীর এই নকৰ আপপুৰ প্ৰভাক্ষ কণিচলুন এখং পুত্রটিকে অগ্নর মধ্যে নি,ক্ষপ্ত দেখিয়া ভাষ সীংকার করিতে লাগিলেন। ८ म है। हा म्कूमान अम्बद्ध लाइ विशिष्ठ करता ज्यन वार्टितम् (क्वी निक्रमूहर् ধাবর্ণ করিয়া মেই স্তুর্তী প্রার্থনা করিলেন। धनपुत (गई उन्न ७३ कित्य लगाया (गई मिन्यूकि मर्भन कविता धरन छेटेछ:यद রে।দন কবিটে লাগিলেন যে ভাগে এবিগ করিলা সেই শেশুটি প্রান্ত্রাপ করিল: তগন তিনি রাজার জোঠ পুর ও গের দি-म्बूक मर्मा ७८)(इ। द वहेता होक की एम्मा-লিমুখে গমন করিলেন: আতংক'লে গা্থ मस्या मी अम् नामक नेनिष्ठ कुकान छेपाञ्चल হুট্যা তাঁহার প্রনের ব্যাঘাত করে, ডা कोट के कि कि कि कि के के कि कि कि कि कि कि कि कि मित्रिन। जनमञ्ज्ञ अरु घरणात् भएषा 🕿 विके कहेंगा मिटे निस्तुक एक्यकिन श्रुद्धक ওাঁদরিম প্রেব মৃত দেও লভয়। রোদন কারতে পাগলেন। ভাঁহার দমভিব্যাহারী রাজপুত্র রোদনের কারণ অনুসন্ধান করিছে ভাঁখার দালভিছ কটবা মাত্র দেবী ভালার প্রতি কঠোর কট।ক্ষপতি করিলেম, রাজ-পুত্টি অমনি প্রাণত্যাগ করিল। **অনন্তর** আইনিদ দেবী স্বামীর মৃত দেহ সঙ্গে । हेशा हे कि औँ स्मार्था कार्यम क्रि**रण** में।

দিন পরে তিনি শ্বামীর মৃত দেহকে অতি গুপ্ত ভাবে পুকায়িত রাখিয়া রুটস্ नगदत निक शुक्क रहोत्रग (बारश्रारकां) (मबरक पिथिटा जिटलन। अभिद्रक के दिक्स शक

পক্ষের রাভতে ইতস্কত অন্মেষণ করিতে করিতে ওসিরিস্ দেবের মৃত দেহ বাহির করিয়া ফেলিলেন, এবং তাহা চতুর্দশ ভাবে ছেদন করিয়া দেশের চতুর্পিকে विकिश्व क्रिया पिटनम। आहेरिया (पर्वी এই সংবাদ শ্ৰেশমত এক খানি সুদ্ৰ নৌক। আংবোহণ পূর্ব্যক দেশের চত্র্নিকে অস্বেয়ণ कतिएक कैंबरण उत्पापन भाष्ठ व्याश्वाहरी स्ति। এन शङ्बीत नतीत स्टल बिकिश इहेम्डिल: लाल ए। ऐम. एन्यम ७ छ-क्निक्रिक्त अने जिविध छ। जीत मण्डमा ভাহা ভক্ষণ কৰিলা কেলে। এই জনা के किली देवन। अबे किन श्राक्त म्हरमान দিপৰ অভিশার স্থা করিত। আহিসিম मित्री कांत्र कि करदन समित्र स सक **এ**क मार्य विद्याल रहेराजिल कालम सामक কন্ত্র পেই অঞ্জার। তালা পূর্ণ করিলেন। এছ দিনেৰ প্ৰ- ও'নবিণ্ছৰ মৃত্যু ভবন **৯ইটে প্রতাহিত হ**ইবা নিজ পুজ ছোবদের निक्षे छिपछि इन्हेंद्वर, द्राप्त्र १७ পুর্বের পিছার ভিত্ত-বিবোলী টাণ্টক্ষনতে যুক্ষে পৰাস্ত ও রুদ্ধ করিয়ালিলেন। কিন্তু আইামস্ দেৱী ভাছাকে মুক্ত কৰিবা দেন। **ং**লার দ**্দেই কোধে জননীর মস্তকের মুক্**ট का छ्वा नम। ভाষ্তে ४९ वृधमञ्जूदान नात्र এकि मुक्ठे व्यक्तिश व्यक्तिम्हा অদান করেন। অনন্তর আইসিদের গর্ভে ওসিরিদের একটি ক্লশাঙ্গ পুত্র উৎপন্ন হন. তাঁহার নাম হার্পে:ক্রেটিস্।

## স্ত্রীলোকের রচিত প্রার্থনা।

বেথানে কোম মন্ত্রোর বাঞ্তা নাই. কোন প্রচারকের যত্ন নাই, কেবল ঈশ্বরের হস্ত নিজ্ত ভাবে কার্য্য করিতেছে, আমা-দের ব্রাশ্বধর্ম সেখানে কি মধুর বেশ ধারণ করিয়াছে, পাঠ দং প্র অবগত হইয়া ঈশ্ব রকে ধনাবাদ করেন । কলেক তা ানবাদী কোন পরিবার হইতে একটি রচনা প্রাপ্ত হইয়াছি। তাহাতে নিপুন লেখনের নাম কোন আড়গ্র বা অলক্ষার নাই , কিন্তু কেবল পরিত্র কদযের সরল ভাবে ভালা আলক্ষ্ত হইয়া আছে। যদিও ভালার কোন কোন স্থানে রচনাগত কিছু কিছু দোষ লগিত হব, কিন্তু আমরা ভালার কোন পরিবর্গ না করিয়া অবিক্ল নিম্নে প্রকাশ করিভেছি।

#### त्यार्थकाः)

কে বেনালন্ জেলাৰ নিকট আলে এই কাঠনা কৰিজেছি, যেন সংসাবের সংঘাত মুক্ষ হুইয়। ভোষাকে না ভুলিল পাকি ও যুহাতে उड्राचीत भी बज पुरशत खिथिकारी अवैष्टा निष्म, सुख भि के किएक पाति। अहं असे वाधेव नकटन লাভ হবিষ্ ভোষাৰ উপাসনা ক্রিকে পারি। হে ৮ বেশব। কোমার সন্ধারত কভ ভগরাধ ক রিখানি ভাষাবন্দ কাবলৈ অক্ষম, এই নিনিচেট ক্ষা প্রহোষা করি। ছড়ি, আমারাদগ্রু প্রাণ্ড ছ-ইতে মুদ্ধ কর, এবং সংকর্ম্মে নিম্নান্ধ কর। ভূমিই रक्त कराहरार संकर एउ.स. क पुलिय, आश्रहा द्यावय यालन क.यहा. छ। हा नद्रा (क प्रुक्त) व ুক্ল, হাল্ডইটে আম্বা একিমন পুল সম্পদ मसूषाम প্রাপ্ত रणना জीवन याद निकार विद्याहरू রিষ্ট্রেট্রেস্ট্রেয়া রুচিয়াছি, আভারণ আমার-দের সফলের কিঁচত যে পশুরুৎ মুদ্ধানা হইয়া জোনাব আবিলেনায নিম্ভুল থাকি। হে ককণা भग आमात करे चुन आर्थना धरून कता

দে পারনেশ্বর পার কর এই সংসার পারাবার।
চাশিয়া দার্যীয় প্রতি, হর মম এ ছুর্গন্তি,
আমি অভি মূচমতি, নাহিক পর্যোতে মভি,
কি হইবে পরে গভি, ভাবি ভাই নিরস্তর।
কুপা চুন্টে কুপাসিমু, পার কর ভ্রসিমু,

এ অধীন জনের বন্ধু, ভূমি বিনা নাহি আর।

#### মূহন পুস্তক

় - ভারতে স্থা । শান্তি-রুম পুর্ণ চম্পুকাস্য। শ্রী নরদা এমান বার প্রকীও।

ে। ক্ষাজি ভিরু বিদ্যাল্যাদের উচ্চ গোনীচিত্য থিচার বিষয়ক প্রাক্তার। দেন হাটা দেশাহিতৈ যিশী সভায়ে পঠিত। জী সামান্ত্রীশ দেন বিষচিত।

থে দুই খানি পুন্তক চাব। চইতে প্রকাশিও ছইনাছে।
ক্রিক্ত বর্ণাপ্রস দ্বাধ নহাম আগন নাম্ব জাও জাত্রর

কর্ণা নক্ত করিবাচেল। প্রবাল বিষ্যুক চর্চ মত হয়

হংল বর্ণােল করিবাচেল। প্রবাল বিষ্যুক চর্চ মত হয়

ইলোগােলাবা হিছা সম্পন্ন ছইতে পাবেল প্রস্থানপ্রকল করিবাল কর্পা ভলিপ্রােল ন্য যে আনর। পোক দ্বােষ্ট নিপ্রিচ হলে সম্পােশ ব্রেভি নক বাবে প্রশামিলা আল্লাহ্য করিব।

ক্রোবে প্রালাক বিষ্যুক্ত জানি ক্রাজ্ঞানাল ক্যা ক্রাম্ব ক্রোবে প্রালাক ক্রাম্ব করিব। সম্বা ক্রাম্ব প্রান্থ ক্রিতে পারা হায়। শান্ত বর্ণা সম্ব ক্রাম্ব প্রান্থ ক্রাম্ব বর্ণা বর্ণা ক্রাম্ব কর্ম হারার হলেল ম্বার ক্রান্থ ব্যাম্ব ক্রাম্ব কর্ম হারার হলেল ম্বার

দিত' দুস্তক শ্ৰ'ক শিষ্ক কৰামলাল সেন মহাক্ষ भी । र्रा किया लिखान विश्वता स व्यक्ता व लिखा राजिन काकार खेखमा । पर्वे किस्तु कि स्वर्ध रहन में सुध्याल कार्याल অলাব জ্লাস্ কৃত চা জায়ন স্মানি বাম না যে জ্ঞানালি कर भारत । पास वे कारियों का मिला मिला बारमाव । জার্মান নার্ম र मिश्रा ५ मा इस्स अ ही का कि । बार सन 雙行一(22年)州市 马克马首6、 山路14 fm (空气)16号 降\* प्लोक्स लिक्स १८ किछि अधारीत **उ**च्छानेन न न दे किस Z : 6 51. W . সন্তাপি মানৰ এ বিষ্ণে একশানি ৰ चिल्कमधु इक क अ वह गाउँ क्ष्मिन १५ व्हाना हो ह 宇子林 古京1016 3111111 福門鄉,在面面八起去 海-कर १ (च अभ्यान १०१न शेपकेट्स खाझाफा विस्कान म-रकार आहे। उपकार का भटा दे गार्चक को पालीर अन्तरर 长鸡 新姓尼语 公司部门 章章 ক্রিটেট শেক্ত আ জন ৫৪'পাৰ জাভিত দালিক প্রবালী যে প্রিশুদ্ধ ও উ-কৃষ্ট ८८७ छोडा प्रिन्तन - एकान के होतालकर नोमक धार व '४' वी 祝りて書り(お) (写す) कीर्नका करत राजा ७ ५ पत ७/८१७५ र महागरकः य किका, दश्वासीएक च्छान अध ध्यांत छेल्ली भन व वर्तन नी छर छ। झारल क्या वह १ कुड अवदर्श्वीरक अपूर्वितक लेपात्र सार इस्कार्ण ऋषी साम्बर्धिक तेल क्य- 'ली १७६१ ५ि७ छ। ३ ल' ठेक्टन विट्युटम, स्बिट्यम ।

দ্শী হকু শুষ্ঠা। এই মাদিক পানিবা দুই ল কা জেকাতি বংগাছে, ইহাৰ উদ্দেশ্য ও অনুবাধিনী দ্বিকাৰ উল্লেখ্য স্থানি এই জন্য এ প্ৰিকা খাদির আহি আমৰ। ভাইডাৰে দু উপাচ কৰি। এ প্ৰিকার স্ব-হিড আমনিবিধের । বক্ষণ স্থান ভাইছো বিষয়ে অধিন কলি হাই ল , কেবল পোননা কৰি যে কট গ্ৰিক কলোৱাৰে উপবার্গ হইবা চির্ছায়ী হউক।

গ। এগি ডিন্ট পীড়ান ি কিংসার উপায়। এই পুস্তক ।
গানি ইংর'খি ভংগায় লিগিও। ডাক্কারেরা ইহার দেগি
নাগ বিচার ভংগান। জানরা এই পর্যান্ত বলিতে পাবি ।
ইহার চিনিৎসার উপায় আকাশ করা যেমন আবশাক,
ইব র কারণ আবিস্থার করা তাহা অপেক্ষা অধিকঙর।
আবশাক।

# বিজ্ঞাপন

শ্রীযুক্ত প্রভাপচন্দ্র মন্ত্রমণার কলিকাতঃ ব্রাহ্মনাচের দানসংগ্রাহক পদ পরিভাগে করিয়াছেন, অতএব দাত রা প্রভিজ্ঞাত দা-সংস্থিক দান, শুভ কর্ম্মের দান ও দক্ষিণা প্রভৃতি সমুদান দান কলিকাতা ব্রাহ্মসমা-জেন সম্পদি চ শ্রীযুক্ত দিভে ক্রমার্থ ঠাকুরের নিকট প্রেরণ করিবেন। দাতাদিনের অধি কাণ্দের অভিমতে এই দানের টাকা ব্রাহ্ম-বন্ম প্রচাবের কার্যো নিয়োজিত হইবে:

> জ্ঞী দেবেন্দ্র ।থ ঠাকুর। কলিকাড। রাজসমক্ষের টু জ

ট্টালিবের অনুমতন্সারে প্রীযুক্ত অন্যোধানার প্রকড়ালী মহাশ্য তত্ত্বো দিনী কৃত্রিকার সম্পাদক হুইলেন, এবং শ্রীযুক্ত আনন্দরন্ধ বেদান্তবালীশ মহাশ্য কালকাতা ব্যাহ্মসমাজের সহকারী সম্পাদক হুইলেন।

> জী **चिट्छल्म নাথ ঠাকু**ৱ . বলিকাতা ব্রাক্ষমাজের সম্পাদন

# অনুষ্ঠান পদ্ধতিঃ।

জাতকর্মনামকরণোপনয়নদীক্ষা বিবাহাস্টেশ্রেফিন্সান্দৈতি-সপ্তবিধসংস্কারাজ্যিক। 1

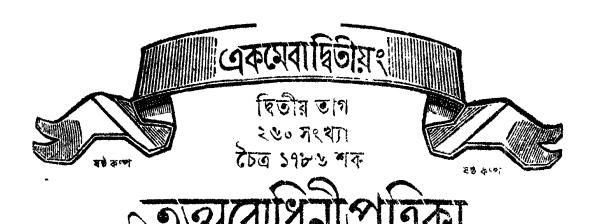
এই পুস্তক প্রস্তুত হইরাছে,মুলা ॥০ আটি আনা। যে ৰূপে ত্রান্দিগের গৃহধর্ম সকল অনুষ্ঠিত হণ, ইহাতে ভাহার আদর্শ বিবৃত্ত আছে। ঘাঁহারা এই পুস্তক প্রার্থনা করেন, কলিকাস। ত্রান্দ্যামাজে মূলা প্রেরণ করিবেন। শ্রী আননদ্যক্র বেদান্তবালীশ।

भा अर्गन्त्राध्य ६ वन छित्। शामा १ अलिनाष्ट्रा दो कममारकत महकाती मच्याहक।

#### নিঘ তি পত।

প্রতি প্রান্থ সান্থ সরিক ব্রাহ্মসমাজ . ১৬৯ ইজিপারীয় মৃত . . . . ১৮০ ব্রীলোকের রচিত প্রার্থনা . . . ১৮৩ এই তত্ত্বোধিনী পত্রিকা কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজ হইতে প্রতি মাসে প্রকাশিত হয়। ও স্থান্ধন মুক্তম মান্তি সম্প্র

১৯২১ কলিগভাস্ক ৪৯৬৫ :



রশ্বতিকমিন্নপ্রকাদীয়ানাথ বিশ্বনাদীতদিদ সর্বামসূত্রথ। তদেব নিতাং জ্ঞাননতঃ নিতং স্তল্জান্তব্যবংসক নবাবিতীয়ং সর্বাসাপি সর্বানিয়ন্ত সর্বাভ্যমর্ববিৎসর্বশক্তিমন্ত্রুবস্পূর্বজাতিম্যিতি । একস্থাত ইন্যবেল্পানন্ত্র ত্রিক্টমন্তিক অভস্তবতি । তলিন্ প্রীবিজ্ঞা বিধেন্যায়াধনক ওপুপানন্দেব

## নেদিনীপুরে গোপগিরিতে বসন্ত কালে ত্রন্ধোপাসনা।

पान पामात्रिकत्वत् वामकीय उरमत्वत्र ান্বস উপস্থিত। অদ্য আমারদিগকে তিন अकात त्नोन्नर्या अर्थे श्रांत्म व्यांकर्यं कति-पारह; दगरखत मोम्म्या, नथा ভাবের भोक्त्यां अवश्येत्रद्वतं भोक्यां। यमञ কালে জগতে নব জীবন ও নব বদের আর্বি-জাব হয়; বন ও উপ্রন সকল নব প্লব ও মুকুলকুলে পরিশোভিত হইয়া চিত্ত হরণ করে; পক্ষিগণ নূতন স্ফুর্ত্তি প্রাপ্তি পূর্ব্তক অবরুদ্ধ কণ্ঠ নকল পরিমুক্ত করিয়া নঞ্চীত-स्था वर्षण करतः; ज्यपूर्व मनतः ममीत्र मनत मन श्रवाहिज रूरेश महीत मर्पा जान्हरी ছথের সঞ্চার করে। কিন্তু বসস্ভের সৌ-न्मर्था व्यापका मथा खाद्यत मोन्सर्था कि (अर्थ । यथन ऋगन्न ऋगन्नरक **आकर्वन क**रत्. यथन এक महान महा-निष्ठं ঈश्वत-भर्भार्ग मन जना मत्रल गडा-निर्छ मेश्वत-প्रताराग म-বের সৌন্দর্য্যে মোহিত হইয়া প্রণর-পানে বন্ধ হয়, সে ভাবের সৌন্দর্যোর নিকট বস-তের দৌন্দর্যা কোধায়? কিন্তু যিনি বসতের

मोन्द्रयात शकि कड़ी अन्त्रशा ज्वात्वत (भी ন্দর্যোর জনয়িতা, ভাঁছার দৌন্দর্যোর বি গীম। আছে ১ তিনি দৌকর্মোর প্রত্রবণ ভাহা হইতে সকল জোতি, নকল শোভা अक्न कोन्स्मा विनि॰एङ इक्टिड्इ। <sup>रिक्</sup>नि शुर्भत प्याकत, फिक्कि क्रीकरयान मा भव । अध्यादन अञ्चल्पा छान्छे छ। हात (मी-साया। तम भोनमद्यात महिक हटकात म-म्लर्क मारे, स्म त्मोन्मरयात महिल भवात নগন্ধ নাই। সে সোলতা যে থাকি কৈবাকৰ ক্রিভেচে, ভাষ্য আয় চকু কির) ইবার সাধ্য इहेटकर ना। याकूल अन्तर्थिक कियन् অংছেন,কিন্তু আমাদের ব্যক্তিলভা কোথার ১ প্রেমী যে চলা যে প্রেমাস্পদ ভাষার প্রতি প্রীতি দুটি না করিলেন সংযে ব্যক্তি ঈশ্বরের নৌক্ষা নিরাক্ষণ করিবার নিমিত ব্যাকুল হয় ও তাঁহার নিকট প্রার্থনা করে, তিনি ভাহার মহাপে আত্মস্ত্রপ এক শিক্তরেন। श्रेश्वर (य का क्रिक श्रीत भोन्मर्र्यात श्रीक्रफ উপাদক দেখেন, তিনি তাহার মনশ্চস্থুর ম-শ্ববে আপনার দৌক্ষী ক্রমশঃ অধিকতর প্রকাশিত করিন্তে থাকেন। এ অবস্থাতে माधक " উৎमदा९ উৎमदः याप्ति स्त्रीए

স্বৰ্গণ স্থাৎ স্থাং "ভিৎসব হইতে উৎসবে,
স্থা হইতে স্থাে, স্থা হইতে স্থাে উপনীত হযেন। এই কপে তাঁহার পাবিত্র
যৌবন বিগত হইয়া যথন তাঁহার বাৰ্দ্ধ্যা
উপন্থিত হয়, তখন কি তাঁহার আনন্দের
শাস হয় / কখনই নয়। বরং জাহ্। অস্তকালীন স্থাের জ্যোতির ন্যায় আরো গাঢ়
ওপরিপকু হয়। বাহে বাৰ্দ্ধকাের চিক্ল কিন্তু
আন্তরে চির-যৌবদ ও চির-বসন্থ। এই
বাহ্য বসন্ত সেই আধাাত্মিক বসন্তকে স্মরণ
করিয়া দিতেছে। ফিনি বসন্তের সৌন্দর্যাে,
সথা ভাবের সে ক্যেম্য ও স্থীয় সৌন্দর্যাে
বিরাজ করিতেছেন, আইন অদ্য আমরা
নকলে মিলিত হইয়া তাঁহার গুণ গান করত
আমারদের জীবনকে নার্থক করি।

७ একনেবাছি टौर्स

#### জীবনের প্রকৃত ব্যবহার।

৫৮ সংখ্যক পত্তিসভি ২৫৮ প্রষ্ঠ র পরঃ

किशोषां।--यि जूरि शौहदान्निड ३-ইতে ইচ্ছা কর এবং যদি ভোগার কর্ণকুষর व्यमश्मा-इति जुल्डिक्ट (वर्ष करह, छाइ। হইলে জড়তা পরিত্যাগ পূর্বেক কোন মহৎ বস্তুর প্রতি লক্ষ্য হৈর রাখ। যথন কোন মহৎ কাষ্য সম্পন্ন করিতে প্রবৃত্ত হইবে, তথন সর্বদা মনে করিবে যে, কোন কায্যই একে বারে নিজ্পন্ন করা যাইতে পারে ন।। ए वर्षे-अक लक्ष वाक राक्तिक हांश अमान ক্রিতেছে, ইফা এক কালে কণামাত্র বীজে নিহিত ছিল। যথন যে কার্য্যে প্রবৃত্ত হইবে, মনোমধ্যে প্রতিজ্ঞা করিবে, যাহাতে ভোগাকে কোন প্রতিবাসীর অমঙ্গল চিন্তা করিছা উল্ভির পথে গমন করিতে না হয়। কোন প্রতিবাদীর উন্নতির সহিত তুলনা করিয়া আপনার উন্নতি পরিমাণ করিতে ঘাইও না . প্রতি দিন িশ উন্নতির সহিতই

নিজ উন্নভির তুলনা করিবে। অথভিত্ত অধ্যবসায় অবলম্ব করিয়া অহরছ আপ-নাকে অতিক্রম করিতে যাওয়াই যথার্থ জিগীবার लक्ष। घटनात अत्र लाएड ঈর্ষান্থিত হইয়া জিগীবা রুভি চরিতার্থ করিতে ব্যা**কুল হইও না। তুমি এই রূপ** প্রতিজ্ঞা করিবে, <sup>\*</sup> যে অদ্য মন্ যেকুপ অএবর্ত্তী হইয়াছে, কল্য আফি যত্ন সহকারে দৃঢ়ব্রত হইয়া আরও অত্যে গমন করিব। এই ৰূপ প্রতিজ্ঞা প্রতিপালন করিতে পারিলেই অচিরাৎ মহান্লক্ষ্যে উপস্থিত হইতে পারিবে; এবং তোমার জিগীযা র্ভিও যৎপরোনান্তি চরিতার্থ হইবে। এই ৰূপ জিগীয়ু বাক্তিই অনন্ত উন্নতিকে লক্ষ্য করিয়া শ্রেষ্ঠ হইতে শ্রেষ্ঠতর লোকে গমন कट्टरन ।

मभवावमात्रीटक अनात्र कात्र। मीह-११६-বীস্থ করি**তে চেফী না ক**রিয়া স্বয়ং দুট ব্রত ও কমিন পরিশ্রম দ্বারা অধিকতর শ্রেষ্ঠার লাভ করিতে যত্রবান্ হইবে: তাহা হহলেই যশের সহিত সফলত। ল।ভ कतिरव। कीशीयु वृक्तिमान् वाकि राष्ट्रभ মহৎ কার্যোর প্রতি লক্ষ্য রাথেন, ভাদুশ मनत्क महर कित्रा चक्रांचा माधत्न उरुभत হন। তিনি পৃথিবীয়া সকল বিশ্ব বিপত্তিকে व्यवस्था कतिशे देश्या ७ माहम क्षेत्र भक ছয় সহক: রে উচ্চতম লক্ষ্য স্থানে উ**ডী**য়-মান হন। তিনি সর্বাক্ষণ সাধু লোকদিগের দৃষ্টান্ত অধুরে জাগৰক রাখেন, এবং সেই সকল দুষ্টান্ত আপনার কার্য্যে পরিণত করিতে সর্ব্ব প্রকারে যত্ন পান। ভিনি উচ্চ কার্যো লক্ষা রাখিয়া শরীর মন সকলি, সেই कार्रगढ़ जना छेरमर्भ करत्रम अवश्र पि शर्या-

কর্তৃক সেই কার্যা স্থসম্পন্ন না হর, নে পর্যান্ত কথনই বিআম করেন না; কিন্ত যখন তিনি আপনার উদ্দেশ্য সিন্ধ করেন,

ভখন ভাঁচার অন্তঃকরণে কি এক অনি-र्याजनीय आनत्मत उदम उदमातिक इ-ইতে থাকে, তাহা অন্য লোকের স্বপ্নেরও অগোচর। কেবলই যে তিনি আনন্দ উপভোগ করেন এমত নহে কিন্তু তাঁহার অত্তে পৃথিবী চিরকাল তাঁচার নাম পৃষ্ঠ-দেশে পারণ করিয়া থাকিবে। পরবশদিগের সমস্তই বিপরীত। তাহাদি-গের অস্তঃকরণ গরলে পরিপূর্ণ। তাহারা যাহ। কিছু করিতে যায়, তাহাতে তত দিন আপনাদিগকে উন্নত বোধ করিতে পারে না, যত দিন আশীবিষের ন্যায় অন্তর্গরল वाहित कहिया व्याख्यांगी मिनाटक विवन छ ভাকর্মণ্য করিতে না পারে। गर्टकिंग्डे विषाटम পরিপূর্ণ দেখা যায়; বিশেষতঃ যথন ভাহার কর্ণ কুহরে ভাহার প্রতিবাদীর উন্নতির সংবাদ প্রবিষ্ট হয়, তখন তাহার মস্তকে যেন বজাঘাত পড়ে এবং পাছে প্রতিবাসীরা তাহ। অপেকা অধিক উন্নতি লাভ করে এই আশস্কায় ভাগার অন্তর্দাহ উপস্থিত হয়। ঘৃণা তা-হার অন্তঃ করণে সর্বাক্ষণ রাজত্ব করি-তেছে, এক মুহূর্ত কাল যে তিনি মনের আরামে কাল যাপন করিবেন, ভাহার কিছু মাত্র সম্ভাবনা নাই। পরোপকার কাছাকে वरल, चलिए लोक मूट्थ धवर दावहाद জানিতে পারে, তথাপি তাহাকে তাহার অনুষ্ঠানে কখন দেখা যায় না। স্থতরাং ' আত্মবৎ মন্যতে জগৎ ' আপনার ন্যায় সকলকে দেখিয়া এমন স্থন্দর সংসার ভাঁহার পকে বিষবৎ হইয়া উঠে। তিনি যদি উল্লের সমব্যবসায়ীকে ভাহা অপেকা অধিক উন্নত দেখেন; তাহা হইলে ভাঁহার সমবাবসায়ী বে যে কার্যা করিয়া উন্নতি লাভ করিরাছেন,সেই দেই কার্য্যের দোবানু-সন্ধানে রত হইয়া কি উপায়ে তাঁহার আর

উন্নতি না হয়, স্বতঃপরতঃ তাহার চেফা পান। কিন্তু দেখ এতাদৃশ অন্যায়াচারী অহিতকারীর মঙ্গল কখনই সন্তবে না; সে যাদৃশ লোক সকলের উন্নতির কণ্টক স্বৰূপ, তাদৃশ আপনি আপনার উন্নতির কণ্টক স্বৰূপ। অবশেষে, সে এতাদৃশ স্বাধীন মনুষ্য হইয়া তন্তকীটের ন্যায় আপনার উর্বাজালে আপনিই যত্তবন্ধ হইয়া পড়েন, প্রতিবাদীর মঙ্গল ঘটনা কালসপা ইইয়া সময়ে সময়ে তাঁহকে তত্তই দংশন করিতে থাকে, সে মূর্য আর এক পদও পলায়ন করিতে পারে না।

স্থবুদ্ধি।--সর্ব্ব ক্ষণ স্থবুদ্ধিকে তোমা मिटशत व्यक्तःकतर्ग छोन निरंत, (मश (यर **ध**क বারে। স্ববৃদ্ধির কথা অবহেলা না কর। স্থ-বুদ্ধি ধর্ম্মের প্রবর্ত্তক এবং ইহাকে অবলয়ন করিয়াই শাণিত ক্ষুরধারের ন্যায় ধর্ম পথ দিয়া চলিয়া যাওয়া যায়। জিহ্বাকে সর্বাধ ক্ষণ বশে রাখিতে,নভুৱা ইহা ভোমাদিগের এতাদুশ উপকারী বস্তু হইরাও উদ্বেগেব কারণ হউবে। কাণ, খ্রা ও কুক্তকে দেখিয়া কথন উপহাস কবিবে না। ঘাঁহারা লোক দিগের কিঞ্জিংমাত্র তুর্বলত। দেখিয়া উ-প্রথম ক্রিয়া থাকেন, ভাঁহার। নিশ্চয়ই উপহাস স্পেদ হন। অধিক বাক্য বাবের সময় ক্ষেপ্ণ করা নীচ অন্তঃকরণের কার্যা, ঘাঁছাবা অধিক বাকা বাষ করিতে প্রিয়, তাঁহারা সভাব অতান্ত অহিতকারী। তাঁহার বাকা শুনিতে শুনিতে কৰ্ণ ক্লান্ত হইয়া পড়ে এবং অপরা**পর ব**ক্তাগণের বাকা, **যাহা** অবণ করা অতি আবশাক, তাহা তাঁহারি বাক। জ্বালে জড়িত হইয়া বক্তার অন্তরেই নিহিত থাকে। আপনার গুণের কদাচই গরিমা করিবে না; যে হেতু স্বীয় গুণ প্রকাশের নকে নঙ্গে সাধুদিগের তাচ্চল্য উপস্থিত काशंदक कुछ छान कतिदव ना,

রেণ ইহাতে অনেক আপদ্ উপস্থিত হই-অধিক কৌভুকে বন্ধু-বৰ সম্ভাবনা। বিজেদ হইবার যথেষ্ট সভাবনা, ঘাঁহারা জিহ্বাকে শাসনে না রাখিতে পারের, টাহারা সময়ে সময়ে বিলক্ষণ ক্লেশ পাইয়া **ভো**মার যে ৰূপ **অবস্থা, জুমি** थाटकन । म्हें बंश कीवदनत छेशदयांशी खवा गकव নঞ্য করিবে। **অ**ধিক আয়াদ পাইয়া অকি-ক্ষিৎক: স্প্র সঞ্য় আবিশাক নচে, যে চেডু च ऋरथंत উদ্দেশে তুনি गেই দ্বা मधः। কারতেছ, তোমার সপার করিবার দুণখের স্কিত ভোমার ভবিষাং **স্থাবের ভূলন**া করিলে সুখের অংশ অতি অণ্পই থাকিবে। দক্ষয় করিলে তুকাবস্থায় স্থায়ের কারণ **ब्हेरव, विस्तरमा भूक्तक छ**ावात मञ्जूष করিবে। দেখা ধেন কোনার আনাদ <sup>२०</sup> ९क वाश-माथा मा ६४, छ। है। इडेरल **शर**त পশাবাপ আদিয়া উপত্তিত হইবে। তে। ম: দীভাগ্য যেন ভোমার বিচ্চাক, ১, কে এবং পরি মিতাচারতে নক না অরিয়া ফেলে। যিনি অধিক আভূদর ভাল বাদেন, উস্থাকে পরে আবশাক মত দ্রামা পাইয়া খেদ ক-রিতে **হয়।** অনাকে বিপ**দে** পড়িতে দেখিয়া আপনি সভর্ক হইবে, এই স্থানেই লোকের বিপদ্ভোমার সম্পতির কারণ **হইবে।** 🗝 প্রের দোষ কেথিয়া আপন দোষ সংশো-ধন করিবে। যদনধি নাকোন ব্যক্তিকে উত্যৰণে পরীকা করা হয়,ভদবধি ভাছাকে বিশাস করিবে না; এই জনাবে ভুমি সহল লোককে কোন কারণ ব্যতীত আবি-খাল করিবে, ভাগাল নহে, বে হেছু এতা-দৃধকামে। কদবাতা প্রকাশ পার। প্রথন কোন উপাবে কোন ব্যক্তির **অন্তর** বংহু বিশেষ ৰূপে জ্ঞাত হইরা তাঁহাকে সৎ বলিয়া বিবেচন। হয়, ভাহা ংটাল সেই াজিকে তোমার অন্তর ছইলে দ্বীরুত

করিও না; এতাদৃশ বাক্তি অমুল্য নিধি প্ৰৰূপ বলিলেও অত্যুক্তি হয় না। शरमत मदक मृदक याँश्वित्र क श्री श्र ছওয়া যায়, তাঁহাদিগের কুপা **প্রার্থনীয়** কথনই হইবে না; ভাঁছারা ভোঁমার কাঁদ স্বৰণ নিশ্য জানিবে। যাহা কল্য আৰ খাক হইবে, তাহা অদ্যই সমস্ত ব্যবহাস कता रकांन मर्फ विट्या नग्न; श्यात रच वस्त रकतन विभारत कात्। विनया स्वीध इहेरव, তাহা কথনই দঞ্চ করিবে না। নির্কোধেরা गक्ल गमरत कि अस् करत ना अवः ञ्जू कित्राए मकल मगरत मकल विषश्च कत णां कतिएं शांद्रम मा , जन्ममा एयं नि-र्व्यारपत्रा विव कान ऋत्य काठे।हेर्व जवः स्ट्राटनहा ह॰टथ काल गालन कतिरवन, हेडा কোন কালে মনে স্থান দেওয়া উচিত নছে।

ভিতিক।।—বিশ্বপতি মনুদাবৰ্গকে এই ৰূপে পৃথিবীত করিয়াছেন যে ভাঁহাদিগকে বিপদ্ দুঘটনা, অভাব, ক্লেশ এবং কভি गश् क्रिटंड इहेट्वरे इहेट्व। उज्जना, हर মন্ত্রাগণ। ভোমরা পূর্বেই দৃচতা, ধৈর্যা এবং তিতিকা শিক্ষা কন, যাহাতে ডো-मानिरात जीवरनत व्यवभाषाती व्यापन् **रहेटठ जनाशादम छक्कात भारेद्य। छक्** যেমন বালুকাময় প্রান্তরে পতিত হইয়া ক্ষুধা ভূষণ এবং প্রচণ্ড স্থর্যাকিরণ অনা-য়ানে নহ করে, ভাদৃশ ভিভিকু ব্যক্তি অবলীলায় মংদারের সমস্ত বিন্ন বিপত্তি অবিচলিত চিত্তে সহা করেন। করণ মনুষ্যগণ স্থা ছঃখে হর্ম বা কাভরতা थकां करतम ना। **डाँशत्र मिर्गत्र सहद** অভঃকরণ জঃবের কথাছাতে সম্বর হইরী **वितरमित्र पर्या अर्थन वरिष्ट्र ७ इम्र ना।** তিতকুর মুখ ছংখ যদি সৌভাগ্য ছভার্গ্যের উপর নির্ভর থাকিত, তাহা হইলে তিনি ছ্ঃখের সময় কাতর হইডেন, এবং সুখের

সময় আহ্লাদে হতচেতন হইতেন: কিন্তু তাঁহার মন তিতিকাৰপ রজ্জু দারা ধর্ম-ক্ৰপ পৰ্ব্বত মধ্যে ধৈৰ্ঘ্য ৰূপ কীলকে আবদ্ধ রহিয়াছে. স্কুতরাং বায়ু-স্বৰূপ সংসারেব দামানা স্থা তৃঃখে ইহা বিচলিত হইবার বিষয় কি। যথার্থ তিতিফু ব্যক্তি কেবল সাধ্য ও দুঢ়ভার উপর নির্ভর করিয়া খনা-योटम विशेष्टि-मांगद शान हरेशा यान । ठिनि वीरतत नामा त्रांशरमंत्र मन्युशीन इन, स्र उवार বিপদ ভাঁহাকে পরাস্ত করিতে পারে না। नश्कारन निश्रम-ममूह हजूर्फिक् इटेट जैं।-ভার মনকে আক্রমণ করিয়। বিধাদ-সমুক্তে নিপাতিত কবিতে যায়, ভখন ভাঁহার গৈয়া র্হাছাকে অক্য কবচে আরুছ করিয়া রাথে। কিন্তু ক্রীণ্মন। ভাঁত ব্যক্তির প্রতি লক্ষ্য কর, তিনি চিরক।: বজ্জার দান হুইয়া কাল যাপান কবিতেছেন, তিনি পরিদ্রভার ভিনে কম্পান্ত হুইব। নীত কল্যে প্রবুক্ত হুই-অপমান সহা করিতে গিয়া নানা আপদে পতিত হইতেছেন। তাঁহাব মন নামান। তৃণ অপেকাভলপু, তিনি বিপদ সমনে ष्यकृत इःशमभूटक भक्ष बहेटच वाटकन, ५८-দুফের সময় হতচেতনপ্রা হন এবং নৈব-শেরে সময়ে তাঁহার আত্মা একে বারে অভিভূত ও নিরুপায় হইয়া পড়ে।

<del>০০০০</del> থিয়োডোর পার্করের পত্র।

২৫৮ সংখ্যক পত্রিকাব ১৫৭ পৃষ্ঠার পর।
ইউনিটেরিয়ানেরা কুসংক্ষার-মূলক ত্রিনীতুর মত সম্পূর্ণ অস্বীকার করিয়া থাকেন,
ভারিমিন্ত গোঢাদিগের সহিত উহঁ। এ সমস্ত
গাহুবাদীরা মত-ভেদ নিবন্ধান নির্মাঞ্জাতার
সহিত উহঁ।দিগের প্রতি অতি কদ্যা ব্যবহার করিভেন। কিন্তু পরিশেষে ইউনি-

টেরিয়ানেরা উহাদিগকে পরাস্ত করিয়া ত্রি-নীতির মতে অবিশ্বান বন্ধমূল করিয়াছি-উঠার। মেদেচুদেটদিশেরও ধর্ম-াব্যয়ুক বিশ্বর অসম্পত মত থ এন কবেন। অন্তর উচারা ক্তকগুলি ভলনাগার নি-ৰ্মাণ ও বহুসংখাক পূৰ্ব্য তন বিদ্যালয় আ-পনাদিশের আধকাবভুক্ত করিয়া তৎ সমু-नारप्रत गरथछ 🖺 त्रुष्टि म्यापन कतिरत्नन। এই সমস্ত কারণে আন্মারকার ইতব সাধা-त्र मक्राच्ये ज्ञानिभारक यर्थके ममानत করিতে লাগিল। যদিও উ.হাদিগের মত মক্ষ্যুর্ণ স্বতম্বা তথাত ভাছারা অপেনা,দগকে স্বাহন সম্প্রদান বলিব। বিবেচনা ক্রাডন না এবং মাধানদের ধর্মানংক্রান্ত স্থান ভাব **प्रभाग कतिया भाडिस्थ भयुको ३०**८ इन । তৎকালে ইউনিভাষালতেরা বিকাপ বিমল আলোকে আপলানিগতে উক্সাল কারতে পারেন নাই, তথাত যাহা ধ্যাবিজ্ঞান মজত ইতিহামকে এক কালে দুবিত কারু-তেতে, সেই অনও নাত ৰূপ প্ৰিশুক্ত মতেৰ বিরুদ্ধে গৌরব সহকারে ঘোরতর নিজ্ঞা ক্রিভেন। ভীগ্রা নক্ষ্ণান্নিই স্থিকার प्यवात्रक ७ निमर्गत् न रुटेश सम्बद्ध নিয়ম গুলি পবিব্রিত ক্রিয়াছিলেন এবং क्रभनोश्वराय मार्यहर्त्त थ। ७ ५मा क्रम ो। उतिस्वात ५ तिएउ हार — श्रीवि मान स्य ভূঁশার সার্বা প্রাথান দান, এই সাচাটি নিস্তর ख बाब कार्य व्यवस्य कांबर ध्या খুটিয়ান সম্পূদ্য়ে মধে। কেবল উহ রৈছি অনন্তনরকের মতে মুক্তকণে প্রতিবাদ করিয়া থাকেন। কিন্তু যদিও তাঁছারা খিটীর ধ-र्क्स्ट थ ममन्द्र मार्ता प्राचित्र व्यविश्वाम करत्व, তথাত কি ইউনিভাসলিট কি ইউনিটে-রিয়ান উভয় সম্পুদারই বাইবলের অ-লৌকিকভা বিষয়ে সম্পূর্ণ বিশ্বাস করিয়া थारकन এবং करहन यनि जरनोकिक ও ্যভ্রাত্ত বাইবলে তিনীতি ও অনন্ত নরকের বিষয় স্পটাক্ষরে নির্দেশ করিয়া থাকে. ভাষা ফটলে আমরা ইছাতে অবশ্যই আতা প্রদর্শন করিব সন্দেহনাই।

মাইটার গারিমন আপেনার বন্ধুবর্গের স-্রত আমেরিভাব পিউরিটান সম্প্রদায়দিশের देश्तर छेश्तर ये मट्ड बका अक्रिश्डी হুইয়াছিলেন এবং খাঁহারা ধর্মের নিমিত व्यान विमञ्जू । कतित्त्व अञ्च आएम, ्मरे मधात्र कृष्टे (प्रीवशवा महावा ও हिक्क-দিলের ভবিষাপ্তজাব নামে দাতিশয় উৎ-দাহ ও যত্র সহকারে, সেই সকল মত প্রচার কারতে লাগিলেন। কিন্ত তিনি পিউ-রিটান সম্প্রদার, হিবুজাতীণ প্রিয়দ্ধকা ও भन्मा थ की तम अधिकारण राजा अपित ব্যক্ষিকগণ অপেক, এনেকাংকে অপিনার प्रज्ञान अनम्ब कतिहर्याः स्वा । स्टक्राः ভিলি জ সমস্থ মত পালার ক্রিতে আরিট कर्रम, उदान करे का, जा, उन्नाह शूना इरेग्ना-চিলেন গে নেফিনের রাজপুরুণেরা বিস্তর অন্ত্র্যান কলিবার প্র দেখিবেন একটি **ब**े क्रद्या महाग्रहा

ব্যিত্ত ছে। তদ্দানে উই দিনের মনে গ্রিত্ত ছেনিত ভ্রের আর্কিছুনাত আশকা বছল না। ডাল্র চানিত সম্পূর্ণ ক্ষমতা, ক্ষমতেশী বজ্তা ও সম্ধিক মনুযান্তের নহিত সম্ভাবের প্রকৃত গৌরব এবং ধর্ম শুরির প্রকৃত জাবন স্বরূপ এই ছুইটি বিশ্বে সকলকে উরোধিত করিয়া আপনার শির্টি ইইনেন। এ মহাল্লা কহিয়া থাকেন ইটাম হর্ম প্রভাবে স্থানার কির্মিণ প্রিণ্ড করিছে সচেটিও ইইনেন। এ মহাল্লা কহিয়া থাকেন ইটাম হর্ম প্রভাবে স্থানার কির্মিণ, নির্বানর অবস্থার উন্তি সম্পাদন ও অনভিত্তের শিক্ষা সমাধা হয়, এবং এই ধর্মই আনেরিকার ক্রীত দাস-

मिरगत श्रीनेका अमारन अकुछ छेमात्रका थनर्भन करत । थे ख्रविशांच महजा युवक-দিগের সহিত গাঢ়তর সংস্তব রাখিয়া এবং উহাদিগের সহিত বিবিধ বিষয়ে তর্ক বিতক করিয়া বয়সের উন্নতি অনুসারে জ্ঞানেরও সমধিক শ্রীরৃদ্ধি করিয়াছিলেন। ছোরেস-মান ও তাঁহার কএকটি সহযোগী সাধাস্ত্রের বিদ্যার উল্লভি সাধনের নিমিত্ত সাভিশয় যত্ন ও পরিশ্রম স্বীকার করেন। শিয়ারপণ্ট অসহায় হইয়াও স্থা পান নিবারণ, ধর্ম যাজকের ন্যায়-পরতার দৃটি স্থাপন, ধর্মা বিষ্থক ভাস্কর অসম্পৃতি নিরাকরণ এবং সাধারণের প্রীতিকর বা অপ্রীতিকসই হ উক প্রকৃত নিষ্ঠ্রতার প্রতিবিধানার্থ দর্মন যাজকের অধিকার স্থাপন বিষয়ে সমধিক আয়াস অবলয়ন করিয়াছিলেন। শেষে ইমার্মের উজ্জ্ব ধীশক্তি বোউনে স্থকাশিত হটরাছিল। উহা সুচতুর ব্যক্তি বর্গের মন আকর্ষণ করিণ: ভূতন পথ ও ভূতন প্রত্যাশা প্রদর্শন করে। ফলভ আমেরিকায় এই ৰূপ বিশাষাবহ বাাপার আবি কথন প্রত্যক্ষর নাই এবং এখনও ইহা জন্ম বিশ্বদের বিষয় নহে।

ক্ষতিষ্ঠান প্রজেম ও কুষ্ম মন্ত্রান জড় দেই পূর্বাপেকা সমধিক অভিনিবেশ সহকাবে পর্যালোচনা করিতে সাধারণকে প্রবর্তিত করিয়া প্রাচীন অপ্রাক্তবাদীদিণের ক্ষমতা সক্ষুতিত করিয়াছিলেন। ওয়া-ভিনাথের বচনা প্রকৃতি-প্রিয় গুঢ়ানুসন্ধানপর ব্যক্তিদিণের অভিশয় আদর্গীয় হইয়া উঠে এবং উহা সাধারণকে প্রাকৃতিক ধর্মো আকৃতি করে। কার্লেলির গ্রন্থ বেশ্রুনে পুনরায় মুদ্রিত হইয়াকি যুবাকি রক্ত সকলেরই চিত্ত আকর্ষণ করিয়াছিল। কোন্রিভর রচনা সকল আমেরিকায় পুন্মুন্তিত হইয়া সাধারণকৈ নিশৃত ভাবে আকুলক্ষান

ক্রিবার প্রচুর সাহায্য প্রদান ক্রিয়াছিল। ঐ সমস্ত রচনায় প্রগাঢ় বুদ্ধিজ্যোতি সর্বত विखोर्ग बाद्ध। अं तहनाश्चीन ब्यानटकत, বিশেষত দেবতায়বাদী ধর্মধাজকদিগের চিন্তা শক্তি একান্য উত্তেজিত করে। যদিও তংম-মুদায়ে ইতিহাস ও পদার্থ বিদার অসঙ্গতি ও বিশুদ্ধ প্রণানীর অসদ্ভাব আছে এবং থদিও গর্বে, কুদংক্ষার, রুখণ ভক্, বিশৃষ্থলতা ুও ভ্র'বির চিষ্ণ স্কুম্পান্ট নির্নাক্ষিত হয়, তথাচ ঐ সমস্প রচনা নিভান্ত পরাধীন চিত্তকে স্বা-বীনতা প্রদানে সাহায়্য করিয়া আমেরিকার 🖜 🛪 উপকার সাধন। করিয়াছিল। . बर ४.स् स्र थ्रावा करम विद्रिष्ठ, शबीत ভাৰ পৰিপূল্ ও সাধারণের জীতিখন, তিনি स्था अन्य माना एकण साध्या । अन्य क्रि गार्ड्स, लागा अग गर्सामि मन्ना । या (भविकात राष्ट्रीक जन्छामण उँ । त मविद्रमय 'बारामाहमा कविया थारकम । एव स्थादन भूज-ভাষার এন্ত নিভান্ত ডু:আধ ক্টত, তথায় नकरम छेडात अनुराम अनुगोशन कांत्रह ! 'यमाना तमार्थ हिम्हा खाउँ। मानावर्गव ए কুমংক্ষার প্রাক্তভূতি হয়, কুলিনের প্রস্তু প্রা াবিত হইয়া ভাষা এক লালে নিবাস করে।

~~**~** 

#### ইজিপ্-টীয় নত।

২১৯ ন খাত পত্রিকার ১৮৩ পৃষ্ঠার পর।

আইদিস্ দেবী। ইজিন্টী বদিলের প্রধান প্রধান দেবতার রক্তান্ত সংক্ষেপে উ লিখিত হইয়াছে; এক্ষণে তাহাদিলের ক-তকগুলি দেবীর রক্তান্ত বর্ণিত হইতেছে। পুরী আনেক প্রত্কার ইজিন্টী মদিলের ভূরিভূরি দেবীর কথা উল্লেখ করিয়া গিয়া-ছেন, কিন্তু নিপুণ ৰূপে আলোচনা করিলে জানিতে পারা যায় যে, দেই সমস্ত দেবীর অধিকাংশই এক আইনিস্ দেবীর মূর্ত্তি

ए माज हिला। क प्रतम स्वयन कर ছুৰ্গা কালী, জগন্ধান্তী, চণ্ডা প্ৰভৃতি নানা ৰিধ আকৃতিতে পূজিত ≆ইয়া গাকেন, সেই ৰূপ ইজিণ্ট দেশে এক আইদিস্দেবী ভিন্ন ভিন্ন কার্যোর ভত্তাবশব্রিকা ব্রপে ভিন্ন ভিন্ন মূর্ত্তিতে আরাধিত হুইতেন। ই হার কোন প্রতিমূত্তি **শৃঙ্গবিশিষ্টও দেখিতে** পাও্যা যায়। পরস্পর অনুরাগাধী নায়ক নাহিকারা मिक्ति ल एउन गिंगल विस्थय बार्श आहे-।मम् १५वीर अपाप्ताना करिछ। **। । अटि**ग আইসিম্দেখীকে ধানা বলিখা গণনা করি তেন। আইনিদ দ্বীর দশ কেন্দ্রনাম চিল, এই নিমিত্ত ভাঁদার আর একটি নাম बिदियनिषम्। आहेमिन् द्वीव अनावः রুরাভ প্রদক্ষ ক্ষমে ওমিরিন দেবের বিববং मत्भा मधितांग्र क्रेडाला।

বিউপটেশ। ওমিরিশের উনলে আইকিল দেনীৰ গভে বিউবদ্ধিন, দ্বীৰ জন্ম হণ।
প্রাক্ দেনী ভাগনার মহিত উইলার অনেক
বিষয়ে সৌসলিশ। আছে। ইনি ডাগনার
নাম অভাশ পতিরভা বলিয়া প্রমিদ্ধি প্রাপ্ত
কিল। বিভালেও লগম হৃতি নির্মাণ করিল।
ইলার প্রা ১ইন। ই দেশে মত
বিভাল মবিত, তংশমুদার স্বাভিত করিয়া
বিভাব ফিন্দ্রারে প্রোধিত করিতে হুইছা।

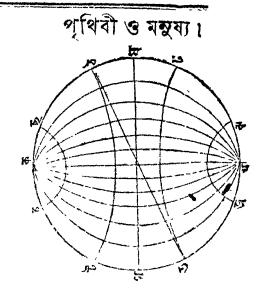
বৈনিথিয়া: শক্নির নামে আকৃতি, এই
পাথে ছুই পক্ষ বিস্তুত, সব্বাপ্ধ হীনক দ্বারা
আচিত, একটি প্রতিমুর্ত্তি ছিল; ওচোরই নাম
ইলিথিয়া। ইনি স্বতন্ত্র দেবতা নহেন,
আইনিম্বা নিউনাউদেন মুর্ত্তি ভেদ মাত্র।
যে দিনে দিনীয়া ভিথি পাড়ত, দেই দিবদ
হুইবি পুলা হইত।

নেণ্গিশ্ ওসিরিসের র্ভাতে উলি বিভ ২২খাছে থে. হকুলিসের ঔবদে রিয়া দেবীর গতে টাইফন পুত্র ও নেপ্থিস কনা জন্ম গ্রহণ করেন। এই নেপ্থিস্ দেবী
নিজ সহোদর টাইফন দেবেব পত্নী কইয়া
চিলেন। গ্রীস্দেশায়েরা এই দেবীকেই
অংশ্ডেইট্ বলিত। শ্বেত্রণা ধেন্তব নাায়
ই হার মূর্ত্তি। ইনি রাতি ও অন্সকারের
অ্রেডারী দেবতা। কিন্তু দিগের অক্ষরা
শ্বে, গ্রীক দিগের বিনম ও ইজিন্টীয়দিগের
কেপ্রিন কুলা কাপ চনিত কইয়াই মনুষাশবের মনে আবিহিত কইয়া ডিলেন।

तृरको रा लाएके. मा । भीत मनीत प्रारम । केस (नर्ग प्रकृष्ण एक समाम ८ कि मिनार तृरके। करी प्राप्त कर्तर हन। कर प्राप्त कर्तर हन। कर प्राप्त कर्तर हन। कर प्राप्त कर्तर हन। कर प्राप्त कर्तर होता वास्ता। कर प्राप्त करिया मिनार कर्ति कार्य क्रिकार करिया क्रिका कर्ति कार्य क्रिका विकास करिया कर्ति क्रिका हो कर्ति विकास करिया कर्ति क्रिका हो कर्ति है क्रिका विकास करिया कर्ति कर्ति है क्रिका करिया कर्ति करिया करि

গমন কাৰ্যাছিলেন, সেই সময়ে লগতে নি হোলাকাকে কেনি স্থীপে রাখিলা লীপতি ভাষাইয়া দেন এবা ধ্বং টাইফনের হস্ত হটা ৩ পরিবাণ পাইবান নিমিত্ত মাইবোল গনীর মুর্তি ধারণ কবিয়া প্লায়ন করেন।

ইজিপটীয় দেব দেবার সহিত ভারত
থানি দেব দেবার অভ্যন্ত সাদৃশ্য দেখিতে
থানিয়া যায়। কেবল দেব দেবী বলিয়া
নয়, অন্যান্য মত বিষয়েও বিলক্ষণ মৌশাদৃশ্য আছে। ইজিপটীয়দিগের অন্যান্য
রভাত্ত বিবৃদ্ধ হইবান সময়ে তাহ্য ক্রমে
ক্রমে অভিব্যক্ত হইবে।



পুলিবীতে যে সমস্ম ঘটনা উপস্থিত হউল্ভেক্ত, ভাহার কারণ নিকাপণ বাতিরেকে কেবল দেশ গ্রাম নগরাদির বিভাগ নির্দেশ এব- ভত্তা আণিণণের স্বভাব ও চবিত্রাদিব বিষয় বণন কভিলে ভুগোল ব্ভান্ত লামের সাংগকতা সম্পাদন কর। হয় না। হতিরুদ্ধ সংক্রান্ত নিজ্ঞান ব্যতিরেকে যদি কেবল यहेंगा छालत फेरलंश कता इस, छोड़ा इंडरल क रामन १९१६ ७ नीहम इन्नेभा साम, राह् ৰাপ ভূগোল বুড়ান্ত বৰ্ণন করিছে গিং যদি গত কারণ সমস্থ উচ্চাবন না করিয়া क्तितल भृष्ठे बख्त अक्ष भाग बिटफ्स कत्। यहि, ब्रहा बबेटल फेंबेल मौध्यतिवृत्त केनाह প্রীতিকর হয় ন.। বস্তু মাত্রের বণুনা কর। जुर्गान द्रशास्त्रत अक्रुड फेर्फ्सा नरह। পার্থিব গুরুর্থ সমুদায়ের পরস্পার বিভিন্নতা धानमान, कांगा कात्र । वह छेखावन, मरह छन अ অচেতন পদার্থ সমূহের পরস্পর সম্বন্ধ ও · কাৰ্যানিৰূপণ এবং মানব সমাজের কি ৰূপে ক্রমণ উল্লভি হইয়াছে, ইহা নির্দারণ করাই हेश्रपृथा উष्टिमा। এই ममस्र 🚜 त्रिः উল্লেখ না করিয়া কেবল যদি বস্তু মাতের বর্ণনা করা যায়, তাহা হইলে ভূগোল রক্তান্ত নিচান্ত অসার ও অকিঞ্চিৎকর হইয়া উঠে। ए ममल विषयात कारनाशाकन कतिला

মন যথাৰ্থ পুষ্টি ও প্ৰকৃত উন্নতি লাভ ক-विट्ड शादत, उৎमञ्जात्यत जमस्रात इहेटल পদার্থ বিদ্যা সহজেই নীর্ম হ্ইয়া গাকে। স্তরাং যাহাতে জড় ও চেতন প্রাণ পরস্পার কি কাপ সম্বাহ্ম নিবন্ধ শৃইয়া সেই করণোময় বিশ্বস্রুষ্টার মঞ্চল অভিপ্রায় স্থ-দিন্ধ ক্য়িতৈছে, ইল সুস্পাট উপলব্ধি করা যায; যে সভস্ত করিলে পার্থির প্রার্থ সমু-লাম ক্রমণ উন্নতি নাতি করিবা বিশ্বপতির অনন্ধ ও সচিন্তা কৌশলেন প্রবিচয় প্রদান ►शबुट कर कर यह वा दन है सम छ कावन छेच वन प्रता भाग; (न<sup>े</sup> अका ध्राक भक्तक स ममन नियुद्धतः अवीन कवियां असे कड़ क গহকে নির্দ্ধ উদ্ধান্ত করিছেচেন,যাহাতে खरममुम्हाद्यत किलास्यातिको ७ खाउल्लबकाः। অভিনাত কলা যায়; খাহাতে এই সমস্ত অচিন্তুনার অতকলার আক্ষয় ন্যাপার মুস্পর্ট জন দ্য করিয়া মেহ বিশ্বপিতা অधिलमा छ। ? व्यक्ति व्योक्ति । ज कि केली পিত হয়; এই ভুগোল গুত্তান্তের তালাই উদ্দোশ্য। पागदो এই উদ্দেশ্য गिश्व कवि বার নিমিত্ত পৃথিবী ও মনুষ, সংক্রান্ত রম্ভান্ত বৰনে প্রবৃত্ত হইতেছি।

কোন কোন অবিচক্ষণ গদার্থ-বিদ্যাবিং
পণ্ডিতেরা কহিবা থাকেন যে,পশ্য পাফ্যাবি
জীব জন্ত এবং তরু গুলাদি উদ্ভিদ্ পদার্থের
নাম পাষাণ প্রভৃতি অচেতন পদার্থের
কাবন আছে। কিন্তু এই মত নিতান্ত
অলীক ও অমূলক। চেতন ও অচেতন
এই উভরবিধ পদার্থ পরস্পার বিভিন্ন।
মাত্র ও রক্ষা, রক্ষ ও পশু পক্ষী এবং
পশু পক্ষী ও মরুষা যে পরস্পার কত
অন্তর ভাহা অমুভবশীল ব্যক্তি মাত্রেই
সহক্ষে স্কুস্পাই হৃদয়ঙ্গম করিতে পারেন।
অচেতন পদার্থকে মৃত ও সচেতন পদার্থকে
জীবিত বলিয়া নির্দেশ করা যায়; কার্ম

পশু পক্ষাবির নাার পাষাণ শভ্তি অচেতন পদার্থে জীবনের কোন নিদর্শনই প্রাপ্ত হওয়া यात्र मा। তবে जे मकल जफ পर्नार्थ কেবল জীবনের প্রতিভা মাত্র প্রতিভাত সলিন্ত্রেভ তরঙ্গ জাল **इंडेश** योदक। বিস্তার পূর্বাক কেনায় আকুলিত চইম वानवात भक्त महकादत व्यवन त्वरन व्यव-হিত ১ইতেচে, সমীৰণ ভাঙ্গৰ **অপ্ৰতিহত** াতি ঘৰলয়ন পূক্ক গাদিপদণ উন্মৃতিত ও ভূতনে নিগা(৩৩ করিতেচে ; অন্তরীকো াই নক্ষত্র প্রভৃতি কোর্তির প্রদার্থ সকর গ্ৰহণ্য আন্তৰ্ম শক্তি ছাবা আক্সেই কইড়া স্বান্ধ ক্লানে আবস্থান কলিকেলে हुमक तिम्छूमाञ लोक प्रशिक्षणे पर्यानश বেচলিত ও নিরম্বর উত্তরাভিমুখীন কর্মন গাতে, সুইটি পদাথ উপযুদ্ধেরি নাডাপিছু रूट हो से समित्यात श्रमानु अरेट कम खाना ९ वरम्भत्रः भत्नस्भावत्तः । प्यांकर्षभ् कत्तः , जन स्व भारत धारय शिक भवार्थ मञ्जारयन धन्। दश आचार्ड क्रिटल छेटा अन्वनाभी बहेपा थे'रक. तमायन विषता थास्ट्र हेक् क अंत्रक करेगाता हुए कष् भवत्र्यंत करणक लग्भाद्र संग्रेण भागा विष्याद्रभन गायर्थ। व ७५ . करे मन क लिया सिन्सा अर्नटक अनुनार क'हा। बारकर (व श्रु शक्त भाग हिमादन कीतन आहरू, किन्दु केरा जीवन गढ़, जीवरनत धा-তিতা মাত্র। আমরা কএকটি প্রতেগ এই অভুত কাষা দেখিয়া বিদান দাগেরে নিমা रहे कि उ धरे धर्का उन्नां कार्या (य এই ৰূপ অত্যাশ্চর্যা ও অচিন্তনীয় কত শঙ ঘটন। উপস্থিত চইতেছে তাহার इंग्रज्य नाई।

আমরা অচেতন পদার্থের নায় চেতন পদার্থেও এই ৰূপ কার্যা দেখিতে পাই কিন্তু এই ৰূপ ক্রিয়াকে ইহার জীবন ব্রিয়া কথনট স্বীকার করা ঘাহতে পারেনা।

াল সম্প্র প্রস্পর বিনিময়কে সামানা।

কার জীবন বলিয়া নির্দেশ করা যায়,

াই ইইলে পরস্পরের আকর্মণে সমান্ত্রই

জড়-দেহের উপর এই রূপ জীবন আরোপ

করা অসঙ্গল ও অযৌজিক নহে। কিন্তু

কেই রূপ জীবন নিরুষ্ট জীবন বলিয়ানি
াক্র ইটাত পারে।

নেই আরু তিক ও রাসায়নিক জীবন সকল জও দেহেই বিদ্যান রহিয় ছে, কিন্তু এই রূপ আরু, তক ও রাসায়ন ক কার্য কে চেতন পদার্থের জীবন বা জীবনের মূল কার্য কারণ বলিয়া কণ্ড প্রেলিক জীবন কবা যায়ন।। জীব যে জীবন উপতেলগ করিছেতে, ইহাতের আনতের কা পা প্রেলিক কবা মনুষা লাহনেতে প্রতিতিক কবা বাহনেতে প্রতিতিক কবা বাহনিক জীবন রুফ্ ও পশু প্রতিক কবা দার্যনিক জীবন রুফ্ ও পশু প্রতি মনুষা লাহতে প্রতিতিক স্থানিক জীবন রুফ্ ও পশু প্রতিতিক উহাতিক জীবন রুফ্ ও পশু প্রতিতিক জীবন রুফ্ উন্তিবিক স্থানিক স



ভবানীপুর রেজ (বদ) লির। ৫ ধান জ চালের উপদেশ। ১ ধান মণখা। ।

১ ১৮৮ কেলেন

वदारम काठा ५८९ ३३१७ अञ्चल आहत्स आतम क-'त बाद्रम् ... প্রন্তি, শ্রীরের মুপ্র १ ३ ''व ए भर् । यक्ति शाहियां छ। स्थान মান পদের করণের শ্বার দেখিছেছি, ভেন্নি करनानामच अर्के केव आग्नारिकंड प्रकृष्ट कवि-अधि। इ. ६३ छ। 🔐 ८५। मावटम् व म**गटफ** গকাল কবিত্ব কিমিন মতু করিছেছে, १ %' १४८ सार १५ ७ छ। इर महनशा**नत्वम धूर्या**क ' ' "'र्''व ६ गा २०को कि. ८७८७ । **धरे छा**-1 1 2 不同一种所有例 即同相互,通常的 क हो। काचन च्या अदलदम स्टिया सकदलत अधिकी া না পুন্ধর নম্ম পুক্রতে প্রভাক করিতে 医乳头 化二氯甲二 এই। চাপ্র?, বাভং মনাতে ন' 'কং ৬ছঃ। যদ্মি',সিজেন ছঃখেন গুরুণাপি

বিচালাতে। '' যাঁহাকে লাভ করিয়া অপর লাভকে ভদপেকা অধিক বোধ হয় না এবং যাহাতে অবস্থান করিলে গুকু ছুঃখেও বিচালিভ হয় না।

বেদের মন্ত্র ও ব্রাহ্মণ ভাগ সমাপ্ত হইলে প্র উপনিষদ্ বেকোর অনুসন্ধানে প্রবৃত হুইলেন। अक्ष कि ? ना धिन मकत इडेस्ड द्रहर, मकत হউতে মহৎ, ঘাঁচা হউতে শেষ্ঠ আর কেইই ্রাই; यिनि मख-फर्म-वाशी, यिनि मकल काली विमानान। উপনিষদ্ইহার অনুসন্ধানে প্রাক্ত হইয়া জানি-लिन (र. २४० रक्: म:म (बाह्य हेज़ बाबू र्जाइ প্রভৃতিদে সকল উপাস। দেবতা, তাহারা কথনো अर्थ नहर । '' (नप्र योगनगूशामर**छ**।'' (छलव-कारवार्थानरम ) रेबिनरकतः य अकल श्रीहिम्ह দেবভার উপাদন। করে, ভাগারা কথনো ত্রন্ধ न १० १ दिन १४ अन्य शुक्ताय मामान् कराइड्य कता (१ म (४६म हेरु व) मठ वा नियक विशुक्त विश-মাগে। ভিৰেই ব্ৰহ্মা। "ভাধানাস্ভাল প্ৰভে अपन्दारतीय स्टब्स अन्ति । जीवान्त्रा, विश्वासक क्ष्म पूजा ४। द ७ भक्ष्यः। १ । (रेकाळ द्वीरम् अ गरम ) इकात ভাগে ব'বু গ্ৰমান ইইডেচে, ইহার ভাষে দুবা টিন্য ইউটেডে, উহাবে ভয়ে আগ্নি ও ইন্দু ও মূকুঃ স্থায় ক্রমে পারেত হইতেছে। উপ-नियम्भितंत्रायतः का । न मस्यः जास्यः कि क्रियः गर्हे ५८,८५ म १५८५५ ८४. अ. से द श्रु चे छ अक्री ७ देव सिक प्तिक'त' एकदन्धे शार्त्रमण्ड, मक्टल्डे **छ** श्र भक লেই কুদ, ইহারা ব্যন্ত নতে ইহাবা আপেনাকে শাপনি এচাশ কৰে নাই; ইনার, স্মন্ত্র নালে, ইছারা আপন রাও আপেনার নিবস্তা নছে। ইছারা य (२) क एक करे महभारद तथ ५ इ. इ.सेपाटक बीस . इडेट्ड वेंथ वीय चेंछि लाङ कविद्यादक, यांजाब শ'সনে নিয়ত প্রবর্ত্তিত গ'ংখাছে, তিনিই ব্রহ্ম, चिनिहें काता, लेक कराउ (अर्फ ७ श्रुवनीय बाद (कश्री महि। अहे जार जनवनात उपनियदमञ् আখাদিকাৰে অভি দু দর-ক্ষে প্রকাশিত রহি-म[5] भारे काथ, दिका धड़े। " उन्न इ दन्दा-ভোবিতেলা ৷ এখা দেবভাদিগকে জয় বিধান করিবেন ৷ ইক্র বায়ু প্রভৃতি দেবভারা **ঈশ্বরের** छाङ् । १२ 🔊 अक्षित्र के प्रमुख्य का वाक कतिरलन । ইজ চান বে, পৃথিতীতে মুক্তাটি বর্ষণ করিয়া প্রশা দিগের ভিত সাধন করেন, রতাসুর ভাছা করিছে (मध न।। गक्त (मवलांता এकळ इहेशा क्यानिक-कारी इक्षामुद्रबं छेशद्र अग्न नाच क्रियान । उक्ष एँ। रात्मिश्टक वहे क्या आमान कवित्वन, मिनकांत्री ধীয় খীয় অভিযান-দোষে তাহা জানিতে পারি-লেন না। তাঁহারা মনে করিলেন, আমর ই व्यागांत्रामत कम्बार्ड कामूल्य छेशत क्षत्र नाक

कतिलाभ: आभातरमत्रे धरे छत्र, आमातरमत्रे **এই महिमा। '' अञ्चाकत्यवाधः** विकत्यार्शमाकः মেরায়ং মহিমা।" ঈশ্বর ভাঁচারদের এই অভিমান काबित्वन । ভাঁহার৷ অনিউকারী অমুবদিগের नाय द्वरी-अভियम-भारत १३ ना १न, এই छान দিবার নিমিত্তে তিনি তাঁহারদের নিকটে স্থাং প্রকাশিত হটলেন। ভাঁহাবা জানিছেও পাবি-ब्ल्म ना (व, मीलागान श्रेष्ट्रनीय श्रुक्य हैनि (क। ভাঁইারদের অপেকা অপিক শক্তি সম্পন্ন পুক্ষ যে কেছ আছেন, ভাষা ভাষারা জানিতেন না: আপনার্দিগকেই ঘতনু সমুম্ন বলিয়া মান কবি-তেন। এই অপ্রিচিত প্রকীয়ের অবাক্ত অপ-निमिन (जाक कें। होया मकालंडे रुक्त अन हरेग्री (श- त्वा : उंशिरदाद अभग अ गम विकल्पिक बहेल। ভাঁহার। আগ্রেকে বলিলেন, তে আগ্ন। তে জাও-तमः । जिम जामध्याम्य भारता जाली । एक जायी, राख जुमि हेड वि नि व है शिया डेड रिक ऋत्रवड कहेश ए। उम होन तक। खांध्र हैं। हांत्र निकटी .भरत्रम । जन्म ई। हा १६ क्यांमा कविरासम, । <sup>45</sup> क्कर'न <sup>25</sup> ज्ञि इन २ अ श प्रप्लं कृदिश। कृतिहलस " অংগ্রিক" অসমন্মীনি জাভাবেদা ব'অহমন্মীতি " अभि कार्य, जा मा लाक्ष्यमा । ब्रह्म है। क्रिक विलाधन । जिल्ला क्षिण क्षेत्रा क्षेत्र व জাশ্বেনা আগ্ল, ভোনাজে চি শ্লি আছে? ভিনি উনৰ কৰিবনে, ' অপীদ্ধ সঞ্চল দুৱেষণ यिक्षण श्रीरवादिक। " उन्ने श्रीश्वीदन व्यक्ति বস্থ আছে, তাহা সক্রই আমিদ্রা ক'ব্ডে 📢 বা खन्न छैं। इंदिक अक्षि कुल जिल्लाम छ सन्ति । ইহাকে দক্ষ কর। তিনি নহাতেগে আপন'ব সকল ভেক্স ভাষাভে নিয়োগ করিলেন, ভথাপি এই ভূণনীকে দক্ষ কবিতে পাবিলেন না। আপন্তক শক্তিহীন দেখিয়া লজ্জিত হইচা দেবতা নিশেব निकरे कित्रिश आंत्रिश विविद्यान- यांग विनिद्य পারিলাম না, এই অচিন্তা-শক্তি পুজনীয় পুরুষ কে। তথন তাঁহারা বায়ুকে বলিলেন, হে বায়ু যাও তুমি ইহাঁর নিকটে গিয়। ইইাকে অরগত ক্ষয়া আটম। ৰ'য়ু তাঁহাৰ নিকটে গেলেন। ব্রহ্ম তাঁহাকে জিল্পাসা করিবেন, তান কে? वासु पर्भ कतिया विभिट्टन, "वायुक्ता खर्मन्यो कि ্মাতরিশাবাঅহমামীতি। '', আনি বারু, আমি মতিবিশ্ব। ত্রহা বলিলেন, তুলি যে মাত্রিশা ৰায়ু তোমাব কি শক্তি? তিনি উত্তর করি-त्मन, शृथिवीएक बाहा किछू धारू, आमि मकलरे হরণ করিছে পারি। ত্রন্ধ মেখানে একটি তৃণ त्राथिया विलालन, अथान इटेल्ड टेटाक अहन कत দেখি। ভিনি ভাহাতে আপনার সমুদায় বেগ নিয়োগ করিলেন, তথাপি ভাহাকে একটুকুও

বিচালিত করিতে পারিলেন ন।। আপনাকে শক্তিহীন দেখিয়া লজিভত হইয়া দেবসাদিংগৰ নিকটে ফিরিয়। আসিয়া বলিলেন-- আমি চিনিডে পারিলাম না, এই অচিন্তা-শক্তি পুজনীয় পুক্ষ কেশ পরে ভাঁহাবা ইজকে বলিলেন, হে মঘবন। ভূমি আনাবনের সকলের রাজা, যাও ভূমি চঁহার निकटि शिया डॅंडाटक व्यवशंख इटेश कार्टेंग। ইন্দু ট্রের নিকটে অগসর হইলেন। ইন্দেব বাজ-প্রদর অভীব গর্ম ও অভিন'ন দেখিয়া ব্রহ্ম দ্রথা হটতে লিবোহিত হইলেন; বরং নিনি अना अना (प्रवाह प्रियादक (प्रथा) विश<sup>4</sup> छिटनन, हेस्सर्क क्रक बांव प्यथान बिट्यन मां। ध्यने स्राटन ন্ত্ৰী কপিনী বৃধ্ব-বিদ্যা আসেয়া আবি হু দ চটলেন ৷ इ.स. ८५३ 'धालक रवाको जुक्त-'वनाएक 'काकामा कविटनम् ख (अई भाषामान अजीत, विभ १५ यो ह এখানে ডিলেন ভিনি কে ? ব্রহ্মবিরা বলিংগ্র ইচাবে ভোষণা জান মা, ইনি ব্ৰহা বিদ্যে ভোষরা আপনাব আপনাৰ মহিন বনে কৰি ভিলে; যাৰ এই কাষৰ জনা ব্যোল না भारका करा। बुकारिमां बु के किनेटनटमं अन्सर বিচাদন। হুইল। ভাদৰ্গি ইন্দ ব্ৰহ্ম হয়। ন ল' ভ কবিয়' অশ্ব সামল দেৱত। এইডেড উল্লেড ইইলেন্ ভাৰত বি আগ্রারণা এছে,তি দেবতারাও ইন্দ্রেব নিকট হইজে ব্ৰক্ষ, লালাভ কণ্মা কাৰে আৰু সকল দেবজা ठ है, एक "लाम करें दलस्।

कि का या। यहा जाता कहे जिल्लाम पा इस य[बेटलटाइ ह्या, ह्या लोनाक 'श्रामता व्यापन' वहमन প্ৰিনিছ ভাষ ব্য়িকে না পাৰি, যে প্ৰাৰ্থ জনজ मात्त्र मृश्मिः अवशंत्र ३७ण याय म्। क ा तिधु हेक रहव काता प्यापितावर प्रांच मां अपने भौगा পুরিছের) গুলিষ্ট স্থানার্ডিল ক্টা স্থান স্ব মান্দ্রমান বাব্যা শা,ত্রান কারেছের ৷ যথম উ'৬৻১' ভাগানাব্যের আন শাঞ্জির গাঁমা বুলোকোন: यथन (५) हे पुरुष म अवग (भव ५) है न। जानिएड পাৰেষ' উভাবৰের জান কুঠিভ ইইল, যথন **एकित जुनाहरू कीय न्दर्भ आ**निहरू न। शाहिया উহি বিদের বল শুঝ ছইল: ভথনি দীহোব। বুঝিজে পানিবেন যে আগবা ক্ষুদ্র, আমারদের জ্ঞান শক্তি প্ৰিমিত এবং গেই প্ৰিমিত জ্ঞান-শ্বিক্ত আনবা আপনারা সৃষ্টি তার নাই; কিন্তু সেই मर्बेटा है। अर्थ शुक्रम इंडेटल लाज कविगाहि, गाँहित मगःक छ। मध्द्रपद भकत छ। त. मक्त महिन, सुक् হইয়া গের। দম্ভ ও অভিযান ব্রন্ধাজানের প্রতি-ৰক্ষক। আনি সকল বুনিতে পাৰি, আনি সৰ করিতে পারি, আমারই যথ সর্বত প্রকাশিত হউক: এই অভিমান ও নীচ কামন। ব্রহ্মকে বুঝিতে (मग्र ना। जाननात इस्रवाजः विनि कानिशाट्यन, ভিনিট উচ্চার অনুধানী ও শরণাশন হইনা নবল ৬ উল্লাল ইয়াছেন।

क्षा वाश् हेस अकृति शक्षकः माम स्वरमञ् দেবভার। উপনিষ্দের উপাস্য দেবভা নহেন। ভিপ্রিসদের প্রতিপাদ্য পর্ম দেরতা এক মাত্রপি-व्यक्ता। উপ্মিখনের সংকল্প এই যে বিনি সকল ছইতে বড় উহিকেই অস্বেদ্ করিয়। জানিতে হইবেক, ভাঁছাকেই স্থীতি করিছে মইবেক, তাঁহা-নেট পুজ। করিজে চইনেক। উচার। সকল হটডে रा प्रतिष्ठ या द्वारक क्षानित्वन, अञ्चत बनित्वन খ্যার। ব্রহ্ম" (লাশ : ছাপেনিষদ্) এই আত্মা ব্ৰহ্ম। "যো দৈ দুম। তং ধ্ৰং নাপে সুখমন্তি र्हिम् अवः स्वाद्य राज्यामिखवाः। "(ছी-কোলো)পনিষদ্) থিনি নহান্ ভিনি সুখ-ৰক্ষ क प अमार्थ सूथ नार्क, महान् अमार्थहे सूथ-वक्षा; সাত্রর উল্লেক্ট্ জানিতে ইচ্ছা কবিবেক। সেই ভ্না কোখাল? ''সএব সঙ্গুত সউপৰিটাৎ সপশ্চাৎ সপুরস্তাৎ সদব্যক্তঃ সউত্তর্ভা । "।ভাকে।গো:-প্ৰিষ্ণ) ভিনি সংগ্ৰে, ভিনি উদ্ধেতে,তিনি পশ্চাতে, ভিান সম্মুথে, কিনি দক্ষিণে, ডিনি भड़े कुंगा (क ! यह आलाहि (मह ম। - মণী লকাপেন্ডালাকোপেরিন্টানার্ডা পশ্চান দাক। পুরসাদার। দকিংভ্যাতা উত্তরভঃ।" (७१८क (८४) (अ नियम् ) जा शाहि व्यापारम, जा बाहि উদ্বেশে, জালাই পংশ্চাতে, আলাই সম্মুখে, তারাই দ্বিনে ভাগাই উত্তরে। ইহাতে এই ला जिला करेल या रिज एक्ट मक्का की एन। नेपत, জিনি শুনানভেন, জিলা জগতের আলা, ছিনি भक्तलाल पूर्व द्रहिद्राहरून। अथादन जिकामा अहे रह दम्र है निष्म कि भेदीती का द्वा ! य **व्याद्या मंदीद** मक्त था कम। को ए८ काटन विश्वितिसम स्वीता स्वान বাংবিধি ভেগকেবে, এই আছোকি সেই ভূমা? ্ট "জাশবিদ্ধানে বাবে বিহং এজঃ বৃত্ত তুক্ " আরা াক ভ্লা? উপনিষদ্ধলেন যে না, ভূমা অ'আ। ক্দাপি শরীর্থ আগা নতেন। ইনি শরীরী জাগ-কিও আতাৰ লাল বহিরিভিয় ছারা বহিবিষয় উপভোগ করেন না: ভ্মা আত্মার শরীরও নাই, टेक्टिय ३ नार्टे! एटर कि जिनि यदनामग्र आया ? --- এবানে এই বিজ্ঞানা উপস্থিত হই**তে পারে।** শনীর নিস্পৃতি গ্র**লে, উত্তিয়া-ছার-সকল ফুক্ত** হইলে, যে আহা স্ব**েপ্লে স্বীয় মহিনা অনুভ**ৰ तत्त । य कर्षत्य चाचा विषय ७ हेल्लिसब निब्रum वहेता कोय गहिमाद**्हे दिस्य-गकन मुस्टि** कविद्या फोर्स डिशटअक्त करतः (य आंखा यांशीयम-थिगाटि, मासाउ दिल्थिगाटि, जीवा दिल्थाः, बाद्या গুনিযাছে,যাল নাও জনিয়াছে, ভাছা ভানে; বা্ছা অর্ভব করিয়াটে, যা নাও অর্ভন করিয়াটে,

ভাছা অনুভব করে; বে আত্ম। " নর্বং পশ্যক্তি नर्काः श्रमाणि " जाशीम मध बहेबा नव तमर्थः; रमंदे ষপ্লাবত মনোময় আহা কি ভূমা? না। বে আত্মা স্বয়েতে কেবল মনো-স্থারা বিষয় উপজোগ करत, त्यद्रे " यश्रदात्नारसः अळा अविविक्कण्युक् " আত্মাভ্যানছেন। যেনন ভূমাজাআর শরীর নাই, তেমনি ভাঁহাব মনও নাই। তিনি মনের ছার। সুখ ছঃখের অনুভব করেন না। ভিনি খ-প্লাবস্থ আজাব ন্যায় খোকও করেন না, ক্রমানও করেন ন।। অতএব স্বপ্লবস্থ মনোময় আতা ভূমা নহেন। এখানে তাৰ আৰার এই প্রশ্ন হইতে পারে বে, সুমুপ্ত আমা কি ভ্যাণু বে আয়া সু-ন্দর সুপ্ত হইয়৷ কোন কামনাও করে না, কোন যপ্লও দেখে না; শোকও করে না, কন্দনও করে না ; এই সুমুপ্ত আত্মা কি সেই ভূমা ! এই সুনুপ্ত আলাও ভূমানহেন, যে হেড়ু ভখন সে আছা '' जयगरम नोलि ' ( ছाटकाटका) পनिषम्) कानि এই বলিয়া আগেনাকেও ভালে না। যদিও মুখু-প্রাবস্থাতে ভামার শোক নাই, ক্রন্দন নাই; ভথাপি ভাগার কোন ভোগা বস্তুত । টি। ''নাহ মত্র ভোগাং পশাব্দি, " (ছালেরপ্রেগ্রাপ্রিষদ্) জামি এথানে ভাহার কিচুই ভে:গা বস্তু দেখি না। এই মুদুপ্ৰাৰস্থাতে আন্মার না কিছু চোগ। বস্তু আছে, না কোন ভোগ আছে, ক্েল এক মহাবিম্মতি ভাষাকে আছল করিম। রাখে। এই प्रयुष्ठ अव्वष्टकम आजा। कथनरे कुँमाजा नर्धना খিলি ভূমামা, ভিনি অপরিল্পু টেডন্য-বভাব। তাহার চেজনোর কথনো লোপ নাই, ভাহাস-দাই প্রকাশিত হইয়ার হয়তে। সংসারী আখাই भविदित अधीन, विषयात अधीन, मरमह अधीन : সংসারা আভাবই জাগুদ্বস্থা, স্বপ্নাবস্থা, সুযুপ্তা-वर्षाः प्रभागा कान जनस्त अधीन नटहनः ভিনি কথানা জাগ্ৰহ, কথনো নিটিভ, কথনো মুযুগু, এনত নহেন ; উাহার জ্ঞান, তাঁহার ভাষ, সদাই দক্তি রহিষাছে। ''এম **মুপ্তেমু জাগতি** কাম। কামং পুক্ষো নির্মিমাণঃ।" (কঠোপনিষদ্) যথন সকলে নিজ। যায়, তথন এই পুরুষ জাগ্রৎ থাকিয়া সকলের কাম্য বস্তু বিধান করিতে খাকেন। অতএব মাণ্ডুক্যোপনিষদু বলিভেছেন, ভিনি '' প্রপক্ষোপশমং শান্তং শিবমটেরভং। '' ভিক্তি স্সারের অভীত ; শাস্ত, মঙ্গল, অশ্বিভীয়। 'স-আত্মা সবিজেয়ঃ" তিনিই সেই আত্মা, তিনিই ব্যানিবার বোগা। কা গ্রৎ-পদ্ম-মুদ্রারত্ব এই শংশারী আত্মার প্রতি**ঠা সেই অভ্**র্যা**দী অমু**ভ জন-বিহীন নহান্ আছো। এই শরীরী সংসারী व्याचात्र व्यख्तकम् व्यक्तिम् (महे क्षेत्रीही क्षत्र-সায়ী মহানু আছা। অব্ছিতি করিছেছেন। " বা

পেৰা সয় জা সখালা সমানং বৃক্ষং পরিষধকাতে:" मृश्डरमाणनियम्) इट मुक्तत शकी जीवाश्चा আরু প্রমামা, উভয়েই এক রক্ষ এই শ্রীরকে অবলম্বন করিয়া রহিয়াছেন ; তাঁহার। সর্বাদা একত ধাকেন এবং উচ্চয় পরস্পরের স্থা। " বপ্লান্তং कांगतिভात्रकारको स्वतानू भगाछि। महास्ट वि-ভূষাম্বানং মহাধীরোন শোচ্ডি। '? (কঠোপনি-খদ্) জীব ঘাঁছার ছারা স্পেব মধ্যে সুথ-ছঃথ ভোগুকরে, এবং জাগরিত থাকিয়া বিষয়-সকল দর্শন করে, সৈই সর্ব্যাপী মহান্আভাকে সীয় অন্তরে জানিয়। ধীর বাজি আর শোক করেন না। "হর্মায়ে পরে কোষে বিরঙ্গৎ ব্রহ্ম নিষ্কলং। जब्द कर क्यांजियार क्यांजिखनामाञ्चविदनाविष्ट्रः।" /মুণ্ডকোপনিষদ্) ব্রহ্মবিৎ ব্যক্তিরা আত্ম-রূপ ্টেজ্ল ও শ্রেষ্ঠ কোষ মধ্যে সেই নির্মাল, নিরব-য়ব, জ্যোতির জ্যোতি, শুদ্র পরনাত্মাকে উপলব্ধি

এখানে উপনিষদের সিদ্ধান্ত মনোযোগ পুর্বাক প্রণিধান কর। যাও ক্যোপনিধদেব অর্থমে আছে " नक्दरञ्ज्य का।" गकल है अने उका। उप-নিষদ এট কথাতে বেদের পুরাতন মত থওন করিছেছেন। অগ্রি ব্রহ্ম নহেন, স্থগ্রহ্ম নহেন, মিত্র ব্রহ্ম নহেন, বরুণ ব্রহ্ম নহেন: কিন্তু সকলই ব্রহ্ম। ভিনি আকাশের অভীত হইয়। সকল আকাশে ও বিশ সংসারে ব্যাপ্ত রহিয়া-ছেন: ভিনি ভুত ভবিষাৎ বত্তমান জিকালের অভীত হইয়া সঙল কালে ও সকল ঘটনাতে বিদ্যা-" ভূতং ভবং ভবিষাদিভি মান রহিয়াছেন। नर्सरमाञ्चात्रवय यक्ताना द जिकाना डाउर उपरापा-স্কারএব '' ভূত ভবিষাৎ বর্ত্ত্বান, সকলই ওঙ্কার ; ধিনি এই জিকালের অভীভ, ভিনিও ওকাব। অর্থানে অবশা ভোষরা জানিছে চাও, এই ও-কার কি? এই ওক্ষারের অর্থ সৃষ্টি-স্থিতি-প্রালয়-কর্ত্ত†, উপনিবদ্ 🗳 শব্দ স্থার। ব্রহ্মকেই ব্যক্ত করেন। '' ওমিভিত্রক্ষ ' ( তৈভিরীয়োপনিষদ্) ওঁ ইহা ত্রকা। বেদের ঈশ্বর অগ্নি বায় ইন্দ্র প্রভৃতি বেষন ক্ষুদ্র, উপনিষ্দের ঈশ্বর ওল্পার-প্রতি-শীদা পরবৃদ্ধা ভেষনি মহান্। উপানিবদের খ-বিরামধন এই ত্রহ্মকে অবেষণ করিয়া আপনার-रमंत्र जाखरत रम्थिरनम, जबन बनिरमम '' अग्र-'**শ্রারকা" এই আ্যারকা। পরে উ**হারা তীহাকে প্রতেদ করিয়া ব্রিলেন " সেয়েমাত্মা চতুল্পাং।" নেই এই **আ**ত্মা চাল্লি পালে বিজক্ত। এখন নিৰ্ণয় করিতে ভইবে বে ইছার জোন্পাদ देगरे जाचा, विजि विद्या ; वैशिष्क समूनकान क्षियां कांना जागाहरमत निकास ब्येट्सांकन। क्षर्यम र्याम जावात जा अनरकी, 'त्य व्यवस्थित जाया

কহিরিজ্ঞিয় ছারা বহিবিধয় উপভোগ করে। দি-ভীন্ন পাদ আত্মার স্বপ্লাবস্থা, বে অবস্থাতে আত্মা ৰিষয়-সকল সৃষ্টি করিয়া ভাহা উপভোগ করে। ভূতীয় পাদ আত্মার সুষ্পারতা, বে অবস্থাতে ष्यात्रा पूछ हरेश काम कामनाञ्च करत्र ना, काम স্থপ্রথদথে না। এই ভিন পাদ আত্মার ভিন অবস্থা। ইহার কোনু পাদ ব্রহ্ম ? উত্তর—ইহার কোনো পাদই ব্ৰহ্ম নহেন, ইহার কোনে। অবস্থাই সেই ৰিজেয় আছার অবভা নছে। উপনিষদ্ইহা মুষ্পাত্ত-রূপে রাজ করিডেছেন, "নাস্তঃপ্রক্রং " দেই বিজেয় আজ। স্থাবস্ত আল্লা নহেন, '' ন ৰহিঃ প্ৰজং" তিনি জাঞাদবস্থ মান্নাও নহেন, ''ন প্রজ্ঞানখনং" তিনি সুযুপ্তারত আলাও নহেন। ভবে সেই বিভেয় আত্মা 🌢 ' উপনিষদ ভাহা পরে বলিভেছেন ৷ " অভূমীনবাৰহায়াম গ্রাহ্মল-ক্ষণমতিস্তামবাপদেশামেকাতা প্রস্থাসার্থ প্রপঞ্চো-शमगर मोख मिनगरेष्ठ 5 5 ईर्य गनारसम আত্মা সৰিভেয়ঃ।" ভিনি চক্ষুর অগেচেব কর্ণ্যে ন্দ্রিয়ের অগ্রাহ্য এবং অব্যবহার্য হয়েন। স্থিনি কোন লক্ষণ দাবা গমা নহেন, তিনি কোন শদ দ্বারা বাপদেশা নহেন, ডিনি অচিন্তা। এক আয় প্রভায় ই ভাঁহাব অন্তিন্তের প্রভি প্রমাণ ইইবাছে। তিনি সমুদায সংসার ধর্মের অভীভ: তিনি শান্ত, মঙ্গল, অধিতীয়। ব্রহ্মজেরা তাঁ-হাকে আহাব চহুৰ্থ পাদ বলিয়া গণনা করেল; ভিনিই আত্মা, ভিনিই বিজেঘ। ইহাতে দেখ, ''অয়মারা একা'' এই অরো; ক্রকা, বলিয়া ঋষিরা ঘাঁচাকে লক্ষ্য কবিষাছিলেন ভিনি কে, ভাষার সিদ্ধান্ত চটল। সংসারী আগারই ভিন পাদ— अश्वापवद् । ४४ वद् । ४ पृथः । उ ३ । व ८ । ५ र्थ পাদ, ভাহাই মেট বিচেয় প্রণ আত্মা, মাঁহাকে অ'মারদের অনুসন্ধান করিয়া জানিতে হইবেক ; সেই আত্মাই প্রহ্ম। কা এংবর-মুযুগ্রাবসা-স্থিত সৎসাধী আত্মা ব্ৰহ্ম নহেন; কিন্ত যিনি ব্ৰহ্ম, ভিনি সংসারের অভীত; শস্তে, মঙ্গলা, অদ্বিভীয়। এই সংগারী আত্মার প্রতিষ্ঠা ক্রন্ম, এই আত্মাতেই আছেন, অভএন ব্রহ্ম ইহার চতুর্থ পাদ বলিয়া উক্ত इहेग्राट्डन । श्रुवाजन উপनिষদের এই माब्र সিদ্ধান্ত। এই সিদ্ধান্তকে আমরা মনের সহিত কেন অন্সীকার করি ? ইহাতে আমারদের দৃত বিশ্বাস কোণা হইতে উৎপন্ন হয় ? बहे भंदीती आधर आधारे हकूद लाह्द मरह ; ইহার সুযুগুাবস্থার যে অচেডন ভাব, ভাহায় তো आमता किहूरे मश्दाम कामि मा; তবে এই আ-আর অন্করান্তা ভূদা ঈশ্বরকে কি প্রকারে জানিতে পারি, এবং এই ক্লানার উপরে কি প্রকারেই ধা নিঃশ্ংশয় হইয়া আছবিক বিদাস স্থাপন क 🏬 : পाরি १ 🛮 ইহাতে উপনিষদ্ বলিভেছেন, আমারদের নির্মান জ্ঞানে ভিনি প্রকাশ পান, এবং আলো-প্রভায় ভাষতে বিশাস করে। "ন চকুষা গুছাছে নাপি বাচা নালৈবেদ্বৈশুপৰা করাণা ব।। জ্ঞানপ্রদাদেন বিশুদ্ধসম্ভুক্তজন্ত তং ल्लाएड निक्रवर धामभानः । '' (म्छद्कालनियम्) ভিনি চকুর এছিা নহেন ; বাকোরও গ্রাছা নহেন, जिलामा वा यक्तामिकमी द्वारा, उं शास्त्र व्याख इंद्रश गरा मा . १५%-गडु वाकि धान-पूक ब्हेश निर्यंत ক্ষান দারা নিরবয়ৰ ব্রহ্মকে উপলব্ধি করেন। ভাষ্টেক ইন্দ্রিয় গ্রহণ কবিতে পাবে না, ভাঁহাকে যন মনন করিলে পাবে না, ভাঁহাকে বুদ্ধি আয়ন্ত कविधा कर्क घाता शिका ख कतिरक शास्त्र मा ; ऋषग्र কেবল এক আল্ল-প্রভাষ দ্বারা নিঃসংশয় হইয়া তাঁহাতে বিশ্বাস স্থাপন করে। ' একমি প্রাভায়-সারং।" একঃ ক্লগংকাবনং ব্রহ্মাস্ট্রীতি আহানঃ প্রভায়ঃ সার্থ জমাণ্য ঘদাাধিপথে তথ একাল্প প্র-জ্যসারং " এম আত্ম-প্রভায়ই তাঁহ ব ভাস্তিত্বের প্রতি প্রমাণ ইইয়াডে। বিনি এই সংসারী আ-बीव का शमवद्याटक दिवस धक्राव्य करमा के उन्हास-দকল নিয়াচেন, থিনি ইছাব প্রমানস্থাতে ক্রীডাব নিমিত্ত মনের কপোনা-পাতে দিয়াছেন, যিনি ইছাব দুৰ্ণুপ্ত কালে বিশ্বনি-সুথ দিয়। অহরহ ইহাতে इ.इ.स. वनाथान कविएक एक । स्मेर्ड मक्क मर्क-শাক্তি অনন্ত পুৰুবেষ অস্থ্যির প্রাভ্রের প্রভ্রের আ 🐍 প্রভাগ বিঃদংশগ প্রমণ্ঠইয়(ছে। ধ্থন অবি সাহি, তথন আমাৰ এটা পাত। নিযন্ত। এক ১(১৯৭: এই আমি-প্রভারে। যিনি আমার এটা পাত নিয়ন্ত। পুক্ষ ভিনি ভাষার সুক্ষ নৰ। দাত্ৰ্য ও প্ৰাভূ-এই বডঃসিদ্ধ আয়ে-প্ৰভায়। যিনি মান্তে পুজৰ স্থা আগ্ৰেষ্ড অভু, ডিনি সংগে 🕆 পুহাদ স্থা আশ্রয় ও প্রস্তু; তিনি 🎮 ন, সজল, অভিতীয়, এই আল্ল-প্রভাষের সহজ অকাটা দিদ্ধান্ত। এখন ব্রাহ্মপর্মা এই আত্ম-এতায়ের বিষয়ে কি বলেন, ভালা শুন। " দেই क म छ क्यांन खक्रण शव्दमध्य हसुत्र व्याह्म महस्म. উহকে হস্ত ছার। প্রছণ করা বাঘ না, ভাঁহাকে মনেব ছারা কম্পানা করা যায় না, ভাঁছাকে পরি-<sup>এ'য</sup> না। কেবল নিৰ্মাণ সহক্ষ জ্ঞানে ভিনি ঞ-চ, শিত হয়েন এবং এক আত্ম প্রভাষের বলে সেই <sup>ড়ান-গোচর সভা মুন্দর মঙ্গল পুরুষের **অন্তিত্তে**</sup> সানরা বিখান করি। জা**ন যে অকৃত অ<del>ভুত</del> অ**-न छ शुरुषक ध्यकामा करत. आक्रा मिह भून शुक्र-ষের সন্তিন্ধে প্রভায় করে। জ্ঞানেতে সভা প্রকাশ পাণ, এবং সেই সভোতে জানারদের আতার প্রভাগ হয়। অন্তর্জন এই স্ভাব-সিদ্ধ আমি-প্রান

তায়ই তাঁহার আভিনের আগাণা ভাগালের এক. মাত্র হেতৃ। বখন আত্ম-প্রভায়-সিভ অনভ পুরুষ সহজ জানে প্রকাশিত হন, তথন বুলি তাঁহার জগৎ-রচনার কৌশল দেখাইয়া তাঁহার বিজ্ঞানের পরিচয় দেয় এবং জগতের মঙ্গলোন্দেশা নিয়ম प्रभादेशा मिरे निराखात मक्त छात वास्त करता যদিও পরিমিত বুদ্ধি অনস্ত পুরুষকে বুঝিয়া শেষ করিতে পারে না, ভগাপি সে সহজ জানকে অভি-মাত্র পোষণ করে। অভএব একা জিজামু,মুমুকু বাক্তি জগংকার্ণোর অন্তর্কাহেরে আকৌচনা ছারা বুদ্ধিকে মাজিতি করিতে কদাপি অবহেলা করি-বেন না। বুদ্ধি সুমাজিতি হইলে সহজ জান ও অ'ক্ব প্রভায়ের অধিকার ও উদ্দেশ্য আমরা বি-শেষ কপে স্বস্পত্য বৃঝিতে পারি। " এই আয়-প্রভাষ অ'মারদের ব্রাহ্মধর্মের সৃষ্টি নহে : ইহ। পুৰাত্তন উপনিষদে **সুস্পাট** ৰাক্ত রহিয়াছে। ৰা**ন্ত** বিত্রুজি যথনট আপেনাব পাত্র ভ্রিয় অয়েষ্ণ করে, ভথনি যে সহজ্ঞান ও আত্ম প্রভায়কে দেখিতে পায়।

এই অন্য-প্রভাষ সিদ্ধ জ্ঞান-গোচর সভা মু क्तर मञ्जन शुरुष क्रमातिको न भक्षान् आया। ''अथ-য আলা সনেভ্রির্ভিরেষাং লোকানামসম্বেদীয় ৷ ঘিনি আ'অ', ভিনি লোক-ভঙ্গ নিবাৰণাৰ্থে সেত্ৰ-স্বরূপ হটয়: সমুদায় পার্ণ করিতেছেন। এই অ,ঝ-কপ সেতুর এপাবে দিন রাতি নিয়মত हरेट्ट : अ भारत मिन अ नारे, त्राविख नारे পুরুত্ত নাই, চুদ্ভ্র নাই; ইহা পুণা-জেন ভ্রে সদাই পবিত্র বহিয়াড়ে: জীব ইহাব ও পারে উদ্বীৰ্ চইলে সকল পাপ হইতে প্ৰতিনিয়ত হয়; এই নিষ্পাপ ব্রহ্ম লোক। এই সেতৃর পর-পারে উঙীৰ ২টমাৰে অন্ধ সে অনকাহয়: যে সংসা-রের ভঃখ কেশে বিদ্ধ, যে অবিদ্ধ হয়; যে পাপে ও দে'ছে উপভাপী, সে অনুপতাপী হয়। এই দেজুকে উত্তীৰ্ হইয়া রাজিন দিনের সমান আ त्त्राक शांवन करतः; अहे द्वन्त-लाकः; हेरात मिन বালোক কথন অন্ত হয় মা, ইহার প্রকাশও निकां । इस ना : है हा मनाहै अकानिक इंडिसाट । न क्रिया में ''নৈনা সেতুমহোরাতে ভর্তঃ। মৃত্যৰ্ব শোৰোন মুক্তং ন ছক্তং। সংবী পী-প্রানোংভোনিবর্তন্তে। অপহতপাথা তেম্ব্রগ্ন-লোকঃ। ভন্মাদাএতং সেতৃং ভীম্। স্কা কুর্বে नक्षाज्यकि विद्यः अभिविद्याज्यकि उपार्थाणी-সমনুপভাপী ভবভি। ভশাহাএতং সেডুং ভী-ৰ্বাপি নক্ষমহয়েবাভিনিস্পদ্যভৈ। সকুষিভাভে।-( इंटिकाटकार्शनिवयः) -- " (ग्रेवयञ्चलदम्यः।

## মেদিনীপুর উনবিংশ সায়ৎ-সরিক ব্রাহ্মসমাজ।

আৰু আমাদের উনবিংশ সাধ্যারিক সমাজ।
এই মেদিনীপুরস্থ ব্রাক্ষসমাজের ব্যঃক্ষম ক্ষেম্
ক্রােম উনবিংশ বংসর অভিক্রম করিয়া অদা বিংশভিতম বর্বে প্রাক্রিট হইল। এই উনবিংশভি
বর্ষে,বিশেষতঃ গত বংসরে এখানে আমাদের ব্রাক্ষ
ধর্মের কভ, দূর বল ও পুষ্টি সাধন হইয়াছে, আমরা
ধর্মের দিকে কভ টুকু অগ্রসর হইয়াছি, এ বিষয়ে
আক্র একবার আমাদের পর্যাালোচন। করিয়া দেখা
কর্ত্রবা হইভেছে।

আমরা দেখিতে পাইতেছি, এখানে দিন দিন ব্রাহ্মণর্নের উন্নতি ও বিস্তার হইতেছে। প্রাণমে যথন এখানে, ব্রাহ্মসমাজ প্রতিষ্ঠিত হয় তথন ইছার ভাব অভি সঙ্কীণ ছিল। ভথন ইহার কোন ১৬ ব্ল গৃহ ছিল না। প্রথমে ইহার প্রতি-ঠাতা কোমগৰ নিৰাসা জীমুক্ত বাবু শিৰচন্দ্ৰ দেবের বাস ভবনে উপাসনাদি স্যাজের কান্য নিকাহ চইত। পরে একটী বাটী ভ:ডা করিয়া কিছু দিনের জনা ভাষাতে সমাজের কার্যা নির্বাহিত হয়। ভানধ্য স্থাতেল্য বহুমান আহি গাঁ<mark>মহাশ</mark>-থের রাস। বারীতে কয়েক বংসর পরিয়া সভাব কার্যা সনাধা হট্ছ। পুরের অভি অপে লোক গমালে উপ্রিভ হউত্তেন, তৎকালে ব্রাহ্মপর্মের প্রতি এখানকার অনেকেবই বিষম বি:ছ্য জন্মি-য়াছিল। সমাজের প্রথম অবস্থায় এথানে ব্রাফা-मबाटकत श्रांककृत्म अक्री धर्मा गछ। नामी गछ। কিন্দ্র চিরকাল সভে।র প্রক্ষিত চইয়াছিল, खय--- भरग्रेव क्यारे रहेशा शास्त्र। जाञ्चाभर्म मगूनाय বিল্ল বিপত্তি, সমুদায় আতিবন্ধকতা, সমুদায় বি-**च्चित्राह्य व्यक्तिम क**दिया अथारम भिम्न भिन्न वली-যান ও পুট-দেহ হইয়া উচিতেছে। ব্ৰাহ্মপৰ্যা আপনার নিজের মাহাত্মোই আপনি বিস্তুত ও সভেজ হইয়া উঠিতেছে। একণে এথানে বছ मरथाक ल्लांटक विरमयंच्य छ। प्रतमंत्र छात्निक ত্রাক্ষপর্কোর আগ্রয় গ্রহণ করিভেছেন। এখন उपामिन्याक चात भव-धृश्योगे नटहन। ভাহার এই স্বত র গ্র নির্দ্দিত হইয়াছে। বিশেষ আহলাদের বিষয় এই যে এই গৃহ নির্মাণ বিষয়ে क दमभीदग्रता काश्रिक পরিমাণে माशासा করিয়াছেন।

আয় তিন বংসর হইল এখানে একটা ব্রহ্ম বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত ইইয়াছে। তাহাতে অনেকে ব্রাহ্মধর্মের উপদেশ পাইতেছেন। তদ্ধারা অ-নিকে ব্রাহ্মধর্মের সম্প্রপ ও লক্ষণ অবগত হইতে-ছেন ও ইহার উন্নত ভাব মেশিয়া ইহাতে আকৃষ্ট হইতেছেন এবং অনেকে রীতিমত ব্রাদাধর্ম: গ্রহণ করিতেছেন, বস্তুতঃ এই মেদিনীপুরে ব্রাদাধর্মের দিন দিন উন্নতির চিক্ট দেখা বাইতেছে। বিশে-ষতঃ গত বংগরে যে তুই প্রকার কার্মোর অনুষ্ঠান হইয়াছে, ভদ্মারা ব্রাদাধর্ম এখানে অনেক অঞ্জর হইয়াছে বলিতে হইবে। প্রথম কার্যা ধর্ম প্রচার, দ্বিতীয় কার্যা অনুষ্ঠান।

এই প্রদেশের সকল ছানে ত্রাহ্মধর্ম্মের প্রচার করিবার নিমিত গত ফাল্কন মাসে এখানে এক জন প্রচাবক নিযুক্ত কর। হইয়াছে। প্রচারক গ্রাদে গ্রাদের ক্রাদের প্রচার করিভেছেন। যদিও অপদিন প্রচার কার্যা আরম্ভ হইয়াছে, তথাপি ইহার মধোই অনেক ফল দেখা ঘাই-তে ছে। প্ররেষ এই মেদিনীপুর প্রদেশের অন্তঃ পাতী পল্লী নাম বাদীবা ব্ৰাহ্মধৰ্ম বলিয়া একটা যে সভস্তু পর্মা আছে, ভাহা অবগত চিল না। একণে প্রচ'রক দারা অনেকে ভাষা অবগত হই-তেছে। অনেকে একণে ব্রাহ্মপর্মা লইয়। ভূমুল অ:-ন্দোলন কবিতেছে। কেছ কেছ ব্রাহ্মধর্মের আ-শ্রুষ গ্রহণ কবিতেছে। অনেক স্থলে আমাদের প্রচারক সমাদরে গুলীত হইতেছেন। স্থান এইতে প্রচারকেব আংকান পত্র আসি-তেছে। প্রচারকের যত্ত্বে কলেশর ও গভবেডান্ত সমা-ত্বের পুষ্টি সাধন হইয়াছে এবং গঙ্গাদাসপুর ও ঘটোলে সমাজ স্থাপনের কম্পন। হইতেছে। ভন্নিক কোন কোন স্তানে কোন কোন সন্থান বাকি, অ: श्रीष বজন লইয। নিয়মিত কংগে উপা-সন। কবিতে অ'রম্ব করিয়াছেন। বিশেষ অহলা-দের বিষয় এই যে প্রচারক ও অপর এক মহাস্মাব যত্ত্বে কৃষক প্রভৃতি কভক গুলি সামানা লোকে ব্রাহ্মপর্যোর ক্ষাপ্রয় গ্রহণ কবিয়াছে।

গত বংসব ংখানে কয়েকটা ব্রাহ্মধর্মান্তমোদিত অনুঠান অনুষ্ঠিত হইঘাছে। গত বৈশাধ্য মাসে আটার্গা মহাশয়ের জ্যোষ্ঠা কন্যার পরিগয় কার্যা ব্রাহ্মপর্যের পদ্ধতি অনুসারে সম্পাদিত হয়। এইটা এখানকার ব্রাহ্মদিগের প্রথম অনুষ্ঠান। এই অনুষ্ঠানটা অত্যতা ব্রাহ্মদিগের এক প্রকার পরীক্ষা তল সইয়াছিল। তত্পলকে এখানে ব্রাহ্মদিগের মধ্যো মহা গোলধাগ উপস্থিত হই-য়াছিল। অনেকেই সেই অনুষ্ঠানে যোগ দিয়া ভিলেন, কভক গুলি আবার ভাহাতে যোগ দিতে বিমুখ হইয়াছিলেন।

দ্বিতীয় অৰুঠানটী শ্রাবণ নাদে সম্পন্ন হয়। ঐ
অনুঠান রাজা রাধাকান্ত দেব বাহাছরের পৌত্র
শ্রীযুক্ত কুমার ব্রজেঞ্জনারায়ণ দেব বাহাছরের পুত্রের
আন্তক্ষা। এই অনুঠানে অনেকে উপস্থিত ছিলেন।
ইহা আক্ষাদের বিষয় বলিতে হইবে যে প্রথম

অনুষ্ঠানে আগমন করিতে বাঁহাদিগকে; কুঠিও
চুই হইয়াছিল, এই অনুষ্ঠানের সময় জাঁহাদের
অনেকে যোগ দিয়াছিলেন। এই দিভীয় অস্থান দারা আমাদের মহোপকার সাধিত হইযাছে। এই অনুষ্ঠানটী বঙ্গদেশে ব্রাহাধর্মের
অনুষ্ঠান বিষয়ে মহৎ চুইান্ত স্বরূপ।

তৃতীয় অনুষ্ঠান মেদিনীপুর নিবাদী শ্রীযুক্ত
বারু নীলকমল দের পুজের নাম করণ। উহা
আমিন মাদে সম্পাদিত হয়। ভাহাতেও অনেকের
সমাগম হইয়াছিল। এই তৃতীয় অনুষ্ঠানটী এ
প্রদেশে বিশেষ ধর্মোঃভি সাধনেব চিক্ বলিতে
হইবে। ইহার পুর্ধে যে ছুইটা অনুষ্ঠান হয় ভাহা
ভিন্ন আন নিবাদীদেব হাবা অনুষ্ঠিত হয়; এটা
এই স্থান নিবাদী দ্বারা অনুষ্ঠিত হইয়াছে।

গভ বংদবে ব্রাহ্মপর্মের উপতি বিষয়ে যে नकल कार्गा अनुष्टित इहेग्राइ, उम्राक्षा अवसी অভ্যন্ত জীলিকর সংবাদ আছে। ভাষা এই, — এ প্রদেশের অন্তঃপাতী পলীগ্রাম বাদী অন্ধার।ন जाका श्रीषुक बाबू नवीनहत्व एकागी महागग्न प्रशाह দিবদে রম প্রীতিকর কাষা করিয়াভিলেন। ভিনি औ मिन नश्नाम उथका दर्गटक भूगाटकत नियञ्जग कविद्यान । यथा नगरम मकत्व उपिष्ठिक इडेल। জিনি উপস্থিত প্রজামগুলীর সমক্ষে পূর্মবং পৌ ভুলিক কার্যা না করিয়া ব্রক্ষোপাসনা কবিভে रिमिया (%) जन। उपापना मगाख इहेटल जनमी-শ্বের নিকট প্রজাবর্গের মঙ্গল ক'মন। পূর্ণ একটী ल्यारीना कविया भूगाह कोर्या सभावा कविरनन। এট কয়েকটি অমুষ্ঠান দারা এখানে ব্রাহ্মণর্দোর বিশেষ উন্নতি সাধন চইয়াছে বলিতে চইবে। क इक्छ नि बाक्त श्रुकार शंका धर्मा मग्धिक अन्-রক্ত হইয়া উটিয়াছেন। এক্ষণে উহিদের প্রায় সমস্ত কাঠা ও বাবহার বাকাধর্মের স্বারা অনুশা-সিভ হইভেছে।

বত দিন না আমরা ব্রাহ্মপর্মকে অনুষ্ঠানে পরিণত করিতে পারিব—বত দিন না আমাদের সমস্ত গৃহ কান্যে প্রদান নাম ঘোষিত চইবে—ভত দিনই আমাদের ব্রাদ্ধধর্মের প্রকৃত উন্ধতি ও পুটি কাপন ইইবে না—ভত দিনই আমরা ব্রাহ্ম নিবার বোগ্য ইইতে পারিব না। অনুষ্ঠান ধর্মের জীবন ধরুপ। অনুষ্ঠান ধ্বারা পর্মতাব প্রকৃত রূপে প্রকাশিত হয়। ব্রাহ্মপর্ম বিদ কেবল আমাদের মনে ও সমাজ গুহুই বদ্ধ পাকে, সংসার মধ্যে প্রবিট না হয়; আমাদের প্রকৃত কার্মের সময় ব্রাহ্মগর্ম নেতা লা হন; ভাষা ইনে আমাদের সময় ব্রাহ্মগর্ম নেতা লা হন; আমান গৃহ কার্মের সময় ব্রাহ্মগর্ম দিতে পারিব প্রাহ্ম বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিশ্বা আমরা কার্মের বিদ্যা ভাষা বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিশ্বা আমরা কার্মের বিদ্য ভাষা বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিশ্বা আমরা কার্মের বিদ্য ভাষা বিপ্রাাম্য বিদ্যা ভাষা বিশ্বা আমরা কার্মের বিদ্য ভাষা বিশ্বা

রীত ভাব দেখাই, ছাহা হইলে কি জাসর কাই ও ভণ্ড বলিয়া পরিচিত হইব না ? জনা সময়ে আনবা কপট বলিয়া পরিচিত হইতে লক্ষিত হই, আর ঈশ্বরের প্রতি কর্তবা সম্পাদন সময়ে কপট-ভাচরণ করিয়া কি লক্ষিত হইব না ? ঈশ্বরের নিকট কপটভাও ভণ্ডভাচরণ করিলে আমাদের নিক্তার নাই। অভএব বদি আমরা ব্রাক্ষধর্শের উমতি সাধন করিতে ইচ্ছা করি, বদি আমরা পারলৌকিক অনম্ভ মুখের প্রত্যাপা করি, ভাহা হইলে কপটভাচরণ পরিভ্যাগ করা, আর্থদের সর্বাত্রে কর্ত্বা। ব্রাক্ষধর্মকে আ্যাদের সমস্ভ কার্থেন সকল ব্যবহার ব্রহ্মধন্মের অনুমোদিত করা কর্ত্বা।

হে জগদীখর! আমরা ভোমার অতি কীণ সন্তান, আমাদের এমন বল নাই যে আমরা নিজে ভোমার দিকে আঞার হই, ভোমার প্রদেউ ব্রাদ্ধ থর্মকে আলিঙ্গন করিছে সক্ষম হই, ভোমাকে সাক্ষী রাখিয়া সাংসারিক সমস্ত কার্যোর অনুষ্ঠান করিছে পারণ হই। ভূমি ককণা না করিলে, ভূমি পর্মাবল প্রদান না করিলে, আমরা কথনই ভোমার দিকে উন্দুখ হইছে সমর্থ হই না। হে ধর্মাবহ পুরুষ। ভূমি আনাদের মনে একপ বল দেও যেন আমরা সমস্ত জীবন ভোমাবি দিকে অগ্রসর হই, আমাদের সকল কার্যা যেন ভোমাবি অনুমোদিত হয়, আমাদের সকল অনুষ্ঠান যেন ভোমার ব্রাদ্ধপর্মের অনুশাসিত হয়।

ওঁ একনেবাছিভীয়ং

-----

কলিকাতা ত্রাহ্মনমাজের ১৭৮৬ শকের মাঘ ও ফাল্কুন মাদের আয় ব্যয়

বিবরণ।

#### আ্য়

ভত্তবোধিনী পতিকা	**&/•
लका मान	२०१
विकानीन मान	, 7110
পুস্তক বিক্রয়	ं ৯১ (४०
डाक्माञ्च ;	ا مرادد
सञ्जानम	3964050
পুল্ডক বিক্ররের কমিশন	DC 10.
मिक्न मिट्न वृद्धिक मान	ં પ્રદ
অনিরূপিড	ZIINE,
পদ্ভিত	BOIL

	1
· ব্যয়	'ব ন্রব্যোপাল মিত্র ২
মাসিক বেন্তন ২২১॥০	" कांखिएस भिज 🖫 \cdots 🕠
প্রিকা মুদ্রান্ধন ও কগিজ ক্রয় ১০১//১০	" श्रीविन्महस्र वस्र ''' >
সরকার্দিগের কমিশন ১৭١১ ৫	" অবিনাশচন্দ্র চটোপাধ্যায় ১
Additions of the State S	" जीनभि भत >
	" নহাভাপচন্দ্র চন্দ্র ১
Alani Ka	" देवलाकामाथ वसू >
Las Las	" भीजनम्म गूर्थानाथाय >
The second secon	" প্রমথনাথ মিত্র >
10, 44,	" উमानाथ छश्र
delian control of the	" অজুরচাদ মলিক · >
আলোকেৰ ৰায় আ/১৫	ং হলপর মলিক ১
मिक्ति (मर्ग प्रस्थिक मीन ९०४	্ বিশ্বেশ্ব ঘোষ >
भूखकानस्यत् अना भूखक कथ थ।०	" ल्लानान वत्नाभाषां >
ेश् <b>लुक वि य्यद कमिनम २॥</b> ०	" অভযাচরণ গুপ্ত
গছিত ২১/১০	" तनगंती स्थन >
Beautiful Control of C	" গোপলেচন্দ্র মিত্র >
હાના	" क्षात्राहन पद
व्यात्र १४००/१६	' সাগ্রলাল দত্ত
পূর্মকার শ্বিত ৬৮১/•	' গ্ৰেক্টন্দ্ৰকিন্ত
***************************************	" द्रोभटमक्क <i>द</i> न
F8F1/2C	" इतिभाग श्रीभागी >
वाक ७००॥ ८०	ি বিজয়গোপাল মিত্র গণ
The same of the sa	" इत्कालि त्याय ॥०
विक	Saddled Cald '
জী দ্বিজেন্দ্রনাপ ঠাকুর।	95
कलिकांडा जांच्यमध्यास विकास	্ব ভুমনু হৈছিল বাহিছ
कालका का जी मन्त्रम हला र से स्थाप	
	প্রীপুক্ত অধ্যোদাধ শক্তাশী . ২
ব্রাক্ষদিগের প্রতিজ্ঞাত সাস্থ্যবিক দান।	
	ि भग्नास्थ्यमञ्चरहेश्याग्र ১०/१
প্রায়ন্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর · · · › ০	
ماسلوا الالماسا ومن	<i>e<sub>q</sub></i> )•
escultation to the second	मानाधारत्रमान २
्रीचाबाध्यान्याः । । । ।	
' হরিনোহন নজী 8	٢ ١
" ब्राकावाम मूर्याशायाम ७	আর ৮৫ ৮০
" माधवष्टल वनांक	পূর্বকার স্থিত ২৭৮১০
" প্রসরকুমার ঘোষ ২	Manager and American
" ভরোধ্যানাথ পাক্ডানী · · ২	>>> √>∘
. विद्यालयनाथ ठीकूत र	बाग्न
अ महजाव्यनाथ शिक्त १	महकाद्रमिरशद्र कमिमन १५०
*	AND CONTRACTOR OF THE PROPERTY
बीदब्रक्तनाथ ठाकुत र	वर्ख्यान ১১०।/১०
💃 জ্যোতিরিজনীপ চাকুর \cdots ্ 🤻	<b>জী হিজেন্দ্রনাথ</b> ঠাকুর।
र नात्रमाध्यनाम् भटकाशाधामः . १	আ (ৰংগতান। ব চাণুগ্ন । কলিকাণ্ডা আলসবাদের সম্পাদক।
" (शाकूनकुक निष्ट र	कायकात्रा मा मनवास्यव गर्जा होत् (
" मदश्कानाथ जात २	

ক <b>লি কা</b> ড	া ৰা	কাসম	<b>ंटिक</b> इ	পু স্তক	লেরস্থ
			भू छ		
কংগুদ সংহিত	) খ	·	٠.		5
À	২ থ	3			>
অনুষ্ঠান পছ	ভ	• •			٥40
खासाधरमीत ग			•		10
के छ। न वं	াধান		. الكامر الأ		ųo
প্রত্যাহিক ব্র	কাপ্য	मभा			Jo
ব্ৰহ্ম স্থোত্ৰ	•			•	75
ব্রাহ্মগর্ম্মের আ					do
ব্ৰাকাপৰ্য সন্মত			. •	••	10
<b>उभ</b> উপामन।			* *	• •	10
ব্ৰহ্ম সঙ্গীত				* *	oj o
હે જીવન હ			াগ এ	करज	10
नी डेलाम	_	ইভ	•	• •	9/0
ख्यायंना जवरः			•	•	10
কলিক।তা ব্ৰাহ	ñ <sup>7</sup> !¥ं८	জর ব	<i>७,</i> ७	٠	10/0
ব্ৰাহ্য সমাজের	•			.,	10/0
রাজনার্যণ বং	रूब दर	দূ জা			ļ, ,
সংশাৰ ৰাঞ্জ				• •	10
ঐ ভাংপন্য	স[হয	5		• •	ij →
বাঞ্চাল। প্রাথ্য				• •	10
के क			· #_	•	ه/ه
जे दिखीय	4 9	• •	• •	• •	40
রাক্ষণর্গোর মত	ও বি	শ্ব[স	•	•	110
<b>লিশ্বরে</b> (পাসন।		• •			/•
ধৰা চিচা					10
<b>উ</b> ट्याभनाञ्चलि	. ,			• •	/0
গৃহ কর্ম	• •			•	e) o
স্থে ত্রম লো					10
ত্ৰিসন্ধান্তে, ত					d'o
ম্ব ভিমান!		• ,	• •	• •	<b>   •</b>
ष्यां स खड्डिया।					10
শিশু পালন	প্রথম্	<b>ક</b> †গ	• •		>0
ঐ ছিতীয়	<b>न</b> ्ग	• •		• •	/°
সংগীত মুক্তাবৰ্গ	٩				10
शर्मा भीका					10.
यञ्चिकात					20
शानार्थ विमा।	. •			••	ło
মনুষোর মহন্ত্র				• *	130
ভাত্ভাব				••	150
জয়নগর গিরিশি			घगन	••	jo
मोल भिवाद करि	७:दक			••	.30
বৈরাগ্য শতক	• •				100
চাক্ৰ মীৰাৎসা	••	• •			10
यरिकिभिष्य		*," ** * *		**	10/0
ভানীপুর ক্রম্য	वशांच	513	<b>ज</b> ारम	1 1 3 1 Ti	10

वर्गमाना	<b>\$</b>
बे विषीय मर्था	10
ব্ৰাহ্ম ব্যৰহার	10
ष्ट्रां १ मर्थ	10
সংস্ত পাঠোপকারক	0.
हिन्दा डोक्स-धर्म — मिरनागत अक्तरत	10
রতি সহিত কঠোপনিষৎ দেবনাগর <b>অক্</b> রে	do

# বিজ্ঞাপন

আখিন মাধের প্রবল ঝড়েতে কলিকাতা ব্রাক্ষনাজ গৃহ একপ ভগ্ন হইরাছে,
বে সংক্ষার না করিলে আর বাবহারের
উপযোগী হইতে পারে না। এবার সংক্ষার
করিতে ক্যুনাধিক ২৫০০ টাকা লাগিবে।
অতএব বিজ্ঞাপন দিতেছি যে কলিকাতা
ব্রাক্ষান্যজের প্র, গ্রাহাদিগের সেহআছে,
ও ইহাকে রক্ষা করা ঘাঁহারা কর্ত্রা বোধ
করেন; এই সময়ে তাঁহারা সাহ্যা করিবেন।

শ্রী দিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। কলিকালা রাহ্মমমাজের সম্পাদক।

ত চৈত্র মঙ্গলবার অপরাক্ত ৭ ঘন্টার
সময়ে বর্ষশেষ উপলক্ষে, এবং ১ বৈশার 
বুববার প্রাতঃকালে ৭ ঘন্টার সময়ে নববর্ষ
উপলক্ষে কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজে ব্রহ্মোপাসনা কটবে। ব্রাহ্মগণ প্রাধান আটার্যা
মহাশ্রের ভবনে উপস্থিত হইয়া উপাসনা
ক্রিবেন।

শ্ৰী বিজেমেনাথ ঠাকুর। কলিকাতা ব্ৰাফ্যনমাজের লম্পান্ত।

বাঁহাদিনের তত্ত্বোধিনী পত্তিকার অঞ্জিন মূল্য নিংশেষিত হইরাছে, তাঁহার। আনামী বর্ষের জন্য অগ্রিম মূল্য আশান করিবেন অগ্রিম মূল্য অগ্রেম প্রদান না করিলে করা-জের ক্ষতি করা হয়।

की गानम्बर्काद्वेमासूक्ष्मित्र । विकास विकास विकास